CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS MoE. Grant-4

The Giri Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

J.2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टिशो राज से बढ़ि के व्यापक क्षेत्र हो गइल रहित भारतीय प्रशासन आ लूट सोट खातिर। हँ, भारतीय संस्कृति के समूल मेटावहू के प्रयास में कुछ विदेशी कंडी लोग तनिको खोटी नइखन कइले, बाकी ऊ अमर स्रोत खाली भारत भुंइ ना, बलुक समस्त संसार के अवहिंओ निस्वार्थ सेवा खातिर सजीव बा आ ग जुग रही, काहें जे ओह मूल में बा जगकल्यान के अरचित कामना।

अनघा विद्वान लोग शोध आ अध्ययन के आधार पर प्रमानित कइले बा कि मो में विवाह का अवसर पर भारते अस वेदी के प्रदक्षिना करे के चलन बाटे पहिले उहाँ एहो देश अइसन मृतक दाहो होखत रहे। यूनान आ मिस्र का पथ में त कतने प्रसंग मिलल बाटे जवना पर जमि के अध्ययन आ शोध के रूरत बा। भविष्य पुरान से पता बा कि महर्षि कण्व मिस्र जाइ के दस हजार दमी के दीक्षा देले रहीं। डा० प्राणनाथ जी शोध का आधार पर प्रमानित इले बानीं जे मिस्र के राजभाषा पहिले देववाणी संस्कृते रहे आ आजुओ मिस्र भाषा में संस्कृत के शब्द अनघा भरल पड़ल बा। रूसी विद्वान कर्नल अकटि ले बाड़न जे हिन्दुए लोग आठ हजार साल पहिले मिस्री सभ्यता के स्थापना इले रहन। श्री पोकाक महोदय 'इन्डिया इन ग्रीस' में लिखले बानीं कि यूनान मूल निवासी छत्री रहन आ मगध अउर सिंधु-तट निवासी लोग यूनान बसवले न। श्री मुकालिफ साहब अपना ग्रन्थ 'दि सिक्ख गुरुज ऐन्ड देयर टीचींग्स' में खले बानीं कि पहिले रोम देश में भगवान शंकर के पूजन होत रहे। शिव ङ्ग पूजन के चलन चीन, मिस्र आ जापान आदि देशन में बा। चीनी र्मशास्त्र 'चोकिंग' का मतानुसार ईसा से दू हजार नौ सौ साल पहिले भारत आ के कश्मीर आ पंजाब आदि राज्यन से गइल भारतीय लोग चीन के नेंव ले रहन, महाभारतो में एह कथन से मिलत-जुलत प्रसंग आइल बा आ सर लू० जोन्स साहेब का अनुसार चीनी लोगन के उत्पत्ति हिन्दू लोगन से इल बा। चीनी इतिहासविद् श्री ओकाकुश जी भारत देश के चीन के मूल नत लिखले बानीं जे चीन का लोपाङ्ग प्रान्त में दस हजार भारतीय चारक लोगन के निवास रहे। जापानी विद्वान श्री 'तकाकसू' का अनुसार पानी संस्कृति के भवन खड़ा भइल बाटे भारतीय संस्कृति का आधार । भारतीय विद्वान श्री बुद्धिसेन जी कुछ सहजोगिन का साथ धर्मोपदेश बदे स्का (जापान) जाइ के आपन समस्त जीवन ओह पुनीत कार्य में खपा हलीं। ओहिजो दीपावली पर्व भारते अइसन मनावल जाला, जवना में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगवान राम के असुर राज रावन पर विजय के अमर स्मरन वाटे। जापानी गुरुधर्म बोधगया का अलावे सारनाथ आ अउर जगह के बुद्ध मन्दिर भारत-जापान सम्बन्ध प्रसंग के नमूना सरूप बा।

रूसी भाषाविद ले० वी० मकारैंको का अंग्रेजी से ढ़ेर नियराहि बंगले, हिन्दी आ संस्कृत भाषा जनाइल बाड़ी स। श्री वारान्निकोव जी राम चरित मानस के आ उहां के पत्नी श्री यशपाल जी का 'दिव्या' के रूसी भाषा में अनुवाद कइले बानी। मिस्टर पिकलिग्स साहेब 'प्राचीन भारतीय आ लिथुआनिन भाषा अउर संस्कृत से नियरा के सम्बन्ध' में, मिस्टर ए० एफ० गल्फेर्दिन 'स्लाव आ संस्कृतभाषा का आत्मीयता' में, मिस्टर ए० पो० मिकुत्सुकी 'संस्कृत धातुन आ शब्दन के स्लाविक से तुलना' में आ रूसी विज्ञान अकादमी के 'संस्कृत आ रूसी के समानता' आदि प्रकाशित ग्रन्थन में रूसी पर संस्कृत के ऋन घोषित कइल गइल बा। जर्मनी का एगारह विश्वविद्यालयन में भारतीय भाषा के अध्ययन-अध्यापन के व्यवस्था बा आ बतावल बा जे भारत देश के जुग जुग से जोगवल 'योग ग्यान' के शिक्षा बदे अनेक पाठशाला उहाँ चल रहल बा। अमेरिका के महान तत्वज्ञ मिस्टर विल्ड्यूरेस्ट साहेब स्वीकार कइले बानी जे भारत भुंइ हमहन के जाति के जन्मदात्री हई आ संस्कृत; यूरोपीय भषन के मूल। अनेक विद्वान लोगन के ई धारना बाकि अमेरिका के स्थापना सुर्यवंशीय राजा लोग कइले रहन। महाभारतो से अइसन प्रमान मिलत बा जे अमेरिका से अपना देश का वैवाहिक सम्बन्ध रहे। भारतीय साहित्य, भाषा, साहित्य कला धर्म आ विचार आदि मे विदेशी विद्वानन के बड़ी ललित लालसा देखे में आवति बा।

साइबिरिया आ मंगोलियो पर भारतीय संस्कृति के व्यापक प्रभाव बा। साइबिरिया का मंदिरन में महाकाल के स्तुति संस्कृत श्लोकन में अवहिओ होले। मंगोल लोग त घर का अगवासा भारतीय ढंग से स्वस्तिक चिन्ह, कलस, पद्म आ शंख-चक्र के चित्र उरेहे में विशेष रूचि राखेलनि। मंदिरन में देवमूर्त्तिन का सोझा घीव के दीप आ धूपवत्ती एहिजे मतिन जरावल जाला। मलय देश में पहिले राजभाषा संस्कृत रहे आ लिपि देवनागरी अउर उहाँ के शासन व्यवस्था के आधार मनुस्मृति बतावल बा। भारत अफ्रीका सम्बन्ध का विषय में यूरोपीय महिला सुश्री सारालैटन अफ्रीका का घनघोर जंगल में आ दल-दल क्षेत्रन में जाइ के पता लगवला का आधार पर कहले बाड़ी जे अफ्रीकी भाषा में संस्कृत के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुत शब्द पावल जाला आ उहां के निवासी लोगन के एगो देवता के रूप बहुत कुछ गोपाल कृष्ण से मिलत जुलत बा। ओए मूर्त्ति का सामने अफ्रीकी लोग हवन आ कीर्त्तन करेलन। श्री हुगो ओवर मीर एगो पुस्तक में उहाँ के देवता देवी लोगन के चित्र प्रकाशित करवले बाड़नि जवना में पुजारी का माथ के पगरी आ देंहि पर के चद्दर भारतीय आदर्श के प्रतीक बा। जर्मन विद्वान लोग भारत का आदर्शन के पश्चिम का फारस आदि देशन का माध्यम से यूरोप पहुँचला के चरचा कइले बाड़नि। अथर्व वेद से आयुर्वेद शास्त्र निकलल बा आ आयुर्वेद का 'चरक' ग्रन्थ से 'सरक' आ 'सुश्रुत' से 'सर्जन' के निरमान भइल बा। संसार में सर्व प्रथम चिकित्सा व्यवस्था के जन्म एही देश भारत में भइल जवना के आठ अंग बतावल बा। कुछ साल पहिले फ्रेडरिक विलियम टॉमस महोदय चीनी तुर्किस्तान से तिब्बती भाषा में हाथ के लिखल ग्रन्थ उपरिअवले रहीं जवना के इन्डिया आफिस पुस्तकालय लन्दन में राखल बा। एह ग्रन्थ के कथा वाल्मीकि रामायण आ गोस्वामी जी का राम चरित मानस से भिन्न बा लेकिन कुछ अंश में महाभारत के रामकथा (वनपर्व) अध्याय २७४–२९० से मिलत जुलत बा।

अभी हाल में डा० सुनीति कुमार चटर्जी इटली में सम्पन्न 'संस्कृत अध्ययन द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन' में भाग लिहला का बाद लवटि के कलकत्ता में बतवले रहीं जे 'रामायन' संस्कृत जगत के तीसरी महत्वपूर्न पुस्तक हटे जवना के विदेशी भाषा (इतालवी) में पूरा रूप में अनुवाद भइल बा। हमरा एगो पत्र का उत्तर में दिल्ली स्थित रूसी दूतावास का सूचना विभाग से बतावल गइल रहे जे सोवियत रूस में श्री ए० वारान्निकोव जी 'राम चरित मानस' के रूसी भाषा में अनुवाद कइले बानीं आ उजबेक अउर ताजिक भाषा में भी अनुवाद के काम चल रहल बा। भारत स्थित रूसी दूतावास के सूचना विभाग का पत्र दिनांक ४ जुलाई १९७३ से पता चलल जे श्री युरीत्सवेत्कोव नाम के विद्वान हाल में एगो पत्रकार सम्मेलन में कहले रहो जे:–"इफ यू वुड परमिट मी टू कम्पेयर तुलसीदास क्रियेटिव वर्क्स विथ द सोलर सिस्टम विथ रामायन इन इट्स सेन्टर, आइ वुड कम्पेयर द अदर ट्वेल्भ्स आफ हिज वर्क्स विथ द प्लैनेट्स रिवाल्विंग एराउन्ड इट" माने जो अपने सब हमें तुलसीदास का रचानात्मक साहित्य के तुलना सौर मंडलीय प्रक्रिया से करे के अनुमति दीं त हम कहबि जे रामायन (राम चरित मानस) अइसन केन्द्र स्थित बाटे जे अउर बारह ग्रन्थ नछत्रन अस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अगर कगर चक्कर काट रहल बाड़न। माननीय नैपाल नरेश आ भारतीय दूतावास, नैपाल से पत्राचार का सिलसिला में पता चलल जे नैपाल में गोस्वामी जी का राम चरित मानस के विशेष प्रधानता बा आ 'भानु भक्त रामायन' के भी आदर के स्थान बाटे।

कुछ लोग भ्रम वश इहो कह देले बाड़न जे भारतीय दर्शन पर ग्रीक के प्रभाव बाटे। मिस्टर थेल्से साहब के ग्रीक दर्शन के जनक मानल बा आ उहां के जनम भइल रहे एशिया माइनर का अरूमेनिया प्रदेश के साइलेट्स नगर में ६४० वर्ष ईसा पूर्व उहाँ से हजारन साल पहिलहीं भारतीय दर्शन पूरा पोढ़ हो चुकल रहे। मिस्टर ए०बी० कीथ साहब अपना 'द रेलिजन ऐन्ड फिलासफी आफ द वेद ऐन्ड उपनिषद्' के पन्ना साठ पर साफ लिखले बानीं जे ऋग्वेद का सूक्तन से भारतीय दार्शनिक विचारन के श्री गनेस भइल आ भारतीय दर्शन क्रमशः विकसित होखे लागल। गनित आ जोतिष आदि का बारे में भी मिस्टर वेबर, हीथ, थिबो, हिटनी आ कोलबुक आदि विदेशी विद्वान भारतीय दर्शन पर ग्रीक प्रभाव के धुहिया उड़वले बाड़न। मिस्टर वेबर साहब त रामायने पर ग्रीक के प्रभाव साबित कइ के ओरी के पानी बँड़ेरी चढ़ावे के प्रयास कइले बानीं। मिस्टर मैकडोनल्ड साहब अपना 'ए हिस्ट्री अफ संस्कृत लिटरेचर' में लिखले बानीं की 'वेबर्स एजम्पशन अफ ग्रीक इन्फ्लूएन्स इन द स्टोरी अफ द रामायन सीम्स टू लैक फाउन्डेशन फार द टेल अफ ऐब्डक्शन अफ सीता एन्ड द एक्सपोजिशन अफ लंका फार द रिकोवरी हैज नो रियल कारॉसपान्डेन्स विथ द रेप अफ हेलेना ऐन्ड द ट्रोजन वार, नार इज देयर एनी सफीसीएन्ट रीजन टू सपोज दैट द एकाउन्ट अफ राम विंग ए पावर फुल वो इन आर्डर टू वोन सीता वाज बॉरोड फ्राम द एडवेन्चर्स अफ यूलाइसिस स्टोरी अफ सिमिलर फिट्स अफ स्ट्रेन्थ फार ए लाइक अब्जेक्ट आर टू बी फाउन्ड इन द पोइट्री अफ अदर नेशन्स बिसाइड्स द ग्रीक ऐन्ड कूड इजिली हैव एरिजेन इनडीपेन्डेन्टली'। वाल्मीकि रामायन जहां एगो दैवी वरदान के सबल श्रोत बा उहाँ 'इलियड' बरसाती नाला। 'इलियड' के नायिका हेलेना जी हरन भइलो पर सदा सोहागिन बानी आ राग रंग में आनन्द विभोर। रामायन के नायिका सीता जी का सोझा बराबर ग्यानी, विज्ञानी, वीर, भक्त वत्सल, नीति-निपुन, मातापिता भक्त, मर्यादा पालक, अनुशासन प्रिय सत्य सरूप मानव भेष धारी के रूप आदि से अन्त तक रहि गइल बा। नाइयर साहब रामायन के रूपक मात्र मानि के लिखले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बानीं जे भगवान हइए नइखीं आ अपने सुधारक बनि के उहाँ का सत्तर साल का अवस्था में छबीस बरिस के जुवती मनीअम्मा से सगाई कर ले ले बानीं। वाह रे सूझ ! आ बलिहारी बा चरित्र के।

अपना देश आ विदेश में राम चरित मानस आ गोस्वामी जी पर लिखे वाला विद्वान लोगन के कमी नइखे। अपना किहाँ कुछ लोग मूल मानस का संगे-संगे टीका लिखले बाड़नि आ कुछ विद्वान लोग खाली टीके भरि लिखले बाड़नि। हम आ हमार के भावना खाली मानस के अक्षर आ शब्दे पर प्रभाव नइखे जमवले, बलुक प्रसंक तक पर भी पानी फेरि देले बा आ ओह अटपट अनुराग के अनुचित लाभ उठवले बाड़नि अनघा विद्वान। प्राचीन मानस संस्करन में स्व० बाबू रामदीन सिंह जी के खड्ग विलास प्रेस, पटना आ काशी नागरी प्रचारिणी सभा के इन्डियन प्रेस, इलाहाबाद से प्रकाशन आ नया में गीता प्रेस गोरखपुर के प्रकाशन उत्तम बाटे। डा० ग्रियर्सन साहेब का कठिन प्रयास से उपरावलि राजापुर वाली मानस प्रतिलिपि आ काशी नरेश किहाँ के रामायन के सातो काण्ड के नकल स्व० महाराज कुमार रामदीन सिंह जी सन् १८८९ में मूल रूप में प्रकाशित करवले रहीं, जवना में गोस्वामी जी का पत्रन आ टोडर-मल का पुत्रन में सम्पत्ति बँटवारा के चित्र बा। काशी नरेश का तरफ से रामायन पर जवन शोध आ खर्च कइल गइल, वे मिसाल बाटे। स्व० महाराज उदित नारायन सिंह का सचित्र रामायन तेयार करावे में ओह सस्ती का जुग में लगभग एक लाख साठ हजार रुपया लागल रहे, ऊ प्रति काशी में सुरक्षित बा। सब से पहिले मि० ग्राउस साहेब के सचित्र रामायन से अंग्रेजी में अनुवाद कइल कथा प्रकाशित भइल। खड्ग विलास प्रेस, पटना आ काशी नागरी प्रचारिणी सभा का प्रकाशनन में कुछ दोहा चौपाइन में अन्तर बा आ दूनो में गोस्वामी जी के जीवन चरित भी दोहल बा, वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई का संस्करन में त विशेष भिन्नता बा।

सन् १८७८ ई० में मुंशी रौशन लाल जी आगरा का नुरूल अंसार यन्त्रालय से आपन टीका प्रकाशित करवले बानीं, जवना में पं० रामबक्स पाण्डेय जी के विशेष योगदान बा। श्री कठजीभा स्वामी जी सं० १८९४ में 'मानस परिचर्चा' नामक टीका लिखलीं, जवना के काशी नरेश स्व० ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह जी विस्तार से लिखि के नाम रखले रहीं "मानस परिचर्चा परिशिष्ट"। एह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टीका में बगौरा जिला छपरा निवासी महात्मा हरिहर प्रसाद जी के योगदान बाद में मिलल आ नाम रखल गइल "मानस परिचार्चा परिशिष्ट प्रकाश", जवन सं० १९३५-४०, में आर्य यन्त्रालय, काशी आ लाइट प्रेस में मुद्रित भइल आ खड़ग विलास प्रेस, पटना से सन् १८९८ ई० में भी प्रकाशित भइल। बाबू शिवराम सिंह जी के "मानस तत्व प्रबोधिनी" सन् १८८६में खड़ग विलास प्रेस, पटना से आ महात्मा राम चरन दास के टीका "रामानन्द लहरी" सन् १८८३ ई० में श्री नवल किशोर प्रेस, लखनऊ से छपल बतावल बा। श्री जानकी दास जी के '-मानस परिचारिका" सन् १८८५ ई० में आ पंजाबी श्री संत सिंह जी के "मानस भाव प्रकाश" सं० १८७५ में छपल बा। मानस का टीकाकार लोगन में जिला गोरखपुर के सोनहुला ग्राम वासी पं० शिवलाल पाठक जी, मैनपुर निवासी मुंशी सुखदेव लाल, डेहवाँ मानपुर (बाराबंकी) निवासी श्री बैजनाथ दास, आगरा निवासी पं० रामेश्वर भट्ट, नदिरा (पटना) निवासी मुंशी गुरू सहाय लाल, रायबरेली निवासी संत हरिदास आ पं० राम गुलाम दूबे 'मिर्जापुरी' के आदर के स्थान बाटे।

मुरादाबाद निवासी पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र जी के सं० १९४८ में वेंकटेश्वर प्रेस से प्रकाशित "संजीवनी टीका" में क्षेपक के बड़ी बहुलता बाटे आ रींवा नरेश स्व० रघुराज सिंह देव कृत "भक्तमाला रामरसिकावली" के व्यापक प्रभाव बाटे मिश्र जी का टीका में पद्य वाली जीवनी में। अनधा छेपक का सड़मेड़ भइला से मिश्र जी के टीका, देवराज के फुलवारी का जगह पर बड़हन बन के रूप धारन कइले बा। पं० वंदन पाठक, श्री छोटे लाल जी, मुंशी छक्कन लाल जी, पं० सुधाकर द्विवेदी जी आ पं० राम कुमार जी के भी मजगर टीका मानस पर बा आ एह लोगन के साहित्य जगत में अधिक नाम आ यश मिलल बा। पं० सुधाकर दूबे आ बाबू रामदीन सिंह का चलते गोस्वामी जी का विषय में शोध बदे ग्रियर्सन साहेब के आपन एगो मरजादित पद हो गइल बाटे। मानस के टीकाकार लोगन के अतना अनघई बा जे ओह लोगन के जीवन चरित, आ शोध सम्बन्धी चर्चा कइला पर कई गा गोटगर ग्रन्थ तेयार हो जाई। स्व० सन्त खाकी बाबा का महर्षि विश्वामित्र आश्रम, बक्सर से हमें "मानस पीयूष" मिलल, बड़ा नेह से पढ़बो कइलीं आ ओह अनमोल ज्ञान भण्डार से बहुत कुछ पवलीं, बाकी मन मोताबिक ओह प्रसंगन पर कलम उठावे के आ गूढ़ तत्वन का बारे में कुछ लिखे के एह से साहस ना कइलीं जे आदरणीय श्री अंजनी शरण जी एह बदे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाथ हिला देले बानीं। श्री दीन जी, श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, श्री राज गोपाला चारी जी, श्री जय दयाल जी गोयन्दका आदि मानस मर्मज्ञ भगवान राम आ राम कथा पर पुरहर प्रकाश डलले बानीं।

श्री विन्दु जी, मेंहो जी, श्री सीता राम शरण जी डा० विश्वनाथ मिश्र, श्री जानकी जीवन शरण जी, पं० राम किंकर उपाध्या जी आ श्री मन्नारायण जी श्री हरिनाम दास जी, श्री पवन कुमार दास जी, श्री रामाधार शर्मा, श्री शंकर प्रसाद जी व्यास, श्री राम नारायन शुक्ल आ श्री राजेश मुहम्मद आदि विद्वानन पर भी माँ शारदा के बड़ी दया बाटे।

हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी के भूतपूर्व प्राचार्य श्री श्यामा चरन दे रामायन के सर्वप्रिय पुस्तक कहले बानी। अखिल भारतीय थियोसाफिकल सोसाइटी के भूतपूर्व उपाध्यक्ष का कथनानुसार गोस्वामी जी का मानस के अच्छा तरह से जानि लिहला के माने वा जे जानेवाली सब बातन के पुरहर जानकारी हो गईल। श्री राम बालक दास जी राम चरित मानस के संसारी जीवन बदे भगवान राम के अवतारे बतवले बानीं आ पूज्य पण्डित मदन मोहन मालवीय जी कहले बानीं जे एह विचित्र ग्रन्थ का गुनन के अवहीं तक संसार पूरा ना जानि पावल, एह से अनुपम सुख आ शान्ति मिली। श्री श्यामा प्रसाद मुकर्जी का विचार में 'मानस' दिव्य प्रेरना के सरस स्रोत बाटे आ स्व० राजेन्द्र प्रसाद जी कहले बानी कि सब शास्त्रन के मक्खन निकाल के गोस्वामी जी मानस का रूप में रख देले बानीं। महात्मा गांधी का नजर में 'रामायन' विद्वता से भरपूर भक्तिमार्ग के सर्वोत्तम ग्रन्थ बा आ स्व० डा० बी० पट्टाभिसीतारमैया के कहनाम बा कि तुलसीकृत रामायन आ ओह विषयक साहित्य का प्रचार से बढ़ि के आध्यात्मिक उत्थान बदे दोसर कवनो साधन नइखे। रामायन के अंग्रेजी अनुवादक मिस्टर ग्राउस साहब लिखले बानीं जे महल आ मड़ई में रहे वाला लोग समान रूप से रामायन के रस लेलनि आ भारतवर्ष का इतिहास में गोस्वामी जी के जवन महत्वपूर्ण स्थान बा ओह समानता में केहू नइखे आवत। रामायन का साहित्यिक सुन्दरता के छोड़िओ दीहल जाउ त भागलपुर से पंजाब तक आ हिमालय से नर्मदा तक सर्वजनीय स्वागत एह बात के सदेह प्रमान बा जे गोस्वामी जी अतिन कवि केहू भइबे ना कइल। श्री बेनो कवि जो लिखले बानीं:—

'बेदमत सोधि सोधि सोधि के पुरान सबै,
संत और असंतन को भेद को बतावतो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कपटी कुराही कूर कलि के कुचाली जीव,
कौन राम नामहू को चरचा चलावतो।
बेनी कवि कहै मानो मानो रे प्रतीत यह,
पाहन हिये में कौन प्रेम उपजावतो।
भारी भवसागर उतारतो कौन पार,
जो पै यह रामायन तुलसी न गावतो।"

गोस्वामी तुलसी दास जी का कला पर हरिऔध जी लिखले बानो:—

"बन राम रसायन की रसिका, रसना रसिकों की हुई सफला,
अवगाहन 'मानस' में करके जन मानस का मल सारा टला।
बनी पावन भाव की भूमि भली हुआ भावुक भावुकता का भला
कविता कर के तुलसी न लसे; कविता लसी पा तुलसी की कला।"

देश विदेश के महान लोगन का कहला से सदेहे झलकत बाटे जे 'राम चरित मानस' अइसन सब विधि बनल ऊँच आदर्श के महाकाव्य दुरलभ बा आ अपनहूँ देखला से जनात बाटे जे तबला, मृदंग आ ढोलक से लेइ के सारंगी, सितार आ इसराज का अलावे वंसी का मधुर तान से झाल के झंकारो पर मानस के पांती थिरकत बाड़िन। पढ़ल गुनल लोगन के बात छोड़ि दिहल जाय त अनपढ़ हरवाहो चरवाहन का मुँह से दियरो देहात में परतोख बदे दोहा चौपाइन के अनघा पाँती सुनालिन। मिस्टर एडविन ग्रीव्स साहेब लिखले बानी कि हिन्दी साहित्य के समृद्धशाली बनावे वाला लोगन में गोस्वामी जी के स्थान सर्वोपरि बाटे आ एह बात के ई सबल प्रमान बा कि समस्त हिन्दी साहित्य में अइसन कवनो पुस्तक नइखे जेकर प्रसार राज प्रासाद से दरिद्र नारायन का कुटिया तक होखे।

राम-काव्य अतना व्यापक बा जे एह में कवि बनल आसान बा। गोस्वामी जी त ई कहि के निमुकि गइली जे 'कवित विवेक एक नहिं मोरे' हम का कहि के निमुकबि, ई नइखे बुझात आ एही से गोस्वामी जी के उहे कथन दोहरावे के साहस जुटाइ के मन चरचा रूप में एह ग्रन्थ में विद्वान पाठक लोगन का सोझा राखल उचित समझलीं। मानस चतुःशती का अवसर पर 'मानस के मोती' नाम से राम बरनन ग्रन्थ लिखे के पहिलहीं से प्रारम्भ कइले रहीं आ एह ग्रन्थ बदे अनघा ग्रन्थ, पुस्तक, पत्र - पत्रिका के सामग्री निःसंकोच लिहलीं। रामायन आ मानस मर्मज्ञ लोगन का प्रवचन आ अयोध्या, प्रयाग, चित्रकूट आ काशी भ्रमन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का अलावे देश-विदेश के विद्वानन का पत्राचार से एह ग्रन्थ का तेयारी में भरपूर बल मिलल। एह ग्रन्थ में आपन गुन भा ग्यान इचिको भरि नइखे। ग्रन्थ के सफलता के श्रेय ओही विद्वानन के वा जेकर गुनल, रचल, कहल आ सुनल हम खाली दोहराइ भरि दीहलीं। हँ, जो कंचित केहू विद्वान पाठक का देखे में कुछ दोष जनाइ त ओकर भागी वानीं हम आ हमार अल्पज्ञता।

एह ग्रन्थ के सँवारे में प्रो० रामेश्वर नाथ तिवारी, महर्षि विश्वामित्र महाविद्यालय के प्राचार्य डा० जितराम पाठक, प्रो० शालिग्राम उपाध्याय, प्रो० हरिहर प्रसाद, डा० सिद्धनाथ तिवारी आ श्री चन्द्रशेखर मिश्र जी वाराणसी के सजहन सहजोग मिलल। एकरा बदे उहाँ सबन के हमार हार्दिक बधाई। अन्त में

"जगत गुरू भारत धन्य, धन्य कथाकारन के
धन्य भोजपुरी, धन्य भोजपुर धाम के।
राम का सनेहिन से पवलीं जे राम तत्व,
सादर समर्पित ई 'राम काव्य' राम के।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहत न प्रभु चित चूक किए की

संसार में सब धर्म के सार विद्वान आ संत लोगन का मतानुसार भगवत प्रेम बतावल गइल बा आ अपार ब्रह्म में निष्ठा कइला के परम विशिष्ट धर्म मानल गइल बा। भगवान शंकर अपना अनुभव से भगवत भजन के सत्य सार आ समस्त संसार के निःसार बतावत उमा जी से कहले बानीं जे 'उमा कहउँ मैं अनुभव अपना, सत हरि भजन जगत सब संपना' आ अइसने प्रेम भाव का महिमा से 'सिय वेषु सती जो कीन्ह तेहि अपराध शंकर परिहरीं'। भगवान राम के परीक्षा लेबे खातिर सती का जगत जननी सीता के रूप धारन कइला से भगवान शंकर का 'एहिं तन सतिहि भेंट मोहिं नाहीं' के व्रत लेबे के पड़ल। 'रूप रासि सब भाँति पुनीता' जानकी में भगवान शंकर का अपना माता आ स्वामिनी के दृढ़ निष्ठा रहे एह से 'जौं अब करउँ सती सन प्रीती, मिटइ भगति पथु होइ अनीती' के भय स्वाभाविक रहे आ एह में शंका के जगह नइखे जे 'बिनु अघ तजी सती असि नारी' में विश्वास सरूप भगवान शंकर के रामभक्ति के पराकाष्टा रहे। सती का 'कहि न जाई कछु हृदय-गलानी, मन महुँ रामहि सुमिरि सयानी' भगवान राम से विनय करे के परल जे 'छूटउ बेगि देह यह मोरी' आ 'होइ मरनु जेहि बिनहिं श्रम, दुसह विपत्ति बिहाइ।' अन्त में पुरुष प्रसिद्ध प्रकाश निधि प्रगट परावर नाथ' श्री राम का कृपा से संजोग जुटल आ हिमाचल का घरे सती के पार्वती रूप में दोसर जन्म भइल आ परम राम भक्त शंकर पति के प्राप्ति भइल।

देव समाज के आराध्य देव भगवान शंकर 'पनु करि रघुपति भगति देखाई' आ सही माने में 'असि पन तुम्ह बिनु करइ को आना, राम भगत समरथ भगवाना'। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के अवतार आ लीला का अलावे जस आ गुन के विस्तार से भगवान शंकर माता पार्वती के जवना रूप से सुनवले बानीं गोस्वामी तुलसी दास जी का शब्दन में 'कथा सो सकल लोक हितकारी' बा आ ओह कथा के 'कहत सुनत सभकर हित होई'।

महर्षि वाल्मीकि आ गोस्वामी तुलसी दास जी का अलावे अपना देश के आ अनघा विदेशी विद्वान आ विचारक एह भगवत प्रेम के आ 'मंगल भवन अमंगल हारी' मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के अपना रचना आ विचार के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय बड़वले बाड़नि। राम काव्य परम्परा रूपी विस्तृत वन में गोस्वामी तुलसी दास जी के राम चरित मानस एगो सजल सँवरल लमहर फुलवारी सरूप बा। राम काव्य के परम्परा अइसन विस्तृत वन आ राम चरित मानस अइसन सजल सँवरल लमहर फुलवारी के कुछ गनल गुथल फूल एह समीक्षा ग्रन्थ रूपी गुलदस्ता में पूज्य पिता डा० कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' जो का अर्चित प्रयास से जवना रूप में सजावल गइल, रउरा सोझा बा।

'विनय सील करुना गुन सागर' भगवान राम 'परमातमा ब्रह्म नर रूपा' त बड़ले बानी, उहां से सम्बन्धित काव्य का परम्परा में राम चरित मानस के चर्चा गूढ़ का संगे संगे गम्भीर गुनावट वाला विषय बा जवन अपने सब विद्वान आ 'मधुकर सरिस-सन्त गुनग्राही' लोग पढ़ले गुनले बानी। अनुकर कहल सुनल सँजोइ आ सँगेरि के रखला का अलावे एह ग्रन्थ में जवन कुछ गुनावट सरूप बा; रामकथा से सम्बन्धित एगो मानसिक विचारधारा बा एह से साहित्य प्रेमी आ विद्वान पढ़वइया लोगन का सोझा राखे में कवनो संकोच नइखे बुझात आ मन में भरोस एह बात के बा जे 'रहत न प्रभु चित चूक किए की'।

'अस को जीव जन्तु जग माँहीं, जेहि रघुनाथ प्रानप्रिय नाहीं' आ 'को रघुबीर सरिस संसारा, सील सनेह निबाहनिहारा'। एह आलोचनात्मक ग्रन्थ में अइसने 'व्यापकु एक ब्रह्मअविनासी' भगवान राम के कथा के चर्चा बा मातृभाषा भोजपुरी में आ एह कथ से रउरा जरूर सहमत होखबि जे— 'भाव अनूठो चाहिए भाषा कोउ होय।'

'राम कीन्ह चाहहिं सोइ होई' आ 'मैन प्रपोजेज गॉड डिस्पोजेज' का सिद्धान्त में विश्वास कइ के प्रूफ पढ़े के आ ओह में सुधार का संगे संगे ग्रन्थ का प्रकाशन के भार आपन करतब जानि के मातृभाषा भोजपुरी का प्रचार आ प्रसार में कार्यरत स्थानीय संस्था भोजपुरी साहित्य मण्डल का ओरि से अपना उपर लिहली। हमार हाल 'निज भ्रम नहिं समुझहिं अग्यानी' के बा एह से— ग्रन्थ के प्रूफ सम्बन्धी गलती खातिर आ भाषा आ साहित्य के कवनो जानकारी ना रहला का चलते एह निवेदन का गलती खातिर 'लरिका जानि छमबि अपराधू'। विश्वास बा जे भगवान राम का सनेही लोगन से पावल राम-तत्व के रस लेबि काहें जे "कृपा निधान सुजान सील सनेह जानत रावरो"।

बक्सर
३० अक्तूबर १९७५

घनश्याम मिश्र, एडवोकेट
विप्रकुटी, बक्सर, (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय-सूची

१. रचि महेस निज मानस राखा ... १
२. नाना भाँति राम अवतारा ... २
३. रामचन्द्र के चरित सुहाए ... ४
४. भाँति अनेक मुनीसन्ह गाए ... ७
५. महाभारत में राम बरनन ... १३
६. बौद्ध साहित्य में राम बरनन ... १७
७. जैन साहित्य में राम बरनन ... २३
८. जैनमत गुण भद्र शाखा ... २९
९. धार्मिक साहित्य के राम ... ३१
१०. पुराण में राम कथा ... ३५
११. भागवत पुराण में राम बरनन ... ३७
१२. रामायन सत कोटि अपारा ... ४२
१३. देश विदेशन में राम चरचा ... ४८
१४. वाल्मीकि तुलसी भये ... ७०
१५. वेदमत सोधि सोधि (क्वचिदन्यतोऽपि) ... ८०
१६. कवितावली ... ८०
१७. गीतावली ... ८५
१८. दोहावली ... ९९
१९. रामाज्ञा ... १०१
२०. रामलला नहछू ... १०२
२१. जानकी मंगल ... १०३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२२. पार्वती मंगल ... १०५
२३. वैराग्य संदीपिनी ... १०९
२४. विनय पत्रिका ... ११०
२५. श्रीकृष्ण गीतावली ... ११३
२६. नाना पुराण निगमागम (रामचरित मानस) ... ११५
२७. भाव भेद रस भेद अपारा ... १२१
२८. मानस मान सरोवर आ सरयू रूपक ... १३०
२९. बरनउँ रघुवर विमल जस (अयोध्या) ... १३४
३०. बैठे फटिक सिला पर सुन्दर (अरण्य) ... १४१
३१. अगे चले बहुरि रघुराया (किष्किन्धा) ... १४८
३२. राम काजु करि फिरि मैं आवौं (सुन्दर) ... १५३
३३. सिन्धु पार प्रभु डेरा कीन्हा (लंका) ... १५७
३४. रहेउ एक दिन अवधि अधारा (उत्तर) ... १६२
३५. ब्रह्म राम तें नाम बड़ ... १६६
३६. परम विचित्र एक ते एका ... १७०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राम काव्य-परम्परा में मानस

रचि महेस निज मानस राखा

श्रद्धा सरूप शक्ति आ विश्वास रूप भगवान शंकर के 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्'-मय मानसरोवर में राम चरित उगल। जगत कल्यान खातिर शक्ति आ शक्तिमान, श्रद्धा आ विश्वास, शिवा आ शिव, दुइ रूप धारन कइ के ओहि अनुपम 'उरअन्त-रामृत' के अपना मानस से प्रगट कइलीं। एही प्रसंग में गोस्वामी तुलसीदास जी, महर्षि वाल्मीकि वोगैरह का आधार पर 'नाना पुराण निगमागम' का साथ सरल आ सुबोध भाषा में दइत्री वरदान सरूप 'राम चरित मानस' रचनी। रचना के प्रसंग में गोस्वामी जी खिखले बानी :—

रचि महेस निज मानस राखा, पाइ सुसमउ सिवा सन भाखा।
सो सब हेतु कहब मैं गाई, कथां प्रसंग विचित्र बनाई।
कथा अलौकिक सुनहिं जे ग्यानी, नाहिं आचरजु करहिं असजानी।
राम कथा कै मिति जग नाहीं, असि प्रतीति तिन्हके मन माहीं।

रामजी के अवतार अनेक विधि, अनेक सुयोग से भइल बा। राम कथा श्री रामजी नियन अपार बा।

नाना भांति राम अवतारा, रामायन सत कोटि अपारा।
कलप भेद हरि चरित सुहाए, भांति अनेक मुनीसन्ह गाए।
राम जनम के हेतु अनेका परम विचित्र एक तें एका।
कलप कलप प्रति प्रभु अवतरहीं, चारु चरित नाना बिधि करहीं।
हरि अनंत हरि कथा अनंता, कहहिं सुनहिं बहु विधि सब सता।
रामचन्द्र के चरित सुहाए, कलप कोटि लगि जाहिं न गाए।

श्रीरामजी अनन्त हईं। उहाँ के कथा अपार बा। अनेक कल्प में अनेक हेतु से उहाँ के अवतार भइल बा। संत लोग अनेक विधि से राम कथा गवले बा। वाल्मीकि रामायण आ अनेक निगम-आगम में राम कथा के मजगर बरनन भइल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाना भाँति राम अवतारा

वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड में रामावतार के रुचिगर बरनन बा। राक्षसी उत्पात से त्रस्त होइ के देवता आ ऋषि लोग त्रान खातिर ब्रह्माजी किहाँ गइलीं। ब्रह्मा जी उहाँ सबके तोख दिहलीं। ओहीं घरी भगवान विष्णु का प्रगट भइला के प्रसंग बा :

"एतस्मिनन्तरे विष्णु रूप यातो महाद्युतिः,
शख चक्र गदा पाणिः पीतवास्त जगत्पति।
वैनतेय समारुह्य भास्करोस्तोयद यथा,
तप्त हाटक केयूरो वन्द्यमान सुरोत्तमै।

देवता लोगन का निहोरा पर भगवाग कहले बानी जे हम महाराज दशरथ किहाँ अवतार लेवे के स्वीकार कइ लिहलीं। अवतार लेके हम ओह अततायी असुर लोगन के बिनास करब आ मानव रूप में एगारह हजार साल तक मानुस लोक में बिचरन करबि। आनन्द रामायण का सर्ग ७ में प्रसंग बा कि—

'पुनः पुनः कल्प भेदाज्जातः श्री राघवश्यच,
अवतारः कोटिशःऽअत्र तेपु भेदः क्वचिन्क्वचित्।'

माने जे भिन्न-भिन्न कल्प में काटिन्ह रामावतार भइल बा आ एह असंख अवतारन का कारन राम चरित में भिन्नता आइलि बा।

आकाश में परमाणु रूप से जल, बदरी बनि के जमेला, फेरु बूनी आ बर्फ बनि के बरिसेला। तबना का बाद पहिलका रूप में जल के 'जले' हो जाला। एगो अक्षय जलाशय रूप ब्रह्म से पूर्णावतार, अंशावतार, युगावतार, कल्पावतार, गुणावतार, आ आवेशावतार वगैरह अनेकन्ह स्रोत उमड़त रहेला। ब्रह्म के निराकार से साकार भइला के माने 'अवतार' कहल जाला।

विश्वामित्र जी यज्ञ रक्षा खातिर भगवान राम आ लखन लाल जी के माँगे महाराज दशरथ किहां अयोध्या गइलीं। महाराज का प्रान तक देवे में कवनो अटक ना रहे, बाकी प्रानों से प्रिय रघुनाथ जी के देह के उहाँ का अनाथ ना होखे के चाहत रहीं। एह प्रसंग में अध्यात्म रामायण में पुरोहित वशिष्ट मुनि उहां से कहले बानी जे रामचन्द्र जी मानव ना, साक्षात् परमात्मा हईं। पूर्वकाल में ब्रह्मा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जी प्रार्थना कइले रहीं जवना से इहां का धरती के भार उतारे खातिर अवतार लेले बानी।

भागवत में लिखल बा कि 'धर्मावनायोरुकृतावतारो', माने धर्म के हानि भइला पर भगवान के अवतार होला। 'गीता' में भगवान कृष्ण के कथ बा जे जब-जब धर्म के हानि होला, हम अवतार लेइ के धर्म के उत्थान करीं ला। गोस्वामी जी एहि प्रसंग के विधिवत बरनन देले बानी—

जब जब होइ धरम कै हानी, बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी।
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी, सीदहिं विप्र धेनु सुर धरनी।
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा, हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।
असुर मारि थापहिं सुरन्ह, राखहिं निज श्रुति सेतु।
जग विस्तारहिं बिसद जस, राम जन्म कर हेतु॥

संत तुलसीदास जी चार कल्पन का रामावतार के कारन चार ठहर हिगराइ के बतला देले बानी। पहिलका ऋषि स्राप से जय आ विजय का रावन आ कुम्भकरण भइला पर, दोसरका जलंधर का रावण भइला पर, तिसरका नारद जी का स्राप से हरके गन लोग का रावण आ कुम्भकरन भइला पर आ चउथा स्वयम्भू मनु के तप आ भानु प्रताप का रावण भइला पर रामावतार होत आइल बा। धर्म के हानि भइला पर, असुर, अधम आ अभिमानी के बढ़न्ती भइला पर रामावतार होला।

धर्म एह पर विचार कइल जरूरी हो जात बा। शब्दकोश में लिखल बा कि कवनो पदारथ भा आदमी में रहे वाली मूल वृत्ति के नाम धर्म हटे। अमरकोश में त बहुत व्यापक अर्थ बतलावल बा धर्म के। भागवत में लिखल बा जे वेद-वचन धर्म आ ओह से बाँव-दहिन अधर्म हटे। वेद के कथ बा जे धर्म से सुख मिलेला। मनु महाराज लिखले बानी जे चारू वेदे धर्म के मूल हटे। महर्षि कणाद के कथ बा कि जेकरा से एह लोक में उत्थान आ परलोक में कल्यान (मोक्ष) होला ऊ धर्म हटे।

धर्म सत्य से उपजेला, दया आ दान से पसरेला, क्षमा में बास करेला आ क्रोधादि परपंच से हटि जाला दूर, बहुत दूर। भागवत में भगवान के कथ बा कि तप, दया, पवित्रता आ सत्य, ई चार पाँव वाला धर्म, हम भगवान हईं। शास्त्रकार लोग धर्म के बहुत व्यापक बतवले बा। व्याकरण का मतानुसार 'धृञ' धारणे धातु का आगा 'मन' प्रत्यय लगवला से धर्म शब्द बनल बा। धर्म शब्द के उत्पत्ति 'धृयते लोकाः अनेन इति धर्मः' माने लोक धारण जेकरा से कइल जाय, ऊ धर्म कहावेला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामचन्द्र के चरित सुहाये

वैदिके युग से रामोचरित चलि आवत बा। वेद पूर्ण ईश्वरीय ज्ञान ह। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद आ अथर्व—चार वेदन के 'वेदत्रयी' नाम पर कुछ लोग शंका कइले बा कि चार का जगह पर तिनिए काहें कहाइल ? वेदत्रयी के माने बा ग्यान, उपासना आ कर्म आ एही तीनों के प्रधानता वेद में भइला का चलते 'वेद-त्रयी' के संज्ञा चारू वेद के दीहल बा। त्रेता युग में मानुस के साधन, तप आ ध्यान से यज्ञ का ओर ओरमल, तब यज्ञ कार्य का सुविधा खातिर वेद के चार भाग में बाँट दीहल गइल। वेद मंत्रन के (श्रुति माने सुनल), सुनला का बाद ऋषि लोग स्मरण कइके जवन लिखलीं सेकरे नाम स्मृति रहे। वेद का मंत्र भाग के संहिता कहल बा। संहिता के माने होला समीपता। ऋषि लोग अपना शिष्य लोगन के सुविधानुसार वेद के अपना ढंग के छंदादि ढाँचन में ढारि के पढ़ावत रहे। एही से वैदिक शाखा के ठेकान नइखे। शाखा का बारे में कई तरह के मत बा, जवना पर शोध जरूरी बा। ऋग्वेद के एकइस, यजु के एक सौ, साम के एक हजार आ अथर्व के नौ शाखा बा। माने, सब मिल के एक हजार एक सौ तीस शाखा के बरनन बा। वेद भाष्यकार श्री महीधर जी के कथ बा कि ऋषि लोग वेद के कई शाखा बनवले। तबो छन्द आ अर्थ में कवनो अन्तर ना आइल।

चारु वेदन में पहिला स्थान बा ऋग्वेद के, जवना में महाराज इक्ष्वाकु, राजा दशरथ आ राजा राम के बरनन आइल बा। दाशरथी राम, परशुराम आ बलराम के बरनन चलल बाटे रामायण आ महाभारत से। प्राचीन भारतीय साहित्य भंडार का बिनाश आ लूट के बड़ी दुखद कहानी बा, जवन सबका मालूम बा। जे धुंधकारी लोग ग्रन्थन के होली जलवलन, ऊ मानव समाज के घाती रहन। ओह ग्रन्थागारन में मानुस जाति का कल्यान खातिर, एक ना, बलुक अनेक अनमोल पदारथ सँचल रहे, जवना के आग महिनवन ना बुताइलि।

संसार के ग्यान राशि आ आत्मा के अमर प्रकाश के साहित्य कहल गइल बा। जे लोग प्राचीन भारतीय साहित्य के लूट, सहोथ आ चुंगिलाइ-फुसिलाइ के ले भगलन, ऊ अपना राष्ट्र खातिर निजगुत लाभ पहुँचवलन। (आ घुमा फिरा के दोसरो देसन का बल मिलल) पच्छिम देस के लोग रेल, मोटर, विमान आ राकेट (लुत्त का) वोगैरह के निरमाता अपना के अनेरे मान लेले बाड़न। भारत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देस में ओह यन्त्रन के बहुत पहिलहीं से सबल साहित्य का अलावे कुछ चिन्हो बा। भारतीय ग्रन्थन में विमान वगैरह के बरनन उहाँ सबन खातिर पहिले गपोड़ रहे। बाद में भारतीय शास्त्रन से बीनि-बराइ के ऊहाँ सब साँचा बना के ढारत जा रहल बानी ढाँचा में अंधाधुंध।

ऋग्वेद संहिता भाषा भाष्य में चतुर्वेद भाष्यकार पं० जयदेवशर्मा जी विद्युद्रथ (बिजली रथ), अनश्व रथ (बे घोड़ा के रथ), त्रिचक्र रथ (तीन चकिया रथ) वगैरह के व्यापक बरनन देले बानी (देखीं ऋग्वेद १-१२०-१०)। लिखल बा कि 'शक्तिशाली लोगन का एने ओने जाए वाला बिना घोड़ा वाला रथ बा, ओहू से हम बहुत चमकी ला।'

विमान वोगैरह का बारे में भारतीय पूर्वज जे जे वैग्यानिक साधन उपरजले रहीं उहाँ तक पहुँचे में अभी संसार का ढेर दिन दउरत रहे के परी। बड़ौदा राज्य पुस्तकालय में के भारद्वाज मुनि के हस्तलिखित ग्रन्थ 'यन्त्र सर्वस्व' एह बात के सदेह प्रमान बा। ओह ग्रंथ के वैमानिक प्रकरण श्री बोधानन्दजी के बनावलि वृति का साथ छपिओ चुकल बा। पहिलका प्रकरण में विग्यान विषयक पचीस ग्रन्थन के सूची दिहल बाटे। 'यंत्र सर्वस्व' का बारे में लिखल बा जे वेद रूप समुद्र के मंथन कइ के भरद्वाज मुनि 'यन्त्र सर्वस्व' सरूप मक्खन उपरजलीं। ओह ग्रन्थ में विमान चालक का विमान चलावे के बत्तीस विधि के विधिवत बरनन बा।

रावण रथ का बारे में वाल्मीकि रामायण में चरचा बा जे रावण का पास सहस्र रन से युक्त मेघ मतिन गरजन करे वाला रथ रहे। अरण्य कांड का श्लोक ३१ से पता बाटे कि कैलास पर्वत जाइ के, उहाँ के सवारी लेइ के जाए वाला पुष्पक विमान के ले अइलीं। श्लोक ३१ का आगा श्लोक ४८ देखल जाय :—

'यस्य तत्पुष्पकं नाम विमानं कामग शुभम्।
वीर्यादा वर्जितं भद्रे, येन यामि विहाय सम्।'

रावण कहले बाड़न—'हे सीता! सुन्दर पुष्पक विमान विश्वेश्रवा के रहे, जवन हम बल से जीत के ले आइल बानी। एही से आकाश में जाई ला। गोस्वामी जी का उत्तर कांड में भगवान राम के स्वचालित पुष्पक विमान के बरनन देखीं—

उतरि कहेउ प्रभु पुष्पकहिं, तुम्ह कुबेर पहिं जाहु।
प्रेरित राम चलेउ सो हरषु बिरहु अति ताहु॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगवान राम विमान से उतर के स्वचालित विमाने से कुबेर का पास जाए के कहलीं। बिना चालक के यन्त्र उड़ला पर बड़ा अभीभो जनात वा आ हमन चिलाए लागत बानी ओह कला पर, बाकी मृगा मतिन घास गमकत फिरला का बदले अपनो पर निगाह डाले के लत लागित त बहुत कुछ भेंटाइत।

अवतार आ कल्प भेद से भगवान राम, रामायण भा वाल्मीकि मुनि वोगैरह में कवनो शंका-संदेह के जगह नइखे। कुछ विदेशी विद्वान आ ओह लोगन के 'दादा के खस्टी' रटे वाला कुछ भारतवासी लोगन के अनेकन भेद आ शंका भरल तर्क बा। रामावतार मतिन वाल्मीकि अवतार भा वाल्मीकि मुनि से संत तुलसीदास 'वाल्मीकि तुलसी भयो' भारतवासिन खातिर कवनो चिहाए वाली बात नइखे। जेकरा जगत कल्यान के भावना रहे सात्विक खोज कइल आ जेकरा जनता के कुकुर आ मुर्गा मतिन लड़ाइ के शासन करे के भावना रहे, सब कुछ कहि आ कइ घललन। ऊ लोग ईहो कह देवे में ना लजइलन जे आर्य लोग दखिन भारत पर प्रभाव जमावे खातिर कई राह ढुंढलन, जवना में रामायनो अस पवित्र थाती पर छिटिका डाल दिहल गइल। कुछ विद्वान लोग वाल्मीकि कृत आदि रामायण का कांड (२–६) आ प्रचलित वाल्मीकि रामायण का कांड (१–७) के प्रसंग पर वाल्मीकि रामायण का रचना काल में महान अन्तर बतवले बाड़न। उन्हन लोग का अवतार आ कल्प-भेद भा नोचा-चोथी में ग्रन्थन का खंडितो भइला से कवनो मतलब नइखे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाँति अनेक मुनीसन्ह गाये

वाल्मीकिए रामायण के रामायणन के आधार कहल उचित बा। कुछ विद्वानन का मतानुसार रामायण पहिले गाथा का रूप में रहे आ बाद में पुस्तक रूप दिहल गइल। जे 'अष्टविंशति मे युगे' का मरम पर सोची, सेकरा रामायण का प्राचीनता में भरम होइबे ना करी। रामायण का रचना काल में देश-विदेश के कई विद्वान् अपना-अपना ढंग पे छान-बीन कइले बाड़न। कुछ विदेशी विद्वान लोगन के विचार अइसे बा : —

विद्वान	रचना	समय
सर विलियम जोन्स	गो० तुलसीदास, स्व० शिवनन्दनसहाय	२०२४ श०ई०पू०
मि० गोरेसियो	जर्मन ओ० जर्नल रामायण भाग-१०	१२ ,,
मि० श्लोगेल	,, ,, भाग- ३	११ ,,
मि० टॉड	गो० तुलसीदास, स्व० शिवनन्दनसहाय	११ ,,
मि० वेनूली	,, ,,	९५० ,,
मि० एच०याकोबी	डस रामायण पन्ना–१०	५ ,,
मि०सी०वी० वैद्य	द रिड्ल अफ द रामायण पन्ना–२०-५१	२ ,,
मि० विन्टर नित्स	हिस्ट्री इन्डियन लिटरेचर भाग–१	१ ,,

मि० गोरेसियो साहब के कथ बा कि रामचन्द्र से श्री विक्रमादित्य का सुमित्र तर्कं छप्पन राजा भइल बाड़न। एगो अंदाज से हर राजा के राजकाल चौबीस साल मानल जाय त तेरह सौ साल ई० पूर्व हो जात बा। गोरेसियो साहब रामायन बरनन राज तरंगिनी में बतवले बाड़न। काश्मीर नरेश के रामायन सुनला से कोढ़ दोष निवारण प्रसंग ओहमें आइल बा। दूसरा दामोदर, तीसरा गोनर्द से, जेकर समय राज तरंगिनी के अनुवादक मि० ट्रायर ११८० शा० ई० पूर्व कहले बाड़न, जे पाँच पीढ़ी ऊपर रहे। हर राजा के राजकाल २४ साल मान लेला पर रामायण के रचनाकाल तेरह सौ साल तुल जात बाटे।

मि० ए० मैकडोनल्ड, रामायण के बौद्ध धर्म से पहिले के बतवले बाड़न। ई बरनन संस्कृत लिटरेचर लन्दन (सन् १९२८) के पन्ना तीन सौ पर बा। मि० जी० टी० ह्वीलर आ डा० बेबर का संगे-संगे कीथ साहब का मतानुसार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामायन पर बौद्ध आ यूनान के छाप बा। कुछ विद्वान एह दोविधा में पड़ल बाड़न जे मेगास्थनीज का 'भारत वृत्तान्त' में रामायण के कवनो चरचे नइखे। रामायण में यवन शब्द आइलो से केहू-केहू ई सोच लेले बा कि रामायण के रचना ओतना पुरान ना होखी।

एह पर मि० गोरेसियो साहेब के विचार बा जे यूनानी लेखक लोग भारत के जलवायु, उपज, पहिरन, रीति-रसम, नदी, प्रदेश आ पहाड़, ओहाड़ के बरनन कइले बाड़न। फाहियान खाली बौद्धमठ, विहार, नियमन, भिक्षुक आ गाया ओथा तक बरनन कइले बाड़न। मेगास्थनीज का भारत वृत्तान्त का विषय में गोरेसियो साहब खुलि के कह देले बाड़न जे उनकर लिखल कवनो ग्रन्थे नइखे। कई लेखक लोग मेगास्थनीज का ग्रन्थन से जे नोट लिहल उहे जवराइ के मि० स्वानवेक साहेब एगो संकलन कइले, जवन आगे चलि के बन गइल मेगास्थनीज के 'भारत-वृत्तांत'। रामायन का यवन शब्द के छिटिका मि० श्लोगेल साहब मिटा देले बाड़न। उनुकर कथ बा कि 'यवन' शब्द पहिले भारत का पच्छिम प्रदेशन का जातिन खातिर बोलल जात रहे आ बाद में ऊहे शब्द यूनानिओ खातिर प्रयोग होखे लागल। एह से यूनानी के रामायण पर छाप भा प्रभाव मानल अनेर बा।

प्रचलित वाल्मीकि रामायण के तीन पाठ हो गइल बा पहिला—'दखिनी पाठ गुजराती प्रेस आ निर्णय सागर प्रेस बम्बई, दोसरका 'गौड़ीय पाठ' गौरेसियो (पेरिस) आ कलकत्ता संस्कृत सीरीज आ तीसरा 'पच्छिमोत्तरी पाठ' दयानन्द महाविद्यालय, लाहौर के संस्करण। गौड़ीय आ पच्छिमोत्तर पाठन में विशेष तालमेल त बा, बाकी प्रधानता बा दक्खिनिए पाठ के। वाल्मीकि रामायण का तीन पाठ भेदन के गुटमुटारे रूप इहां दिहल जात बा।

बालकांड—दक्खिनी पाठ का बालकांड में राम जन्म के तिथि आ रासिन के संगम के जे चरचा बा, गोरेसियो आ पच्छिमोत्तरी पाठन में नइखे। हरि के पुत्र रूप में पावे खातिर कश्यप ऋषि के तप, जह्नु ऋषि का गंगा पी गइला के प्रसंग, विष्णु भगवान का मोहिनी रूप धइ के अमृत छिपावल आ विष्णु का कूर्मावतार के चरचा खाली दखिनी पाठ में बा। भगवान शंकर जी आ उमा विवाह के प्रसंग एह पाठ का अलावे पच्छिमोत्तरियो पाठ में बाटे जवना के गौड़ीय पाठ में बरनन नइखे आइल।

अयोध्या—केकयी पिता से माता के त्याग, सर्ग सैंतालिस में भिनसहरा राम के ना देखि के अयोध्या वासिन के विलाप आ रामलखन अउर सीता जी से वाल्मीकि मुनि के भेंट खाली दक्खिनिए पाठ में बा। ९८ सर्ग का प्रसंग के गौड़ीय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाठ में बरनन नइखे आ सर्ग १०९ के पच्छिमोत्तरी पाठ में। केकयी का विद्या बल अरजन आ राजा दशरथ के बँचवला के बरनन खाली पच्छिमोत्तरी पाठ में दिहल बा। गौड़ीय आ पच्छिमोत्तरी पाठन में केकयी के एगो ब्राह्मण के स्राप बा, जवना का चलते ऊ मंथरा पर विश्वास कइले रही।

अरण्य—रावण किहां अकंपन से खरबुद्ध के संवाद, सीता जी का सुन्दरता के बरनन, रावण के मारीच से मदद माँगल, सीताहरण खातिर मारीच के नाकुर नुकुर, राम के पवरुख बरणन, आ लखनलाल जी से अयोमुखी राक्षस बध खाली दखिनिए पाठ में बाटे। एकरा अलावे खर वद्ध के हाल दोसरका आ तिसरका पाठन में सूपनेखा सुनवले बाड़ी। सीता वियोग में राम के पशु आ पेड़ से पूछ-ताछ गौड़ीय पाठ में नइखे।

किष्किन्धा—भगवान राम से हनुमान जी के खांटी भाषा आ व्याकरण बरनन, सर्ग २४ में बालि बध पर सुग्रीव के पछतावा आ तारा के भगवान राम से तोख बोध, खोनसइला लखनलाल जी के शान्त करे खातिर सुग्रीव के तारा जी के भेजल, तारा-लखन लाल संवाद भा प्रस्रवण गिरि के प्रसंग खाली दखिनिए पाठ में पावल जाला। हनुमान जी के तारा के तोख आ सर्ग ३९ के बानरी सेना के आगम पहिला पाठ का अलावे गौड़ियो पाठ में त बाटे, बाकी पच्छिमोत्तरी पाठ में ई प्रसंग नइखे। सम्पाती अपना पुत्र सुपार्श्व के बोलवले बाड़न अंगद जी के पोठ पर चढ़ा के समुद्र पार ले जाए खातिर आ केसरी से घवल बंध, जेकरा खातिर उनुका पवन पुत्र हनुमान जी मिलल रहीं, एह दूनो प्रसंगन के बरनन खाली दूसरे आ तोसरे पाठन में दीहल बाटे।

सुन्दर—हनुमान जी के लंका में पइठत समय लंका देवी से युद्ध आ हनुमान जी से चैत्य प्रसाद विधंस के विवरन खाली पहिले पाठ में आइल बा। पहिला पाठ, सर्ग २३ में सीता जी से साँइ-फुस करेवाली राक्षसी लोगन के मूचो दीहल बा, तवन पच्छिमोत्तरी पाठ का सर्ग १८ में आइल बाटे, बाकी गौड़ीय पाठ में एह के कवनो चरचा नइखे। अशोक बन में पइठे का बेरि हनुमान जी देव स्तुति कइले बानी, तवनो तीसरा पाठ में नइखे दीहल। हँ, गौड़ीय पाठ का सर्ग ५२ आ पच्छिमोत्तरी पाठ का सर्ग ५१ के 'सरमा वाक्य' नाम के सर्ग पहिलको पाठ में नइखे आइल।

लंका—एह कांड के पहिला पाठ में रावण वाली दोसरकी सभा के घटना बरनन कुछ पच्छिमोत्तरी पाठ में त मिलत बा, बाकी गौड़ीय में नामो तक नइखे। गुप्तचर शार्दूल आ शुक के प्रसंग त खाली दखिनिए पाठ में आइल बा। ब्रह्मास्त्र से द्रुमकुल्य-विनाश बरनन पच्छिमोत्तरी पाठ में आइल बा आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गौड़ीय में एकर कवनो नाम निसान नइखे। युद्ध का पहिले लंका में असगुन, सुग्रीव रावण भिड़न्त, अंगद वज्रदंष्ट्र युद्ध, रावण का विरुद्ध अनारणय, वेदवती, उमा, नंदीश्वर, रंभा आ पुन्जिकस्थला का स्रापन के बरनन, अगस्त जी के भगवान राम से आदित्य-हृदय सिखावल, सेतुबंध पर शिव प्रतिष्ठा के निर्देश, सीता जी का अनुरोध पर किष्किंधा में वानरन के पुष्पक में साथ लिहल प्रसंग खाली दक्खिनिए पाठ में आइल बा।

पहिला माने दक्खिनी पाठ में महर्षि भृगु से विष्णु के स्राप सीता-त्याग के कारण बतावल बा। कई विद्वानन के मतानुसार प्रचलित वाल्मीकि के उत्तर कांड पाछे से रचल आ मिलावल गइल।

वाल्मीकि रामायण से कुछ विदेशी ग्रन्थन के तुलना करे के प्रयास कुछ विद्वान कइले बाड़न। देश-विदेश का कहवइया लोग में आपन आ अपना किहां का ढंग का चलते अनघा उतार-चढ़ाव हो गइल बा। जे लोग पतिव्रता शक्ति सीता का प्रबल प्रताप से प्रभावित बा, ओह लोगन का कल्प आ अवतार भेद से सीता के भिन्न-भिन्न रूप स्वीकार करे में त कवनो खास संकोच नइखे, बाकी चरित्र में दाग लगावल सपनो में सहल ना जाई। हैमिल्टन साहब के कथ बा कि जलवायु का अलावे घटना आ रहनो-सहन के छाप ढेर ना त थोर आ सोझ ना त घुमाइयो फिराइ के जरूरे परेला।

यूरोप में शेक्सपियरो साहेब के स्थान भारत विभूति श्री कालिए दास अस बाटे, बाकी तप, तपोवन, आश्रम पवित्रता अउरी नदी का पवित्र पानी के जे निखरल पानी बा शकुन्तला पर, से शेक्सपीयर साहेब का लेडी मैकबेथ पर नइखे। शेक्सपीयर साहब का 'टेम्पेस्ट' के नायिका 'मिरांडा' में सबलता त शकुन्तले अस बाटे, बाकी उनुका में बा हमिता के हुँकार आ शकन्तुला में बा करतब भरल मंगलमय कामना के कल्याणकारी सोत। दोसरा देसन से भारतीय चरित्र का मिलान पर ध्यान से सोचे के पड़ी। विदेशी महान विद्वान मिस्टर होमर साहेब 'इलियड' महाकाव्य लिखले बानी आ भारत के महान विद्वान महर्षि वाल्मीकि जी 'रामायन'। दूनो महाकाव्यन का कथा में एके पेड़ का दुइ कंछी अस लगाव बा, जइसे एकही कलम से दूनो काव्यन के लगातारे लिख दिहल होखे। कथा में त अइसन मिलान बा आ पात्रन का चरित्र में एह पार ओह पार के अपार अन्तर हो गइल बाटे।

बाल्मीकि रामायण में भगवान राम के पत्नी बानी सीता जी आ इलियड में मैनालास महोदय के स्त्री बानी हेलेना जी। एनं लंकापति से हरण भइल बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सीता जी के आ ओने पेरिस से हेलेना जी के। भगवान राम का दल से लंकादहन होइ के सीता जी के उद्धार भइल बा आ ओने कचवावद्ध युद्ध का बाद पेरिस के परास्त कइ के मैनलासो महोदय हेलेना जी के उद्धार कइले बानी। उड़त निगाह से देखला पर त दूनो पलरा सवतुके तुलत बा, बाकी आगा के हाल ? आगा के हाल बड़ही विचित्र बा ! हरण का बाद सीता जी का सामने लंकापति रावण के साम, दाम, दण्ड आ विभेद पानी का बुल्ला अस पटापट बुतात गइल बा। रावण का रानिन के सुमेर के प्रस्ताव से उत्तम बा सीता जी खातिर दहकत अंगार के अभिलाख। गोस्वामी जी एह प्रसंग पर लिखले बानीं :

कह सीता विधि भा प्रतिकूला, मिलहिं न पावक मिटहिं न सूला।
देखियत प्रगट गगन अंगारा, अवनि न आवत एकउ तारा।
पावक मय ससि श्रवत न आगी, मानहु मोहि जानि हत भागी।
सुनहुँ विनय मम विटप असोका, सत्य नाम करु हरु मम सोका।
नूतन किसलय अनल समाना, देहि अगिन जनि करहिं निदाना।

अशोक का कोमल पत्तन से अंगार लेइ के शोक का साथ सीता जी उतारू बानी अपना शोकयुक्त शरीर के अंत कइ घाले पर आ हेलेना जी ? उहाँ का घरहीं अस ओहिजो के विधि व्यवहार। इलियड आ रामायण महाकाव्यन का बीच के ई अंश एके कंछी में एगो अमृत अस आम के फल बा आ दोसरका अमरस अस खटतूरस हो गइल बा। नीक आ बाउर रहेला नियरो पास, बाकी जहां अनघइ होले तवन त जरूर कहाइए के रही।

आदि कवि वाल्मीकि के वाल्मीकि कृत रामायणो से सम्बन्ध का बारे में विदेशी विद्वानन का अलावे अपनो देश के कुछ विद्वान लोग बड़ा बिहड़ा परि गइल बानी। अपना ढंग से उहाँ सब गुनावट कइले बानी जे रामायण के रचना काल से बहुत पहिलहीं आदि कवि होइ के गुजर गइल बानीं आ फेर त्रेता जुग में कइसे आ कहां से आ गइल बानी ! महाभारत के वाल्मीकि प्रसंग से उहां सब अवरु अथाहा आ दबोरे वाला चकोह मे चिहाइ उठल बानी। वाल्मीकि दक्खिनी पाठ में लिखल बा कि—

'इति सीतांच रामश्च लक्ष्मणस्य कृतांजलि,
अभिगम्याश्रम सर्वे वाल्मीकिभिवादनम् ।१६।'

गोस्वामी जी एह प्रसंग पर मानस में लिखले बानी :

'देखत वन सर सैल सुहाए, बाल्मीकि आश्रमप्रभु आए।'
सुचि सुन्दर आश्रम निरखि, हरखे राजिव नैन।
सुनि रघुबर आगमन मुनि, आगे आयउ लेन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाल्मीकि रामायण का बालकांड में रामायण रचना के एगो बड़ा रोचक बरनन आइल बा, जहां कहल बा जे तमसा का दखिन भाग में वाल्मीकि जी के आश्रम बा, जहां रामकथा के सार नारद मुनि वाल्मीकि मुनि के सुनवले बानी। ओहिजे वाल्मीकि मुनि श्लोक के रचना कइले बानी आ ब्रह्मा जी का आदेशानुसार रामकथा के श्लोक का सुन्दर ढाँचा में ढारि के लव आ कुशके धोखाइ देले बानी।

महाभारत में एक ठहर वाल्मीकि मुनि के पहिला जीवन लुटेरा के बतावल बा। अनुशासन पर्व में कथा बा कि महाराज युधिष्ठिर से वाल्मीकि मुनि अपनहीं कहले बानी जे हरतुए में मुनि लोग हमरा के ब्रह्मघ्न कह दीहलीं आ ऊहे कहल हमरा हक में महापाप हो गइल, हम भगवान शंकर का सरन में गिरलीं आ ओहिजा हमरा दोस के निरुआर हो गइल। शंकर जी कहलीं जे अब रउरा पाप मुक्त हो गइलीं आ जगत में अपने के उत्तम यश होखी। अध्यात्मो रामायण में ई प्रसंग आइल बा। उहाँ वाल्मीकि के कथ बा जे हम शूद्र के आचरण अपना ले ले रहीं। साथ हो गइल रहे लुटेरन के, जवना संग बस धनुस-बान लेइ के बटोहिन के लुटवावत आ लूटत रहीं। संयोग से एक बेरि सात मुनिन्ह से भेंट भइल। जसहीं हमन लूगा-फाटा उतारे आगा बढ़लीं तबले हाथ उठाइ के एह बलबस्ती से रोकत उहाँ सब कहलीं, जे जवन ढंग रउरा लोगन दालि-रोटी चलावे खातिर अपनवले बानी ओह फल में परिवार के लोग हिस्सा लीही कि खाली हवेखहीं तक नाता बा? ओह ढंग का अरजन के जे लोग उपभोग करत रहे, पाप में हिस्सा लेवे से साफ नकर गइल। मुनि लोग हमरा पर दया करके कहलीं 'एकाग्र मनसा चैव मरेति जप सर्वदा...।' मरा-मरा जपीं। हम उहाँ सबन के उपदेश में अइसन लीन हो गइलीं, जे हमरा पर देंवकाड़ि जमा हो गइल। ढेर बरिस बितला पर उहाँ सब पलटलीं आ हमरा के देंवकाड़ि से बाहर कइ के कहलीं जे राउर सब दोष दूर हो गइल, अपने का पाप मुक्त हो गइलीं, आ नाम हो गइल वाल्मीकि मुनि।

कृतवासी रामायण (बंगला) में सात मुनि का स्थान पर ब्रह्मा जी आ नारद मुनि से भेंट भइल बा वाल्मीकि मुनि का। उहाँ वाल्मीकि मुनि बानी च्यवन ऋषि के पुत्र आ नाम बा 'रत्नाकर'। मरा-मरा जप के आदेश भइल बा नारदे मुनि का मुँह से।●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाभारत में राम बरनन

महाभारत में राम कथा के छिटफुट चरचा तं बहुते स्थानन पर बाटे, बाकी चार ठहर विधिवित बरनन बा जवना में 'रामोपाख्यान' के स्थान महान बा। वन-पर्वमें भीम-हनुमान संवाद बा। हनुमान जी एगारह श्लोक में राम-वन-गमन, सीता हरण, राम के अयोध्या पलटला का अलावे एगारह हजार साल तक राज-काज के बरनन सुनवले बानी। बाल आ उत्तर कांड के ओहिजा कवनो नाम निशान नइखे, जवन दोसरो कतना ग्रन्थन में भा कथा में छोड़ि दीहल बा।

'रामोपाख्यान' शुरू भइल बा द्रौपदी-दुर्दशा से, राजा युधिष्ठिर का अपना भाग्य पर हाहाकार कइला से। उहाँ का हाय-हाय करत कह उठल बानी, 'का हमरो से केहू अधिक अभागा होखी ?' एह पर मार्कण्डेय मुनि भगवान राम के परतोख देइ के उहाँ को शोक मेटावे के प्रयास कइले बानी। राजा युधिष्ठिर का आग्रह पर मार्कण्डेय मुनि रामोपाख्यान सुनवले बानी। पूना से प्रकाशित महाभारत में एह राम चरित के बरनन सात सौ चार श्लोकन में बाटे।

महाभारत का शान्ति-पर्व में राम राज, राम महिमा आ बनवास बरनन बहुत संक्षेपे में दीहल बा। गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित महाभारत शान्ति पर्व के अध्याय २९ में श्लोक ५१ से ६१ तक राम कथा बा। श्लोक ५१ से कथा के शुभारम्भ एह श्लोक से भइल बा—

'रामं दाशरथिं चैव मृतं सृजयं सुश्रुम।
योऽच कम्पत वैनित्यं प्रजाः पुत्र निवोर सान ॥'

माने दशरथ नन्दन भगवान रामो जी इहाँ से परम धाम के चल गइलीं, जे सदा आपन प्रजा पर ओसहीं कृपा राखत रहीं, जइसे बियाही पत्नी का पुत्र पर पति के रहेला।

रामराज में कवनो स्त्री अनाथ आ विधवा ना भइली। ओह राज में सभत्तर ठीक समय पर पानी मिलत रहे, खेती सुन्दर ढंग से सुतरति रहे आ सदा सुकाल रहे। जब तक ऊ राज रहल, केहू पानी में ना बूड़ल, आग में ना जरल आ सब सन्तुष्ट, पूर्ण काम, निडर, स्वाधीन अउर अपना धर्म में रत रहे। हजारन हजार साल तक नर-नारिन के आयु रहे आ कवनो तापो ना रहे। एही प्रसंग में गोस्वामी जी लिखले बानी—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामराज बैठें त्रैलोका, हरषित भए गए सब सोका।
बयरु न कर काहू सन कोई, राम प्रताप विषमता खोई॥

वरनाश्रम निज निज धरम, निरत वेद पथ लोग,
चलहिं सदा पावहिं सुखहिं, नहिं भय सोक न रोग।

दैहिक दैविक भौतिक तापा, रामराज नहिं काहुहिं व्यापा।
सब नर करहिं परस्पर प्रीति, चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।
चारिउ चरन धर्म जग माहीं, पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं।
राम भगति रत नर अरु नारी, सकल परम गति के अधिकारी।
अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा, सब सुन्दर सब विरुज सरीरा।
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना, नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना।
सब निर्दम्भ धर्मरत पुनी, नर अरु नरि चतुर सब गुनी।
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी, सब कृतज्ञ नहिं कपट सयानी।

एहो प्रसंग में गोस्वामी जो आगा लिखले बानी—

सब उदार सब पर उपकारी, विप्र चरन सेवक नर नारी।
एक नारि व्रत रत सब झारी, ते मन बच क्रम पति हितकारी।

दंड यतिन कर भेद जहँ, नर्तक नृत्य समाज।
जीतहुँ मनहिं सुनिअ अस, रामचन्द्र के राज।

फूलहिं फलहिं सदा तरु कानन, रहहिं एक संग गज पंचानन।
खग मृग सहज बयरु बिसराई, सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई।
कूजहिं खग मृग नाना बृन्दा, अभय चरहिं वन करहिं अनन्दा।
सीतल सुरभि पवन बह मंदा, गुंजत अलि लै चलि मकरंदा।
लता बिटप माँगे मधु चवहीं, मन भावतो धेनु पय स्रवहीं।
ससि सम्पन्न सदा रह धरनी, त्रेता भइ कृत युग के करनी।
प्रगटीं गिरिन्ह बिबिध मनि खानी, जगदातमा भूप जग जानी।
सरिता सकल बहहिं बर बारी, सीतल अमल स्वाद सुखकारी।
सागर निज मरजादा रहहीं, डारहिं रत्न तटन्हि नर लहहीं।
सरसिज संकुल सकल तड़ागा, अति प्रसन्न दस दिसा विभागा।

विधु महि पूर मयूखन्हि, रवि तपि जेतनेहि काज।
माँगे वारिद देहिं जल, रामचन्द्र के राज।

महाभारत का शान्ति पर्व का एह प्रसंग में लिखल बा कि भगवान राम अयोध्या के राजा होइ के दस गो सराहनीय अश्वमेध यज्ञ कइलीं। जब अइसन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कल्याणकारी गुनी आ पुण्यात्मा इहाँ ना रहलीं त दोसरा के कवन ठेकान ? एही से शोक-त्याग के संदेश धर्मराज के दीहल बा।

महाभारत में कई स्थानन पर वाल्मीकि मुनि के 'ऋषि आ तपसी नाम से चरचा कइल बा। द्रोणपर्व में उहाँ के कवि के रूप में कहल बा —

'अपिचार्यं पुराः गीत श्लोको वाल्मीकिना भुवि।'

वाल्मीकि रामायण आ महाभारतोपख्यान का तुलनात्मक विवेचन पर ढेर विद्वान लोगन के छानबीन प्रकाशित हो चुकल बा। दूनो ग्रन्थन का सातो कांडन में कहाँ का अन्तर बा, एह पर श्री कामिल बुल्के साहब लिखले बानी आ उहाँ का विचारानुसार दूनो ग्रन्थन के विषय में जवन अन्तर बा तवन इहाँ संक्षेप में दीहल जात बा—

बालकांड रामोपख्यान में चारो भाई का जन्म खातिर पुत्रेष्टि यज्ञ के बरनन नइखे। सीता जी राजा जनक के जन्मलि पुत्री बानी। रावण से त्रस्त होइके ऋषि मुनि ब्रह्मा जी किहाँ गइल बानी आ ब्रह्मा जी भगवान विष्णु के सहायता देवे खातिर देवता-मुनिन्ह के बनरी आ भलुनी से सन्तान उत्पन्न करे के उपदेश देले बानी। चारू भाइन का पत्नी लोगन में अकेले सीता जी के नाम बतावल बा आ अवरू लोगन के नाम नइखे बतावल।

अयोध्याकांड रामोपख्यान में मंथरा के एगो गंधर्वी दुंदुभि के अवतार बतावल बा आ केकयी के एके वरदान के बरनन बा। गुह भा अत्रि मुनि के चरचा नइखे आ समूचा कांड के चौंतिसे श्लोकन में समाप्त कर दीहल बाटे।

वन कांड रामोपख्यान में अगस्त, अयोमुखी, विराध आ शबरी के कवनो बरनन नइखे आइल।

किष्किन्धाकांड रामोपख्यान—सुग्रीव से मिताई खातिर भगवान राम का पवरुख परीक्षन के कवनो चरचा नइखे आ बालि-सुग्रीव का एके युद्ध के बरनन बाटे।

सुन्दरकांड रामोपख्यान में हनुमानजी यात्रा बरनन अपने कइले बानी। त्रिजटा सीता जी के तोख-बोध देले बाड़ी, जे रामचन्द्र जी सुग्रीव के सँगे मिताई कइके जल्दिये आवे वाला बानीं।

लंकाकांड रामोपख्यान में रावण सभा, रावण-सुग्रीव युद्ध, राम-रावण द्वन्द्व युद्ध, श्री रामचन्द्र जी के माया मय सिर, समुद्र पर भगवान राम का कुपित होइ के धनुष तानल वगैरह के चरचा नइखे। लखनलाल जी का शक्ति बान नइखे लागल आ उहें से कुंभकरन के बध भइल बा। भगवान राम का बान से रावण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अइसन भस्म हो गइल बाड़न जे राखो तक के पता नइखे। रामोपख्यान का सात सौ चार श्लोकन में दुइ सौ श्लोक में युद्धे बरनन दीहल बाटे आ बाकी एक सौ तेइस श्लोकन में अउर बरनन बा। सीता जी का अगिन परीक्षो के कतहूँ बरनन नइखे।

उत्तरकांड रामोपख्यान में रावण आ कुम्भकरण के माता पुष्पोत्कटा बाड़ी। विभीषण के माता मालिनी जी आ खर अउर सुपनेखा के माता वाड़ी राका जी। भगवान रामचन्द्र जी का राजतिलक का बाद रामोपख्यान समाप्त हो गइल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बौद्ध साहित्य में राम बरनन

वर्तमान मन्वन्तर के महाराज मनु के प्रथम पुत्र रहीं सुद्युम्न जी। अपना से प्रजावर्ग के असंतुष्ट देखि के एह घरी का कुछ थेथर प्रशासकन अस निठरक बनि के राज कइला से उहाँ का बनवासे उत्तम जनाइल। पुत्र का विरक्त हो के वन में गइला का बाद पुत्र प्राप्ति खातिर महाराज मनु तप कइके इक्ष्वाकु वगैरह दस पुत्रन के पवलीं। महाराज इक्ष्वाकु का ५६ वीं पीढ़ी में अयोध्या के महाराज दशरथ बानीं आ ५७ वीं पीढ़ी में राम, लखन, भरत आ शत्रुघ्न के नाम आइल बा। लखनलाल जो से वंश चलल ऊ 'लिच्छिवी' कहाइल बा।

महाभारत (महासमर) का बाद राजा बृहदक्षण जी राजसिंहासन पर बइठलीं आ तेइसवाँ राजा भइलीं लिच्छिवी वंश के शुद्धोदन महाराज, जेकर पुत्र रहलीं भगवान बुद्ध। पुराण में बुद्ध अवतार के जवन बरनन आइल बा ओह में भगवान बुद्ध के जन्म कीकट देश (गया) में कहल बा आ पिता के नाम बा 'अजिन'। भगवान बुद्ध के जन्म ईसा से पाँच सौ पचास साल पहिले नैपाल का तराई में बतावल जाला। उहाँ का राज भवन में सुख भोग के सजहन व्यवस्था रहे आ निवृत्ति मूलक मार्ग से उहाँ के राखल रहे बिलकुल अलग। एक दिन अनासहीं रोग, बुढ़ापा आ मरण के प्रबल प्रभाव से उहाँ का बेकल हो उठलीं, तबना के फल ई भइल जे राजप्रसाद का अलावे परिवारो से नाता टूट गइल।

बुद्धदेवजी चार आर्य सत्य के अपनवलीं। उहाँ के चेला लोग ओही चार सूत्रन के व्यापक टीका कइलीं, जवना से हीनयान, महायान, आ वज्रयान एह तीन शाखा में बौद्धधर्म पलुहल। हीनयानी मत निवृति प्रधान भइल आ पालि भाषा में ग्रंथ लिखाइल। महायान, भक्ति प्रधान भइल आ ग्रन्थ रचना के माध्यम भइल देव वाणी संस्कृत। वज्रयानी शाखा में प्रधानता मिलल तांत्रिक साधना के।

बौद्ध दर्शन के चार विभाग भइल—मध्यम, योगाचार, सौतांत्रिक आ वैभाषिक। मध्यम दर्शन में सब पदार्थ क्षणिक आ दुख रूप बतावल बा आ शून्यत्व में विलीन हो गइल मुक्ति बतावल बा। योगाचार दर्शन में वासना का प्रबल प्रवाह में नानात्व के परतीति बा, बाहरी पदार्थ शून्य बा आ सही साक्षात्कार बा बाहर से अन्तर्मुख भइला पर अन्तःकरण में जहाँ ग्यान के खान आ मुक्ति बा। सौतांत्रिक का वज्रयानी शाखा में भाव जगत, पदार्थन के बुद्धि स्थित रूप आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाहरी पदार्थ दूनो साच बा। वैभाषिक दर्शन में बाहरी आ भीतरी दूनो पदार्थ के मान्यता बा। चार्वाक् दर्शन का आधार पर ई दर्शन विशेष व्यापक रूप पवले बा। शास्त्र से कुछ अलग प्रत्यक्ष आ अनुमान पर आधारित भइला से भोगेच्छा के प्रश्रय मिलला से 'भोग' के प्रधानता हो गइल बा जवना से कुछ अनाचारो के रूप आ गइल बा। जगत के दुइ रूप—ब्रह्म मूर्त आ चित्त-अन्तर ऐह दूनो के सत्ता परस्पर निरपेक्ष बाटे।

प्राचीन बौद्ध साहित्य में तीन प्रमुख जातकन के बरनन बा जवना में भगवान बुद्धे राम का रूप में बानो। एह जातकन में दशरथे जातक प्रधान बाटे। आदरणीय पं० परशुराम चतुर्वेदी जी अपना 'मानस का राम-कथा' में भरत सिंह उपाध्याय का पालि-साहित्य का इतिहास के हवाला देत लिखले बानी जे बौद्ध लोगन के जातक साहित्य बहुत विस्तृत बा, जवन मूलतः पालिए भाषा में लिखाइल रहे। चतुर्वेदी जी दशरथे जातक के प्रमुख बतवले बानी। तवना का अलावे देवधम्म जातक, जवछिन जातक आ साम जातक के चरचा करत रामायण से ऐह जातकन का विषय से बहुत मिलत-जुलत बतवले बानी।

जातकट्ठ बरनन में जे प्रसंग बा तवना पर कुछ विद्वान लोग के मत बा कि ५वीं शती का एगो सिंहली पुस्तक के पालि अनुवाद ह। महाभारते अइसन बौद्धो साहित्य में रामकथा शोक से मुक्त करे वाला साधन सरूप बा। एगो गृहस्थ के पिता-शोक से मुक्त करे खातिर भगवान बुद्ध दशरथ जातक सुनवले बानी। कथा अइसे बा—

एक समय में राजा दशरथजी वाराणसी में राज करत रहीं। उहां का पहिलकी रानी से राम लखन आ सीता तीन सन्तान रहे। ओह स्त्री का सरीर छुटला पर राजा दोसरकी शादी कइलों। एह रानी से भरत लाल जी के जन्म भइल। रानी ओही घरी एगो माँग पूरा करे के बाचा बंद करा लेले रहीं। भरत जी का सात साल के होत कहीं कि रानी उनुका राजतिलक के मांग कइली। राजा का भरत जी के गद्दी दोहल उचित ना जनात रहे आ रानी के रात दिन तगादा पर तगादा होखे लागल।

जोतिषी लोग बतवलीं जे अब बारहे साल तक राउर आयु शेष बा। राजा का जनाइल जे भरत लाल जी का राजतिलक के बखेड़ा भयानक खटपट लगाई। उहां का पहिलकी रानी का तीनो सन्तान से कहलीं जे इहां बहुत भारो बखेड़ा हो जाए के आशंका बा। अच्छा होई तुहन लोग के बारह साल तक खातिर बन में चल गइल आ उहां से पलटला पर राम के राजतिलक होखो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजा के कहनाम मान के तीनो सन्तान चल दिहलन जंगल का ओर। साथ में कुछ अवरू लोग जाए के तेयार हो गइल। संग में जे लोग चलल रहे, सब के भगवान राम लवटाइ के अपने तीनो आदमी हिमालय में पहुँच के आस्रम बनाइ के बसेड़ ले लिहलीं। राजा दशरथ का काने रानी अपना सवाल के हरदम लगावल करसु तवना का बाद ठोनहचो देवे लगली। रानी के ओरहन, निहसावल, गुवुधल, डंभाइल, झुझुआइल, कुफुरल, कोहनाइल आ झनकल-पटकल सभ राजा का सामने पुरइनि का पात पर के पानी अस ढरकल चल गइल। समय पाइ के राजा दशरथ के शरीर छूटल आ रोगो का साथ ही रानी वाला पेट रगदन के रोगो के अन्त हो गइल।

पिता के शरीरान्त भइला पर भरत जी चतुरंगिनी सेना का साथ भगवान राम से भेंट करे हिमालय चललीं। सेना आ साथिन के कुछ दूर एनहीं छोड़ के भरत जी अकेलहीं रामलला से मिललीं। दूनो भाइन के प्रेम मिलन भइला का बाद भरत जी पिता का वैकुण्ठ वास के प्रसंग सुना के डभकि डभकि रोवे लगलीं। भगवान राम खातिर सुख-दुख एक समान रहे एही से उहां का इचिको भर शोक ना कइलीं आ ना उहां का आँखिन में इचिको लोर लउकल।

साँझ का समय लखनलाल आ सीता जी आश्रम पर आइल लोग। पिता मरन सुन के उहां सभ अधीर होइ के बेकल हो गइलीं। भाई बहिन के शोक मेटावे खातिर भगवान राम एह पंचभौतिक शरीर (काँच घइली) का मरम के परचे परच हिगराइ के माटी के मोह छोड़ा दिहलीं। भगवान राम वालि के वध कइलीं त तारा बेकल हो गइली। एह प्रसंग के गोस्वामी जी मानस में अइसे लिखले बानी—

नाना विधि विलाप कर तारा, छूटे केस न देह सम्हारा।
तारा विकल देखि रघुराया, दीन्ह ग्यान हरि लिन्ही माया।
छिति जल पावक गगन समीरा, पंच रचित यह अधम सरीरा।
प्रगट सो तनु तब आगे सोवा, जीव नित्य केहि लगि तुम रोवा।
उपजा ग्यान चरन तब लागी, लीन्हेसि परम भगति बर माँगी।

हिमालय आश्रम में जब भरत लाल जी वगैरह के शोक शान्त हो गइल तब भगवान राम का वाराणसी राजधानी में लवट चले के सवाल उठल। भरत जी बहुत-बहुत निहोरा कइलीं, बाकी भगवान राम का प्राणों से बढ़ के प्यारा रहे पिता के आदेश। भगवान राम के कहनाम रहे जे अभीं जाइ के राजगद्दी सम्हारीं, बाद में समय पुरला पर राजधानी में हम आइबि। दूनो भाइन का बीच

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में राजसत्ता लोंहड़े लगलि बहरिया भेटा मतिन जे एह जुग का रामराज लेइ आवे वाला राजर्षि लोगन खातिर ब्रह्मरस वे परमानन्द बन गइलि वा। कुछ देर तक राजसत्ता का बिगाबिगी का बाद भरत जी का कहनाम पर आपन खड़ाऊँ दे दीहलीं भगवान राम, राज सिंहासन पर रख के राज चलावे खातिर। ओही खड़ाऊँ अस आदर मिलल रहे राज का ताज के बृटिश युग में एह भारतवर्ष में।

भरत जी पादुका के माथे चढ़ाइ के लखनलाल, सीता आ सेना अउर संगी लोगन का साथ वाराणसी पहुँचलीं। भगवान राम का पादुका में करोड़न करोड़ गुना अधिक शक्ति रहे बृटिशराज का ताज से। प्रशासन में तनिको तरपट परते खड़ाऊँ आपस में बड़ा जोर से खड़खड़ा उठत रहन स आ तरबिच के अन्त होते मातर सब खड़वड़ाहट शान्त हो जात रहे।

पिता के आदेश पूरा कइके भगवान राम हिमालय से वाराणसी पहुँचल बानी। सोलह हजार साल रामराज के अवधि रहे। बोधिसत्व जी सीता से विवाहो के प्रसंग ना जाने कवना कुल परम्परा आ कहाँ का प्रचलन से जोड़ देले बानी एह कथा में। पुस्तक सिंहली भाषा के अनुवाद ह। सम्भव वा, ई प्रसंग कहीं विदेसे से आइके जुट गइल होखी।

अनामक जातक—चीनी रामायण विहार ग्रन्थमाला ८ (१९३८) सरस्वती का अनुसार एक समय में बोधिसत्व एगो नामी राजा रहीं। समय पाइ के एह जुग का दल बदलू आ पद खातिर पोव में ओठ दबोरे वाला अवसर-वादिन अस उहाँ के ममो जी एगो राज के मालिक बन बइठलीं। बोधिसत्व का न्याय, दान मधुर भासन आ प्रजा पालन कइल प्राण अस प्यारा रहे आ मामा जी खातिर ई कुल्हि दिनाय हवुअवला से उदवेगे वाली छनछनहटि। बोधिसत्व के सात्विक शासन मामा जी खातिर कपार के सिंग हो गइल। चटपट बोधिसत्व पर चढ़ाई कइके राज मचोटे खातिर विक्षुब्ध राजनेतन मतिन नारा बाजी, हुल्लड़, हड़ताल, हड़प-झड़प, अनशन, प्रदर्शन आ घेराव वगैरह अनेकन उकुति अपनवलीं। बोधिसत्व के सैनिक कवनो भेंड़ के चरवाह त रहन ना, भइलि दूनो ओरि से निठाह दमचउवलि, दूनो ठहर का प्रजा लोगनि के प्राण पात पर नाचे लागल। मामा जी त राजमद में मोंछ पर ताव देत मानवता के मूँड़ी ममोरि-घलले रहीं, बोधिसत्व जी के हृदय काँप उठल भयानक रक्तपात का आशंका से। राजसत्ता खातिर भीषण नर संहार लीला उहाँ का ना देखे चहलीं, एही से राज तेजि के रानी का साथ चलि दिहलीं जंगल में। मामाजी का मजगर मोका मिलल घीव में पाँचों अँगुरी दबोरे के। भयानक संघर्ष के भीषण नर संहार त रुकल, बाकी मामा जी प्रजा लोगन के लगलीं चाम चिंचोरे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोधिसत्व जी वन पहाड़ी का बीच बसेड़ ले ले रहीं ओही का नियरा समुद्र में एगो खल नाग के निवास रहे। एक दिन राजा वन में कन्दमूल आ फल ले आवे गइलीं तबले खल नाग भेष बदल के रानी के हर लिहलन। समुद्र में जाए के पतरे राह रहे, तबना का दूनो ओर ऊँच पहाड़ी। ओह पहाड़ी पर एगो पक्षी रहत रहन जेकर पड़ोसी अस बेवहार बरताव रहे राजा का साथ। ऊ पंख पसार के खल नाग के बेलमाइ देवे के प्रयास कइलन, बाकी आन्ही का आगा बेना के बतास ? खल नाग उनुका के तड़ियाइ के अस तड़तड़वलन जे बेचारू के एगो पंखे उखड़ि गइल आ घाही होइ के भहराइ गइले भुंइ पर भरकुनिए। तेकरा बाद खलनाग रानी का साथ उहाँ से नौ दुइ एगारह। फल लेके राजा कुटी पर पहुँचलीं त उहाँ केहू कहीं ना। राजा का भारी दुख भइल आ ओसहीं रोष में, धनुष बाण लेइ के रानी का टोह में निकललीं। भटकत भुलात उहाँ का एगो नदी का तिरवाहीं पहुँचलीं। ओहिजा बड़ा उदास आ मन मरले एगो बानर बइठल रहन। नर बानर में पूछा पेख होखे लागल। बानर बतवले जे हम राजा रहीं। हमार चाचा सब राजपाट मचोटि के हमें बन में बइला दिहलन। नदी का तीरे पर नर बानर में मित्रता भइल आ एक दोसरा का सुख-दुख में हाथ बँटावे के तय हो गइल। दोसरे दिन बानर का चाचा भतीजा में भइल भिड़न्त। बोधिसत्व के तीर तानते मातर चोला बदल जाए का डर से चाचा चटपट चउकड़ी ले लिहलन। चाचा का चहेटा गइला पर राजगद्दी पर बइठ गइलन भतीजा पहिलहीं अस।

गद्दी पर बइठते बानर राज के बानरी सेना के पहिला काम मिलल रानी के सुलाख लगावे के। बानर लोग वन का झूँटी आ पहाड़ का कन्दरन में पइठि-पइठि के निहारे लगलन। उहाँ इन्द्रो महाराज एगो छोटहने बानर रूप धइके पहुँचलनि। संयोग से बानर लोगन से नाग के रोके वाला घाही पक्षी भेंटा गइलन जेकरा से सब भेद अनासे मिलि गइल। छोटका बानर का उतजोग से नागलोक तक मजगरि सड़क बन गइल। नाग, माया जाल में निठाह निपुन रहन। बानरी सेना से कठिन संग्राम ठानि के लगलन आपन तिकड़म तड़ातड़ लगावे। छोटका बानर का उकुति से उनुकर कुल्हि अनरकम कट गइल आ अन्त में ऊ आकाश में बिजली बन के गड़गड़ाए लगलन। तबले छोटका बानर के सनगो पाइ के बोधिसत्व तीर से मारि के उनकर अन्त कइ दिहलीं।

छोटके बानर का विशेष उतफाल से रानी के उद्धार भइल। एने खल नाग का खउरा खापट लागल आ ओने ममो जी संसार से बिछावन बटोर के दइव का दरबारे गइलन। राजा आ रानी राजधानी में आइल लोग। राजा रानी का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चरित्र पर सन्देह कइलन। रानी कहली जे अमहम काहें के रहीं, चटपट परीक्षे हो जाय। रानी कहली जे हम चानी होखव त चटाक देना धरती के छाती दरकि जाई। अतना कहते मातर धरती के छाती धड़ाक देना दरकि गइलि। राजा के संदेह दूर हो गइल आ सब केहू अपना धरमानुसार आनंद से बिचरे लागल।

कथा का अन्त में बोधिसत्व कहले बानी जे हमहीं राजा रहीं आ रानी रहली गोपा। देवदत्त रहन मामा जी आ छोटका बानर महाराज इन्द्र। राजा रानी का उर में प्रजा पालन के मंगलमय कामना रहे जवना से विपति के रात बितला पर आनन्द मंगल के बिहान भइल। ई कथा भगवान बुद्ध का बौद्ध भिक्षु लोगन के सुनवला के बरनन बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जैन साहित्य में राम बरनन

जैन धर्म के बहुत ज्यादा प्राचीन बतावल बाटे। एह मत का ग्रंथन में राम कथा के विशेष आदर के आ व्यापक स्थान बा। भगवान राम के 'पद्म' कहल बा। त्रिषष्टि लक्षण पुरान में महापुरुषन में भगवान राम, लखन के साथे रावणो के नाँव आइल बाटे। तिरसठ महापुरुषन में २४ गो धर्मोपदेशक 'तीर्थंकर', १२ चक्रवर्ती याने 'भारत का ६ खंडन के सम्राट', ९ बलदेव, ९ वासुदेव आ ९ प्रति वासुदेव लोगन के बरनन बा।

जैन मत के प्रथम तीर्थंकर ऋषभ देव जी भइलीं। उहां के चरचा वेदो में आइल बा। महाराज नाभि पुत्र के कामना से यज्ञ कइले रहीं, जवना के फलसरूप भगवान ऋषभ के अवतार भइल जेकरा से जैन मत प्रचलित भइल।

महाराज नाभि भगवान ऋषभ के राजसिंहासन देइ के बन में तप करे गइलीं। उहां का सफल प्रशासन से सरग सिहाइए आ धधाइए ना उठल बलुक महाराज इन्द्र का धरती के सोहाग से डाह हो गइल। इन्द्रदेव के ना चहलो पर सुवृष्टि होत रह गइलि ऋषभदेवजी का प्रताप से। अन्त में महाराज इन्द्र अपना पुत्री जयन्त के विवाह ऋषभदेव जी से कइ के धरती आ इन्द्रपुरी के सुन्दर सम्बंध स्थापित कर दिहलीं। भगवान ऋषभ देव का सइ पुत्र भइले। जेठ बेटा महाराज भरत चक्रवर्ती भइलीं, ९ ब्रह्मर्षि आ ८१ पुत्र महातपसी भइले।

भरत देव के राज सिंहासन दिहला के बाद ऋषभ देव जी परमहंस रूप में भारत पच्छिमोत्तर प्रदेश कौंक, बेंक आ कुटकादि का बन में निर्द्वन्द विचरन करत रहीं। एह नश्वर देह के ममता मर चुकलि रहे। शरीर त महातेजोमय रहे, बाकी भोजन आ भोग के अभिलाख अंथइ गइला से देहं दूबर हो गइलि रहे। बन में दावाग्नि प्रगट भइलि आ ओही में उहां के अमर समाधि लेके बराबर बदे अहथिर हो गइलीं।

जैन धर्म के अन्तिम याने २४ वां तीर्थंकर भइलीं भगवान महावीर। उहां के जन्म ई० पूर्व ५९९, विहार राज का वैशाली में भइल रहे आ पिता जी के नाम रहे सिद्धार्थ अउर माता जी के नाम रहे त्रिशला।

भगवान महावीर का जन्मकाल के नाम रहे वर्धमान आ जन्म का पहिले माता त्रिशला का १४ गो शुभ सपना भइल रहे। दिगम्बर मतानुसार उहां का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बालब्रह्मचारी रहीं। दोसरा ठहर से अइसन पता बाटे जे वर्धमान जी के विवाह राजकुमारी यशोदा का साथ भइल रहे आ ओह स्त्री से एगो पुत्रिओ के जन्म भइल रहे।

भगवान महावीर के जीवन बड़ा विचित्र रहे। अट्ठाइस साल का उम्र में सब वस्त्र उतार के खाली एकही वस्त्र धारण कइले रहीं आ अगा चल के त उहां के पूरा परमहंसी जीवन हो गइल। मौन व्रत लिहला का बाद पहिला उपदेश भगवान महावीर के भइल रहे राजगृह अस पवित्र तीर्थस्थान पर। 'आश्रम' में उहां के बहुत उपदेश समेटाइल बाड़न स। महावीर भगवान का पूर्व जन्म में पूरा विश्वास रहे आ कर्ता अउर भोगेवाला उहां का जीवे के बतवले बानीं। गोस्वामिओ जी एह प्रसंग के गूढ़ वरनन कइले बानी राम चरित मानस में जइसे, :—

निज कृत कर्म भोग सुनु ताता।

जैन साहित्य बहुते विस्तार से बाटे। सनातन धर्म से जैन धर्म बहुत नियराह बाटे आ जैन अउर बौद्ध धर्म में ओह से अधिका विलगाव बा। जैन मत बौद्ध मत से प्राचीन ह आ अहिंसा तत्व जैने धर्म से बौद्ध में आइल। जैन धर्म में तप पर बहुत जोर दिहल बा आ भगवान बुद्धो पहिले बड़ा कठिन तप कइले बानीं।

जैन मतानुसार सब कुछु क्षनिके मानल जाय त कर्तो क्षनिके होखी। तब एक कर्म के जे कर्ता रहे दोसरा क्षन में ऊ ना रहल तब पूर्व कर्म के फल पाई के ? एह से कर्ता क्षनिक ना हो सके। जगत आ सत्य अनादि आ आत्मा अमर ह। बालिबध का बाद तारा का विलाप पर भगवान राम संत तुलसीदास जी का शब्दन में एह प्रसंग के संक्षेप में कहले बानीं, :—

'छिति जल पावक गगन समीरा, पंच रचित अति अधम सरीरा
प्रगट सो तनु तव आगे सोवा, जीव नित्य केहि लगि तुम रोवा।'

जैन दर्सन के मोताबिक जगत में जीव, प्रकाश, धर्म, अधर्म आ युग्दल ई सत्ता धारण करे वाला पांच गो तत्व बाटे। दोसरका जैन मत वाला लोग जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जर आ मोक्ष एह सात तत्व के मनले बाड़न।

तिरसठ लक्षण पुराण के जे प्रसंग पहिले आइल बाटे ओह रचना का दू भाग में श्री जिन सेनजी कृत आदि पुराण ९ वीं शती-ई० आ गुणभद्र कृत उत्तर पुराण ८९७ ई० में लिखाइल, बाकी ओह से बहुत पहिलहीं से एकर व्यापक रूप तेयार रहल। जैन साहित्य में राम वरनन आइल बा बाल्मीकिए रामायण से जवना के रूप एह साहित्य में कुछ भिन्न बाटे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एच० याकोबी साहेब का 'पउम चरिय' (भावनगर संस्करण १९१४) का अनुसार सबसे पहिले श्री विमल सूरि जी राम कथा के जैन साहित्य में रुचिगर रूप दिहलीं। श्री नाथू राम प्रेमी अपना 'जैन साहित्य और इतिहास' का पन्ना २२० पर बरनन देले बाड़न जे रामचरित विमल सूरि जी का पहिले छिटफुट रूप में होखी आ ओही के उहां का क्रम से साजि सँवारि के 'पउम चरिय' का रूप में रचि देले होखब।

जैन मतानुसार विमल सूरि जी के 'पउम चरिय' ७२ई० के ह, बाकी विदेशी समालोचक लोग भाषा का आधार पर ३ री आ ४ थी ई० रचना काल बतवले बाड़न। याकोबी साहेब का अलावे कीथ साहेब आ बुलनरो साहेब के कहनाम बा जे तिसरिए भा चउथो ई० एकर रचना काल होखी। ई ग्रंथ लिखाइल रहे शुद्ध महाराष्ट्री भाषा में आ संस्कृत में अनुवाद भइल ६६० ई० में। श्री रविषेणाचार्य जी से ऊहे 'पद्म चरित' का नाम से प्रसिद्ध भइल। सम्वत् १८१८ में श्री दौलत राम जी 'पद्म चरित' के भाषानुवाद कइली।

हेमचन्द्र जी के जैन रामायण १२ वीं श०ई० में, जिनदास जी के राम पुराण १५ वीं श० ई० में आ पद्मदेव विजय गणि कृत राम चरित १६ वीं श० ई० में रचाइल अइसन विन्टर निस्स साहेब का 'हिन्दी अंग्रेजी साहित्य भाग २ आ श्री राजेन्द्रलाल मित्र के 'संस्कृत पांडुलिपि भाग १० पन्ना १३४ से पता बा। कामिल बुल्के साहेब लिखले बाड़न जे 'सोम सेन कृत रामोचरित १६ वीं श०ई० के ह जेकर हाथ के लिखावट जैन सिधान्त भवन आरा (भोजपुर) में सुरक्षित बाटे। विमलसूरि जी का पद्म चरित का आधार पर सीता कथानकम, शत्रुंजय महात्म्य, पुण्याश्रव आदि बहुत प्रकाशित आ अप्रकाशित पुस्तक रामकथा विषयक बाड़ी स। जैन साहित्य का रामकथा में दीक्षा के विशेष प्रधानता बाटे।

विमल सूरि जी के पउम चरिय रामायण का अनुसार सबतुके बा, बाकी ना जाने काहें श्री अमित गति जी का 'धर्म परीक्षा' में बाल्मीकि रामायण के निनासल बाटें जवन शोभत नइखे।

राजा श्रेणिक का कहला पर भगवान महावीर के प्रधान चेला गोतम जी राम कथा सुनवले बानीं। पहिले विद्याधर लोक, राक्षस बंश, बानर बंश आ रावण के बंश बरनन भइल। राक्षस राज रत्नश्रवा का रावण, कुंभकरण चन्द्रनखा आ विभीषण चार सन्तान रहस। रत्नश्रवा अपना पुत्र के देखलन। गला में रतन के माला में बेटा के सिर दस गो लउकल। एही से उनकर नाम परल दशानन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रावण अपना मउंसियाउत भाई के बिभो देख के तपबल से विद्योपार्जन कइले बाड़न उनुका मंदोदरी का अलावे ६ हजार रानी लोग रहे। अनेकन्ह संग्राम में ऊ विजय कइले बाड़न। ओह विजय प्रसंग में वरुण, इन्द्रदेव आ यम आदि के ना वलुक हलुके फलुक राजन से लड़ाई भइलि बाटे रावण का। ओह विजय अभियान में उनका उपदेशो मिलल बा जवना से प्रन कइले बाड़न जे हम विरक्त नारी के भोग ना करब। नलकूबर का स्त्री के प्रेम प्रस्तावो के रावण नकार देले बाड़न।

विरक्त होइ के बालि अपना भाई सुग्रीव के राज पाट देइके जैनदीक्षा ले ले बाड़न। खरदूषण के चन्द्रनखा का साथ विवाह वरनन बाटे जेकर बेटा शम्बूक बाड़न। भगवान राम, सीता आ सीता जी का जन्म आ संबंध याने २१—२२ पर्व से रामायण रामकथा के सरूप चलल बाटे। पहिले योगेश्वर जनक आ महाराज दशरथ के वंश वरनन बा तवना का बाद कोशिल्या, सुप्रभा आ सुमित्रा, महाराज दशरथ का एह तीन रानी लोगन के चरचा बा। एक दिन नारद मुनि रावण का काने लगा दिहली जे राउर मरन जनक पुत्री जानकी का कारण से महाराज दशरथ का पुत्र के हाथे होखी। रावण अपना भाई विभीषण से कहलन जे ओह दूनों जने के सिर काट देवे के होखी, जे रही बांस ना बाजी बंसी। विभीषण आइ के दूनों जने के सिर उतार के समुद्र में डाल दिहलन। ओह लोग का जाने में त रोग दूर हो गइल बाकी नारद जी ओने वतिअवला का बाद एनहूँ खबर जना देले रहीं जे चोर चोरी करो, रावां सभ सजगे रहब। महाराज दशरथ आ योगेश्वर जनक अपना महल में आपन पुतला धइ के चल देले रहीं सभन परदेश। ओही अलोपित भइला में महाराज दशरथ का गला में केकयी स्वयंवर के जयमाल पड़ल रहे आ राजा लोग से लोहा लेवे के पड़ल जवनामे केकयी बड़ी चतुराई से रथ चलवले रही जवना से प्रसन्न होइ के महाराज से एगो वरदान मिलल रहे। रामायण का तीन रानी का स्थान परउहां सुप्रभा जी का साथ चार रानी रहीं आ शत्रुहन जी रहीं सुप्रभा जी के पुत्र।

राजा जनक जी का रानी के नाम रहे विदेहा जी जेकरा से सीता जी का अलावे भामंडल नाम के एगो बेटो भइल रहन। सीता जी का स्वयंवर में भगवान राम का हाथ से धनुष भंग भइल आ विवाह का बाद सब केहू सानंद राजधानी में लवटल। महाराज दशरथ का चउथा पन में राज सिंहासन छोड़के तप करे जाहीं के रहे तबले केकयी कहे लगली जे हमरा के वरदान देले रहीं तवना अनुसार हमरा पुत्र भरत के जल्दी गद्दी दे दिहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बनियां वत्तुस देइ ना आ मांग पुरापुरी तउल के' तवने हाल भइल। महाराज दशरथ का भगवान राम के छोड़के भरत लाल जी के राज सिंहासन के कहनाम सोहाते ना रहे आ केकयी जी तड़फड़ाइल रहीं जे अदरो भदरा में कसहूँ राजगद्दी भरत लाल जी का भेंटा जाय। अइसन पेचकस लागल त भगवान राम, लखन लाल आ सीता जी दांक्खन दिशा में वनवास ले लिहलीं नभे। भरत लाल जी जंगल से उहां सबके लवटावहू गइल रहीं जवन प्रयास विफल हो गइल।

वन पर्व में वरनन आइल बा कि भगवान राम आ लखन लाल जी का हुत ज्यादा लड़ाई लड़े के पड़ली स। ओह वनवास काल में भगवान राम के ीन गंधर्व कन्या लोगन का साथ विवाह के प्रसंग बा आ लखन लाल जी का ज्ञ कर्ण का आठ कन्या लोगन का साथे। जटायु से भेंट भइला का बाद उहां व दंडकारण्य में बसेड़ लेले बानीं।

रावण के भगिना शम्बूक सूर्यहास खंग बदे बारह साल कठिन तप कइले हन। तप पूरा होते खंग प्रगट भइल। संयोग से उहां लखन लाल जी पहुँ-लीं आ खंग उठा के बांस पर अजमाइ के शम्बुकी के सिर उतार दिहलीं। हो बीच में चन्द्रनखा भगवान राम आ लखन लाल किहां जाइ के पत्नी रूप में हण करे के प्रस्ताव कइले बाड़ी। प्रस्ताव का नकार पर पतिदेव किहां आइल ाड़ी तबले पुत्र मरन के समाचार सुनली। ई समाचार रावणो दरबार में पहुँच इल बा। खरदूषण सजहनि सेना का साथ उपट के चलल बाड़न जवना मला के अकेलहीं लखने लाल जी आड़ लेले बानीं।

रावणो ओहिजा पहुँचल बाड़न आ सीता जी के देख के मोह गइल ाड़न। ऊ विद्या का बल पर जानत रहन जे सिंहनाद का सनगी से लखन जी इहां से हटावल जा सकेला ओही उपाय से लखन लाल जी के टरकाइ के ावण सीता जी के हर लिहलन।

बालि का स्थान पर साहस गति के वरणन बाटे जे सुग्रीव के राजपाट छिन ले बाड़न। भगवान राम से सुग्रीव का मिताई भइला पर साहस गति के अंत इल बाटे आ उनका तेरह पुत्रिन से राम जी के विवाह वरणन बा। सुग्रीव, नर का स्थान पर विद्याधर लोगन के सीता जी के सुलाख लगावे बदे भेजले ड़न। ऊ लोग रावण का भय से भारी भकभंउजा में बाटे। लखन लाल जी ोटिशिला उठा लेले बानीं तब इचिकाभर विद्याधर लोगन का सांस में सांस परल काहें जे ओह लोग का खबर रहे कि जे कोटिशिला उठा लिही ऊ रावण के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बध कइ दिही । शिला उठवले पर ऊ लोग सुग्रीव के सलाह दिहल जे पहिले उहां हनुमत लाल जी के भेजल जाय । हनुमत लाल जी के रावण के मित्र बतावल बाटे । हनुमान जी लंका जाइके बज्रमुख का पुत्री से विवाह कईले बानीं आ बाद में विभीषण अउर सीताजी से हनुमानजी का भेंट भइल बाटे । हनुमानजी इन्द्रजाल में उहां घेराइल बानीं ।

विद्याधर वंश के लोग वानरे रुप में बा जवन सेना चलला पर एगो राजा बाड़न समुद्र, जे रोक लेले बाड़न । राजा समुद्र का राम सेना से समर भइल बा आ उनका पीठ देखावे के परल बा ओह लड़ाई में । पराजित समुद्र के राज भगवान राम लवटा देले बानीं आ लखन लाल जी उनका पुत्री से विवाह कइले बानीं । समुद्र मतिन सुवेलो, पहाड़ ना बलुक रावण के मददगार एगो रजे बाड़न । उनके हराइ के सेना लंका में पइठलि । ओहिजा लखन लाल का शक्ति बाण लागल बाटे जवना के दवा द्रोणमेव के पुत्री विशल्या कइले बाड़ी । अच्छा हो गइला पर लखन लाल जी के उनको से विवाह के वरणन बाटे । जैन मतासुसार लखन लाल याने नारायण से रावण याने प्रति नारायण के वध भइल ।

भगवान राम, लखन लाल आ सीता जी राजधानी में लवट के राज कइलीं । भगवान राम का आठ हजार आ लखनलाल जी का सोलह हजार रानिन के अउर ठहरे ठहर विवाह के बहुत विचित्र वरणन बड़ा अटपटाह लागत बाटे ।

सीता त्याग का बाद लवण आ अंकुश से राम सेना का युद्ध आ मिलाप का बाद सीता जी अग्नि परीक्षा का बाद दीक्षा लेइके सरग गइलीं । भगवान राम दीक्षा लेइके सरग गइल बानीं ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जैनमत गुण भद्र शाखा—

गुणभद्र परम्परा में महाराज दशरथ वाराणसी के राजा रहीं आ बाद में साकेतपुर में राजधानी बनवलीं। उहां का चार रानिन से चार पुत्र रहीं। दशानन पुलस्त जी के पुत्र रहन। ऊ अमितवेग का बेटी मणिमति के देख के मोहिते भर ना भइले बलुक उनका तपो में खलल डाले के प्रयास कइलन। मणिमति प्रन कइली जे इनहीं के पुत्री होइके इनकर अन्त करब। शरीर छोड़ला का बाद ऊ मंदोदरी जी का गर्भ में गइली। जोतिषी लोग का कहला से उनुका के एगो पेटी में बन्द कराइ के रावण भेजवा दिहलन मारीच से मिथिला में। हर का टोंड़ी से पेटी निकसलि आ जनकराजा किहां खुललि त ओह में से जानकी जी निकसलीं। जनक जी जग्य रक्षा खातिर भगवान राम आ लखनजी के अपना किहां बुलवलीं। यग्य पुर्णाहुति का बाद भगवान राम के सीता जी साथ विवाह भइल सीताजी का अलावे अउर सात कन्या लोग से राम विवाह भइल बाटे आ लखन लाल जी पृथ्वी देवी आदि आठ कन्या लोगन से विवाह कइले बानीं। रामजी आ लखन लाल वाराणसी में वास करे लगलीं।

नारद जी से सीता जी के सुधराई सुन के रावण सूपनखा के भेजले बाड़न, सीता जी के मन टोवे खातिर। ऊ लवट के कहले बाड़ी जे सीता किहां कुटनाई ना लागी। भगवान राम जब चित्रकूट में बन बिहार करे गइल बानीं त मारीच सोनहुला रूप धारण कइके उहाँ के दूर हटाइ ले गइलन आ भगवान राम के रूप धइ के रावण सीता जी के ई कहके (पालकी) पुष्पक पर चढ़ा ले गइल बाड़न जे सोनामृग के महल में भेज देले बानीं। रावण सीता जी के एह भय से नइखन छुवले जे हमारि आकाश गामिनी विद्या लोप हो जाई।

भगवान राम का हनुमान जी आ सुग्रीव से मिताई भइलि आ लखनलाल से बालि बध भइल बा। महराज दशरथ का सपन भइल बाटे कि सीता हरण हो गइल। वानरी सेना लंका गइलि बा, हनुमान जी का उहां से सीता सनेस लेइ के लवटला पर। बड़ा घनघोर लड़ाई भइलि बा लंका में आ लक्ष्मन जी का चक्र से रावण के माथ कटाइल बाटे। लखनलाल जी जैन परम्परा का अनुसार अर्ध चक्रवर्ती बन के अयोध्या लवटल बानीं। उहां का सोलह हजार आ भगवान राम का आठ हजार रानी लोग बाड़ी। रावण हत्या के अपराध का चलते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लखनलाल का नरक में जाए के पड़ल आ भगवान राम लखनलाल के पुत्र पृथ्
सुन्दर के राजपद आ सीता पुत्र अजितंजय जी के युवराज पद हिहलीं।

भगवान राम दीक्षा लेइ के मुक्ति पवलीं आ सीता जी अनघा रानिन क
साथ दीक्षा लेइ के सरग गइलीं।

गुणभद्र का रामकथा में केकई के हठ, पंचवटी, दंडकारण्य, जटायु मरण भ
लंका दहन अउर वनवास भा सीता त्याग के कवनों चरचा नइखे। सीता त्या
के चरचे नइखे तब बाल्मीकि आश्रम में लव कुश के प्रश्न कहांबा ? हिन्दू रा
कथा, जैन राम कथा आ बौद्ध रामकथा में धार्मिक विचारने का चलते अनघ
चढ़ाव उतार, आ गइल बाटे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धार्मिक साहित्य के राम—

प्राचीन राम कथा के बाद नवीन रामकथा अवतार बाद का विकास का साथ भक्ति भावना से विशेष उजागर भइल। शास्त्रन में महाप्रभु के दुइ रूप मानल बा निराकार आ साकार। निराकार के मन आ वाणी से अगोचर कहल बा। योगी लोग योग साधना से निर्विकल्प समाधि में ओह परब्रम्ह रस के आनंद उठाइला। संसार के देखल आ सुनल पदार्थन से हट के ओही परमानंद में योगी लोग सच्चा संतोख पावेलन जवन सर्व साधारण खातिर बहुत कठिने ना बलुक दुर्लभ बा। गोस्वामी तुलसीदास जी के कथन बा कि—

'सुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी, नाम प्रसाद ब्रम्ह सुख भोगी' माने— शुकदेव जी आ सनकादि सिद्ध मुनि योगी लोग नामे का प्रसाद से ब्रह्मानंद के भोगीला। निर्गुन आ सगुन के गोस्वामी जी जल आ जल में उठल तरंग से तुलना कइले बानीं।

सृष्टि, स्थिति आ प्रलय खातिर ब्रह्मा, विष्णु आ महेश रूप से महाप्रभु उपासित होखी ला। उहां का साथ उहां के अभिन्न शक्ति लोगन के संबंध बा: भक्त लोगन का भाव भक्ति से उपासित गणेश, शंकर, शक्ति, सूर्य आ विष्णु के पंचदेव कहल बा। धर्म स्थापन, ग्यान आ भक्त लोगन का बचाव खातिर भगवान भिन्न-भिन्न रूप में अवतार लेइ के लीला करी ले। महाप्रभु के अनेकन्ह अवतार भइल बा। युगावतार में मत्स, कूर्म, वाराह, नृसिंह, बामन, परशुराम राम, बलराम, बुद्ध आ कल्कि का अलावे भगवान कृष्ण के नाम आइल बा। एही अट्ठाइसवां द्वापर में भगवान कृष्ण के अवतार भइल बा एहसे पहले दसे अवतार के बरणन बा।

ऊपर लिखल अवतारन का बाद नरनारायण, सनकादि, कपिल दत्तात्रेय, यज्ञ, ऋषभ, हंस, धन्वन्तरि, हयशीर्ष, व्यास ई दस अवतार ग्यान परम्परा के प्रसार, सुरक्षा आ आदर्श स्थापना खातिर भइल। पृथ्यु रूप में प्रगट होइ के भगवान पृथ्वी के समतल बना के लोक व्यवस्था कइलीं। ध्रुव आ गजेन्द्रो आदि खातिर प्रभु का प्रगट होखे के परल रहे। शास्त्रन में भक्त लोगन के प्रताप बड़ा प्रबल बतावल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूध पिअला के आनंद ना थान का मिले आ ना गऊ का। ओह आनंद के अधिकारी भोक्ता-आ (बछड़ा) बाड़न। तसहीं परमानंद सरुप ब्रह्म रस के अधिकारी भले लोग बानीं। श्री मद् भागवत का कथनानुसार जे भक्त लोगन का मने परला से गृहस्थ लोगन के घर पवित्र हो जाला, ओह लोगन के दर्शन आ सेवा के अवसर मिल जाय तब त का कहे के? गंगावतरण प्रसंग में लिखल बा कि गंगाजी भगिरथ राजा से कहलीं जे हम एह से पृथ्वी पर ना जाइब जे पापी लोग स्नान कइ के आपन पाप हमें दे दिहन, हम ओह पाप के कहाँ धोइब? राजा भगीरथ के उत्तर बा कि रावां पवित्र जल में भक्त जन स्नान करिहन जवना से ऊ सब पाप अनासे भस्म हो जाई।

भक्त जन जब पवित्र हृदय आ निर्मल मन से प्रभु के स्मरण करेलन त अनायास उहां का मिल जाई ला। एह प्रसंग के भगवान कृष्ण गीता में अइसे कहले बानीं—

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः।
तस्याहं सुलभ पार्थ नित्य-युक्तस्य योगिनः॥

माने-जे पुरुष हमरा में अनन्य चित होइ के निरन्तर हमरा के स्मरण करेला, ओह योगी खातिर हम सुलभ माने सहजे में मिल जाई ला। भगवान कृष्ण त इहां तक कह देले बानीं जे 'अहं भक्त पराधीनो' माने हम भक्तन का अधीन बानीं।

संत आ भक्तजन लोग के दर्शनो होला बड़ा भाग्य से। गोस्वामी जी लिखले बानीं कि 'बिनु हरि कृपा मिलहिं नहिं संता' भक्ति मार्ग के बोजारोपन वैदिके युग में भइल बाकी, अंखुआ आ टूसा लागल भागवत में।

भक्त आ भक्ति के बड़ा रोचक बरनन आइल बा गोस्वामी तुलसी दासजी का 'मानस' में। प्रभु कृपा से मातंग मुनि के शरणागति शबरी का मिल गइलि रहलि उहाँ का विश्वास दिया देले रहलीं जे तोहरा घरहीं तुहें राम मिलिहन। अपना राम बदे शबरी पलक डसाई के आतुर, तबले कबंध उद्धार कई के भगवान राम उनका कुटी में पहुँचल बानीं एह प्रसंग के गोस्वामी जी अइसे कहले बानीं :—

ताहि देइ गति राम उदारा, सबरी के आश्रम पगु धारा।
सबरी देखि राम गृह आए। मुनि के बचन समुझि जिय भाए।

अपना राम के दर्शन पाई के भक्ता सबरी कवना हाल में बाड़ी से अब देखल जाय।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रेम मगन मुख बचन न आवा, पुनि-पुनि पद सरोज सिर नावा।

प्रभु कृपा से शबरी अपना के सम्हारत अपना राम के पग धोइ के, आसन पर बइठाइ के सरस फलाहार करवले बाड़ी। उनका पास स्तुति के शब्दे नइखे। तब ऊ योगी अस अपना चंचल चित्त के बटोरत, अपना के मंदबुद्धि आ मूढ़ घोषित कइके प्रभु चरनन पर डाल देले बाड़ी। एह पर 'मानस' में भगवान राम के कथन बाटे कि जाति, पाँति, कुल, धर्म, बड़ाई, धन, बल, परिवार आ चतुराई आदि का रहते भक्ति से हीन प्रानी जलहीन बदरी अस लागेला, जइसे—

जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई, धन बल परिजन गुन चतुराई।
भगति हीन नर सोहइ कैसा, बिनु जल बारिद देखिय जैसा।

एह से आगे भगवान राम शबरी से भक्ति के बरनन कइले बानी, जवन लखनलाल जी के भक्ति बरनन से इंचिका भर भिन्न बा। लखन लालजी से जे भक्ति बरनन भगवान राम कइले बानी से श्रीमद्भागवत का श्लोक

श्रवणं कीर्तनं विष्णो स्मरणं पाद सेवनम्।
अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यमात्म निवेदनम्॥ का अनुसार बा।

एही नवधा भक्ति के भगवान राम शबरी से जे कहले बानीं तवना के गोस्वामी जी लिखले बानी—

नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं, सावधान सुनु धरु मनमाहीं।
प्रथम भक्ति संतन कर संगा, दूसरि रति मम कथा प्रसंगा।
गुरु-पद पंकज सेवा, तीसरि भगति अमान।
चौथि भगति मम गुन, गन करइ कपट तजि गान॥
मत्र जाप मम दृढ़ विस्वासा, पंचम भजन सो वेद प्रकासा।
छठ दम सील विरति बहु करमा, निरत निरन्तर सज्जन धरमा।
सातवं सम मोहि मय जग देखा, मो ते संत अधिक कर लेखा।
आठवं यथा लाभ संतोषा, सपनेहुँ नहिं देखइ पर दोषा।
नवम सरल सब सन छलहीना, मम भरोस हिय हरष न दीना।

श्रीरामचरित मानस का उत्तर कांड में ग्यान आ भक्ति के बड़हीं मजगर बरनन गोस्वामी जी कइले बानी। गरुड़ जी, काग भुशुण्डी जी से पुछले बानी जे संत, मुनि, वेद आ पुरान के कथन बाटे जे ग्यान अस दुर्लभ कुछ नइखे। ऊहे ज्ञान रावाँ से मुनि महाराज बतवलीं, बाकी अपने का भक्ति अस ज्ञान के आदर ना दिहलीं। तब कृपा कइके अपने का ज्ञान आ भक्ति के अन्तर हमरा से बतावल जाय।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भुशुंडी जी माया आ भक्ति के बरनन करत बतवले बानीं जे दूनों स्त्री वर्ग ह आ स्त्री के देख के स्त्री ना मोहे। जीव ईश्वर के अंश, अविनाशी, चेतन, निर्मल आ सुख के राशि हटे। ऊ माया का बस होइ के तोता आ वानर अस अपना आप में बन्हा गइल बा। एह तरे जड़ आ चेतन में गाँठ पड़ गइलि बाटे। ऊ गाँठ बाइ झुठहीं के, बाकी तबो ओकर छूटल बाटे बड़ा कठिन। एही से जीव संसारी होइ के गाँठ में बन्हाइल बा, ना गाँठ छूटति बा ना जीव सुखी होत बा। वेद आ पुरान में बहुत-बहुत उपाय बतावल बा, बाकी ऊ भरम गाँठ खुली कहाँ ले, अवरू अधिका अझुराइलि जाति बा। जीव का उर में अज्ञान सरूप भकसावन अन्हार भइल बा। एही से गाँठ लउकति नइखे, तब छूटे त कइसे? जो कंचित नीचे लिखल संजोग जुट जाय, तब ऊ गांठ अपने आप खुल जाई। जइसे—

सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई, जौं हरि कृपा हृदय बस आई।
जप तप व्रत जम नियम अपारा, जे श्रुति कह सुभ धर्म अचारा॥
तेइ तृन हरित चरै जब गाई, भाव बच्छ सिसु पाइ पेन्हाई॥
नोइ निवृति पात्र विस्वासा, निर्मल मन अहीर निज दासा॥
परम धर्ममय पय दुहि भाई, अँवटै अनल अकाम बनाई॥
तोष मरुत तब छमा जुड़ावै, धृति सम जावनु देइ जमावै॥
मुदिता मथै बिचार मथानी, दम अधार रजु सत्य सुबानी॥
तब मथि काढ़ि लेइ नवनीता, बिमल बिराग सुभग सुपुनीता॥

जोग अगिनि करि प्रगट तब, कर्म सुभासुभ लाइ।
बुद्धि सिरावे 'ग्यान' घृत ममता मल जरि जाइ॥
तब विग्यान रूपिनी बुद्धि विसद घृत पाइ।
चित्त दिया भरि धरै दृढ़ समता दियटि बनाइ॥
तीनि अवस्था तीनि गुन तेहि कपास तें काढ़ि।
तूल तुरीय सवांरि पुनि बाती करे सुगाढ़ि॥

सोरठा—एहि बिधि लेसै दीप, तेज राशि विज्ञान मय।
जातहिं जासु समीप, जरहिं मदादिक सलभ सभ॥
सोहमस्मि इति वृत्ति अखडा, दीप सिखा सोइ परम प्रचंडा॥

ऊ ब्रह्म हमहीं हवीं, ई जे अखंड वृत्ति ह, ऊ परम प्रचंड दीप शिखा ह। एह तरे जब आत्मानुभव का सुख के सुन्दर प्रकाश पसरेला तब संसार के मूल भेदरूपी भ्रम के नाश हो जाला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुराण में राम कथा

पुराण शब्द वैदिके साहित्य से पावल जात बा। जइसे—'ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह' अथर्व ११-७-२४। एह पर कुछ विद्वान असहमति प्रगट कइले बाड़न जे अतना पुराना 'पुराण' ना होखी। वायु पुराण में लिखल बा कि प्राचीन काल में रचना भइला से पुराण कहल जाला। वायु पुराण में त इहां तक लिखल बा कि सब शास्त्रन का पहिले ब्रह्माजी पुराण के स्मरण कइलों, बाद में उहाँ का मुंह से वेद निकसल।

इतिहास आ पुराण के समुचित संकलन द्वापर का अंत में वेदव्यास जी कइले रहीं। चार वेदन का अलावे महाभारत आ पुरानन के पंचम वेद कहल बा। पुराण के पांच आ दस लक्षण कहल बा। पांच में—सर्ग, विसर्ग, वंश, मन्वन्तर आ वंशानुचरित कहल बा। दस लक्षण के बरनन अइसे बा—

१. सर्ग (सृष्टि विस्तार)
२. विसर्ग (मानव सृष्टि देवता, कारक पुरुषादि)।
३. स्थान (समस्त ब्रह्मांड के संनिवेश)
४. पोषण (जीव लोगन के धर्म, कृत्य आ सदाचार जवना से समाज चलेला)
५. ऊति (जीव लोगन के कर्म वासना आ सरग नरक के गति)
६. मन्वन्तर (मन्वन्तराधिपतिन के चरित आ वंश विस्तार)
७. अवतार (भगवान के अवतार चरित)
८. निरोध (आत्म संयम के सम दम योगादिक मार्ग)
९. मुक्ति (ग्यानयोग—दर्शन शास्त्र)
१०. आश्रय (भक्ति मार्ग)

विदेशी विद्वान कीथ साहेब का पुराणन का कथन पर कम विश्वास बा आ पार्जिटर साहेब का वेदो से अधिक विश्वास बा पुराने पर। प्राचीन साहित्य आ शिला लेखन पर डाक्टर पुसालकर जी का विश्वास बा कि ईशा का पहिले आ शुरु वाली शती से पुराण चलि आवत बा। देश आ विदेश के विद्वान् श्री रैप्सन सा०, स्मीथ सा० गोपीनाथ बाबू, श्री रंगाचार्यजी, अल्तेकर जी आदि विद्वानन के सराहनीय प्रयास भइल बा पुराणन का सामग्रिन के खोजे में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महापुराणन के संख्या १८ आ उप पुराणन के संख्या १८ से २७ तक बा। श्रीमद्भागवत का मतानुसार अट्ठारह महापुराण के श्लोक संख्या अइसे बा,

श्रीमद्भागवत १८ हजार, ब्रह्मपुराण १० हजार, पद्मपुराण ५५ हजार, विष्णुपुराण २३ हजार, शिवपुराण २४ हजार, नारद पुराण २५ हजार, मार्कण्डेय पुराण ९ हजार, बावन पुराण १० हजार, ब्रह्माण्ड १२ हजार, लिङ्ग पुराण ११ हजार, भविष्य पुराण १४ हजार ५ सौ, अग्निपुराण १५ हजार ४ सौ, कूर्मपुराण १७ हजार, ब्रह्म वैवर्त पुराण १८ हजार, गरुड़ पुराण १९ हजार, बाराह पुराण, २४ हजार, मत्स्यपुराण २४ हजार आ स्कंद पुराण ८१ हजार १ सौ श्लोक।

उपपुराण में सनत्कुमार, नरसिंह, बृहन्नारदीय, शिवधर्मोत्तर, दुर्वासा, कपिल, मानव, उसनस्, वारुण, आदित्य, कालिका, साम्ब, नन्दिकेश्वर, सौर, परासर, माहेश्वर, वाशिष्ट, भार्गव, आदि, मुद्गल, कल्कि, देवी, महाभागवत, बृहद्धर्मोत्तर, परमानंद, पशुपति आ हरिवंश २७ नाम बा। कल्प भेद से कुछ महापुराण, उपपुराण में आवेला आ उपपुरानो महापुराण मानल जाला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भागवत पुराण में राम बरनन

भागवत में शुकदेव जी राजा परीक्षित से कहले बानीं जे खट्वांग के पुत्र दीर्घबाहु, आ उहां के पुत्र रघु महाराज भइलीं। महाराज रघु के पुत्र अज आ उहें के पुत्र महाराज दशरथ रहीं। देवता लोगन का प्रार्थना पर परब्रह्म परमात्मा अंशन सहित अवतार धारण कइले रहीं। भगवान राम पिता वचन मान के बनवास लेले रहीं। सूपनेखा के नाक कटला का कारण राम जी का आपन सीता अस पत्नी के वियोग सहे के परल रहे। उहां से समुद्र थरथरा उठलन, समुद्र पर सेतु बन्हाइल आ लंका जाइ के भगवान राम राक्षसन के नास कइ दिहलीं।

भगवान राम विश्वामित्र मुनि का यज्ञ से राक्षस लोग के मारे शुरू कइलीं। जनकपुर में सीता स्वयंबर भइल रहे, जहां भगवान राम धनुष तुरलीं। भगवान जवना लक्ष्मी के अपना हृदय में स्थान देइ के सम्मानित कइले बानी ओही शक्ति के अवतार जनकपुर में जानकी का रूप में भइल रहे। अयोध्या से सीता जी का साथ लवटला पर राह में परशुराम जी से भगवान राम का भेंट भइल। शंकर के धनुष टुटला के घोर दुख रहे परशुराम जी का, जे हम २१ बार क्षत्रिय वंश के निक्षत्रिय कर देले बानी। परशुराम जी के गर्व चूर हो गइल भगवान राम का सामने ओह घरी।

अयोध्या गइला पर भगवान राम पिता वचन मान के सीता जी आ लखनलाल का साथ बन में गइलीं। सूपनेखा के नाक कटलि, सीता हरण भइल आ भगवान राम उहां लीला से संसार के बतवलीं, जे स्त्री में आशक्त पुरुष के का गति होले। कवंध बध, सुग्रीव से मित्रता का बाद समुद्र पर कोप आ सेतुबंध, तवना का बाद लंका पर लक्ष्मण, सुग्रीव, हनुमान, गंधमादन, नील, अंगद जामवान आ पनस आदि वीरन का साथ बानरी सेना लेइ के भगवान के चढ़ाई भइलि।

रावण पुष्पक विमान पर समर में अइलन आ भगवान राम इन्द्र महाराज का रथ पर सवार रहीं, जवना के मातलि नाम के चालक चलावत रहन। भगवान राम का बाण से रावण के मरण भइल आ लखन लाल का बाण आ सैनिक लोगन से राक्षसी सेना के संहार हो गइल। समर क्षेत्र में जाइ के मंदोदरी हाय-हाय करत रावण का कुमुर्खी पर भारी शोक प्रगट कइली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगवान राम का आदेशानुसार स्वजन लोगन के विभीषण जी श्राद्ध कइलन। सीता जी अशोक बाटिका में उदास बइठल रहीं, जहां भगवान राम का पहुँचला पर उहाँ के हृदय प्रेम से भरपूर हो गइल। विभीषण के लंका के राज का साथ एक कल्प के आयु मिललि। भगवान राम, लखनलाल, सीता, सुग्रीव, हनुमान आदि विमान पर चढ़ के चौदह साल के व्रत पूरा कइके अयोध्या के राह लिहलीं।

देवगण प्रभु के लीला गावत रहन आ भरत जी गो मूत्र में पकावल जौ के दलिया के भोजन, छाल के पहिरन, धरती पर डाभ के बिछावन आ जटा बढ़वले दिन काटत रहीं। जब भरतोजी का पता चलल जे भगवान राम आ रहल बानीं त सिर पर उहाँ के खड़ाऊँ रखके पुरोहित, मंत्री आ पुरवासिन्ह का साथ अगवानी कइलीं। प्रभु चरण किंहा पादुका रखके हाथ जोड़ले भरतजी खड़ा हो गइलीं। भरतजी का साथ भगवान रामो का नेत्र से प्रेमाश्रु बह चलल। सब लोगन से मिल मिलाइ के सब जस के तस पहिलहीं अस सुखी हो गइल। भगवान राम के राज तिलक भइल विधिवत वेदमंत्रोच्चारण का साथ।

नवम स्कंध बारहवां अध्याय में लोकापवाद के चलते भगवान राम सीताजी के त्याग कइले बानीं। वाल्मीकि आश्रम में लवकुश के जन्म भइल बा। लखनलालजी के अंगद आ चित्रकेतु अउर सत्रुहनो जी का सुबाहु आ श्रुतसेन दुइ पुत्रन के बरनन बा। सीताजी अपना पुत्रन के वाल्मीकि मुनि के सँउप के अपने प्रभु चरण में लीन पृथ्वी देवी का लोक में चल गइलीं। एह राम कथा में भाई, प्रजा आ पुरोहित भा गुरु का साथे आदर्श बर्ताव के बड़ा सरल बरनन बाटे। श्री राजेन्द्र हाजरा का मतानुसार ६वीं या ७वीं शती ई० में श्रीमद्भागवत के रचना भइलि रहे। श्रीधर जी वा टीका में श्लोक सँख्या कुछ भिन्न बाटे।

इहाँ कुछ अउर पुराणन में रामकथा के ठुमकारे रूप दीहल जात बा। तिथि आदि के संकलन श्री राजेन्द्र हाजरा का 'भारतीय सभ्यता' आ 'पौराणिक रेकर्डस आन हिन्दू राइट्स ऐन्ड कस्टम्स' का अलावे कुछ एन्टिक्वेरी का आधार पर बाटे। श्री हाजरा जी विष्णु, भागवत, मत्स्य, कूर्म, मार्कण्डेय आ ब्रह्मांड पुरान के पुरातन मनले बाड़न। मत्स्य आ ब्रह्मांड पुराण में रामकथा के नामे मात्र के बरनन बाटे। ब्रह्मांड पुराण में मिथिला वंश बरनन में गीता के जन्म प्रसंग आइल बाटे।

विष्णु पुराण—के रचना ४थी शती के ह। ग्रंथ में भगवान राम के अवतार बनवास, रामराज के बरनन बा। ताड़िका के उपद्रो आ बध आ 'राम रावण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युद्ध का अलावे सीताजी के अयोनिजा बतावल बा। भगवान राम का चारू भाइन का पुत्रो लोगन के प्रसंग आइल बा। विष्णु पुराण के बहुत अंश खंडित हो गइल बाटे। विष्णु धर्मोत्तर पुराण आ कर्मोत्तर खंड के मिलवला पर श्लोक संख्या सोलह हजार होले।

हरबंश पुराण—के रचना ४सौ ई० का आस पास के ह। ग्रन्थ में भगवान राम के अवतार, बन गमन, राज बरनन, रावण से युद्ध अउर अवतारन के सूची बाटे। राजा दशरथ का यग्य भा सीताजी का अयोनिजा के चरचा नइखे।

कूर्म पुराण—के रचना ७वीं शती के ह। सूर्यवंश आ राक्षस वंश के बरनन, माया रूपी सीता के हरण, राम रावण संग्राम आ भगवान राम से शंकर भगवान के स्थापना के प्रसंग आइल बाटे। श्लोक संख्या अधो से कम बा कूर्म पुराण में नारदपुराण का सूची के तंत्र भाग से शोध जरूरी बा।

अग्नि पुराण—में राम कथा के व्यापक बरनन बाटे। एह ग्रन्थ में वाल्मीकि रामायण का सातो कांड के संक्षेपे में बड़ा मजगर बरनन आइल बा। अध्याय (५-११) में रामजी का मंथरा पर अत्याचार के चलते वनवास के चरचो बा। माल्यवंत गिरि पर भगवान राम का चतुरमासा के प्रसंग आइल बाटे। एह ग्रंथ में ज्योतिष, वैद्यक, धनुर्वेद, गंधर्ववेद, स्थापत्यकला, साहित्य, दर्शन का अलावे कौमार संस्कृत व्याकरण आदि विद्या के चर्चा बाटे।

नारद पुराण—आधुनिक नारद पुराण के रचना १०वीं शती के ह। वाल्मीकि रामायण के बालकांड से लगाइत उत्तर कांड तक ठुमकारे रूप बड़ा सुन्दर ढंग से आइल बाटे। भगवान राम आ लखन लाल आदि नारायण आ शंकरषणादि के अवतार बानीं। द्राविड़ देश में भगवान राम विभीषण के ब्राह्मणन का बंधन से उद्धार कइले बानीं। श्लोक संख्या १८११० बाटे आ ६८९० श्लोक लुप्त बा जवना के शोध जरूरी बाटे।

नृसिंह पुराण—के रचना ४थी शती के ह। रावण वंश बरनन पहिलहीं आइल बाटे। भगवान नृसिंह के अवतार का अलावे अवतार बाद के व्यापकरूप आइल बा। भगवान राम के पूर्णावतार आ लखनलाल जी के शेषावतार कहल बाटे। सीता स्वयंवर में भगवान राम का सीता जी के पवला का बाद कुछ लोलुप क्षत्रिय लागन के भगवान राम पर हमलो के चरचा बा। राम रावण युद्ध में राक्षसन के विनाश का बाद सीताजी के त्याग के प्रसंग नइखे आइल। भगवान राम के यग्य आ स्वर्गारोहण के विधिवत चरचा बाटे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विष्णु धर्मोत्तर पुराण—के रचना ७वों शती के ह। भगवान राम, लखन लाल, भरतजी आ शत्रुहन जी नारायण, संकर्षण, प्रद्युम्न आ अनिरुद्ध के अवतार बानीं। रावण के भगवान शंकर के परम भक्त कहल बा। रावण का पास सोना के भगवान शंकर लिङ्ग के बरनन आइल बाटे। युद्ध में रावण वध के बरनन बा। कुछ विद्वानन का मतानुसार एह पुराण के काश्मीर में लिखल गइल रहे।

ब्रह्म पुराण—के रचना काल १०वीं शती बतावल बाटे। एह ग्रंथ में कइ पुराणन के प्रसंग आइल बा जवना से एह में राम कथा के बहुत व्यापक बरनन आइल बा। हरवंश पुराण का १०वां अध्याय के राम कथा त एह ग्रंथ का २१३ वां अध्याय में जस के तस रख दिहल बाटे। विश्वकोष सूचीवाली प्रति से बम्बई से छपल प्रति उत्तम बा।

स्कंध पुराण—के रचना काल ८वीं से १०वीं शती का बीच के बाटे। एह ग्रंथ में अवतार हेतु, रामावतार, रामचरित, अहल्योद्धार, हनुमान चरित, महाराज दशरथ से श्री दशरथेश्वर महादेव के स्थापना, भगवान राम से श्री रामेश्वर नाथ महादेव के स्थापना, सीता जी के अग्नि परीक्षा आदि के मजगर प्रसंग बाड़न स। भारतवर्ष का करीब सब तीर्थन के महात्म्य दीहल बाटे। श्लोक संख्या बहुत ज्यादा हो गइलि बा, बाकी, कई प्रसंग दुबारा छप गइल बा। दोहरी छाप निकाल देला से श्लोक संख्या ८११००० बाटे।

गरुड़ पुराण—के रचना काल १०वीं शती बाटे। भगवान राम सूपनखा के नाक कटले बानी। भगवान राम का गया श्राद्ध के पूरा बरनन आइल बा एह ग्रंथ में। ईहो पुराण पूरा नइखे पावल गइल। बंगला विश्वकोषकार का जे ग्रंथ मिलल रहे ओह में सात हजार श्लोक कम रहे। एहू घरी जे गरुड़ पुराण बा खडिते बा आ विशेष रूप से मरजाद बा खाली प्रेते खण्ड के।

पद्म पुराण—के रचनाकाल १२ से १५वीं शती का बीच के बाटे। राम चरित का प्रमुख घटनन के तिथि बरनन सुन्दर ढंग से दीहल बाटे। सूपनखा के नाक कटाई आ सीता हरण भइल बा। भगवान राम आ अगस्त जी के रोचक संवाद में वाल्मीकि उत्तर कांड के पांच सर्गन में सराहनीय सामग्री दीहल बा। धोबी का टिप्पणी पर सीता त्याग बा। आनंदाश्रम का पाताल खंड में रामाश्वमेध के रोचक प्रसंग बा।

उत्तर कांड में रामरक्षा स्तोत्र शम्बुक वध का अलावे भगवान राम आ शक्ति सीता जी, लक्ष्मी आ विष्णु के अवतार बानी। ई पुराण सृष्टि खंड, पाताल खंड, भूमि खंड आ उत्तर खंड चार खंडन में बा। गौड़ीय आ दक्षिणात्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूनो के संस्करण बाटे। दूनो का कथा में त अंतर बटले बा अध्यायो में कवनो मिलान नइखे। श्लोक संख्या ४८४५२ बा, स्वर्ग खंड आ क्रिया योगसार एही ग्रंथ के अंग कहल बाटे आ उन्हनो के मिला दिहला से श्लोक संख्या ठीक पचपन हजार होति बा।

ब्रह्म वैवर्तपुराण—के रचना काल में बड़ी भिन्नता बा। रचना के श्री गणेश आ ७वीं शती आ पूर्णाहुति १६वीं शती में। एह ग्रंथ के देववती प्रसंग विशेष महत्व के बा। सीता हरण आ अग्नि से माया सीता के उत्पत्ति बरनन बाटे। ई पुराण नारदीय पुराण का अनुसार ठीके रूप में बाटे, बाकी सावर्णि नारद संवाद आ ब्रह्मा वाराह संवाद आदि नइखे आइल।

शिव पुराण—कुछ लोग शिवपुराण आ वायु पुराण के एके बतवले बाड़न, बाकी शिवपुराण अलगे बा जवना के श्लोको संख्या ठीके बाटे आ ऊ बम्बई से छपल बा। वेंकटेश्वर प्रेस का शिवपुराण सृष्टि खंड का अध्याय ३–४ में नारद मोह प्रसंग आइल बा। सती खंड अध्याय २४–२६ में भगवान राम के परीक्षा सती जी कइले बानी। उहाँ भगवान राम के कथन बा कि हम शंकरजी का आदेशसे अवतार लेले बानी। कृष्ण जी प्रेस से प्रकाशित शिव पुराण का अध्याय १३–१४ का धर्म संहिता प्रसंग में एगो गुटमुटारे राम कथा बाटे।

देवी भागवत पुराण—के रचना काल बा १०वीं ११वीं शती। नवरात्र व्रत के महिमा महान बा आ मोह प्रसंग में राम कथा के रोचक प्रसंग बा। भगवान राम से सूपनखा के नाक कटाइ बा आ सीता हरण पर नारद जी का उपदेश से रावण पर विजय खातिर भगवान राम नवरात्र कइले बानी।

कालिका पुराण—के रचना काल १०वीं ११वीं शती कहल बा। महाराज जनक का हल चलवला से सीता जी का साथ दू बेटन के प्राप्ति बरनन बाटे। भगवती दुर्गा का पूजन के प्रबल प्रताप का प्राप्ति के प्रसंग का अलावे राम विजय के अभिलाषी ब्रह्मा जी खुद दुर्गा जी के विधिवत पूजन कइले बानी।

सौर पुराण—के रचना काल ९५० आ १०५० शती ई० बाटे। भगवान राम के शंकर जी में उत्तम श्रद्धा बाटे। भगवान शंकरे का करत भगवान राम के आपन महान पद मिलल बा। महाराज जनक गौरी जी के अरचन कइ के पुत्री रूप में शक्ति सीता के पवले बानी, जेकरा के पार्वती के अंश बतावल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामायन सत कोटि अपारा

गोस्वामी तुलसीदास जी का 'रामायण सत कोटि अपारा' मतानुसार वाल्मीकि कृत रामायण आ प्रचलित वाल्मीकि कृत रामायण आदि के संक्षेप बरनन पहिले ही आ चुकल बा। इहों कुछ खास रामायन के ठुमकारे रूप दीहल जात बा।

योग वाशिष्ठ रामायण—एह रामायण का रचना काल में कई विद्वानन के भिन्न-भिन्न मत बाटे। श्री बी० राघवन जी रचनाकाल ११ सौ आ १२५० ई० का बीच बतवले बानी अउर एम० विन्टरनित्स साहेब आ श्री एस० एम० दास गुप्ता जी ८वीं शती-लिखले बानी।

पुस्तक का प्रथम अध्याय वैराग प्रकरण में रामावतार के हेतु—सनतकुमार, भृगु मुनि आ देवशर्मा के स्राप बतावल बा। भगवान राम सोरह साल का उमिर में विरक्त हो गइल बानी। विश्वामित्र मुनि का प्रयास से गुरु वशिष्ठ जी भगवान राम के गूढ़ उपदेश सुनवले बानीं जवना से निर्लेप भाव से उहाँ का करतव्य पालन के अंगेछले बानी। एह पुस्तक के वशिष्ठ जी आ भगवान राम का संवाद रूप में रचल गइल बाटे। पुस्तक प्रसंग के पहिले वाल्मीकि मुनि अरिष्ट नेमिजी से सुनवले रहीं आ उहे सुतीक्ष्ण जो के शिक्षा रूप में अगस्त जी उपस्थित कइले बानी। पुस्तक में काग भुशुंडी जी के जन्म आ सुमेर गिरि पर निवासो के प्रसंग आइल बा।

अध्यात्म रामायण—में वेदान्त आ दर्शन पर आधारित राम भक्ति के सजीव रूप निखरल बाटे। सर्व प्रथम ब्रह्मा जी से नारद मुनि शंकर-पार्वती संवाद रूप में ई राम कथा सुनले रहीं। बालकांड में माता कोशिल्या का भगवान राम का दिव्य रूप के दर्शन मिलल बाटे। राम-नाम महात्म्य में वाल्मीकि जी के आत्मकथा, रामावतार, अहल्योद्धार, सीता स्वयंबर, जनकपुर से भगवान राम का सीता जी का साथ चलला पर राह में भेंट, माया रूप सीता के हरण, लखनलाल के १२ वर्षीय उपवास व्रत, सेतु बंध का पहिले भगवान शंकर के स्थापना, रावण का असुर गुरु शुक्राचार्य का आदेशानुसार यग्य अनुष्ठान आ अंगद जी से यग्य में वित्तरेक बरनन बा। विश्वामित्र, वशिष्ठ, जनक, कौशिला का अलावे रावण आ कुंभोकरण का रामावतार का गूढ़ भेद के ग्यान बा। भगवान राम प्रताप से रावण आ असुर लोग के विधंस भइल बाटे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगवान राम का व्यापक प्रभाव आ भक्ति भावना से भरपूर भइला से एह ग्रन्थ के रचना काल बहुत एने के विद्वान लोग मनले बा। श्री रामानंद सम्प्रदाय का एह ग्रन्थ से विशेष श्रद्धा-भक्ति का चलते त कुछ लोग एकर रचइतो श्री रमेनंद जी के मान लेले बाड़न। ऑथरशीप अध्यात्म रामायण जर्नल गंगानाथ झा रिसर्च इन्स्टिच्यूट भाग १ में एह पर विशेष बरनन दीहल बा।

अद्भुत रामायण—जार्ज ग्रियर्सन साहेब का 'आन दो अदभुत रामायण, बुलेटिन स्कूल ओरियन्टल स्टडीज भाग ४ का अनुसार एह रामायण के रचना काल अध्यात्म रामायण के रचनाकाल का कुछ एने के बाटे। श्री वाल्मीकि आ भरद्वाज मुनि का संवाद में तीन भाग में ई राम कथा बा। नारद मुनि आ पर्वत राज का स्राप से विष्णु भगवान का भगवान राम का रूप में अवतार लेवे के परल बाटे। जानकी जी के अम्बरीष पुत्री के स्राप से जंगल से राक्षस चोराई ले गइल बा। एह रामायण में स्राप के विशेष प्रभाव आ प्रताप देखावल बा। नारद मुनि के स्वर्ग में अपमान का चलते लक्ष्मीजी का सीता रूप होइ के मंदोदरी का गर्भ से जन्म लेने के परल बाटे।

आनंद रामायण—महाराष्ट्रिय श्री रामायण समालोचना भाग २ के अनुसार एहू ग्रंथ के रचना अध्यात्म रामायण का एहरे के ह। अध्यात्म रामायण के एह ग्रंथ पर बड़ा गहरा छाप बा। भगवान राम के बाल लीला, अहल्योद्धार, आ केवट संवाद आदि जस के तस आइल बा।

सीता जी के अग्निजा बतावल बा आ सीता के स्वयंवर में रावणो बाड़न। वृन्दा स्राप आ कलहा-धर्मदत्त से कैकयी आ महाराज दशरथ के अवतार बा। वन में सीता हरण आ सती से पूरण ब्रह्म का रूप में भगवान राम के परीक्षा प्रसंग बाटे। रावण मुक्ति पावे बदे सीता जी के हरण कइले बाड़न। भगवान शंकर से रावण का आत्म लिङ्ग मिलल बा आ ओकरा भुलाइओ गइला के बरनन कइल बा। अहिरावण आ महिरावण-भगवान राम आ लखन लाल के पकड़ के पाताल ले गइल बाड़न जहां जाइ के हनुमान जी दूनो मूर्ति के छोड़वले बानी।

वाल्मीकि रामायण के उत्पत्ति, भगवान राम के चहुँ ओर तीर्थाटन, अश्वमेध यज्ञ, सीता जी के नख-शिख बरनन, जल क्रीड़ा आ सीता राम के दिन चर्चा के मजगर बरनन आइल बाटे। गुणवती आ पिंगला के कृष्णवतार में सत्यभामा आ कुब्जा रूप धारण के विश्वास दीहल बा। सीता जी के त्याग प्रसंग आ वाल्मीकि मुनि का आश्रम में लव के जन्म का अलावे कुशो के जन्म के उजागर कइल गइल बा। लवकुश का भगवान राम के सेना से प्रबल समर के प्रसंग आइल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सीताजी सौगन्ध खइलीं त पृथ्वी देवी प्रगट हो के सीता जी के अपनाइ लिहलीं, बाकिर बाद में भगवान राम का भय से सीता के लवटा दिहला के बरनन बा। राम लखन का आठगो पुत्रन के विवाहो के उकुति बाड़ी स। शत स्कंध रावण से राम सेना के तोवह तिल्ला लागि गइल। तब शक्ति रूप सीता प्रचंड रूप धारण कइके रावण के संहार कइली। मुलकासुर के पतनो के कथा बाटे। सर्ग १८ में भगवान राम के उपासना आ राम कवच के पूरन चरचा बा। अंतिम कांड में सोम वंशो के राजा लोगन के हमला आ संधि का अलावे कुश जी के राजतिलक प्रसंग आइल बाटे। भगवान राम आ लखन लाल जी के वैकुंठ-वास के प्रसंग पर ग्रन्थ के समाप्ति भइल बाटे।

कालनिर्णय रामायण—एह ग्रन्थ में मुख्य-मुख्य घटनन का तिथि के संग्रह कइल बा। कथा क्रम के प्रारंभ से अन्त तक बहुत सुन्दर ढंग से तिथि दिहलि बा। एह रामायण का अलावे रामावतार काल निर्णय सूचिका, रामायण, संग्रह, रामायण तात्पर्य दीपिका, समय निरूपण रामायण आ समयादर्शो रामायण में तिथिन के मजगर उल्लेख बाटे।

कागभुशुण्डी रामायण—एह रामायण के आदि रामायण भा मूल रामायण कहल बाटे। गोस्वामी तुलसीदास जी मानस बालकांड में लिखले बानी,:—

जागबलिक जे कथा सुहाई, भरद्वाज मुनिवरहि सुनाई।
कहिहउं सोइ संवाद बखानी, सुनहु सकल सज्जन सुख मानी॥
शंभु कीन्ह यह चरित सुहावा, बहुरि कृपा करि उमहिं सुनावा।
सोइ शिव काग भुशुंडिहिं दीन्हा, रामभगत अधिकारी चीन्हा॥
तेहि सन जागबलिक पुनि पावा, तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रतिगावा।

कहे के ठहरल जे जागबलिक जी जवन राम कथा भरद्वाज मुनि के सुनवले रहीं, ओही संवाद के तुलसीदास जी बखनलीं। भगवान शंकर पहिले एह सोहावन चरित्र के रचना पार्वती जी के सुनवलीं। ऊहे चरित्र काग भुशुण्डि जी के रामभक्त का अलावे अधिकारी समझ के दीहलीं। ओह काग भुशुण्डीजी से जागबलिक जी पवलीं आ फेरु ओह के भरद्वाज मुनि के गा के सुनवलीं।

सती से सुनवला का बाद प्रथमे भगवान शंकर कथा दिहलीं काग भुशुण्डिए जी के। एही से एह रामायण के नाम पड़ल आदि अउर मूल रामायण।

प्रकाशित मूल रामायण वाल्मीकि रामायण का प्रथम सर्ग से बहुत मिलत-जुलत बाटे। पहिले अवतार, बाललीला आ सीता स्वयंवर के बरनन बा। कुछ विद्वानन के मत बा कि भुशुण्डि जी भरत-अत्रि संवाद शांडिल्य जी के सुनवले बानो। एह में चित्रकूट अउर आसपास के तीर्थ बरनन के साथे सतानक बन का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection: Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तलाब का बीच के मंडप आ चउतरा पर भगवान राम सीता आ उहां का सखिन के बड़ा विचित्र क्रीड़ा बरनन बाटे।

महा रामायण— श्री रामदास गौड़ जी एह रामायण का बारे में 'हिन्दुत्व' में बड़ा मजगर आ महत्व के बरनन देले बानी। महा रामायण में भगवान राम का ४८ चरण रेखन से समस्त संसार का उत्पत्ति के सरुप बाटे। राम भक्तन के संस्कार आ भगवान राम के निरक्षरातीत ब्रह्म बतावल बा। सखी भाव से राम भक्ति ग्रहण आ सीता जी से ३३ शक्तिन के नाम आ कामो के जीअत बरनन दीहल बाटे। राम नाम के महत्व आ महिमो के सुन्दर चित्र उरेहल बा। गोस्वामी तुलसीदास जी राम चरित मानस में जे व्यापक नाम महिमा बखनले बानी सेकर चरचा संक्षेप में इहां दीहल जात बाटे :—

एहि महं रघुपति नाम उदारा, अति पावन पुरान श्रुति धारा ॥
मंगल भवन अमंगल हारी, उमा सहित जेहि जपत पुरारी ॥
भनिति विचित्र सुकवि कृत जोऊ, रामनाम बिनु सोह न सोऊ ॥
विधु बदनी सब भांति संवारी, सोह न बंसन बिना बर नारी ॥
सब गुन रहित कुकवि कृत बानी, रामनाम अस अंकित जानी।
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही, मधुकर सरिस संत गुन ग्राही।
जदपि कवित रस एकउ नाहीं, राम प्रताप प्रगट एहि माहीं ॥
राम नाम कर अमित प्रभावा, संत पुरान उपनिषद गावा।
राम नाम कहि जे जमुहाहीं, तिन्हहिं न पाप पुंज समुहाहीं ॥
जाकर नाम मरत मुख आवा, अधमउ मुकुत होइ श्रुति गावा ॥
जासु नाम बल संकर कासी, देत सबहिं सम गति अविनासी ॥
जासु नाम त्रय ताप नसावन, सो प्रभु प्रगट समुझु जिय रावन ॥
जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा, तेहि किमि कहिय विमोह प्रसंगा ॥
जासु नाम पावक अघ तूला, सुमिरत सकल सुमंगल मूला ॥
जाकर नाम लेत जग माहीं, सकल अमंगल मूल नसाहीं ॥
जाकर नाम सुनत सुभ होई, मोरे गृह आवा प्रभु सोई ॥
बिवसहुं जासु नाम नर कहहीं, जनम अनेक रचित अघ दहहीं ॥
सादर सुमिरन जे नर करहीं, भव बारिधि गोपद इव तरहीं ॥
भायं कुभायं अनख आलसहूं, नाम जपत मंगल दिसि दसहूं ॥
बारक राम कहत जग जेऊ, होत तरन तारन नर तेऊ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जन्म जन्म मुनि जतन कराहीं, अंत राम कहिं आवत नाहीं ॥
राम सकल नामन्ह ते अधिका, होउ नाथ अघ खग गन बधिका ॥
अंधकार बरु रविहिं नसावै, रामबिमुख न जीव सुख पावै ॥
हिम ते अनल प्रगट बरु होई, बिमुख राम सुख पाव न कोई॥
सब भरोस तजि जो भज रामहिं, प्रेम समेत गाव गुन ग्रामहिं ॥
सो भव तर कुछ संसय नाहीं, नाम प्रताप प्रकट कलि माहीं ॥
नहिं कलि करम न भगति बिवेकू, राम नाम अवलंबन एकू ॥
चहुं जुग चहुं श्रुति नाम प्रभाऊ, कलि बिसेष नहि आन उपाऊ ॥

कृत जुग त्रेता द्वापर, पूजा मख अरु जोग।
जो गति होइ सो कलि हरि, नाम ते पावहिं लोग ॥
यह कलिकाल महायतन, मन करि देखु विचार।
श्री रघुनाथ नाम तजि, नाहिन आन अधार ॥
कलिजुग सम जुग आन नहिं, जौ नर कर विस्वास।
गाइ राम गुन गन विमल भव तर बिनहिं प्रयास ॥

श्री रामदास गौड़ जी रामायणन का विषय में बड़ा मजगर छानबीन कइले बानी। महा रामायण का अलावे अगस्त रामायण, देव रामायण, दुरंत रामायण, संवृत रामायण, चन्द्र रामायण, सौर्य रामायण, सुब्रह्म रामायण, सौहार्द रामायण, सौपाद्य रामायण, मन्द रामायण, रामायण मणिरत्न, रामायण महामाला, रामायण चम्पू आ सुअर्चप रामायण वोगैरह के श्लोक अउर विशेषता का साथ बरनन दीहल गइल बा।

वेदान्त रामायण— एह में शंका समाधान का रूप में भगवान राम आ वाल्मीकि मुनि के संवाद बाटे। भगवान राम के वाल्मीकि मुनि से प्रश्न बा कि काहे बदे परशुराम जी क्षत्रिय विनाश के बीड़ा उठवले रहीं आ जर सोर से क्षत्रिय विनाश काहे ना भइल ? बड़ा तर्कपूर्ण आ रोचक समाधान बाटे मुनिवर का मुंह से।

मंत्र रामायण— एह रामायण में राम मंत्रन के विशेषता बाटे। राम रक्षा स्तोत्र के विशेष प्रधानता बा। अइसे त धार्मिक साहित्य में अनघा रचना बाड़ी स। इहां सत्योपाख्यान जैमिनी अश्वमेध आ महा रासोत्सव के संक्षेप में बरनन दिहला का बाद देश आ विदेशन के कुछ राम कथन के बरनन कइल जाई।

सत्योपाख्यान— एह में भगवान राम आ लखन के भगवान विष्णु आ शेष सुदर्शन के अवतार मानल बाटे। मंथरा का पूर्व जन्म में विरोचना असुर के बेटी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बतावल बा। राजा दशरथ आ रानी केकयी के विवाह प्रसंग का अलावे काग भुशुण्डी जी का भगवान राम के रोटी चोरवला के कथा बाटे आ भुशुन्डी जी का क्षमो मंगला के वरनन आइल बा। भुशुण्डी जी गरुड़ देव के रामतत्व के उपदेश देले बानी आ रत्नात्मका अउर उनका पतिदेव के अगिला जन्म में नन्द जी आ यशोदा जी का रूप में अवतार प्रसंग आइल बाटे।

सीता स्वयंबर, सीता राम विवाह, भगवान राम के तीर्थाटन, जल बिहार का अलावे होलिकोत्सव आदि के बड़ा शृंगारिक वरनन दीहल बा।

जैमिनीय अश्वमेध—एम० विंटरनित्स साहेब लिखले बाड़न कि जैमिनीय अश्वमेध के रचनाकाल १३वीं श० बाटे आ कन्नाड़ी भाषा में एह ग्रन्थ के लिखल गइल रहे। धोबी का ठोनहचला पर भगवान राम सीताजी के त्याग कर देले बानी। उहां लव आ कुश के जन्म तेकरा अलावे राम सेना का साथ उहां सभन के युद्ध आ मेल-मिलाप का बाद सीता राम मिलन प्रसंग बाटे। श्रीमद्भागवत आ पद्म पुराण के पुरहर प्रभाव पड़ल बाटे एह ग्रन्थ पर।

महारासोत्सव—में हनुमान जी अगस्त जी से भगवान राम का रामलीला के ना वलुक रासलीला के वरनन कइले बानीं। एह पुस्तक पर कृष्ण लीला के व्यापक प्रभाव बा। जल विहारो प्रसंग ओही ढंग के दीहल बा। सीताजी का सरीर से अट्ठारह हजार एक सौ आठ युवतिन का उत्पति के वरनन बाटे आ ओह लोगन का साथ रासलीला हेतु भगवान कृष्णो मतिन ठीक ओही संख्यानुसार रामोजी प्रगट होत बानी।

वुल्के साहेब एह पुस्तक के निरमान हनुमत संहिता से बतवले बाड़न। अवतार क्रम में भगवान राम का बाद लीलाधारी श्री कृष्ण भगवान के अवतार बा। भगवान राम अंशन सहित अवतार ले ले रहीं आ भगवान कृष्ण 'परम स्वतंत्र न सिर पर कोऊ।' भगवान राम के मरजाद पालन कइला से मर्यादा पुरुषोत्तम कहल बा आ सभत्तर लीला कइला से श्री कृष्ण जी के लीलाधारी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देश-विदेशन में राम चरचा

वेद का बाद राम चरचा क्रम चलि आवत बाटे रामायण, महाभारत, जैन साहित्य, बौद्ध साहित्य, अपभ्रंश आ पालि आदि से। राम बरनन जन मानस में अइसन रमल बा जे समस्त भारत देश एह आनंद में सराबोर हो गइल बा। तवना का अलावे विदेशो के एक दू ना वलुक अनेकन भाषा भाषिन का ई दुरलभ प्रसाद कवनो ना कवनो वड़ भा छोट रूप में भेंटाइल बाटे।

भारतीय संस्कृति बदे त राम बरनन बरदाने बाटे आ संस्कृति का संरक्षण के सही श्रेयो बा विशेष रूप से देववाणी संस्कृते के। संस्कृति शब्दो संस्कृते भाषा के ह। संस्कृत व्याकरण का अनुसार सम् पूर्वक 'कृ' धातु से भाव अर्थ में 'क्तिन' प्रत्यय कइला पर संस्कृति शब्द बनेला, जेकर माने होला परम्परागत आदर्श संस्कार याने आध्यात्मिक, आर्थिक, लौकिक, पारलौकिक, राजनैतिक आ धार्मिक आदि उत्पत्ति के उचित दैहिक, इन्द्रिय, मन आ बुद्धि आदि के सम्यक चेष्टे संस्कृति ह।

हिमालय से हिन्द महासागर आ अरब सागर से ब्रह्म देश तक के क्षेत्र के एक स्नेह धागा में धारण के शक्ति रहे देववाणी संस्कृते में। ऊ व्यापक क्षेत्र कट छंट के छोट भइल जात बाटे। राजनीतिक तिकड़म से जवन क्षेत्र आज कायम बाटे ओहू में कतर बेंवत लागले रहत बाटे, जवना के दोष भाषा का माथे मढ़ के राज नेता समाज में गोटी लाल करे का धुन में मस्त बा। ओह क्षेत्र के राष्ट्रभाषा 'हिन्दी' बन चुकलि बाटे, जवना खातिर लोक भाषा के सहयोग जरूरी बाटे। कुछ विद्वानन का राजनेतन अस लोक भाषा के नामे सुनत नाक मुँह में मांछी पइठि जाति बा, जवन बाउरे ना बलुक बड़हन दुर्भाग कहल जाई। ऋग्वेद सुक्ति 'संगच्छध्वं संगवदध्वम' से साफ झलकत बाटे जे मिलिके चलीं आ मिल के बोलीं। मुंह से समाजवाद के जाप आ हृदय में बनर मूठ के हठ रही तब ना त राष्ट्र के कल्याण होखी ना राष्ट्र भाषा के उचित आदर। 'एगो हम दोसर ना' ई खाली भगवान कृष्णे खातिर उचित रहे आ ऊ एह से जे उहां का रहीं पूर्ण कलावतार आ सबका मद के मर्दन करत गइलीं। राष्ट्र भाषा हिन्दी के 'सर्व जन सुखाय' बनावे खातिर देश का सब भाषा के आदर के साथ अपनावे के परी।

संस्कृत का अलावे देश-विदेश का अनेकन भाषा में राम चरित विषयक अनघा कृति भिन्न-भिन्न संस्कृति आ परम्परा का अनुसार बाड़ी स। संसार के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सात्विक उपदेश आ अनमाल शिक्षा खातिर रामायण सुघर संगम बाटे। सत् चरित्र का रूपको वदे एह ग्रंथ के बेजोड़ कहल जाई। प्राचीने काल से कालिदास आदि विद्वानन के महाकाव्य आ नाटक आदि में राम चरित के कई ढंग के बरनन भइल बा। महाकाव्ये युग से वाल्मीकि रामायण पर रंगसाजी के श्री गणेश हो गइल बा। पहिले त असुर लोगन का भोग के बरनन होखे लागल बा आ बाद में त ऊ शृंगारिक आ विहार बरनन सीता आ राम जी तक लोग पहुँचा देले बाड़न।

महाकवि कालिदास के 'रघुवंश' के रचनाकाल लगभग ४०० ई० बाटे। महाकवि सीता के अयोनिजा, अहिल्या के शिला हो गइल, सीता त्याग, लव कुश जन्म, शम्बूक वध, लखन लाल के मरण आ बैकुण्ठ बास का अलावे महाराज दशरथ का राज्य में मुनिपुत्र का बध के बरनन कइले बानीं। बाल्मीकि रामायण में काक आ जयंत चरचा के कालिदास जी भरतजी का चित्रकूट से चलि अइला का बाद देले बानीं। वाल्मीकि से कवनो विशेष भिन्नता रघुवंश में नइखे।

महाराष्ट्री प्राकृत में पांचवीं-छठवीं श० ई० का बीच 'रावणवध' लिखल गइल रहे, जवना के रचनाकार कई आदमिन के बतावल बाटे। अलंकार आ भोग विलास के प्रधानता बा एह ग्रन्थ में। दशवां सर्ग के नामे बा 'कामिनी-केलि' जवना में राक्षसिन का भोग-विलास के बरनन दीहल बाटे।

'रावण वध' के रचनाकाल ६वीं आ ७वीं का बीच के ह, जेकरा के व्याकरण नियम निरूपन का साथ वाल्मीकि का ६ कांडन का आधार पर 'कच्छ' में लिखाइल रहे। ग्रन्थ में खाली रामे सीता के विवाह, रामलखन से चौदह हजार असुरन के बध, सीता हरण का बाद भगवान राम का पहिले जटायु से भेंट आ सर्ग एगारह में राक्षसिन के संभोग बरनन दीहल बाटे।

कुमार दास कृत 'जानकी हरण' के रचना काल आठवीं श० ई० ह। एह ग्रन्थ में २५ सर्गन में व्यापक शृंगारिक बरनन दीहल बाटे। महाराज दशरथ का रानिन के संग के जल क्रीड़ा, सीता राम के पूर्वानुराग आ मिथिला में संभोग आ राम आ रावण युद्ध का पहिले केलि बरनन आइल बाटे।

अभिनंद कृत चरित के रचनाकाल ९वीं श० ई० के ह। वाल्मीकि रामायण पर आधारित एह रचना में सुग्रीव बिना बोलवले वर्षा काल बीतते भगवान राम किंहाँ पहुंचल बाड़न। भगवान राम हनुमान जी के एगो अंगूठी आ एगो नूपुर चिन्ह रूप में देले बानीं, तेकरा अलावे महाराज रघु, अज आ दशरथ के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बंश बरनन बतवले बानीं। हनुमान जी त एगो सुन्दरी के प्रेम प्रस्ताव नकरले बानीं, बाकी अट्ठारहवां सर्ग 'दशानन पान केलि' बरनन रावण संभोग के व्यापक रूप बाटे।

कवि क्षेमेन्द्र का 'रामायण मंजरी' के रचनाकाल एगारहवीं श० ई० बाटे। एह ग्रन्थ में रावण के प्रमुखता बाटे। रावण के तप, वरदान, अत्याचार आ लक्ष्मी सरूपा सीता जी के रावण किहां पुत्री रूप में जन्म आ सीता के अपना किहां से हटावल, सीता हरण का अलावे सेतु बंध, रावण कुल विनाश आदि के बरनन बाटे। काश्मीरी कवि क्षेमेन्द्र जी भगवान राम का दसावतारो के बरनन २६४ छंदन में देले बानीं, जवना से कुछ विद्वान एह ग्रन्थ के दशावतार चरितो कहले बाड़न।

मल्लाचार्य जी का 'उदार राघव' के रचना काल १८ श० ई० का आस पास के ह। भगवान राम के पूर्णावतार मानल बाटे। लखनलाल भरत आ शत्रुहन के शेष, सुदर्शन आ शंख के अवतार बतावल बाटे। भगवान राम का जंगल जात समय सीता जी सर्ग ५ में कहले बानीं, जे हम बहुत रामायण सुनले बानीं बाकी, कतहीं बिना सीता के साथ लिहले भगवान वन में नइखीं गइल। मिथिला का नारिनो का विषय में बहुत कुछ लिखल बाटे। ई ग्रन्थे शृंगार से पूरा सराबोर बा। सर्ग के संख्या १८ बा बाकी, नवे सर्ग तक बरनन मिलत बाटे। राम लिङ्गामृत, राम रहस्य आ जानकी परिणयो वोगैरह में शृंगार आ विलास के प्रधानता बाटे।

रामकथा विषयक नाटको के क्रम प्राचीन युग से चलि आवत बा। नाटकीय बरनन खातिर भारत देश के स्थान बड़ा आदर के बाटे।

नाटक—संस्कृत का नट् धातु से नाटक शब्द बनल बा। पहिले देवलोक में नाटक के अभिनय अप्सरा आ गन्धर्व लोग करत रहे। संस्कृत पुस्तकन में लिखल बा कि ब्रह्माजी का करत एह वैदिक वरदान के प्रसार मृतलोक का थाकल, थउसल आ विस्मादल दिल में हर्ष, आस आ उमंग भरे खातिर भइल। भारत, चीन आ यूनानी विद्वान लोग नाटक के श्री गणेश देवता से आ मृतक वीरन का पूजन से मनले बाड़न। जर्मन विद्वान पिसेल साहेब नाटक के उत्पत्ति कठपुतरी का नाच से बतवले बाड़न। कठपुतरी के बरनन त अपना किहां 'महा भारतो' में आइल बाटे बाकी, ओह से पहिलहीं याने वैदिके युग से नाटक चलि आवत बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना देश में नाटक के वैदिको वरदान कहल वा ऋग्वेद में जे संवाद वरनन आइल बा, नाटक के एगो गोटगर अंग ह। पुरुरुआ आ उर्वशी के संवाद देखहीं लायक बाटे। भारत में नाटक के महान आचार्य भरत जी बानीं बाकी, उहां से पहिलहीं व्याकरणाचार्य पाणिनि जी 'शक्तिलीन' आ 'कुशास्व' नाम के नाटकन के चरचा कइले बानीं। पातंजलियो जी का महाभाष्य में कंस-वध आ बलि बंधन के मजगर वरनन आइल बा।

नाटक शास्त्र का श्री गणेशे में भरत मुनि लिखले बानी कि ब्रह्मा जी ऋग्वेद से संवाद, साम से गान, यजुः से अभिनय आ अथर्व से रस निकाल के नाटक के निरोपन कइलीं। नाटक क्रम पर विचार कइला से अइसन जनात बाटे कि वेद से नाटक अंखुआइल. भरत मुनि का संगोरला से पनकल आ कवि कालिदास का कलम से फुलाइ आ फरि के लथरिए ना गइल, बलुक संसार का साहित्य जगत में रम गइल रामायण का 'राम' अस। कालिदास जी का शकुन्तला नाटक पर देश आ विदेशन के विद्वान जे लिखले बाड़न, देखहीं लायक बाटे। जर्मन विद्वान गेटे साहेब के कथन बा। ई नाटक फूल से फल आ मृत-लोक से स्वर्ग याने अपना आप में पूरा सफल बाटे।

देखे आ सुनहूवाला भेद से नाटक के दू भेद बाटे। एह आकाशवाणी का युग में लोक-भाषा का नाटकन के बहुत बल मिलल बाटे। कलाकार लोगन का कलमो पर देश, काल, निवास, रीति आ परम्परा वोगैरह के छाप पड़ेला। कलाकार का कलम के काली में मानुस का मानसिक, चारित्रिक आ नैतिकबल का विकास के अमोघ शक्ति रहेले। जो कंचित ऊ पथ छूट जाला त ऊ काली आंख के काजर से पसीज के गाल के कारिख हो जाले।

कला के ६४ नाम अउर उपयोगी आ ललित-दू भेद विद्वान लोग बतवले बाड़न। उपयोगी कला में सोनरकम-ओनरकम आ ललित कला में वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीतकला आ काव्य कला के वरनन आइल बाटे। श्रीराम चरित मानस का रूपकात्मक रूप के नाम मात्रा के चरचा पहिलहीं हो चुकलि बा फेर मानस मान सरोवर प्रसंग में विधिवत चरचा होखी। रूपको के विद्वान लोग दस भेद बतवले बानीं। जइसे—

'नाटक, प्रकरण, भाण, व्यायोम, समवकार, डिम, ईहामृग, अंक, वीथी आ प्रहसन'।

काव्य कला में नाटक के महान कहल बाटे। संस्कृत में लिखलो बाटे—

'काव्येषु नाटकं रम्यम्। नाटकान्तं कवित्वम्'॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाटक के रचनो कइल बड़ा कठिन बा। उपन्यासकार लोगन का अपना मन के भाव आंख मूद के अंधाधूंध भाखत जाए के बाटे आ नाटककार का शब्द सागर में गोता लगाइ के शब्द-मोतिन के चुन-चुन के पात्रन का उर अंतर में पइठाइ के अपना उर अंतर के भाव भखवावे के बाटे। राम-बरनन विषयक अनघा नाटक बा, जवना में से इहां कुछ प्रसंग दिहल जात बा।

हनुमन्नटक—एह महानाटक का रचना काल में विद्वानन के भिन्न-भिन्न मत बाटे। जर्मन ओरियन्टल जर्नल सोसाइटी १९३६ से पता बा कि श्री दामोदर मिश्र जी के पाठ, मूल हनुमन्नाटक से विशेष मिलत-जुलत बाटे। सीता स्वयंवर राम जानकी विलास, मारीच गमन, सीता हरण, बालि बध, हनुमान विजय, सेतु बंध, अंगदादि क्षेपण, मंत्रि वाक्य, रावण प्रपंच, कुंभकरण वध, इन्द्रजीत बध आ राम विजय एह चौदह अंकन में रामकथा नाटक रूप में सँवारल बा। 'अंगदादि क्षेपण' में कुछ एह ढंग के प्रसंग बा कि अंगद जी अपना पिता मरन के प्रतिशोधे खातिर युद्ध बदे उन्मत करहीं का विचार से रावण के अपमान कइले बाड़न। अतने ना बलुक रावण के जुझना पर बार-बार अंगद जी सेना के ललकारत बाड़न। उहाँ आकाशवाणी भइलि बा कि 'कृष्णावतार में बालिए व्याध रूप में अवतार लेइ के श्री कृष्णजी के वध करिहन।

महावीर चरित—के रचना श्री भवभूति जी ८ वीं श० ई० का पूर्वार्ध में कइले रहीं। सीता-राम विवाह से राम राजगद्दी तक के बरनन दीहल बाटे। भवभूति जी रामलखन आ सीताजी के मिथिले से बनवास दिअवले बानीं। केकयी के एगो जाली पत्र का साथ सूपनखा मंथरा का रूप में मिथिला पहुँचल बाड़ी। केकयी का लिखला अनुसार मिथिले से भगवान राम आपन पादुका देइ के भरत लालजी के अयोध्या भेजले बानीं। माल्यवान का पेरना से बालि भगवान राम के राहे में रोक लेले बाड़न, आ ओही संघर्ष में बालि के भगवान राम से बध भइल बा।

अनर्घ राघव—के रचनाकाल ९वीं श० ई० का आस पास के बाटे। एह प महावीर चरित के व्यापक प्रभाव बाटे। केकयी के जाली पत्र सूपनखा मंथरा का रूप में ले आइल बाड़ी, ओसहीं रामबलि संघर्षो आ बालि के अंत भइल बाटे। रावण के दूत शोष्कल मिथिला में आइ के सीताजी के मंगले बाड़न एह पुस्तक के राम बरनन विश्वामित्र जी का आगमन से भगवान राम राज्याभिषेक तक के प्रसंग में लिखल बाटे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसन्न राघव—श्रीजयदेव जी का एह नाटक के रचनाकाल बारहवीं-तेरहवीं श० का बीच के बाटे। एह पर श्री मुरारी कृत प्रसन्न राघव के पूरा प्रभाव बा। हँ, कथा में जे विशेष प्रधान भेद वा तवन अइसे बाटे—

'सीता स्वयंवर में रावण या बाणासुर धनुष तूरे के अन्हेर साहस कइले बाड़न। ओही माख पर सीता-हरण के दुर्भावना रावण का मन में ओहिजे आइलि बा। धनुष-भंग का पहिलहीं भगवान राम का चंडिका यतन में सीता जी से भेंट भइल बा। लंका का घटनन के इन्द्रजाल से विरहाकुल भगवान राम के विद्याधर रत्नशेखर देखवले बाड़न। शृंगारिक खंड काव्यनो में राम कथा विषयक पुस्तकन के बड़ी अनघई बा।

कथो साहित्य खातिर अनेकन्ह पुस्तक रामकथा पर बहुत पहिलहीं से लिखाइल बाड़िन स। इहां दू पुस्तकन के बरनन दीहल जात बा।

कथा सरित्सागर—एह सोमदेव जी कृत सरित्सागर के रचनाकाल ११वीं श० बाटे। एकरो आधार वाल्मीकिए रामायण बा। भगवान राम विष्णु के अवतार बानीं, सीताजी के वाल्मीकि आश्रम में परीक्षा आ त्याग बाटे धोबी का कहनाम पर। जइसे जैन साहित्य में भोग-दीक्षा आ बौद्ध साहित्य में महा कठिन शोक निवारन बदे राम-कथा बरणन बाटे तसहीं सरित्सागर में विरह व्याकुल नरवाहन का सांत्वना बदे रामकथा प्रसंग दीहल बा।

राम-लिंगामृत—कथा अट्ठारह सर्गन में बा। गोकुल के दू गोपी लोग रावण का चरित से कथारंभ कइले बाड़ी। शिव पूजन के प्रधानता का अलावे भगवान राम आपन शिवरूप रावण के देखवले बानीं। केकयी भगवान राम से कहले बाड़ी जे महाराज इन्द्र का पेरना से हम रावां के रावण संहार करे खातिर बनवास देले रहीं। भगवान राम आ शंकर अउर भगवान राम आ कृष्ण का अभिन्नतो के प्रसंग आइल बा।

भारत देश भाषा के बदे एगो बहुत भारिये भंडार बा। संस्कृत का अलावे लोको भाषा में अनगिनत बड़ आ छोट राम-बरनन के संग्रह बाटे। लोक भाषा में सबसे पुरान कवि कंबन जी के तमिल भाषा में कंब रामायण बाटे। अपना रामायण का मंगला चरण में कवि के कथन बा कि हम ओही भगवान का शरण में बानों जे समस्त लोक के सृजन, पालन आ विनाश करो ले। दक्खिन भारत में तमिल, तेलगू, कन्नड़ आ मलयालम ई चार भाषा प्रधान बाड़ी सन। इन्हन में तमिल भाषा-साहित्य के उपलब्धि तीन हजार साल पहिलहीं से बतावल बाटे। श्री बी० एस० गोपाल कृष्ण चारियर का मतानुसार कंब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामायण ६ कांडन का अलावे ७ वां कांड बाइ तवन लिखल ह श्री ओत्त कुयन कवि के। कंब कवि का ६ कांडन के मूलाधार त बाटे वाल्मीकिए रामायण बाकी, कई प्रसंगन में हेरफेर हो गइल बा। एह ग्रन्थ के रचना काल कुछ लोग ९वीं श० ई० आ कुछ लोग बारहवीं श० ई० बतवले बा।

कवि कंब के मंगले चरण में इहो कथ बा जे हम वाल्मीकि महर्षि का रचनानुसार तमिल भाषा में रामायण के रचना कइले बानीं। कंब रामायण में दस हजार पचास पद्य दीहल बाटे। मूल में पशु, पक्षी, रुख, लता वगैरह के बरनन आइल बाटे। एह ग्रन्थ पर रघुवंश, सेतुबंध आ जानकी हरण के व्यापक प्रभाव परल बा।

सीताहरण प्रसंग में लिखल बा कि छुआ जाए का भय से जमीन कोड़ के सीता जी के रावण उठा ले गइल बाड़न। एक बेर रंभा अपना प्रीतम कुबेर पुत्र नलकूबर से मिले जात रही। उन्हें बलबस्ती से राह में रावण बेलमा देले रहन, जवना से दूनो प्राणी के स्राप भइल जे आज से कवनों स्त्री का प्रतिकूल रावण के आचरण होखी त उनकर सिर टुके टूक उड़ जाई आ पतिव्रता के के छुइहन तब जरि के राखे हो जइहन।

कंब रामायण में माया के जनक आ समर भूमि में मंदोदरी के बध वोगैरह बड़हीं विचित्र प्रसंग बाड़न स।

सन् १९६३ ई० में कंब रामायण के बिहार राष्ट्र भाषा परिषद से रुचिगर अनुवाद भइल बाटे।

स्व० भाई भुवनेश्वर नाथ मिश्र जी 'माधव' ओह अनुवाद पर लिखले बानीं जे परिषद् के ई प्रकाशन उत्तर आ दक्खिन भारत में नया सेतु के काम करी।

द्विपाद तेलगू रामायण—कविवुद्ध राजू का एह रामायण के रचना काल बारहवीं शताब्दी बाटे। कविजी, द्विपाद छंदन में लिख के श्री रंगनाथन जी के समर्पण कइले रहीं, एही से यह रामायण के रंगनाथवो रामायण कहल जाला। वाल्मीकि गौड़ीय पाठ का अलावे पच्छिमोत्तरियो पाठ के छाप एह रामायण पर बाटे। एहू ग्रंथ के छवे कांड पहिले लिखाइल रहे आ ७वाँ कांड बाद में जोड़ल गइल।

एह में बड़ा विचित्र प्रसंग बाटे लखनलालजी का नींद रानी से अपना स्त्री उर्मिला जी के १४ साल सुते के आ अपने १४ साल तक जागल रहे खातिर बरदान मंगला के। उर्मिला जी आ सुलोचनो के बड़ा मजगर बरनन आइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection, Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाटे एह ग्रंथ में। साहित्य का विचार से तेलगू भाषा में भास्कर रामायण के विशेष आदर के स्थान बा आ लोक-प्रियता का ख्याल से कुंवारी कोहाइन के मोल्लाकृत 'मोल्ला रामायण' के प्रधानता बाटे। एह ग्रन्थ के रचनाकाल सोलहवीं शती बा अउर अट्ठारहवीं शती में श्री गोपीनाथ जी चम्पू रामायण लिखले रहीं तेलगू भाषा में।

मलयालम रामायण के रचनाकाल १४वीं शती बा आ रचइता बानीं राम कवि जो। एह रामायण में युद्ध कांड के वरनन वाल्मीकि रामायण से जस के तस दहली बा। एह रामायण का अलावे संस्कृत रामायण से कई रामायणन के मलयालम भाषा में अनुवाद बाटे। जवना में अध्यात्म रामायण के विशेष व्यापकता कहल जा सकेला। मुख्य मलयालम में रामायण के इराम रामायण कहल जाला।

तोरवे-कन्नड रामायण—कन्नड भाषा के तोरवे रायायण पर जैन साहित्य में रामकथा के जे सरूप बाटे तेकर पुरहर छाप बा। एह ग्रंथ के रचइता तोरवे निवासी श्री नरहरि कवि जो हवों, उहां का निवास स्थाने का नाम से तोरवे रामायण कहाए लागल। एह रामायण में वाल्मीकि रामायणानुसार पहिले ६वें कांड लिखाइल रहे आ बाद में श्री तिरुमल वैद्य जी १६५० ई० में उत्तरो कांड के रचना करके जोड़ दीहलीं।

बंगला रामायण—बंगला में १५ श०ई० के कृतिवास रामायण, १६वीं श० ई० चन्द्रावती कृत रायायण १७वीं के रामानंद कृत राम लीला, १८वीं के जगत राम कृत रामायण, आ कवि चन्द्र कृत अंगद खैर अउर रघुनन्दन गोस्वामी कृत राम रसायन आदि कई पातर आ पोढ़ पुस्तक बाड़ी सन। एह पुस्तकन में सबसे प्रधान कृतिवासे रामायण बाटे। डा० दिनेश चन्द्रसेन जो 'बंगाली भाषा आ साहित्य' में लिखले बानीं जे एह में कई छोटहन प्रसंग बाहर से जोड़ दीहल बाटे।

कृतिवास रामायण के आधार बाटे वाल्मीकिए रामायण बाकी, भक्ति, शक्ति आ भगवान श्री कृष्णो चरित के प्रभाव पड़ल बाटे एह ग्रंथ पर मजगरे। रामो भक्ति के प्रभाव कम नइखे कृतिवास रामायण पर। रामभक्ति का प्रभाव से रावणपुत्र वीरबाहू आपन धनुष-बाण फेंक के रामस्तुति करे लागल बाड़न। तारिणी सेन नामक असुर त अपना शरीर पर रामनाम लिखले आ वैष्णव टीका लगा के समर में गइल बाड़न। खुद रावणो का ई जानकारी बाइ जे भगवान राम विष्णु के अवतार हवीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बालकांड में रत्नाकर से वाल्मीकि मुनि के अवतार बाटे आ बालकेपन में भगवान राम का गुह से मिताई प्रसंग आइल बा। बन कांड में सीता जी के छोड़ के जाए का बेर लखनलाल जी कुटिया का चारों ओर रेखा खंचले बानी, जवना के पार लांघल रावण का शक्ति से बाहर बाटे। सुन्दर कांड में सेतु बंधाए का समय नल आ हनुमान जी से तहतुक हो गइल बा। युद्ध कांड में लखन लाल जी का १४ साल तक व्रत के बरनन आइल बा। उत्तर कांड में रावण चित्र का चलते सीता जी के त्याग बरनन आ लव-कुश जन्म अउर राम सेना का साथ समर प्रसंग बाटे। एह ग्रंथ का अलावे बंगला राम चर्चा में श्री रघुनंदन गोस्वामी जी का साहित्यिक रामायन के अधिक आदर के स्थान बाटे।

असम रामायण—असम भाषा में रामायण का सातो कान्डन के संग्रह ग्रंथ के अभाव बाटे। बंगला, असम आ गुजराती साहित्य पर कृष्ण भक्ति के गाढ़ छाप बाटे। बंगला का कृतिवास रामायण के नागपाश प्रसंग में त गरुड़ का मुरली मनोहर रूप में भगवान के दर्शन भइल बा। १४वीं शती में कवि माधव कंदलि जो वाल्मीकि रामायण के असमी भाषा में अनुवाद कइले रहीं। एह ग्रंथ में बाल आ उत्तर कांड नइखे। कवि शंकर देव के उत्तर कांड अनुवाद आ राम विजय नाटक के विशेष प्रधानता बाटे। असम भाषा में कवि दूगावरा आदि असम भाषा का विद्वानन के कुछ अउर राम बरनन बा।

दंडिका (उड़िया) रामायण—कवि बलराम दास जी के मजगर उड़िया रामायण बा, जेकरा के जगन्मोहन रामायण कहल जाला। एहू रामायण के मुख्य आधार वाल्मीकिए रामायण बा आ छन्दानुसार एह रामायण के नाम बा दंडिका रामायण जे भगवान् शंकर आ पार्वती जी का संवाद रूप में रचाइल बाटे। उड़ियो भाषा में कई पुस्तकन में राम बरनन आइल बा, जवना में विचित्र रामायण आ विलंका रामायण के स्थान विशेष आदर के बा।

गुजराती रामायण—गुजराती भाषा में कवि भालण के राम विवाह आ राम बाल चरित उत्तम पुस्तक बाड़ो सन। १९वीं श० में श्री गिरधर दास जी गुजराती भाषा के बड़ा मजगर रामायण लिखले बानीं। एह भाषा में भगवान कृष्णे चरित के विशेष बरनन बाटे। गुजरात में कृष्ण भक्ति शाखा स्रोत बहुत पहिलहीं से व्यापमान बाटे आ एहू घरी ओह के कम प्रधानता नइखे।

मराठी रामायण—मराठी में प्रधान राम चरित बरनन बाटे भावार्थ रामायण में, जेकर रचइता बानीं कवि एकनाथ जो। एह रामायण के आधार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाल्मीकि रामायण का अलावे अध्यात्म आ आनन्दो रामायण बा। एकनाथो कवि जी एह रामायण में सीता स्वयम्बर का समय रावण के उपस्थित साबित कइले बानीं। मोरो पंत जी के राम विजय आ श्री धरो कवि का राम बरनन के अपना ढंग के आदरे के स्थान था।

काश्मीरी रामायण—श्री दिवाकर भट्ट जी का काश्मीरी रामायण के मूलाधार त बाटे वाल्मीकिए रामायण बाकी, अनघा बाहरी प्रसंग भर दिहला से अइसन जनाए लागत बा जे ई ओह से अलग के बरनन बा। कुछ त अइसन बरनन आइल बाटे जेकरा रामकथा से छुओछूत नइखे। सीता जी के जन्म मंदोदरी से बतावल बा आ रावण के चित्र का चलते सीता त्याग भइल बाटे। वाल्मीकि आश्रम में लव के जन्म आ मुनि से कुशोत्पत्ति का अलावे लव-कुश का राम सेना से समर प्रसंग आइल बाटे आ भगवान राम के पितृश्राद्धो कइला के बरनन दीहल बा एह रामायन में।

फ़ारसी आ अरबी में राम बरनन—सन् १५८९ ई० में अकबर बादशाह का प्रयास से वाल्मीकि रामायण के अनुवाद मुल्ला अब्दुल कादिर साहेब 'बदायूनी' जो कइले रहीं। पहिले पद्यमय अनुवाद भइल आ बाद में सचित्र बना दीहल गइल। गद्यो में रामायण फैजी का नाम से वाल्मीकि रामायण के अनुवाद भइल रहे। मुल्ला मसीह साहेब रामायण मसीही लिखले बानो। तबना का अलावे श्री चन्द्र भान 'बेदिल', श्री अमानत राम आ श्री अमर सिंह आदि फारसी भाषा का विद्वानन्नो के राम बरनन बाटे आ श्री अल्बेरूनी के रामकथा भारत विषयक ग्रंथन में बाटे।

उर्दू में राम बरनन—उर्दू भाषा में रामकथा विषयक पुस्तकन के अभाव बाटे। छिटफुट रचनाकार त बहुत बाड़न जे लोगन में जलालुद्दीन साहेब फकीर के स्थान प्रधान बाटे। जलालुद्दीन साहेब त भगवान राम के परम भक्त रहीं आ पद्य रच के भगवान गुण गान करत रहीं।

बिहारी भाषा में राम बरनन—जार्ज ग्रियर्सन साहेब मैथिली, मगही आ भोजपुरी के बिहारी भाषा कहले बाड़न मिथिला सीता जी के जन्म-स्थल ह। उहाँ का कण-कण में भगवान राम आ शक्ति सीता के व्यापक रूप विराजमान बाटे। वाल्मीकि रामायण का अलावे अध्यात्मो आदि का आधार पर कई रचना बा मैथिली में। लोक गीत खातिर त सीता राम विवाह आ सीता पति राम का पहुनाई के एक से एक प्रसंग देखहीं लायक बाटे मैथिली भाषा में। मगहियो भाषा में राम बरनन के कमी नइखे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी रामायण–भोजपुरी साहित्य रामायण के रचइता बाबू दुर्गाशंकर प्र० जी वाल्मीकि, अध्यात्म आ रामचरित मानस आदि का आधार पर रचना कइले बानीं। सेनानीति, समरनीति, धर्मनीति, अर्थनीति आ कर्म-सिधान्त तत्व आदि के उहाँ का व्यापक बरनन देले बानीं। आर्य, अनार्य आ अछूत अउर बानर-भालू के भेद मेटावे के सबल प्रयास भइल बा सिंहजी के। हनुमान जी के सोलह कुलीन वंसीय कुमारिन के दान का अलावे बहुत बत्तुस उपहार में दिहला के उहां का बरनन कइले बानीं। राम चरचा विषयक उहाँ के 'न्याय के न्याय' भोजपुरी नाटक बड़हीं मजगर पुस्तक बाटे। अपना साहित्य रामायण में सिंह जी सीता त्याग आ सीता परीक्षा के भी बड़ा गूढ़ चरचा कइले बानीं। शंकर भगवान से सीता जी के शुभाशीष मिलल बाटे आ स्वर्ग से राजा दशरथ जी का अइला पर भगवान राम से बातचीत भइल बाटे। भगवान राम का वरदान मगला के बरनन आइल बा।

अग्नि परीक्षा का समय अग्नि कुण्ड से खुद अग्नि देव जी प्रगट हो के सीता जी का पवित्रता के प्रमान देले बानीं। आ अंत में भगवान राम के सीताजी के सँउप देले बानीं। भगवान राम के राजतिलक आ सुग्रीव वोगैरह सहयोगी लोगन के बिदा बरनन बाटे। सिंहजी आपन मात्रिका चौपाई लिखले बानी से अइसे बा :—

मा०चौ०-तौ बसिठ पठवत केहि काजा, रिपु सन प्रीति करत नहिं लाजा।
भोजपुरी—दूत पठवले ऊ केहि काज, रिपु ढिग गिरत ना लागल लाज।

मानस दोहा— सूर कवन रावन सरिस, स्वकर काटि जे सीस।
हुने अनल अति हरष बहु, बार साखि गौरीस॥

भो० दोहा— सुरमा के जग मोर सम, निज कर काटि जे सीस।
कुन्ड हवन हवनल हरखि, पुनि पुनि नमि गौरीस॥

गोस्वामी जी का मानस में भोजपुरी के अनघा शब्द भरल बा तेकरा बाद चौपाई आ दोहा आदि का पांतिन में भोजपुरी के मजगर रूप बाटे जइसे–

करत रहब लरिकन पर छोहू। दरसन देत रहब मुनि मोहू॥

भोजपुरी लोकगीतन में त रामकथा के कई प्रसंग सजीवे झलक उठेला। विरहिया आ गाथा गवनिहारन के बरनन सुनला पर मन आनन्द मग्न हो जाला। सोहर गीतन में त राम कथा सजीवे बाटे :—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोहर—सोने का खड़उवाँ राजा दशरथ त कोसिला मलीन मने हो।
धनियाँ, कवन सँकट तोहरा लगले त मुखवा धूमिल भइले हो।
ना मोरा सासु दुख अवरू ननद दुख नाहीं, लछिमी बिरगुन हो।
राजा, एकही पुतर बिना बांझिनि इहे दुख अवहेला हो।
अतना बचन राजा सुनले सुनहि नाहिं पवलन हो।
ललना, गुरु ए बशिष्ट के हँकारेलन, जग्य कराईं नू हो।
गुरु ए बशिष्ट गुन आगर पुतर यग्य करावेलन हो।
ललना, कोशिला का राम जनमलन त अवध बधाव बाजे हो।

राम जन्म से वनवास पुरा कइके अयोध्या आइ के राजतिलक का अलावे लवकुश समर तक के अनेकन्ह प्रसंग भोजपुरी में लिखाइल बा जवना में कई कवि लोगन के राम-केवट संवाद आदि छपिओ चुकल बाटे। राम वरनन आदिवासिओ लोगन का भाषा में भरपूर बा, जरूरत बा ओह सभन का संग्रह के।

सिक्ख साम्प्रदाय में राम बरनन—गुरु ग्रन्थ साहेब में ठहरे ठहर रामनाम महिमा दिहल बा। भगवान राम त गुरु नानकजी के पूर्वजे रहीं। उहां का वंशावली वरनन कइले बानीं से अइसे बा—

सूरज वंसी रघु भया, रघुकुल वंसी राम।
रामचन्द्र के दोए सुत, लऊ कुशू तहि नाम॥
संग सखा सब तज गए, कोऊ न निबही साथ।
कहि नानक इस विपत में, टेक एक रघुनाथ।

भगवान राम पर गुरू नानकजी के अटल विश्वास—

सबते ऊँच राम परकास, बिना बासर जप नानक दास।
ना ओ मरे ना ठागे जाहिं, जिनके राम बसे मन माहि।

दसम ग्रन्थ में रामायण महिमा—

राम कथा जुग जुग अटल, सब कोउ भाखत नेत।
स्वर्गवास रघुबर किया, सगली पुरी समेत॥

गांधी साहित्य में राम—महत्मा गांधी जी 'नवजीवन' में लिखले रहीं जे रामनाम का प्रताप से पत्थर पवँरे लागल, वानरी सेना से छक्का छूट गइल रावण के, हनुमान जी पत्थर के ढोका उठा लिहलीं, असुर का घर में बहुत दिन तक रहलो पर सीता के सतीत्व कायम रहल, भरतजी चौदह साल तक के दिन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राम जपते काट लिहलीं, एही से तुलसी दासजी कहले बानीं कि कलिमल धोइ वाले खातिर रामनाम जपीं। गांधी जी कहले बानीं कि हम आपन अनुभव सुनावत बानीं। रामनाम का चलते बे विचारी बने से बंचल बानी। जब जब हमरा पर बिकट प्रसंग आइल बा रामनाम का चलते बंच गइल बानीं। करोड़न हृदयन में एकता के भाव उपराजे खातिर रामधुन मतिन दोसर कवनों साधन नइखे।

भगवन्नामाङ्क 'कल्याण' मे महात्मा जी के कथन बा कि जे शक्ति रामनाम का बारे में मानलि बाटे, ओह में हमरा इचिको भर संदेह नइखे। सब केहू अपना हृदय में रामनाम ना लिख सके, ओह में मेहनत आ धीरता के जरूरत बा

विदेशन में राम बरनन—जम्बूदीप के भारत खण्ड कट-छंट के बहुत छोट भइल जात बा। लोक भाषा के आदर देवे में त राजनीतिक जगत में अन्हरिया उगि जाति बाटे बाकी, राजगद्दी हवेखे खातिर देश के सिर-पांव काटे में तनिको आहस नइखे लागत। भारत खण्ड के खंड-खंड कइल देश का साथ खेलवाड़ बा। एगो उहो समय रहे जब तिब्बत वोगैरह स्थान भारते खण्ड के अंग रहे। राजनीति के पण्डित लोगन का चलते ऊ सब देश विदेश में गनाए लागल। ईसा पूर्व ६वीं शती में कोशल नरेश श्री प्रशेनजित के एगो पुत्र तिब्बत गइल रहन जेकर चलावल कोड. पो. के राजवंश ह। कोड. पो. प्रदेश में एगो बड़ा प्रतापी पुरुष जन्म लेले रहन जेकर नाम रहे सोड. चेन. गम. पो.। सेयान भइला पर ऊ तिब्बत के बड़ा सुन्दर ढंग से सँगेर सरिआइ के एक छत्र राज कायम कइले रहन। उनका राजकाल में भारतीय संस्कृति के पुरहर प्रचार भइल रहे ओह स्थान में। उनका से नैपाल हारल रहे। आ चीनो के ऊ नाकन चना चबवा देले रहन।

इतिहास साखी बा कि ईस्वी-सन का आरम्भ का समय कुशान वंश के राज वाराणसी से खेतान (पूर्वी तुर्किस्तान) तक रहे। ६वीं शती में चीनी सम्राट का आदेश से श्री थोन् मि० काश्मीरी लिपि मतिन 'भोट' भाषा लिखे खातिर एगो नयो लिपि बना लिहलन। भारत में ओह घरी संस्कृत का अलावे पालि भाषा के सराहनीय प्रचार रहे आ साथे साथ बौद्धो धर्म के। बौद्ध धर्मावलम्बी लोग भारत भूई से दूर-दूर तक जाइ के धर्मोपदेश दिहलन जवना से आदर के स्थान हो गइल एह धर्म के कई स्थानन में।

चीन में राम कथा—चीनी तिपिटक तैसो संस्करण नं० २०३ का आधार पर लिखल बा कि चीनो तिपिटक में त्सा. पौ. त्संग. किंग. नाम के एक सौ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकइस शुद्धाचरणन के एगो संग्रह चार सौ बहत्तर ई० में चीनी भाषा में अनुवाद भइल रहे। ओह में दशरथो कथानम बाटे जवना के प्रसंग अइसे बा :—

प्राचीन काल में जम्बूद्वीप में राजा दशरथ राज करत रहीं। ओह समय में मानुस लोग के आयु दस हजार साल तक के रहे। राजा दशरथ का चार रानिन से एक-एक पुत्र राम, लखन भरत आ शत्रुहन के जन्म भइल रहे। तिसरकी रानी राजा का विशेष प्रिय रहीं। उहाँ से एक बेर राजा कहले रहीं जे रावाँ जे चाहीं हमरा से माँग लीं। ओह घरी रानी का कुछ ना मांगे के रहे। ओह समय में त ऊहाँ का ना कुछ मँगलीं बाकी, राजा बड़ा जोर से बीमार पड़लीं आ राजतिलक भगवान राम के करा दिहलीं त ऊ रानी अठान पड़ गइलि। उहाँ का बारम्बार कहे लगलीं जे राम के गद्दी से हटा के हमरा भरत लाल जी के राज सिंहासन सउँप दीं! ई बखेड़ा राजा का मरण मतिन अखड़े लागल काहें जे रानी के दिहल बचन भंग कइल राजधर्म में घोर कलंक रहे आ ओने प्रानो से बढ़ के भगवान राम से अपार सनेह।

लखनलाल जी भगवान राम से बल प्रयोग करे के कहलीं बाकी, उहाँ का लखनलाल जी के समझवलीं जे पिताबचन के अनादर भयानक अपराध ह। श्रीराम आ लखनजी के बारह साल बदे बनवास भइल। भरतलाल जी दोसरा ठइर गइल रहीं आ एने राजा दशरथ के शरीर छूट गइल। भरतलाल जी लवटलीं त ई सब दुखद समाचार सुन के बेकल हो गइलीं आ उहाँ का घृणा हो गइलि आपना माताजी का एह कुकर्म पर। भरतलाल जी भगवान राम के लवटावे गइलीं त उहाँ से भगवान राम उहे कहलीं जवन लखन लाल से कह चुकल रहीं। अन्त में भरत जी उहाँ के चमउधा खड़ाऊँ लेइ के राजधानी में अइलीं। ओही खड़ाऊँ के राज सिंहासन पर रख के भरतजी राज चलवलीं आ दूनों शाम करीं प्रेम से पूजन ओह खँड़ाउन के।

भगवान राम के बारह साल बनबास अवधि बीत गइलि तब राजधानी में लवटलीं। उहाँ का आवते भरत लाल जी राज सिंहासन पर बइठा देवे चहलीं जवन भगवान राम का पसंदे ना रहे। उहाँ का ना चहलो पर सबकर विचार भइल जे भगवान राम राजा के जेठ पुत्र बानीं एह से गद्दी पर बइठावल जरूरी बाटे। भरतलाल जी का बहुत कहला सुनला का बाद भगवान राम राजसिंहासन स्वीकार कइलीं आ सभत्तर शान्ति छा गइला का अलावे सब आनन्द से विचरन करे लागल। बौद्ध साहित्य का 'अनामकं जातक' के श्री कांग सेइ जी ३री शती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में चीनी भाषा में अनुवाद कइले रहन जवन 'लिए ऊ तूत्सीकिंग' नाम पुस्तक में दीहल बाटे।

तिब्बत में राम बरनन—तिब्बती भाषा में ढेर ग्रंथ हाथ के लिखल बाड़न स। रामो बरनन खातिर कई पुस्तकन के चरचा बाटे। उहाँ का राम कथा पर गुणभद्र का उत्तरपुराण आ कथा सरित्सागरे के विशेष प्रभाव बाटे। मिस्टर एफ० डब्लू० थोमसो साहेब का ए रामायण स्टोरी इन तिबतन, इंडिन स्टडिज' से प्रमाण बा कि तिब्बती भाषा में अइसन बहुत हाथ के लिखलि पुस्तक बाड़ी स, जवनन में रामायण के रावण चरित, सीता हरण, सीता उद्धार, सीता त्याग आ सीता राम के मिलन तक के बरनन बाटे। एकर समय आठ भा ९वीं शती लिखल बा।

वाल्मीकि रामायण अस पहिले विष्णू भगवान के राजा दशरथ किहाँ अवतार लेवे के प्रन रूप में बरनन बा। राजा दशरथ का कनिष्ठा रानी से विष्णू के अवतार 'रमन' जी बानीं आ जेष्ठा रानी के पुत्र बानी 'लक्षण'। रावण के संक्षेप बरनन सबसे पहिलहीं दिहला का बाद सीता जन्म प्रसंग में सीता का स्थान पर लीलावती के जन्म भइल बा रावण पुत्री रूप में। जन्म लग्न का विचार से पुत्री से रावण के संहार लिखल बाटे जवना कारन से लीलावती के समुद्र में रावण फेंकवा देले बाड़न। ऊ पुत्री किसान लोगन से पोसल गइल बाड़ी।

राजा दशरथ बड़ा संकट में परल बानी जे दू पुत्रन में केकरा के राज तिलक दीहल जाय। ई धर्म संकट जब रमन का सुने में आइल तब उहां का अपने आप राजधानी छोड़ के बन में आश्रम बना के तप करे लगलीं। भारतीय किसान लोगन का कहला से रमन जी तप छोड़के लीलावती से विवाह कइले बानीं। बन में विवाह कइला का बाद उहाँ का राजधानी में आइल बानीं आ तबना का बाद रावण एह ढंग से सीता हरण कइले बाड़न जे सीता के अंग ना छुआए पावे। अशोक बन जे राजधानिएँ का नियरा पास बाटे, उहाँ से सीता हरण कइ के चलला पर जटायु रोकले बाड़न आ रावण उनुका के लहू से भींजल पत्थर खिआइ के मुआ देले बाड़न।

रमन जी का सुग्रीव से मिताई भइल बा। बालि बध करे खातिर सुग्रीव का पोंछ में ऐनक बान्हल बाटे। सुग्रीव के काम भइला का बाद बानरी सेना से सीता जी के टोह लगला का बाद रावण पर बानरी सेना के चढ़ाई भइलि बाटे। रावण का अंगूठा के मर्मस्थान कहल बाटे ओह राम कथा में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रावण विधंस भइला का बाद सीताजी के उद्धार बा। उहां से अइला पर धोबी के कटूसी पर सीता त्याग आ महर्षि बाल्मीकि आश्रम में सीता निवास बा, जहाँ सीता जी अपना लव आ कुश दूनो पुत्रन के साथे लेइ के गइल बानीं, ई-गोस्वामी तुलसीदास का 'हरिअनंत हरि कथा अनंता' के विचित्र रूप बाटे।

खेतान में राम बरनन—खेतानी रामायण पर बौद्ध, काश्मीरी रामायण आ महानाटक का राम बरनन के प्रभाव बा। बुद्धदेव जी भगवान राम आ मैत्रेय जी लखन लाल बानीं राजा दशरथ का पुत्र के नाम बा सहस्र बाहु जेकर पुत्र राम आ लखन के बतावल बाटे। परशुराम जी का पिता के गऊ हरण कइला का अपराध में सहस्र बाहु के परशु राम जी मार देले बानीं। राम आ लखन के बारह साल तक धरती में छिपा के रखले बानीं उहां सब के माता जी। धरती से बाहर अइला पर राम से परशुराम के बध बरनन बाटे।

सीताजी दस ग्रीव के पुत्री बानीं आ जन्म लग्न में पिता संहार बाटे जवना से रावण फेंकवा देले बाड़न समुद्र में। राम से बिवाह भइला का बाद सीता के रावण से हरण भइल बा। लखन लाल का रेखो खींच देला के प्रसंग दिहल बाटे आ जटायु का रोकला पर दसग्रीव रक्त से भेंवल पत्थर खिआ के उन्हें मार देले बाड़न। सीता हरण का बाद बारहसाल तक भटकला का बाद सुग्रीव से मिताई के बरनन बा। बनवास का समय मंथरा भा केकयी के कवनो नाम-चरचा नइखे ना बनवास के कारने बतावल बा। सेतु बंध का समय काश्मीरी रामायण अस नल प्रसंग दिहल बाटे आ सीता जी के राम का अलावे लखनो जी के विवाह माने खेतान का बहुपति प्रथा के रूप दे दिहल बा। अंत में सीता जी भूमिजा याने भूमि से उपल भुंइए में पइठि गइल बानीं।

हिन्देशिया में राम बरनन—हिन्देशिया में रामायण के बड़ा अनूप रूप बा। उहां पुराने जमाना से रामकथा बा आ नयो नाया कई प्रकार के। साहित्यिक रचना में योगीश्वर कृत रामायण-काकबीन के स्थान प्रधान बाटे। ओह में छब्बीस सर्ग बा जवना पर भट्टि काव्य का बाइसो सर्ग के पुरहर प्रभाव का अलावे अभिषेक नाटक आ महानाटक के भी छाप बाटे। एह बात के प्रमाण श्री मनमोहन घोष का 'जर्नल आफ ग्रेट इण्डिया सोसाइटी भाग ३ पन्ना एक सौ तेरह का अलावे डच ओरियन्टल जर्नल भाग ७३-७४ पर भी बा।

रामायण काकबीन के रचना काल बारहवीं शती बा बाकी, ९वीं शती में मध्यजावा का शिव मंदिर पर बाल्मीकि रामायण का आधार पर कवनो शंकर भक्त राम कथा अंकित करा देले बाडन। ओह रामकथा पर महानाटक, सेतुबंध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बालरामायण आ उत्तर राम चरित के भी छाप बा। १४वीं शती का पूर्व में जावा का पनरतन नामक स्थान में भी एगो शंकर मंदिर के निरमान भइल रहे जवना का देवाल पर राम कथा खोदल बाटे। कुछ भारतीय लोग उहां जाइ के देखले बाड़न सेकरा से पता बा कि ओह मंदिर में शंकर भक्त लोग धूप-दीप जलावत रहन आ अत्र कबूतरन का सघन निवास से ओह स्थान में महा गुमसाइन गंध के राज हो गइल बा। एहू मंदिर पर जे राम कथा बा तवना पर काकबीन के प्रभाव पड़ल बाटे।

काकबीन का बहुत एने जवन रामवरनन बा तवनन में जावा के 'राम केलिंग आ सेरत कांड अउर मलय देश के 'हिकायत सेरो राम बा। अपना पिता से निर्वासित होइ के रावण सिंहल दीप में तप कइला का बाद 'अल्लाह' से चारो लोकन में एक लोक पा गइल बाड़न आ उहां लंकापुरी बनवले बाड़न। उनका पत्नी मन्दोदरी से सीता जी के जन्म भइल बा आ अशुभ जन्म लग्न पड़ला से रावण उनका के समुद्र में फेंकवा देले बाड़न आ फिर उनका से राम विवाह भइल बाटे। एह राम बरनन में बनवास भइल बा राजा दशरथ का बलियादरी रानी से।

राजा जनक का पुत्री के नाम बा अंजनी जेकरा से बालि आ सुग्रीव के जन्म भइल बाटे आ हनुमान जी के भगवान राम के पुत्र बतावल बा। राम कथा में अल्लाह के नाम आइल बा जेकरा से रावण एगो लोक पवले रहले। जावा का सेरत कांड का शुरू में नबी आदम का कथा के एक बड़हनि भूमिका बा जवना में उहां का प्राचीन राजवंश के बरनन दिहल बा जवना में पुराणन का कई देवतन के कथा बाटे।

रावण से विष्णु भगवान के हार के प्रसंग दिहला का बाद फिर अवतार लेइ के रावण से समर के कथा बाटे। भगवान विष्णु, वासुकी आ श्री शक्ति त्रस्त होइ के राजा दशरथ किहां गइल बानीं। ऊ दुओ देव त राजा के पुत्र हो गइल बानीं आ श्री एगो अंडा के रूप धारण कर लेले बानीं, जवन रावण खा गइल बाड़न आ उनका पत्नी मंदोदरी का गर्भ से सीता जी के जन्म भइल बाटे। उहां भगवान राम का लव-कुश के बरनन नइखे बलुक एक ही पुत्र के चरचा बा जेकर नाम बा 'बुतलष'। उनहीं के राजपाट सँउप के एगो अनल नामक बानर का अग्नि उपजला पर ओहो में राम, लखन, सीता, विभीषण अंगद आ सुग्रीव आदि राम के समीपी जर के भस्म हो गइल बानीं सभन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हनुमान जी के घाही रावण के पहरा देवे बदे राखल रहे एह से उहाँ का अग्नि में प्रवेश ना कइलीं।

हिन्द चीन में राम बरनन—हिन्द चीन में भारतीय संस्कृति के प्रभाव शती का शुरुए में पड़े लागल रहे। उहां भारतीय व्यापारी लोग व्यापार करे जात रहन। हिन्द चीन में चम्पा राज के बरनन बाटे जहां का शिला लेख में श्लोकोत्पत्ति आ वाल्मीकि मुनि के विष्णु अवतार के प्रमाण जर्नल ओरियन्टल रिसर्च भाग ६ पन्ना ११७ में दीहल बा। अनाम में एगो गुटमुटारे राम कथा के प्रसंग आइल बा जवन वाल्मीकि से मिलत-जुलत बा आ रचनाकाल अट्ठारहवीं शती बाटे। अनाम के दक्खिनी भाग में रावण के राज रहे आ भारत का उत्तरी भाग के अयोध्या अस उत्तर अनाम में राजा दशरथ के राज बतावल बा। द बुलेटिन एकोल फ्रासेस, एक्सट्रेम ओरियन, भाग ५ पन्ना १३८ में प्रमाण बा कि राजा दशरथ पर चढ़ाई करके रावण सीता जी के हरण कर लिहलन।

सर आशुतोष मुखर्जी वाल्यूम, भाग ३ में प्रमाण बा कि ६वीं श० ई० में एगो सरदार चम्पा का राजा पर हमला कइके कम्बोडिया में एगो राज कायम कर दिहलन। उहां बहुत ढहल ढिमिलाइल मन्दिरन के खँड़हर मिलेला जेकरा के दस से तेरह श० तक के जानकार लोग बतवले बाटे। कम्बोडिया (खमेर) के प्राचीन राजधानी अंगरकोट के एक बड़हन मंदिर में रामायण, महाभारत आ हरिवंश के कथा का अलावे जावा मतिन पत्थर पर चित्र उरेहल बा। खमेर भाषा में 'रे आम केर' रामायण बाटे जवना पर वाल्मीकि रामायण के विशेष प्रभाव बा। एह रामायण के शुभारंभ भइल बा विश्वामित्र मुनि का यज्ञ प्रसंग से। उहाँ एगो कउआ यज्ञ विधंस करे के ठेकान लगवले बाड़न जेकरा के मारे खातिर भगवान राम आ लखनलाल के तीर-धनुष विश्वामित्र जी देले बानी। जनकजी यमुना का तीर पर हल चलावत बानी, जहाँ एगो रुख पर सीताजी के बइठल पाइ के अपना किहाँ ले आइ के पुत्री अस पालन कइले बानी। सीता राम विवाह का बाद रावण से सीता-हरण भइल बा आ रावण, सीताजी का अंगूठी से जटायु के घाही कइ देले बाड़न। राम-सुग्रीव मिताई का बाद महा नागराज का पीठ पर के सात तरकुलन के तीर से भगवान राम छेदले बानी जवना से उहाँ का पवरुख पर सुग्रीव का पूरा विश्वास हो गइल बाटे। सेतु बंध का समय मछरिन का खललो डाललो के प्रसंग आइल बा आ सीता त्याग के कारण बतावल बाटे सीताजी का पंखा पर रावण के चित्र खिंचला के।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सीताजी का एक पुत्र राम-लक्ष्मण बानी आ कुश का स्थान पर जुपलक्ष्मण के निरमान बाटे वाल्मीकि मुनि से। सीताजी के कथन बा जे हम अयोध्या राम के अंतिमे संस्कार खातिर मुअले पर जाइब। भगवान राम हनुमानजी से अपना मरण के समाचार सीताजी का पास में भेजले बानी आ उहाँ का हनुमान जी का साथ आइ के चिता पर विलाप करे लागल बानी आ बाद में बेहोश हो गइल बानी। भगवान राम सीताजी के गोदी में बइठा के लोर पोंछत चेत कर-वले बानी। उहाँ सीता जी भगवान राम के विनासी के नाग राजमिरुण का शरण में चल गइल बानी।

श्याम में राम बरनन—श्याम रामायण त 'राम कियेन' के दू संस्करण १८वीं श० का अंत में छपल बा तवना का अलावे एगो नाटको छपल बाटे। उहाँ का रामकथा पर 'रेआम केर' के विशेष प्रभाव बा आ शुरू के प्रसग पर रघुवंश के छाप बा। राजा दशरथ का यज्ञ के खीर में से आठवाँ भाग मंदोदरी खा गइल बाड़ी, जवना से उनका पेट से सीताजी के जन्म भइल बा। जोतिषी लोग जन्म लग्न के पिता विनाशकारक बतवले बाड़न, जवना से घड़ा में रख के विभीषण से नदी में बहा दिहल बा। सीताजी लक्ष्मी के अवतार बानी एह से कमल उपज के घड़ा के बचाव कइले बा आ लक्ष्मी का प्रताप से घड़ा पहुँच गइल बा राजा जनक किहाँ। जहाँ जनक जी नदी किनारे तप में लीन बानी। राजा जनक ओह घड़ा के एगो पेड़ का नीचे ले जाइ के विनय कइले बानीं कि जो कंचित ई बच्ची भगवान के पत्नी बने वाली होखस त इहाँ एगो कमल उपज जाय जे घड़ा के ले सकसु। कहते मातर उहां कमल उपजल आ जनक जी ओह पर घड़ा रख के, माटी से तोपली आ फेरु अपना तप में लीन। राजा जनक जी सोलह साल तक तप कइलों बाकी संतुष्ट ना भइलीं। उहाँ के विचार राज-धानी में चले के भइल त घड़ा खोजे लगलीं। अपना खोजला पर घड़ा ना मिलल त सेना के लोग सुलाख लगावल बाकी, उहो लोग निराशे लवट गइल। अन्त में राजा हल के परिहथ पकड़लीं आ ओही हल का फार से हराई बनलि तवना में से सीताजी निकसलीं। हल से जे हराई बनेले ओहू के नाम सीता बतावल बाटे। वेद में ओह सीता के बड़ा व्यापक बरनन आइल बा।

सीता राम विवाह का बाद सीता हरण भइला पर लखनलाल जी सूपनेखा का पुत्र के वध कइले बानी। हनुमान जी के रावण के साथी बतावल बा आ लखनलाल के हनुमान जी का साथ लड़ाई के भी बरनन आइल बाटे। सेतु बंध से पहिले एगो तपसी के रूप बना के रावण, भगवान राम किहाँ पहुँच के लड़ाई ना करे के उपदेश देले बाड़न। विभीषण के बेटी के नाम बाटे बेजकाया, जे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माया से सीता का रूप में मृतक बन के नदी में बह गइल बाड़ी। ब्रह्माजी किहां जाइ के रावण, भगवान राम पर भारी दोष लगवले बाड़न जवना का चलते भगवान राम के उहाँ बुलाहट भइल बा आ बाद में सीतो जी के। ब्रह्मा बी सीताजी के लवटा देवे के कहले बानी जवना के नकरला पर रावण के स्राप मिलल बाटे।

राम कियेन में एगो बड़ा फूहर प्रसंग जोड़ दीहल बा हनुमत लाल जी का प्रेम लीला के। विभीषण पुत्री वेजकाया, स्वयं प्रभा, नाग-कन्या, सोन मक्खी आ अप्सरा वानरी आदि का साथ हनुमान जी के प्रेम लीला का अलावे रावण पत्नी मंदोदरी से भी एक रात का भोग के वरनन दे दीहल बाटे जवन ओह स्थान भा लेखक के प्रभाव कहल जा सकेला। राम-रावण युद्ध में हनुमत लाल जी से रावण का सोझा भगवान राम के निंदो करावल बा आ एक दिन हनुमत लालजी के रावण का ओर से समरो में उतरला के प्रसंग दीहल बाटे। रावण विधंस का बाद राम जी के अयोध्या में राज तिलक बा आ लंका के राज बिभीषण का मिलल बा। रावण के एगो पुत्र कसहूँ बाँचि गइल रहन जे विभीषण से बाँह रोप दिहलन, तबना पर भरतलाल जी आ शत्रुहन जी लंका जाइ के उन्हें तड़िअवला का बाद फेर विभीषण के राजगद्दी देले बानी।

श्याम में राम जातक के प्रसंग बुलेटिन एकोल फ्रांसेज एक्सट्रेम ओरियन भाग १७ में दीहल बा। श्याम का उत्तर-पूरब में लाओ साहित्य का पंचतंत्र में राजा दशरथ अंध मुनि का पुत्र के वध कइले बानी आ भगवान राम विभीषण के शरण देले बानी। दी राम जातक, जर्नल श्याम सोसाइटी भाग ३६ प्रथम पन्ना पर प्रसंग आइल बा कि सोरहवीं शती में राम जातक लाओ भाषा में लिखल गइल बाटे। उहाँ के राम कियेन कबीर दास का बानी मतिन बा त ई राम जातक के रूप कबीर पूत कमालो से अधिका कमाल करे वाला।

एह जातक में भगवान राम आ रावण के पितिआउत भाई बतावल बाटे। भगवान राम के आपन भाई खाली एगो लखनलाल जी बानी आ बहिन बाड़ी शान्ता जी। सीता हरण का बाद उहाँ के खोजे का समय भगवान राम के बालि सुग्रीव का बहिन से विवाह बरनन आ बालि का विधवा पत्नी से राम विवाह बतावल बा। भगवान राम के ऊ पत्नी लोग अपना हनुमान आ थोआफा पुत्रन का साथ लड़ाई में भाग ले ले बा लोग। अन्त में जातक कथनानुसार भगवान राम-बुद्ध, रावण-देवदत्त, राजा दशरथ-शुद्धोधन, लखन लाल-आनन्द, सीता जी-उपलवण्णा (भिक्षुणी) आदि के अनुरूप वरनन दीहल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मा में राम बरनन—श्री जी० पी० कानोर का 'द रामायण इन वर्मा' जर्नल वर्मा रिसर्च सोसाइटी भाग १५, पन्ना ८० में प्रमान बा कि वर्मा में राम कथा बहुत एने याने अट्ठारहवीं श० के होखी। सन् १७६७ ई० में ब्रह्मा के एगो राजा श्याम पर चढ़ाई कइ के उहाँ का राजधानी आयुतिया के विधंस कर देले रहन। ऊ श्याम का कुछ कैदिन के घइले आइल रहन जवना में कुछ नाटक के पात्रो लोग घसेटाइ गइल रहन। ऊ बन्हुआ लोग श्याम मे खेले-वाला राम नाटक के ब्रह्मो में खेले लगलन जवना के प्रभाव ब्रह्मा वासिन पर पड़ल। सन् अट्ठारह सौ ई० में श्री यु० तो० एगो राम नाटक ब्राह्मी भाषा में लिखलन जेकर नाम बा 'राम यागन'। यामप्वे नाटको उत्तम बाटे। ब्रह्मा में राम यागन नाटक के प्रधान राम चरित कहल जा सकेला। यामप्वे में सीता हरण का समय मारीच का स्थान पर सूपनेखा मृगा रूप धइके भगवान राम के दूर-दूर ले गइल बाड़ी। लखन लाल जी कुटिया छोड़े का समय कुटी का चारो ओर रेखा खींचले बानी। सूपनेखा के उहाँ गाम्बी नाम बा आ भगवान राम उनुका के घाही कइले बानी तब आपन असल रूप धइले बाड़ी।

एह नाटक के पात्र लोग बड़ा विचित्र मुखवटा लगावेलन। मुखवटा ओह लोगन का अतना प्रिय बा कि ओकर विधिवत पूजन करे के प्रथा बा।

पच्छिम देशन में राम बरनन—पच्छिमो देशन का राम कथा के स्नेही डा० जार्ज ग्रियर्सन, मि० ग्रिव्स, रेवरेन्ड, ग्राउस, जे० एम० मैकवेथ, वेनूली, एफ० डब्लू० थोमस, डब्लू० स्टूटर टाइम, डब्लू श्लोगेल, डब्लू० कूक, डब्लू० टापकिंस, एस० कर्पलेज, लुडविंग, वेवर, एम० एम० विलियम्स, जी० गोरे सियो, ह्वीलर, मैकवेथ, मेकडानल, एच० याकोवी, एन० मानुच्ची, बोले ले गोज़ आ पी० एफ० विनजेनजा आदि अनघा विद्वानन के रचना में देश विदेश के राम बरनन बाटे। मिस्टर कामिल बुल्के साहब के त रामायन पर छान-बीन आ खोज के महान प्रयास बहुते सराहनीय बाटे। १५वीं श० से १९वीं श० तक के कुछ विलायती राम बरनन इहां दीहल जात बा।

'लिब्रो डा सेटा (१९३३) पन्ना ६९-१३३ से पता बा कि जे, सुइट मिशनरी-जे० फनिचियो से सन १६०९ ई० में 'लिब्रो डा सेटा' के रचना भइल रहे जवना में दशावतार का अलावे दक्खिनी रामायण का आधार पर निजगुत बरनन आइल बा। राजा दशरथ का यज्ञ से लेइ के सीता जी के त्याग के अलावे सीता जी के अग्नि परीक्षा तक के प्रसंग वाल्मीकि का आधार पर दीहल बाटे। हँ, भगवान राम के स्वेच्छा से बन गमन बतावल बा आ अग्निजा सीता के बरनन में भिन्नता बा। तेकरा बाद रावण प्रसंग आ गइल बाटे बने कांड में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिन्नो डा सेटा अइसन मिस्टर पी० वलडेयुस के 'आफगोडेरैय डर ओस्ट इन्डेशे हाइडेनन' सन् १६७२ ई० में प्रकाशित भइल। ई राम कथा लेखक ६ साल तक सिंहल दीप आ दक्खिन भारत में रहल रहन। रावण चरित से लगाइत राम स्वर्ग गमन तक के इनकर पूरा बड़हन रामचरित बाटे जवना में सीता जी के अग्नि परीक्षा का अलावे कई परीक्षन के प्रसंग दीहल बा। डच इस्ट कम्पनी के पादड़ी मि० ए० रोजेरियुस के 'द ओपेन दोरे' के प्रकाशन सन् १६५१ ई० में भइल रहे जवना में वाल्मीकि का आधार पर रावण चरित्र से लगाइत राम वन गमन आ लवट के अयोध्या अइला तक के वरनन दीहल बा। डा० ओ० डैप्पर के 'असिया' वाल्मीकि का आधार पर हॉलैंड में सत्रहवीं श० का अंत में प्रकाशित भइल रहे, जवना में राम कथा के नीक बरनन आइल बा। मिस्टर डे० फेरिया के 'आसिया पोर्तुगेसा' के प्रकाशन सन् १६७४ ई० में भइल रहे। ओहू प्रकाशन पर वाल्मीकि के छाप बा आ सीता त्याग के कारन बतावल बा रावण चित्र उरेहला से। डा० कालेंड साहेब के तीन पुर्तगाली रचना के प्रकाशन १६७० ई० में भइल रहे जवना में रामायण उत्तर कांड तक दीहल बा एह प्रकाशन के डच अनुवाद भी भइल बाटे। मिस्टर जे० वी० टावर्निए साहेब भारत भ्रमन कइला का बाद फ्रेंच भाषा में आपन भ्रमन वरनन सत्रहवीं श० में प्रकाशित करवले रहस, जवना में राम कथा के गुटमुटारे रूप दीहल बा। अट्ठारहवीं श० में मि० ए० सोनेरा आ मि० डे० पोलियो सा० के 'वोयाज आस इंड ओरियन्टल आ 'मैथोलाजी डेस इराडू' के प्रकाशन भइल रहे। सोनेरा सा० का पुस्तक में भगवान राम, लखनलाल आ सीता जी का साथ पन्द्रह साल का उम्र में स्वेच्छा से चित्रकूट में तप करे गइल बानी। इहो वरनन इचिके के मुट के बाटे। डे० पोलियो साहेब अपना पुस्तक में राम कथा के रूप वाल्मीकि से अधिक भिन्न देले बाड़न ऊ विलियम जोन्स सा० का कवनो पंडित से रामकथा सुनले रहन जवना का आधार पर उनकर वरनन छपल रहे। मिस्टर चिगेन वाल्स साहेब के राम बरनन जर्मन भाषा में अठ्ठारहवीं शती का शुरू में लिखाइल रहे आ ओकर अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित भइल १८६७ ई० में मद्रास में। मि० जे. ए. डुब्बा जे 'हिन्दू मैनर्स, कस्टम्स एण्ड सेरीमनिज' १९ वीं श० में प्रकाशित भइल रहे जवना में राम कथा के छोटहने रूप दीहल बा आ उहो बड़ा विचित्र। हनुमान जी समुद्र पर चलि के लंका पहुंच गइल बानी। यूरोप का अलावे सुमेरियन लोग भी दशावतार माने लन। कुछ विद्वानन के मत बा कि यहूदी लोगन का ९वां अवतार के नाम 'लामस' भारतीय पुरान का राम से बहुत मिलत-जुलत बा। ●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाल्मीकि तुलसी भये

गोस्वामी तुलसीदास जी के 'नाना पुराण निगमागम' आ संत वचनामृत से भरपूर 'रामचरित मानस' समूचे संसार खातिर अपना ढंग के बेजोड़ दैवी वरदान बा। उहां का मानस के मोतिन का प्रकाश में देश-विदेश के अनघा लोग अपार आनंद के अनुभव कइले बाड़न। ऊ क्रम एहू घरी चल रहल बा आ चलत रही आगे संसार चक्र मतिन सब दिन।

गोस्वामी जी मानस में बहुत कुछ लिख देला का बादो कहले बानी जे– 'कवित विवेक एक नहिं मोरे। सत्य कहउं लिखि कागद कोरे।' स्वामी सुबोधानन्द जी हमरा से वाराणसी में कहले रहीं जे मानस के चौपाई के आधार चार वेद, छंद के आधार छवो शास्त्र आ अट्ठारह महापुरानन के सार दोहा आ सोरठा में भरल बा। दोहा के माने दू आ सोरठा माने सोरह आ दूनो के जोड़ अठारह। उहाँ के अलावे एगो ब्रह्मचारी जी बतवलीं जे गोस्वामी जी का मानस के मरम समझे बदे वेद-पुरान के मरम जानल जरूरी बा। राम आ रामायण के समझे वाला राममय हो जाला, बाकी जवना राम के समझे में सती का दू जन्म लागि गइल तवना प्रसंग के एगो भा दू चार दोहा, चौपाई अउर छंद पकड़ के भूलल बनरमूठ हो जाई। मानस पर कुछ लिखे का पहिले मानस का लिखनिहार पर कुछ सोच विचार कर लिहल जरूरी बा।

गोस्वामी तुलसीदास जी अपने से अपना बारे में नाहिंए का बराबर लिखले बानी। जो कंचित कुछ लिखलहूँ होखब त सरि गलि गइल होखी भा कबनो मानुस जाति के विरोधी फूँक-ताप घलले होइहन। बात अइसन नइखे जे ओह बारे में केहू खोज-पूछ नइखे कइले। पुराने जमाना से कवि बेणी माधव दास जी वगैरह विद्वान लोग आपन कलम उठवले बानी तवना का अलावे देश-विदेश के अनघा विद्वानन के एक से एक विचार गोस्वामी जी का विषय में आइल बाड़न स। गोस्वामी जी का जन्म स्थान का बारे में पतौंजा, सोरों, तारी, हस्तिनापुर, चित्रकूट का नियरा के हाजीपुर, राजपुर जिला भोजपुर (बिहार) आ राजापुर जिला बांदा (उ० प्र०) वगैरह कई स्थानन के नाम आइल बाटे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पतौंजा का विषय में लिखल वा जे 'तुलसी परासर गोत्र दूबे पतौंजा के'। ई मत वा कठजीभा स्वामी के जेकरा बारे में श्री राधा चरण गोस्वामी नव भक्तमाल पन्ना १९ पर लिखले बानी :—

जय कासीबासी देव पद काष्ठ जिह्वा स्वामी कृपाल।
बालपने व्याकरण न्याय वेदान्त पढ़े बहु,
करत वाद अनुवाद पंडितन संग सदा रहु।
गुरुन कही धमकाय बृथा क्यों काल बितावत,
जीभ काठ की डालि नहीं क्यों हरि गुन गावत।
तब जीभ काठ की मढ़ लयी राम नाम बिनु सब जंजाल॥

श्री रूपकला जी का भक्तमाल टीका के प्रकाशन नवल किशोर प्रेस लखनऊ से १९१३ में भइल वा। ओह में उहां का गोस्वामी जी के स्थान वाराह क्षेत्र (सोरों मंडल का तरी पुरा में) लिखले बानी। कुछ विद्वान लोग वाराह क्षेत्र के नेपाल में बतवले बाड़न। जवना सूकर क्षेत्र में गोस्वामी जी के गुरुधाम कहल वा तवना के कुछ विद्वान लोग प्राचीन पसका राज में बतवले बाड़न। ई स्थान गोंडा जिला का उत्तरी रेलवे का कर्नल गंज स्टेशन से बारह मील उत्तर बाटे। पूस पूर्निमा के हर साल उहाँ मेला लागेला, जहवां ढेर साधु लोग जुटेलन महीना भर कल्पवास बदे। उहाँ वाराह भगवान आ वाराही देवी के मंदिर बा। पुरनका मंदिर त घाघरा में पइठि गइल, बाद में नेपाल सिंह जी फेरु उहां मंदिर के निरमान करवलीं जवना के सौ से अधिक साल के लोग कहेलन।

गोस्वामी जी लिखले बानी जे—'मैं निज गुरु सन सुनी, कथा सो सूकर खेत'। ओह सूकर खेत के मंदिर का कुछ दूर पर एगो पुरान कुटिया बीस फीट ऊँचा पर बाटे जहां बर आ पीपर के गाँछ बा तवनन्ह के लगावे वाला नरहरिया नंद जी के बतावल जाला। बाबा बेणीमाधव दास जी एही पसका के निवासी रहीं, जेकर लिखल 'तुलसी चरित' के चरचा 'सेंगर जी' कइले बानी। गोंडा जिला गजेटियर आ शिव सिंह सरोज में लिखल बा जे 'गोसाईं चरित' के रचनिहार पसका निवासी बाबा बेणी माधवदास जी रहीं, गोंडा जिला गजेटियर (द्वारा डब्लू० सी० बेनेट) में लिखल बा कि—जिला के एगो-दूगो नामी विद्वान साहित्यिक क्षेत्र में आदर पवले बाड़न। पसका निवासी बाबा बेनी माधोदास, तुलसीदास के मित्र आ चेला रहीं, जे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'गोस्वामी चरित' लिखले रहीं। मानस पीयूष के सम्पादक श्री अंजनी शरण जी गोंडा जिला गजेटियर आ शिव सिंह के प्रकाशन काल १९वीं शताब्दी के अंतिम चरण बतवले बानी।

सं० १९६५ में राजापुर का 'अयोध्या कांड' का प्रति लिपि के सम्पादन लाला सीताराम जी कइले रहीं। ओह पुस्तक का भूमिका में गोस्वामी तुलसीदास के सूकर खेत से विशेष सम्बंध बतावल बाटे। सं० १९७३ में अख्तियार पुर (शाहाबाद) के निवासी श्री शिवनन्दन सहाय जी के श्री गोस्वामी तुलसीदास प्रकाशित भइल बा। उहो गोस्वामी जी पर मजगरि पुस्तक बा।

गोस्वामी जी के जन्म स्थान हस्तिनापुर आ हाजीपुर का बारे में भोजपुरे जिला का राजपुर अस कवनो विशेष प्रमान से केहू सावित नइखे कइले। एह राजापुर आ राजपुर के लोग दंत कथे से आपन कथ सावित कइले बाड़न। राजपुर का नियरे रघुनाथ सिंह वाला 'रघुनाथ पुर' बाटे जहां तुलसी चउतरा आज तक बा आ ओह मस्जिदो के चिह्न बा जवना किहा कभी गोस्वामी जी का सुतला के लोग चरचा करेलन। श्री शिवनंदन सहाय लिखले बानी जे इहां तुलसीदास जी आइल रहीं आ कांट गांव में गइलीं त लोग आदर सत्कार ना कइलन। गोस्वामी जी के धइल नाम 'कांट' आजतक ओह गांव के नाम बाटे। सहाय जी गोस्वामी जी के जन्म स्थान एह स्थान के नइखीं मनले।

श्री शिवसिंह सेंगर जी अपना 'सरोज' नामक ग्रंथ में बाबा बेनी माधव दास के लिखल 'गोसाईं चरित' के बरनन देले बानी, जवना के रचना काल सं० १६८७ मानल बा। ओही आधार पर डा० श्याम सुन्दर दास आ श्री बड़थ्वाल जी 'गोस्वामी तुलसीदास' सं० १९८८ में प्रकाशित करवले रहीं। एशियाटिक रिसर्चेज' का क्रम में सं० १८८८ के डा० विल्सन साहेब के 'ए स्केच आफ द रेलिजंस आफ द हिन्दूज' पुस्तक के प्रधानता बा। ओह में गोस्वामी जी के जन्म स्थान, गुरु-परम्परा आ कार्य क्षेत्र आदि के प्रसंग सुनला का आधार पर लिखल बा। ओही ढंग के प्रसंग मि० ग्राउस साहेब अपना 'रामायण आफ तुलसीदास' का अंग्रेजी अनुवाद का भूमिका में देले बाड़न। संत तुलसी पर आज जइसे भिन्न-भिन्न ढंग से निबंध लिखल जा रहल बा तसहीं विल्सन साहेब अस मिस्टर ग्रिप्स साहेब सं० १९५६ में गोस्वामी जी के जीवन चरित पर एगो निबंध लिखले रहन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोस्वामी जी का विषय में खोज करेवाला लोगन में बड़ा सराहनीय स्थान वाटे जार्ज ग्रियर्सन साहेब के। सं० १९४३ का 'अन्तर राष्ट्रीय ओरियन्टल कांग्रेस' में उनकर महत्वपूर्ण निबंध गोस्वामी जी के जानकारी प्राप्त करे के एगो सजहन दरवाजा खोल देलस। ऊ अपना पुस्तक 'माडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर' में एह विषय के आदर को स्थान दीहलन। उनकरि पुस्तक सं० १९४६ में प्रकाशित भइल रहे आ सं० १९५० का अपना 'नोट्स ऑन तुलसी दास' में त ऊ गोस्वामी जी का वारे में ढेर सामग्री जुटा लिहलन भा उनहीं का प्रयास से गोस्वामी जी का कृतियन पर आलोचनात्मक अध्ययन के श्री गणेश भइल। डा० माता प्रसाद गुप्त के 'तुलसीदास' के प्रकाशन भइल साहित्य कुटीर, प्रयाग से सन् १९४९ में आ श्री राजपति दीक्षित जी के 'तुलसी दास और उनका युग' ज्ञानमंडल, काशी में सं० २००९ में प्रकाशित भइल वा जवनन के खास स्थान वन गइल वा गोस्वामी तुलसी दास का चरित वदे। डॉ० गुप्त जी के प्रयाग विश्वविद्यालय से सन् १९४२ में 'तुलसी दास' त वहुत मजगर ग्रंथ वा गोस्वामी जी पर। वेलवेडियर प्रेस प्रयाग से प्रकाशित सन् १९३२ वाला 'घट रामायण' एगो पढ़े लाएक पुस्तक वा। 'कल्याण', गोरखपुर के त खास स्थान वा एह विषय में। काशी नागरी प्रचारिणी के तुलसी ग्रंथावली, आ गीता प्रेस, गोरखपुर से सं० १९९१ के प्रकाशित मूल गोसाईं चरित अउर अगस्त सन् १९३८ ई० के प्रकाशित कल्याण के मानसाङ्क अनमोल थाती वा गोस्वामी जी का विषय में।

पं० महादेव प्र० जी अपना 'भक्ति विलास' में लिखले वानी कि गोस्वामी जी के माता-पिता पतौंजा रहत रहीं। गर्भाधान स्थान उहां का 'तारी' गांव में लिखले वानीं आ जन्म स्थान गोस्वामी जी का ममहर राजापुर जिला वांदा के। गीता प्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित 'श्री रामचरित मानस' में श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार लिखले वानीं कि प्रयाग का नियरा वांदा जिला का राजापुर गांव में पं० आत्मा राम दूवे का धर्मपत्नी हुलसी जी का गर्भ से अभुक्त मूल नक्षत्र में गोस्वामी जी के जन्म भइल। जन्म सं० १९५४ लिखल वा आ दूवे जी के वतावल वाटे सरयूपारी ब्राह्मण। स्व० राधा चरन गोस्वामी का भक्तमाल में एह विषय पर विधिवत वरनन आइल वाटे। मिरजापुर निवासी श्री तुलसी राम अग्रवाल अपना उर्दू भक्तमाल में आ मिश्रबंधु अपना 'हिन्दी नवरत्न' में अउर राजा प्रताप सिंह अपना 'भक्ति कल्प द्रुम' में गोस्वामी जी के कान्यकुब्ज ब्राह्मण लिखले वाटे लोग।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री रामगुलाम दूबे, ठाकुर शिव सिंह आ डॉ० ग्रियर्सन साहेब गोस्वामी जी के सरयू पारिए ब्राह्मण मनले बाड़न। ग्रियर्सन साहेब का १८९३ ई० वाली इन्डियन एन्टिक्वेरी का पन्ना ५३वाली टिप्पणी में नीचे लिखल दोहा लिखल बा :—

'दूबे आत्मा राम है–पिता का नाम जग जान।
माता हुलसी कहत सब, तुलसी के सुन कान॥
प्रह्लाद उधारन नाम है, गुरु का सुनिए साध।
प्रगट नाम नहिं कहत जो, कहत होय अपराध॥
दीनबंधु पाठक कहत, ससुर नाम सब कोय।
रत्नावलि तिय नाम है, सुत तारक गत होय।

खानखाना साहेब का दोहा के अधवार 'गोद लिए हुलसी फिरे तुलसी सो सुन होय' आ 'सम्भु प्रसाद सुमति हिय तुलसी' चौपाई का अधवारी से भी गोस्वामी जी का माता जी के नाम हुलसी जी बाटे। बृहद् रामायण आ 'भक्ति सिन्धु' में भी ईहे लिखल बाटे आ गोस्वामी जी के नाम 'रामबोला' लिखल बा। विनय पत्रिका पद ७४ आ कवितावली उत्तर कांड कवित्त सं० ९४ में गोस्वामिओ जी लिखले बानी, :—

'राम के गुलाम नाम रामबोला'–विनय पत्रिका
साहेब सुजान किन श्वानहूं, को पक्ष कियो, राम बोला नाम है। क०

गोस्वामी जी विनय पत्रिका का पद २२७ में कहले बानी :—

'जननी जनक तज्यो, जनम करम बिनु बिधि सिरजे अखड़ेरे।
मोहिं सो कोउ कोउ कहत राम को सो प्रसंग केहि केरे॥
फिरौं ललात बिनु नाम उदर लगि दुषहूं दुषित मोहिं हेरे।
नाम प्रसाद लहत रसाल फल अब हैं बबुर बहेरे॥

पोद्दार जी लिखले बानी कि जन्म लेते गोस्वामी जी 'राम' कहलीं आ बालक तुलसी के सालभर गर्भ में रहला के बाद जन्म भइल रहे आ ओही घड़ी बत्तीसो दांत जामि गइल रहन स। माताजी अपना दासी का साथ दसमी के ससुरा भेज दिहलीं आ एकादशी के हुलसी के शरीर छूट गइल। गोस्वामी जी का साढ़े पाँच साल के भइला पर दासी चुनिया चल दिहलसि एह असार संसार से आपन विस्तर बटोर के। गोस्वामी जी के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ जीवन काल बड़ा दुख से बीतल बा। तवना का बाद उहां के नरहरियानंद जी के साथ भइल।

पं० महादेव प्र० जी का कथनानुसार गोस्वामी जी का माता-पिता के 'सोरो' में शरीर छूटल। उहां का भक्ति विलास में अइसे लिखले बानी :—

एहि बिधि कछुक काल सुख पाए, मातु पिता परलोक सिधाए॥
तिन्हके कर्म कीन्ह बहु भांती, मन में सोच करत दिन राती॥
तहं गुरु कहि पुनि कथा पुरानी, नरहरि दास मनोहर बानी॥
सुनि तुलसी सब सोच बिहाई, सबके मात पिता रघुराई॥
सो तुम मानो प्रियवर, राजापुर को जाहु।
चेतहु मेरे बचन अब, करहु आपनो ब्याहु॥

पोद्दार जी लिखले बानी कि नरहरियानंद जी गोस्वामी जी के नाम रामबोला रखलीं। १५६१ माघ शुक्ल पंचमी के जनेऊ देइ के गोस्वामी जी के राममंत्र के दीक्षा दिहलीं। १५ साल तक विद्या पढ़ला के बाद जन्म भूमि राजापुर जाइके गोस्वामी जी माता पिता के श्राद्ध कइलीं। सं० १५८३ जेठ सुदी १३ गुरुवार के भारद्वाजी गोत्री कन्या से गोस्वामी जी के विवाह भइल। उहां का स्त्री से बड़ा स्नेह रहे। एक बार उहां के स्त्री अपना भाई का साथ नइहर गइलीं, पाछा लागल गोस्वामिओ जी गइलीं। रत्नावली जी का ई अच्छा ना लागल। उहां का कहलीं जे एह हाड़-मांस का शरीर से रावां एतना प्रेम बा, ई प्रेम प्रभु से हो जाय त बेड़ा पार हो जाइत। गोस्वामी जी के उर पलक खुलल आ जुट गइल नगद नेह नारायन से।

पं० महादेव प्र० जी लिखले बानी कि गोस्वामी जी के गुरु महराज विवाह करेके कहलीं तवना का बाद—

यह सुनि तुरत चले ननियावर, पहुँचे गृही भरे सब चांवर॥
पुनि सुन्दर कुल देखि बरावा, मातुल ने तेहि ब्याह करावा।
करहिं रमन गुरु ग्यान भुलाना, पत्नी सहित परम सुख माना॥

श्री प्रियदास जी भक्तमाल टीका में लिखले बानी कि :—

तिया सों सनेह बिनु पूछे पिता गेह गई,
भूली सुध देह भजे वाही ठौर आए हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बधु तजि लाज भई रिस सों निकसि गई,
प्रीति राम नई हाड़ चाम छाए हैं।
सुनी सब बात मानो ह्वै गयो प्रभात वह,
पाछे पछतात तजि कासीपुरी धाए हैं।
कियो तहां बास प्रभु सेवा लैप्रकाश कीन्हों,
लिन्हों दृढ़भाव नेम रूप के तिसाए हैं॥

गोस्वामी जी का जन्म स्थान राजापुर 'वांदा' में भगवान राम के मंदिर बनल वा जवना में जनता का चंदा का अलावे सरकारी सहायता मिलल वा। उहां गोस्वामी जी के मूर्ति भा कुटियो के चिह्न कई स्थानन पर बतावल वाटे वाकी, अधिक विद्वान लोग गोस्वामी जी का ममहर रजेपुर के जन्म स्थान बतवले वाड़न जे प्रामानिक वाटे।

संत तुलसी दास जी के स्त्री स्नेह त रहे वड़ा निठाह बाकी एह प्रसंग के कुछ लोग उर्दू शायरन का मासूका के कमर मतिन महा गूढ़ बना देले वाड़न। राजापुर महात्म में गोस्वामी जी का ससुरार का विषय में लिखल वा कि 'राजापुर यमुना कगार पर अगार रह्यो, उत्तर के पार सैहें रही ससुरार है'॥ ओह पुस्तक में गाँव के नाम नइखे दीहल। कुछ लोग गंगापार ससुसार बतवले वाटे त कुछ लोग जमुना पार। रानी कमल कुँअरी जी लिखले वाड़ी जे मुर्दा पर चढ़के गोस्वामी जी गंगा पार कइलीं आ सांप लटकल रहे ओही सहारा से छतपर चढ़के रत्नावली जो किहां पहुँचलीं। महाराज रघुराज सिंह कृत 'भक्तमाला रामरसिकावली' में लिखल वा कि जमुना के पँवरि के आधीरात के समय छप्पर से लटकल साँप पकड़ के गोस्वामी जी आंगन में कुदलीं। पं० ज्वाला प्रसाद जी बड़ी रामायण में त एही बात के दोहरा देले बानी बाकी, आपनि गुटका रामायण सं० १९६६ में प्रकाशित करवले बानी तवना में लिखल वा जे गोस्वामी जी नहाए गइल रहीं तवले रत्नावली जी नइहर चल गइलीं आ अइला पर घर में स्त्री के ना देख के उहां का ओर कपड़े ससुरार चल गइलीं। श्री योगेन्द्र मोहन दत्तजी गोस्वामी जी के डोर का पाछा दउरवले बानी! एह में संदेह ना जे रत्नावली जी से गोस्वामी जी का गाढ़ स्नेह रहे भा उहें का उपदेश पर संतराज का भगवान राम से स्नेह भइल। गोस्वामी जी का पत्नी का साथ वार्तालाप के पद्य में लिखल बा तवन गद्य से पद्य हो सकेला आ इहो संभव बाइ जे रत्नावली जी भी प

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिखत होखीं। कल्याण का मानसाङ्क में लिखल वा कि गोस्वामी जी का चल दिहला पर पाछा ले उहां के सार मनावे चललन आ रत्नावली जी मूर्छित होके गिर गइलीं। गोस्वामी जी का लवटे खातिर नकार देला पर, उहां के सार घरे लवटल वाड़न आ उनकरि बहन जी सं० १५८२ अषाढ़ वदी दशमी वार बुध के अतना कहके शरीर छोड़ देले वाड़ी जे—'हम पतिदेव के उपदेश करे आइल रहीं, उहां का चल गइलीं; अब इहाँ हमार काम नइखे।'

ग्रियर्सन सा० के कथन वा जे उहां का ससुरार से सीधे काशी अइलीं आ अउर विद्वानन के मत वा कि प्रयाग पहुँच के साधु वेष धारन कइलीं। कुछ लोग प्रयाग से काशी आइल ओही लगले लिखले वाटे आ मानसांक में लिखल वाटे कि चौदह साल दस मास सत्रह दिन तीर्थाटन कइला का वाद गोस्वामी जी काशी पहुँचलीं। काशी नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित रामायण में काशी में गोस्वामी जी के चार मुख्य निवास स्थानन प्रह्लादघाट, गोपाल मंदिर, अस्सी घाट आ संकटमोचन के नाम आइल वाटे।

प्रह्लाद घाट पर गोस्वामी जी के स्मारक वनल वाटे आ गोपाल मंदिर में एगो कोठरी वा जवना के उहां के वैठका वतावल जाला। ओह स्थान पर अंग्रेजी के सूचना पट पर लिखल वा जे 'इहें गोस्वामी तुलसी दास जी, विनय पत्रिका लिखलीं'। लोलार्क कुंड किहां अस्सी पर तुलसी दास के नामी स्थान वा जहां हनुमान जी के मूर्ति उहां का स्थापित कइले रहीं। संकट मोचन भी अस्सी पर वाटे जहां पहिले जंगल मतिन लता पता रहे आ ओही वीच में हनुमान जी के आनंददायक मंदिर। सुने में आवेला जे प्रह्लाद घाट पर श्री गंगाराम जोतिषी रहीं जेकरा गोस्वामी जी के रचल रामाज्ञा का सगुन पर राजा से धन मिलल रहे ओही में से वड़ा निहोरा पाती कइके उहां का गोस्वामी जी के दस वारह हजार रुपया थम्हवले रहीं। संत तुलसी दास जी ऊ रकम लेवे के तैयार ना होत रहीं, जोतिषी जी घिघिआइ के वलाते उहां का हाथ में दिहलीं।

'रामाज्ञा' पुस्तक के समालोचना में लिखल वा कि एक समय में काशी राजघाट के राजा गहवर वंशीय रहन, जेकर वंशधर लोग मांड़ा आ कंतितमें राज करत रहन। उहां के राजकुमार एक वेर जंगल में शिकार करे गइलन। जंगल में एक आदमी के वाघ पकड़ लेलस आ केहू कह दिहल जे राजकुमार के वाघ खा गइल। सगुन निकाले वदे पं० गंगाराम के वुलाहट भइल राजाज्ञा भइल जे सगुन झूठ भइला पर सिर उतार लेल जाई आ सत्य भइला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर लाख के इनाम। पंडित जी गोस्वामी जी के गोड़े गिरलीं आ ओही समय गोस्वामी जी रामाग्या लिख दिहलीं। सवेरे जाइके पंडित जी सगुन निकाल दिहलीं जे राजकुमार सकुशल घर अइहें। राजकुमार का लवटे तक पंडित जी वंदीखाना में राखल गइलीं। प्रभु कृपा से राजकुमार सकुशल घर अइलन आ पंडित जी मालोमाल हो के ऊ रकम गोस्वामी जी के देले रहीं। एह प्रसंग के ग्रियर्सन सा० महाराज कुमार रामदिन सिंह के बतावल कह के संग्रह त कइले वाड़न बाकी पं०सुधाकर दूबेजी का बतावलि कथामें रामोग्या से समहुत के शुभ सगुन विचार होला। एह पुस्तक के गोस्वामी जी का हाथ के लिखल एगो प्रति प्रह्लाद घाट का एगो पंडित जी किहां कहल जाला जे बरावर साथे राखत रहन आ ऊ चोरी हो गइलि। ओकर रचना सं० १६५५ जेठ सुदी दशमी कहल वाटे आ ओह पुस्तक का अनुवादो के हाल लिखल बा। गोस्वामी जी पं० गंगाराम का दीहल रुपया से संकटमोचन का हनुमान मूर्ति का अलावे अउर ११ हनुमान मूर्ति बइठवा दिहलीं।

काशी से गोस्वामी जी चित्रकूट गइलीं जहाँ उहाँ का भगवान राम के दर्शन के वरनन कइल वाटे। गोस्वामी जी का चमत्कार का बारे में मृतक जियाइ दिहल आदि बहुत तरह के बात लिखल बा। सं० १६१६ में कामद गिरि पर उहां से सूरदास के भेंट बतावल वाटे। सूरदास जी आपन सूर सागर ग्रंथ उहां के देखवले रहीं जवना के गोस्वामी जी हृदय से लगा के लेखक के सराहना कइलीं। ओही नियरा पास मीराबाई के पत्र लेइके सुख पाल ब्राह्मन के गोस्वामी जी किहां आइल बतावल वाटे जवना में संबंधी लोगन का मीराबाई का भजन में खलल डलला के वरनन वाटे। उत्तर में गोस्वामी जी के पद –'जाके प्रिय न राम वैदेही। तजिए ताहि कोटि बैरीसम यद्यपि परम सनेही।..... ।' याने राम के भजने कइल सबसे उत्तम लिख बा। गोस्वामी जी का जन्म तिथि अस मीराबाई के जन्म तिथि दुफलि बतावल वाटे। सं० १६२८ में संत का राम आ कृष्ण गीतावली के रच काल बतावल वाटे।

गोस्वामी जी के लिखलि पुस्तकन का विषय में पं० रामगुलाम दूबे लिखले बानी :–

रामलला नहछू त्यों त्यों बिराग संदीपिनिहुं,
बरवै बनाइ विरमाई मति साईं की।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पारवती जानकी के मंगल ललित गाय,
रम्य राम आज्ञा रची कामधेनु नाईं की।
दोहा औ कवित्त गीतबंध कृष्ण कथा कही
रामायन बिनै माहिं बात सब ठाईं की।
जग में सोहानी जगदीश हूँ को मनमानी,
संत सुखदानी बानी तुलसी गोसाईं की॥

एह बारह पुस्तक में रामचरित मानस, कवितावली, गीतावली, विनय पत्रिका आ दोहावली अउर रामाग्या मोटि आ रामलला नहछू वैराग संदीपनी, बरवै, जानकी मंगल, पार्वती मंगल भा कृष्ण गीतावली पातरि पुस्तक वाड़ी सन। शिव सिंह सरोज का अनुसार दस अउर पुस्तक याने २२ पुस्तक गोस्वामी जी के वाड़ी सन। ग्रियर्सन साहेब 'इन्डियन एन्टीक्वेरी' पन्ना ११ पर २१ पुस्तकन के नाम गनवले वाड़न। पं० रामचन्द्र शुक्ल जी 'हिन्दी साहित्य के इतिहास का 'तुलसी दास' प्रसंग में बारहे पुस्तकन के चरचा कइले बानी। कुछ लोग त संत पुस्तकन के संख्या बत्तीस तक बतला देले वाड़न। उन्हन के नामावली अइसे बा, :—

'रामचरित मानस, गीतावली, कवितावली, विनयपत्रिका, दोहावली, रामाग्या, रामलला नहछू, वैराग संदीपिनी, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, कृष्ण गीतावली, बरवै रामायण, सतसई, संकटमोचन, हनुमान बाहुक, राम सलाका, छंदावली, छपै रामायण, कड़खा रामायण, रोला रामायण, झूलन रामायण, कुंडलिया रामायण, हनुमान चालीसा, कलिधर्म निरुपण, रामलता, नामकलाकोपमणि, मंगलावली, मंगल रामायण, गीता भाष्य, ज्ञानकोप परिकरण, राममुक्तावली आ ज्ञान दीपिका।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वेदमत सोधि-सोधि (क्वचिदन्यतोऽपि)

गोस्वामी जी का बारह पुस्तकन में ११ के परिचय पहिले दिहल जात बा आ 'राम चरित मानस' प्रसंग में आगा लिखल जाई।

कवितावली

कवितावली ब्रज भाषा मिश्रित कवित्त, सवैया, झूलन, घनाक्षरी आ छप्पै छंदन में बालकांड से उत्तरकांड याने सात कांडन में लिखलि बाटे। बालकांड में मोट २२ छंदन के बरनन बाटे। ओह में १ला छंद से सात तक बाललीला, आठ से एगारह तक धनुष भंग, बारह से सत्रह विवाहोत्सव आ अट्ठारह से बाइस परशुराम आगमन आ भगवान राम का हाथ में धनुष सउंप के बन गमन बरनन बाटे। सतरहवाँ कवित्त के कुछ लोग क्षेपक बतवले बाड़न जवन अइसे बा :—

कनक गिरि श्रृङ्ग चढ़ि देखि मर्कट कटकु,
बदत मंदोदरि परम भीता।
सहसभुज - मतगजराज रनकेसरी,
परसुधर गर्व जेहि देखि बीता॥
दास 'तुलसी' समरसूर कोसल धनी,
ख्याल ही बालि बलशक्ति-जीता।
रे कंत ! तृणदंत गहि सरन श्रीराम कहि,
अजहुं एहि भांति लै सौंपु सीता॥ १७॥

अयोध्या कांड का २८ छंदन में एक आ दुइ में बनगमन, तीन-चार में कोशिल्या आ सुमित्रा संवाद, पाँच से दस तक केवट प्रसंग आ एगारह से अट्ठाइस तक विंध पर राम लखन जी के पहुँचला के बरनन बा जवना में शिकार वाला एगो नया प्रसंग जोड़ दिहल बा छब्बीस आ सत्ताइसवां छंदन में। ओह दुनो में से एगो २७वां कवित्त अइसे बा, :—

'सर चारिक चारु बनाइ कसें कटि,
पानि सरासनु सायक लै।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बन खेलत रामु फिरैं मृगया,
'तुलसी' छवि सो वरनै किमि कै ॥
अवलोकि अलौकिक रूप मृगीं,
मृग चौंकि चकैं, चितवैं चितु दै।
न डगैं न भगैं जियं जानि सिलीमुख,
पंच धरैं रति नायकु दै' ॥ २७ ॥

वनकांड में त खाली एक ही छंद–पंचवटी में सोनहुला मृग के प्रसंग पर दीहल वाटे। किष्किन्धो में एगुड़े छंद दिहल वा-जव सव लोग थहराइ उठल रहे जे समुद्र लाँघल कइसे जाई, हनुमान जी अइसन कुलँचलीं जे रसातल से जल निकसि गइल आ शेषनाग, वाराह, भगवान आ कच्छप ओच्छप तलतला उठलन। सुन्दर कांड में ३२ छंद वाटे। पहिला से २५ तक हनुमान जी के लंका में पइठल लंका दाह आ समुद्र में कूदल, छब्बीस सत्ताइस सीता जी से विदा लिहल, अट्ठाइस से एकतीस लंका से लवटल आ सहयोगी लोगन का साथ चलल। बत्तीसवां में सागरतट पर तीन दिन उपवास रह के राम दल के पहुँचल आ विभीषण जी का लंकेश टीका के वरनन अइसे वा :–

नगर कुबेरु को सुमेरु की बराबरी,
विरंचि-बुद्धि को विलासु लंक निरमान भो।
ईसहिं चढ़ाइ सीस बीस बाहु बीर तहां,
रावनु सो राजा रज तेजु को निधानु भो ॥
'तुलसी' तिलोक की समृद्धि सौंज संपदा,
सकेलि चाकि राखी रासु जागरु जहानु भो।
तीसरे उपासु वनबास सिंधु पास सो,
समाज महराज जू को एकदिन दानु भो ॥३२॥

लंकाकांड का ५८ छंदन में पहिला सचिव लोगन का प्रान के दन, दू आ तीन में सीता-त्रिजटा संवाद, चार-पाँच में नगरवासी लोगन के वतकही आ छव सात में सेतुवंध वरनन वाटे। आठ में रावन के सुकसारन से राम सेना के वरनन, नौ से सोलह तक रावन सभा में अंगद जी के उमंग आ पगरोपन वाटे। सत्रह से उन्तीस में मंदोदरी के रावन के समझावल, तीस से पचास तक युद्ध चरचा, एकावन में राम रावन युद्ध, वावन से छप्पन तक लखन लाल का शक्ति लागल आ संजीवन से प्रान रक्षा वा। संतावन में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुम्भकरन आ रावन वध अउर अंठावन में देव लोगन के फूल बरषन अइसे बा, :–

'मारे रन रातिचर रावन सकुल दलि,
अनुकूल देव मुनि फूल बरषतु हैं।
नाग नर किंनर, बिरंचि हरि, हरु हेरि
पुलक सरीर, हिएँ हेतु हरषतु हैं।
बाम ओर जानकी कृपा निधान के बिराजैं,
देखन बिषादु मिटै मोदु करषतु हैं।
आयसु भो, लेकिन सिधारे लोकपाल सबै,
'तुलसी' निहाल कै कै दिये सखतु हैं ॥५८॥

उत्तरकांड में १७७ छंद बाटे। काशी नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित रामायण में कवितावली का समालोचना में अंत के तीन गो कवित्त छोड़ दिहल बाटे। उन्हन के पं० सुधाकर दूबे जी, संत तुलसी दास जी का अंत के कविता मनले बानो।

कवितावली का उत्तर कांड में १ से बेरासी छंद तक भगवान राम कृपा, उहां से विनती, प्रेम आ राम नाम महिमा के बड़ा नगद बरनन बा। छंद ४ में गोस्वामी जी बतवले बानी जे 'शोक रूप समुद्र से सुग्रीव के भगवान राम, बानर राज बना दिहलीं से समस्त संसार जानत बाटे। नीच, निशाचर आ अपना शत्रु का भाई बिभीषण के इन्द्र महाराज अस धनवान बना दिहलीं। खाली नामे लिहला से तुलसी अस अन्हेरिया के भी अपना लिहलीं, जेकरा अस के बाउर बाटे संसार में? भगवाने दुखिया लोगन के दुख दूर करे वाला बानी, उहाँ अस केहू दोसर गरीब गोहार करे वाला नइखे। गोस्वामी जी के ई रामकृपा छंद अइसे बाटे, :–

'सोकसमुद्र निमज्जत काढ़ि कपीसु कियो, जगु जानत जैसो।
नीच निसाचर बैरी को बंधु बिभीषनु किन्ह पुरंदर कैसो॥
नाम लिए अपनाई लियो तुलसी सो, कहौ, जग कौन अनैसो।
आरत आरति भंजनु रामु, गरीब नेवाज न दूसरो ऐसो' ॥ ४ ॥

राम प्रेम छंद ३७ के सार बा कि, भगवान आ सीता जी के अनूप सुन्दरता, नैन रूप मछरिन बदे अथाह जल बाटे। कान में राम कथा, मुख

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में राम नाम आ हृदय में उहां के स्थान वा। मति गति आ प्रीति उहाँ से लागलि वा आ वल भी वाटे भगवान राम जी के। सवकर वात त नइखीं कहत वाकी तुलसी दास जी का मत से न जगत में जियला के इहे फल वा। छंद देखीं ! :—

'सिय राम सरुपु अगाध अनूप बिलोचन-मीनन को जलु है।
श्रुति रामकथा मुख राम को नामु, हिएँ पुनि रामहि को थलु है।
मति रामहि सो, गति रामहि सो, रति राम सों, रामहि को वलु है
सब की न कहै, तुलसी के मतें इतनो जगजीवन को फलु है ॥३७॥'

कलि वरनन का वाद राम-प्रेम का प्रधानता में गोस्वामी जी लिखले वानी कि— सुमेर पर्वत के थाला, सुन्दर चिन्तामनि वीज, कामधेनु का अमृत मतिन दूध का पटवन से तीरथ राज प्रयाग अस अंखुआ होय, जेकरा के अपने से कुवेर जी संगेरी आ ओह में मरकत मनि मतिन कनछी आ पत्ता होखे, मोजरि लक्ष्मी रुप आ फल सब प्रकार के मुक्तिन के लागे त उ कल्प वृक्ष स्वभावे से मंगल सुख वरिसावे वाला होखी। तुलसी दास जी कहत वानी कि हे रघुवंस-मनि ! ऊ कल्पवृक्ष कभी अपने का हाथ का वरावर हो सकेला ? माने कभी ना। पद देखल जाय, :—

'कनकु-धरु केदारु वीज सुन्दर सुरमनि बर।
सींचि कामधुक धेनु सुधामय पय बिसुद्धतर॥
तीरथ पति अंकुर सरुप जच्छेस रच्छ तेहि।
मरकत मय साखा सुपत्र, मंजरिय लच्छि जेहिं॥
कैवल्य सकल फल, कल्प तरु सुभ सुभाव सब सुख-बरिस।
कह तुलसी दास, रघुवंस मनि ! तौ कि होइ तुअ कर सरिस॥'

गोस्वामी जी के ई पुस्तक क्रमानुसार ना लिखइला से एगो संग्रह सरुप वाटे। एह में भगवान राम वरनन का अलावे श्याम का गोपिन के वियोग भी वा। १३४वाँ पद में गोस्वामी जी लिखले वानी कि—गोपी कथन वा कि हे उधो जी ! ब्रज के ई योग के सनेस जे भेजल वाटे, ऊ सब ओह दुष्टा दासी के चल्हांकी भरल चाल हटे। अब भला कुवरी अइसन काहें ना कही, जे के नटनागर खोजि के वरन कइ लिहलन। विरह के आगि त उहे जानी जेकरा ऊ लागी। आज त कुवरी नंदलाल के सोहागिन वनलि वा। वाकी, एह से हमहन का श्याम का वुद्धिमानियो के पता लाग गइल। उनका कूवर वड़ा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पसंद वा। अब हमहनो पीठ पर बकुची वान्ह लेब जे कुबरी अस लागे लागव। ऊ पद अइसे वा, :—

'जोग कथा पठई ब्रज को, सब सो सठ चेरी की चाल चलाकी।
ऊधौ जू! क्यों न कहै कुबरी, जो बरी नटनागरि हेरि हलाकी॥
जाहि लगै परि जानै सोई, तुलसी सो सोहागिन नंदलला की।
जानी है जानपनी हरि की, अब बांधियैगी कछु मोटी कला की॥१३

एह से आगे विनय, सीता वट, चित्रकूट, प्रयाग, गंगा, अन्नपूर्णा, आ भगवान शंकर महिमा का अलावे काशी में महामारी का बाद विविध प दीहल वाटे। महामारी वाटे मीन का शनि में। सूर्य सिद्धान्त का गनकई से पं० सुधाकर दूबे जी ग्रियर्सन सा० से वतवले रहीं जे, गोस्वामी युग में सं० १६४० चइत सुदी ५ से सं० १६४२ जेठ तक आ सं० १६६९ चइत सुदी दुइ से सं० १६७१जेठ तक दू वेर मीन के शनि भइलन, जवना में महा उत्पात भइल रहे। संत तुलसी दास जी कहले बानी कि—एक त सब दुखन के मूल कलि आ ओहू में कोढ़ का ककुलहटि अस मीन राशि में शनि के वास। एहीं से वैदिक धर्म के लोप आ लुटेरन के राज हो गइल वा, पाप का बढ़ती के गति देख के संतजन दुखी वाड़न। हे दयासागर! दुरवल वदे दोसर कवनो दुआर नइखे; बल बिभो से हीन के रउए गति बानी। हे महाराज! जो एह समय अपने का एह दीन जनन पर ना देखब त यश बरननों का लजाई जाए के पड़ी। ऊ पद अइसे बाटे—

एक तौ कराल कलिकाल मूल-मूल,
ता में कोढ़ की खाज सी सनीजरी है मीन की।
बेद धर्म दूर गए, भूमि चोर भूप भए,
साधु सीध मानि जानि रीति पाप पीन की॥
दूबरे को दूसरे न द्वार, राम दया धाम,
रावरिए गति बल बिभव बिहीन की।
लागेगी पै लाज वा बिराजमान बिरुदहि,
महाराज! आजु जौं न देत दादि दीन की॥

कुछ लोगन के विचार से संत तुलसी दास जी के चेला 'भृंग' उहां रचनन के वटोर के कबितावली पुस्तक बनवलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीतावली

गोस्वामी जी का ग्रंथन में रामचरित मानस के बाद एही ग्रन्थ के गोट में मोट स्थान बाटे। गीतावली के तीन सौ तीसो पद राग रागनिन से सराबोर, सातो कांडन में सइँतल (सरिआवल) बा। एह में राग आसावरी, कान्हरा, केदार, गौरी, जैतश्री, टोड़ी, नट, बिलावल, बसंत, भैरव, मारू, सारंग आ राग मलार के विचित्र बहार बाटे। हिंडोला के हिलोर मन के चांद के चकोर बनावे वाला बा आ भगवान राम के बन आ बसंत बीच बिचरल आ विहरल अपना आप में पुरजोर बाटें। एक त अनमोल अपने आप, दुसरे लीलाधारी कृष्ण के ललित छाप आ तिसरे मरम भरलि मधुर भाषा के मिठास पर केकर मन ना आनंद मगन हो जाई? मिस्टर ग्रियर्सन साहब लिखले बाड़न कि—गोस्वामी जी राम जी के लरिकाई आ बन गमन का कठिन राह में चलला आ आनंदित रहला के बखान अउर गँवई का बोल-चाल में जे अनेकन भाव देखवले बानी, ओह से अधिक मनोहर बरनन का कवनो कवि कर सकेलन?

गीतावली में भी रामचरित मानस से कुछ भिन्न प्रसंग बाटे। एह में जनक राजा किहां से बिवाह-संदेश ले जाए वाला दूत ना बलुक शतानंद जी बानी आ पद १०९ में कौशिल्या जी भगवान राम आ परशुराम जी के भेंट भइला के खाली चरचा भर कर देले बानी। अयोध्या कांड में भगवान राम से निषाद राज का भेंट भइला का बाद निषाद राज उहां का बन गमन के हाल अयोध्या पठवले बाड़न आ उत्तर कांड में बड़ा रुचिगर प्रकाश डालल बा भगवान राम का सुखमय जीवन पर।

बालकांड में बधाई, नाम करन, दुलार मुनि, यग्य रक्षा, अहिल्योद्धार, जनकपुर-फुलवारी आ रंगभूमि में राम झाँकी, बिवाह बरनन आ अयोध्या आगमन सब मिला के ११० पद बाटे। सातवाँ पद राग बिलावल में दुलार बरनन करत गोस्वामी जी लिखले बानीं जे—महारानी कौसिल्या जी सुन्दर बालक भगवान राम के अपना कोरा में लिहले मनोहर सेज पर सोभत बानी, आ अपना नैनन के सुन्दर चकोर बना के उहां का बदन के निहार रहल बानी बारंबार। कबो सेज पर लेटिके दूध पिआवत बानी, कबो उहां के हृदय से लगा लेत बानी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ कबो भगवान लीला गावत, उहां के हिलावत डोलावत प्रेमामृत पी के पुलकित होत बानी। ब्रह्मा, शंकर भगवान, ऋषि आ देवता लोग बदरी का अलोता झांकी लेत बानी बाकी, तुलसीदास जी कहत बानी कि रघुनाथ जी के ई सुख कोसिल्या जी छोड़ि के दोसरा केहू का ना मिलल। गोस्वामी जी के पद अइसे बा—

'सुभग सेज सोभित कौसिल्या रुचिर राम सिसु गोद लिये।
बार-बार बिधु बदन बिलोकति लोचन चारु चकोर किये ॥१॥
कबहुँ पौढ़ि पय पान करावति, कबहूं राखति लाइ हिये।
बाल केलि गावति हलरावति, पुलकित प्रेम-पियूष पिये ॥२॥
बिधि महेस, मुनि सुर सिहात सब, देखत अंबुद ओट लिये।
तुलसीदास ऐसो सुख रघुपति पै काहू तो पयो ना बिये ॥३॥

१९वां पद में भगवान राम सुमित्रा जी का कोरा बानी। कोसिल्या जी का कोरा का बाद सुमित्रा गोद में भगवान राम बरनन में गोस्वामी जी कहले बानी कि—सुमित्रा जी आनंद मगन होके, भगवान राम के गोद लिहले बारंबार बलि जात कहत बानी जे हे लाल! हे लाड़िला रघुबीर! सूत जाईं। जइसे छाया का अनुसार परछाहीं पड़ेले तसहीं हमारा हँसला से रअों हँसे लागीले आ उदास भइला पर उदास हो जाई ले। रावाँ त सबका जीवन के जीवन आ सब प्रकार के मंगल देवे वाला हवीं। अहा! एह घड़ी रात के कइसनि अपूर्व शोभा बाटे? मूल नक्षत्र, जेकर मूल-आकाश गंगा-बेलि, अन्हरिया-गज्झिन पात आ जोन्ही (तारा गन) ओह में फूल बाड़न। आकाश रूपी फेड़ में फइलि के राति आपनि छवि छिटका रहलि बाटे। हे तात! अब रावां जम्हाई आवति बा आ रावां अलसा रहल बानी। हम त राउरि बानि सज से जानि गइल बानी। अच्छा! हम गाइ-गाइ के आ हिलाइ-डोलाइ के सुखमयी नींद के बुलावत बानी। फिर सुमित्रा जी मगन मन से चुचकार-चुचकार 'हमार बछवा! हमार छबीला छगन मगन' आदि कहे लगली। गोस्वामी जी कहत बानी—ओह घड़ी के भाइन का साथ भगवान के ऊ ललित भाव, हमरा हृदय में उमंग के रहल बा। पद अइसे बा—

सोइए लाल लाड़िले रघुराई।
मगन मोद लिए गोद सुमित्रा बार बार बलि जाई ॥१॥
हंसे हंसत, अनरसे अनरसत प्रतिबिंबनि ज्यों झांई।
तुम सबके जीवन के जीवन, सकल सुमंगल दाई ॥२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूल मूल सुरबीथि-बेलि, तम तोम सुदल अधिकाई।
नखत-सुमन, नभ बिटप बोंडि मानो छपा छिटकि छवि छाई ॥ ३ ॥
हौ जम्हात, अलसात, तात ! तेरी बानि जानि मैं पाई।
गाइ गाइ हलराइ बोलिहौं सुख नींदरी सुहाई ॥ ४ ॥
बछरु, छबीलो छगन मगन मेरे, कहति मल्हाइ मल्हाई।
सानुज हिय हुलसति 'तुलसी' के प्रभु की ललित लरिकाई ॥ ५ ॥

गोस्वामी जी रघुनाथ जी के बाल छबि के बरनन कइ के कहत बानी जे— ऊ सब सुखन के सीमा आ करोड़न कामदेव का शोभा के हर लेवे वाली बाटे। लाली त जइसे सूर्य के तेजि, उहां का चरनने में आइ के बसि गइलि बा। मनोहर पैंजनी आ घुघुरदारि करधनी के रुनझुन शब्द मन के हर लेत बाटे। अति मनोहर आ श्याम शरीर पर गहना के सजावट अइसन जनाति बाटे जइसे अत्यंत सुन्दर सिंगार के इचिका मुट के गांछी विचित्र फूलन से लथरि गइलि होय। (सुन्दरता का) समर में भगवान भुजा भुजंगन (सांपन) के नैन कमल के मुंह चन्द्रमा के जीत लेले बा। एही से सांप बिल में, कमल जल में आ चन्द्रमा आकाश में जा के बस गइल बाड़न। इहे देख के अउर पटतर भी संकाइ के सरक गइल बाड़न। मनि जड़ल आँगन में मकइए चलत-खानी हाथन के जे छाया पड़ति बाटे, जनात बा जे ओह छबि के कमल दलन में भर-भर के अपना हृदय में धरति जाति होखे। ओह घड़ी महाराज दशरथ, रानी कोशिल्या जी अपना लाल के देखि, अपना पुन्य फल के अनुभव कर रहल बानी। तुलसीदास जी का हृदय में प्रभु के ऊ किलकारी मारल आ आनंददायक लड़खड़ाइल बसल रहेला। गोस्वामी जी के ऊ २७वां पद अइसे बा :—

रघुबर बाल छबि कहौं बरनि।
सकल सुख की सींव, कोटि मनोज सोभा हरनि ॥१॥
बसी मानहु चरन-कमलनि अरुनता तजि तरनि।
रुचिर नूपुर किंकिन मन हरति रुनझुन करनि ॥२॥
मंजु मेचक मृदुल तनु अनुहरति भूषन भरनि।
जनु सुभग सिंगार सिसु तरु फर्‌यौ अद्‌भुत फरनि ॥३॥
भुजनि भुजग सरोज नयननि बदन बिधु तज्यो लरनि।
रहे कुहरनि, सलिल, नभ, उपमा अपर दुरि डरनि ॥४॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लसत कर-प्रतिबिंब मनि-आँगन घुटुरुवनि चरनि।
जनु जलज-संपुट सुछवि भरि-भरि धरति उर धरनि ॥५।
पुन्यफल अनुभवति सुतहिं बिलोकि दसरथ-घरनि।
बसति तुलसीं-हृदय प्रभु-किलकनि ललित लरखरनि ॥६॥

गीतावली का पद ४४ में भगवान राम मकइयाँ से सोभ, दू गोड़ पर खड़ा हो गइल बानी तवना आगे गोस्वामी जी कहत बानी—'भगवान राम क। हाथन में छोटि धनुहीं, गोड़न में छोटी-छोटी पनहीं आ डाँड़ में छोटहनि कछनी अउर एगो छोट तरकस भी सोभत बाटे। (श्याम रंग राम का सुन्दर शरीर में) पियर रंग के मलमली झंगुली बाटे, जे बिजुरी-छवि के छीन लेले बा। सुन्दर शरीर आ सिर पर कामदार पगड़ी बिराजमानि बा।

देह में वयस का अनुसार अनेक प्रकार के गहना बा, जेकरा के देख के हृदय में प्रेमलहर लहराति बाटे। भगवान का मनोहरि मूरत के सूरत गोस्वामीजी से कहाति नइखे। ओहके उहे जान सकत बा जेकरा हिया में ऊ पीर मतिन कसके-ले। पद ४४ अइसे बा :—

'छोटिए धनुहियाँ, पनहियाँ पगन छोटी,
छोटिए कछौटी कटि, छोटिए तरकसी।
लसत झंगुली झीनी, दामिनी की छबि छीनी,
सुन्दर बदन, सिर पगिया जरकसी ॥१॥
वय अनुहरत विभूषन विचित्र अंग,
जोहे जिय अवति सनेह की सरकसी।
मूरति की सूरति कहि न परै तुलसी पै,
जानै सोइ जाके उर कसकै करकसी ॥२॥

गीतावली का ४५ आ ४६ पदन में भगवान राम का भाइन संग 'चौगान' खेल के चर्चा गोस्वामीजी कइले बानी। केशवदास जी भी अपना 'राम चन्द्रिका' में चौगान के बरनन कइले बानी।

गोस्वामी जी लिखले बानी—

रामलखन इक ओर भरत रिपुदमन इक ओर भए।
सरजू तीर सम सुखद भूमि थल गनि गनि गोंइयाँ बाँटि लए ॥१॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कंदुक केलि कुसल हय चढ़ि चढ़ि मन कसि कसि ठोंकि ठोंकि खएँ।
कर कमलनि विचित्र चौगानैं, खेलन लगै खेल रिझए ॥२॥
एक लै बढ़त, एक फेरत, सब प्रेम-प्रमोद विनोद भए।
एक कहत भई हार रामजू की, एक कहत भइया भरत जए ॥३॥

केशवदास जी—

यहि विधि गये राम चौगाना, सावकास सब भूमि समाना।
सोभत एक कोस परिमान, रचो रुचिर तापर चौगान।
एक कोद रघुनाथ उदार, भरत दूसरे कोद बिचार।
सोहत हाथे लीन्हें छरी, कारी पीरी राती हरी।
देखन लगो सबै जग जाल, डारि दियो युव गोला हाल।
गोला जाय जहाँ जहँ जवै, होत वहीं तितही तित सवै।
गोला जा के आगे जाय, सोई ताहि चले अपनाय।
उत ते इत इत ते उत होइ, नेकहु ढील न पावै सोइ ॥

'चौगान' खेल के रूप ठीक पोलो अस बाटे। एकरा बारे में कर्नल मेल्सन्स साहेब का 'अकबर' नामक पुस्तक का पन्ना १०२ पर लिखल बा कि 'इतिहास-कार लोग लिखले बाड़न जे अपना सर्वस का समय अकबर बादशाह संझिली बेरा 'चौगान' खेले में आपन समय बितावत रहन। चौगान भारतीय खेल ह, जवन इहाँ से यूरप देश में गइल बा। गेंदा; पलास का लकड़ी से बनवला के चरचा बा आ बादशाह के बतावल बाटे सजहन पोलो के खेलाड़ी।

पद ४९ में विश्वामित्र जी महाराज दशरथ जी किहाँ पहुँचत बानो आ ५० में कहत बानी—हे राजन! जो अपने का रामलखन के दे दीं त अपने के यश होई आ बालकन का भी बड़ा लाभ होखी। ऐह से अपने मुनि लोगन के सनाथ करीं अपने का अपना पुत्र लोगन के प्रभाव ना जनले से डेरात बानी ठीके बा, बाकी इहाँ सब का बारे में अपने बामदेव आ अपना कुलगुरु से त पूछीं। एह का अलावे रावाँ अपनहूँ बड़ा चतुर बान इहाँ सब अपना विरोधिन के युद्ध में दमन कइके हमरा यज्य के रक्षा करब आ थोरही दिन में सकुशल घर लवट आइब। तुलसीदास जी कहत बानी कि, एह रघुवंस तिलक के कविगन का गान करिहन? ऊ पद अइसे बा :—

'राजन! राम-लषन जो दीजै।
जस रावरो, लाभ ढोटनिहूं, मुनि सनाथ सब कीजै ॥१॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डरपत हौं साँचे सनेह-बस, सुत प्रभाव बिनु जाने।
बूझिए बामदेव अरु कुलगुरू, तुम पुनि परम सयाने ॥२॥
रिपु रन दलि, मख राखि कुसल अति अलप दिननि घर ऐहैं।
तुलसिदास रघुबंस तिलक की कविकुल कीरति गैहैं ॥३॥

पिताजी के आग्या पाइके रामलखन जी, स्नेह से सँवारल अनुपम शोभा लुटावत, विश्वामित्र मुनि का साथ बक्सर ताटक बन में पहुँचलीं। बक्सर के सतयुग के नाम सिद्धाश्रम, त्रेता के वामनाश्रम, द्वापर के वेद गर्भा आ कलिकाल के नाम व्याघ्रसर ह। यवन राजकाल में ई बकसर रहे आ अंग्रेजी राज में बक्सर हो गइल। युगानुकूल तारक बन के भी नाम बदलत आइल बा। त्रेता में ऊ ताटक बन रहे आ भगवान राम का चरित्र कइला पर अब चरित्र बन कहल जाला।

५५ वाँ पद में मुनि का साथ दुनो भाई बक्सर पहुँचलीं आ खेलिए में ताड़िका के अन्त कर दिहलीं ताटक बन में, जवन स्थान अब सघन बस्ती के रूप धारन कइ ले ले बा। ५७ आ ५८ पदन में भगवान राम के चरन शिला पर ठेकते सुन्दर नारी का रूप में त्रिलोक का छवि सुता अस अहिल्या जी प्रगट भइल बानो। उहाँ जनकपुर पहुँचला पर भगवान राम का दर्शन से लोगन का अइसन आनन्द मिलल बा जइसे गूँगा का कान आ बानी मिल जाय आ अन्हरा के आँख।

जनकपुरबासी छत पर चढ़ के आदर से देखत बाड़न आ कहत बाड़न जे ई दुनो राजकुमार अवधपति महाराज दशरथजी के पुत्र हवन। ६४ आ ६५ पद में जनक जी जानकारी ले रहल बानी मुनि से आ पद ६८ में बड़ा सजहन परिचय बाटे मुनि मुख से राम लखनजी के। फुलवारी में सीता-राम भेंट का बाद गिरिजा पूजन का अलावे सीताजी के गिरिजाजी से बरदान दिअवले बानी गोस्वामी जी। ७३–७४ पदन में गोस्वामीजी मन के आनन्द मगन बना के, झुमा देवे वाली झाँकी करवले बानी। खेलिए में जइसे तड़ाक देना ताड़िका के अन्त भइल तसहीं पद ९१ में प्रभुजी धनुष तूरि के जय आ जानकीजी के पा लिहलीं। गोस्वामीजी लिखले बानी—

'कौतुक ही कोदंड खंडि प्रभु, जय अरु जानकि पाई।'

जनकपुर में बधाव बाजे लागल आ अयोध्या में कोशिल्या आदि के चिन्ता जे विश्वामित्र जी महाराज के मति मार के लाल लोगन के पैदले ले गइलीं। असुरन के अन्नट, बल आ पवरुख भयावन पहाड़ मतिन बीहड़ होला आ ओह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चट्टान से मुँह मेल बाटे कमल का कोमल पराग से। ओही राग आ अनुराग में सब अचेत रहे तबले पद १०२ में महाराज जनकजी का पुरोहित शतानन्दजी के ले आइल शुभ विवाह के सन्देश रनिवास में सुना दिहलीं भरतलाल जी। जनकपुर बारात गइलि आ उहाँ से पद ११० का अनुसार अयोध्या लवटलि त पुलकित होइके माता कोशिल्या जी आरती उतरलीं। भगवान राम आ सीताजी के सुन्दरता देख के युवती लोग आपस में बतिआवत बाड़ी। एक सखी कह रहल बाड़ी कि हम त अब जनलीं हाँ जे विधाता बड़ा बुद्धिमान बानी। नगर आ नभ में मंगल गाना बजाना के साथ शुभाशीष के बरनन करत गोस्वामी जी कहले बानी—

'मंगल-गान निसान नगर-नभ आनन्द कह्यो न जाता।
चिर जीवहु अवधेस-सुवन सब तुलसीदास सुखदाता॥'

अयोध्या कांड में ८९ पद बाटे। राज तिलक के तेयारी, बन गमन, बन के बिकट पथ, चित्रकूट बरनन, कोशिल्या विरह, महाराज दशरथजी के मरन, भरत जी अयोध्या से चित्रकूट, रामभरत भेंट आ राम रहित अयोध्या के सजीव चित्रन भइल बा। पहिलका पद भगवान राम के राजतिलक का विषय में बाटे। महाराज हाथ जोड़ के गुरुजी से कहले बानी कि 'हे नाथ! रावा कृपा आ शुभाशीष से भगवान शंकरजी हमें भरपूर देले बानी। अब त हमरा मन में इहे लोभ बा कि, हमरा जियतबे श्रीराम युवराज हो जाईं। फिर हमरा जियला मरला के कवनो चिन्ता नइखे। वशिष्टजी कहले बानी कि ई त बड़ा अच्छा काम अपने सोचले बानी। एह के जल्दिए कर दीं, देर मत करीं। जो विधाता अनुकूल रहीं त सब का साथ मिलके जिनगी के लाभ लूट लीं। गोस्वामीजी कहले बानी जे, ओह समय नगर में आनन्दमय बधाई सुनके केकयी बेकल हो गइली आ देवमाया का बस हो के कठिन कुटिलता धारन कर लिहली। पद अइसे बा :—

नृप कर जोरि कहे गुरुपाहीं।
तुम्हरी कृपा असीस नाथ! मेरी सबै महेस निबाहीं॥१॥
राम होहिं जुबराज जियत मेरे, यह लालच मन माहीं।
बहुरि मोहिं जियबे मरिबे को चित चिंता कछु नाहीं॥२॥
महाराज भलो काज विचारयो, बेगि बिलंब न कीजै।
बिधि दाहिने होइ तौ सब मिल जनम-लाहु लुटि लीजै॥३॥
सुनत नगर आनंद बधावन कैकेयी बिलखानी।
तुलसीदास देवमाया बस कठिन कुटिलता ठानी॥४॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केकयी का कारन राम बनबास, कोशिल्या जी के श्री राम से बन गमन ना करे बदे बिनय, सबकर बुझावल समझावल आ तेकरा आगा राम बन गमन बाटे ।

भगवान राम, सीता आ लखन लाल के वन का बिकट पथ पर चलल, राह में बसल लोगन का इहां सभ के सुकवारी, सुघराई आ शोभा आदि देख के चकित आ मोहित भइला, नाना प्रकार के गुनावन आ बन गमन पर दुख प्रगट कइल तेकरा बाद चित्रकूट जाइ के कुटिया बना लेला के बरनन पद २ से ४२ तक में बाटे। एह अंतिम पद में किरातिनिन्ह के लीला देखल जाय ।

किरातिन—ए सखी ! ई राजकुमार लोग कवनो उपहिया शिकारी हवे। ई धनुष बान आ तरकस धारी सांवर-गोर बालक एह घड़ी चित्रकूट पहाड़ पर आ के रहत बाड़न। हमार पतिदेव कहत रहन जे बहुत बड़े बड़े मुनीश्वर लोग इनकर बड़ा आदर करत बानी। एह घड़ी इहां का स्त्री आ भाई का साथ बन में आ के बसल बानी आ पिता जी बदे बड़े बड़े दुख सहले बानी। अइसे किरातिन लोग आपस में बतिआवत बाड़िन। उन्हन लोग के अंग पुलकित हो गइल बाटे आ नैनन से नीर ढर रहल बा। तुलसीदास जी कहले बानी कि प्रभु के देख के ओह लोगन के नैन बिना पलक के याने मछरी मतिन उबर गइल बा। पद अइसे बा :—

ये उपही कोई कुंवर अहेरी।
स्याम गौर, धनुबान तूनधर चित्रकूट अब आइ रहे री ॥१॥
इन्हहिं बहुत आदरत महामुनि, समाचार मेरे नाह कहे री।
बनिता बधु समेत बसे बन, पितु हित बहुत कलेस सहे री ॥२॥
बचन परसपर कहति किरातिनि, पुलक गात जल नयन बहे री।
तुलसी प्रभुहिं बिलोकति एक टक, लोचन जनु बिनु पलक लहे री॥३॥

पद ४३ से ५० तक चित्रकूट का किरातिनिन्ह के तीनो मूरत का अवस्था आदि बरनन का अलावे गोस्वामी जी के चित्रकूट छबि छटा के बरनन बाटे।

पद ५० के चित्रकूट का बरखा ऋतु के बखान देखही लाएक बाटे। ५१ से ५५ तक कोशिल्या जी के राम बिरह वेदना, ५६ से ५९ तक सुमंत जी के लवटल आ महाराज दशरथ के मरन, ६० से ६५ तक भरत लाल का माता के धिरकारल, कोशिल्या जी से बतकही आ चित्रकूट गमन बाटे अउर ६६-६७ में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुक-सारिका संवाद बा। ७२ से ८२ तक भरत जी के श्रृंगवेर पुर में निषाद से भेंट, चित्रकूट में त्रिमूर्ति से भेंट, भगवान राम का ना लवटला पर खड़ाऊं लेइ के अवध का नंदी ग्राम में वास आ उहां के बड़ाई बरनन बा। ८३ से ८७ में कोशिल्या विलाप आ ८८ से ९९ में बड़ा विचित्र प्रसंग बा कि चित्रकूट से चल के रेवा आ बिंध का बीच में भगवान राम वास कइले बानी, तवन समाचार, पत्र से निषाद राज अवध भेजले बाड़न। ई प्रसंग 'मानस' में नइखे।

बन कांड—एह में १७ पद बा। १ आ २ में बन शोभा आ भगवान राम के शिकार ३ से ६ में मारीच बध आ सीता हरन, ९ से १७ तक सीताजी के खोजत समय भगवान राम का जटायु से भेंट, सीता हरन समाचार जटायु के साथ आ शबरी से भगवान राम का भेंट बरनन बाटे। पद १४ में जटायु के कथन बा कि हे राम! हम अपने का हृदय के अच्छी तरह से जानत बानी। अपनेका शरनागत आ सेवक लोगन के रक्षक हवीं एह से हमरा के आदर देलीं हां। हम पंछी जोनि में गीध हो के बहुत नीच जंतुन के खाइ के जग में जिअलीं; आज अपने पुन्यात्मा समाज में हमें ऊपर कर दिहलीं। अहा! हम कान से अपने के बचन सुन रहल बानी, आँख से अपने देख रहल बानी, मुंह से नाम ले तानी आ हमें अपनेका अपना गोद में ले ले बानी। तब बतलाईं, दोसर अइसन के बाटे जे अपना के हमरा अस भाग्यवान बतला सके।

नीके कै जानत राम हियो हैं।
प्रनतपाल, सेवक कृपालु चित पितु पटतरहि दियो हैं ॥१॥
त्रिजगजोनि-गत गीध, जनम भरि खाइ कुजंतु जियो हैं।
महाराज सुकृति-समाज सब-ऊपर आजु कियो हैं ॥२॥
श्रवन बचन, मुख नाम, रूप चख राम उछंग लियो हैं।
तुलसी मो समान बड़ भागी को कहि सकै बियो हैं ॥३॥

किष्किन्धा—एह में खाली दुइए पद बा जवना में ऋष्यमूक पहाड़ पर भगवान राम आ सीताजी के खोज आदेश बा, बस।

सुन्दर कांड—एह में ५१ पद बा। प्रथम पद में भगवान राम से अंगूठी पाइ के सहयोगी लोगन का साथ हनुमान जी चलल बानी जहाँ राहे में गुफा बा आ ओहिजे गीध-राज सम्पाती सीता के सुलाख लगा देले बाड़न। हनुमान जी लंका में जाइ के घर-घर कइसे खोजलीं तवन गोस्वामी जी लिखले बानी कि 'खोजत घर-घर जनु दरिद्र मनु फिरत लागि धन धायो', माने जइसे धन खातिर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दरिद्र के मन भटकत फिरेला तसहीं हनुमान जी खोजले रहीं। सीताजी से भेंट का बाद हनुमान जी का रावन से भेंट सीताजी से विदाई आ आइ के भगवान राम से भेंट, बानरी सेना के लंका पयान, रावन-मंत्रना, विभीषन शरनागति आ जानकी-त्रिजटा संवाद बा। पद ५ से ११ तक बड़ा रोचक हनुमान-सीता संवाद बा आ १२ से १५ में हनुमान बतकही का बाद सीताजी के संतोष देके हनुमानजी लवट आइल बानी। १६ से २० तक हनुमानजी से जानल समाचार लखन लाल जी श्रीराम के जनवले बानीं आ हनुमानजी सीता दशा बरनन कइ के बतवले बानीं। २१ से २२ में श्रीराम के शोक, लंका पयान आ सेतु बंध बरनन बा। २३ से ४६ में राम सेना का अइला के रावन का सुनगुन, मंदोदरी के रावन के समझावल आ विभीषन के भी समझावल, जवना पर लात मार के विभीषन के बगेद आ भगवान राम के शरनागति बाटे। विभीषन आगमन प्रसंग पद ३४ में भगवान राम हँसि के पुछले बानी जे का साचों विभीषन इहाँ अइहन ? ई सुन के लखनलाल जी सिर नवा सकुचाते कहले बानी कि हे नाथ ! अइहें का ऊ त इहाँ आई गइलन। रावाँ सोझा अइसन बनावटी बात कइसे कहल जाई ? भला रावन का द्रोही के राखि के, एगो रघुनाथजी छोड़ के दोसर के बाटे जे प्रतिष्ठा रख सकेला ? प्रभु प्रसन्न भइलीं, सभासद लोग सराहना करे लागल आ दूतो का ई बचन मन में प्रिय लागल। गोस्वामीजी कहत बानी, ओह घड़ी लखनलाल जी के आदेश भइल जे उनका के जल्दी बुला लीं। पद अइसे बा:

सांचेहु विभीषन आइहें ?
बूझत विहँसि कृपालु, लखन सुनि कहत सकुचि सिर नाइ है ॥१॥
ऐहैं कहा नाथ ! आयो ह्याँ, क्यों कहि जाति बनाइ है।
रावन-रिपुहि राखि, रघुबर बिनु को त्रिभुअन पति पाइ है ॥२॥
प्रभु प्रसन्न सब सभा सराहति, दूत बचन मन भाइ है।
तुलसी बोलिए बेगि लखन सो भई महाराज रजाइ है ॥३॥

पद ४५ में भगवान राम कहले बानी कि जे हमार प्राकृतिक स्वभाव ह से सांच-साच बतलावत बानी। जे सब प्रकार से पतित जढ़ आ गरीब आ अति जढ़बुद्धि होखो आ ओके कहीं ठेकान ना मिली जो हमरा शरन में आई तब हम सब भांति से ओकर सेवा करब, ई बात वाल्मीकि आदि ऋषि लोग जानीला। ४७ से ५१ में सीता जी का त्रिजटा से बतकही भइलि बा तवना का पद ४७ में सीताजी कहले बानी कि हम एह नैनन से मधुर मूरत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कब देखब ? जेकर कमल दल अस नयन बा जे अत्यन्त सुकवार आ कृपा के खान हटे अउर अपना अंगन से अनेकन्ह कामदेवन का सुन्दर छवि के लजवा देवे वाला बा। जेकरा माथे जटाजूट, हाथ में धनुष बान आ छाती पर मनोहर माला लटकल रहेला। तुलसीदास जी कहत बानी, एह प्रकार से रघुनाथ जी के शोभा मन पारि के सीता जी प्रेम मगन हो रहल बानीं उहाँ का अपना शरीरो के सुधि नइखे। पद अइसे बा:

कब देखौंगी नैन, वह मधुर मूरति,
राजिव दल नयन; कोमल कृपा अयन,
मयननि बहु छबि मंगनि दूरति ॥१॥
सिरसि जटा-कलाप, पानि सायक—
चाप, उरसि रूचिर बनमाल लूरति
तुलसी दास रघुवर की सोभा सुमिरि,
भइ हैं मगन नहिं तन की सूरति ॥२॥

लंका कांड—एह में २३ पद बाटे। मंदोदरी आग्रह, अंगद राजदूत कर्म, लखन मूर्छा, विजयी राम, अयोध्या में तकाई अउर आनन्द आ तवना का आगा राजतिलक बाटे। पद १ से ४ तक मंदोदरी आ रावन अंगद संवाद आ ५ से १५ तक शक्तिबान से लखनलाल अचेत, हनुमानजी के सजीवन बूटी लेइ आइल, राह में भरतजी से भेंट आ बतकही आ लखनलाल जी के मूर्छा नाश बाटे। राग कान्हरा का पद १६ में इचिका भर विजयी राम के झाँकी कर लिहल जाय। गोस्वामी जी कहले बानी कि अपना शत्रु रावन के समर में जीत के भगवान राम भाई का साथ बिराजमान बानी। एह घड़ी उहांका सैकड़न कामदेव से भी सुन्दर जनात बानी आ आपन हाथ धनुष आ बान पर फेर रहल बानी। उहां का साँवर शरीर पर पसेना के सुन्दर बूँद आ बीच-बीच में मनोहर रक्तकन सोभत बा जइसे कवनी मरकत-मनि का पहाड़ पर भगजोगनिन्ह का झुंड में रामजी के हाथी (बीर बहूटी) शोभा पा रहल बाड़ी सन। भगवान राम का चारों ओर घाही बानर आ भालू बीर लोग बइठल बाड़न आ बड़ा खुश बाटे लोग। ओह समय के राम झाँकी अइसनि जनाति बा जे फूल से लथरल टेसू (पलास) फेड़न का बीच एगो बड़ा विशाल तेजपात के पेड़ शोभा देत होय। ओह घड़ी कमल नयन भगवान राम कृपा कोर से ताकि के मुनि नाग, देवता आ मानव के निर्भय कर दिहलीं तुलसीदास जी कहत बानी कि,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई दुसह बिपत के दूर करेवाला अनुपम रूप हमरा हृदय में विराजमान रहे।

पद अइसे बा :

राजत राम काम-सत-सुन्दर।
रिपु रन जीति अनुज संग सोभित, फेरत चाप बिसिष बनरुह-कर ॥१॥
स्याम सरीर रुचिर श्रम-सीकर, सोनित-कन बिच बीच मनोहर।
जनु खद्योत-निकर, हरिहितगन, भ्राजत मरकत सैल सिखर पर ॥२॥
घायल बीर बिराजत चहुँ दीसि, हरषित सकल रिच्छ अरु बनचर।
कुसुमित किंसुक-तरु समूह मह, तरुन तमाल बिसाल बिटप पर ॥३॥
राजिव-नयन बिलोकि कृपा करि, किए अभय मुनि-नाग बिबुध नर।
तुलसिदास यह रूप अनूपम, हिय-सरोज बसि दुसह बिपति हर ॥४॥

एह ग्रन्थ में लड़ाई चरचा नामे के बाटे। भरतलालजी के सींक बान से हनुमानजी अवध में गिरल बानी ओह घड़ी सुमित्राजी का लखनलाल का शक्ति बान से अचेत भइल सुनके आँखि उमड़ि गइलि बाटे। उहाँ का हनुमानजी से कहले बानीं कि जदपि श्रीराम के दुसरका सहायक उनकर धनुष बा तबहूँ सोच यह बात के बा जे बड़ा कुअवसर में ऊ बन्धुहीन हो गइलन। उहाँ का अपना दोसरा पुत्र रिपुसूदनजी के हनुमानजी का साथ जाए के कहले बानी। एह पर तुरन्त रिपुसूदनजी खड़ा हो गइल बानी जवना पर हनुमान आ भरतलालजी का बड़ी गलानि भइलि बाटे कि अपना दोसरो पुत्र के इहाँ का समर में भेज रहल बानी। भरतलाल का समझा बुझा देला से रिपुसूदनजी रुक गइल बानी। धन्य बानी सुमित्रा जी, एक पुत्र के बलि का बाद दोसरको पुत्र के लड़ाई में सहर्ष जाए के आग्या देले बानी। धन्य शत्रुहन जी भी बानी जे समर में जाये के कमर कस ले ले बानी।

हनुमानजी का सींक बान लागल रहे नन्दी ग्राम का सामने आ ओह घड़ी सुमित्राजी आ रिपुसूदन जी भी ओहिजे रहीं। बशिष्ट जी कहले रहीं जे लखन लाल के बाँह, साँप लिल गइल। ग्रह आ दुःसपन का शान्ति बदे नन्दी ग्राम में यग्य होत रहे, जवना का रक्षा के भार रहे भरतलाल पर। ओही घड़ी प्रकाश पथ से संजीवनी लेइ के लंका जात रहीं आ असुर का भरम में भरतलाल जी मार दिहलीं हनुमानजी के।

पद २३ का अनुसार भगवान राम अवध लवट आइल बानी आ अनप बधाव बाजि रहल बाटे। अवध का अनुपम रूप पर देवतो लोग सिहाइ उठल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बा। बरस रहल बा फूल उहाँ हराहर आ मंगलगान, वेद ध्वनि अउर जयजय-कार से आनन्द मंगल साकार हो उठल बाड़न। प्रभु प्रताप से सबकर दुःख दूर परा गइल बा। धरती, कामधेनु के रूप धारन कर लेले बाड़ी आ समस्त लोक सुख सम्पति से सराबोर हो उठल बा। तुलसी दासजी भी जन्म से सीतापति भगवान रामेके गुनगान कइले बानी। पद २३ वाँ अइसे बा :—

आजु अवध आनन्द-बधावन, रिपु रन जीति राम आए।
साजि सुबिमान निसान बजावत मुदित देव देखन धाए ॥१॥
घर घर चारु-चौक मंगल-मनि, मंगल कलस सबनि साजे।
ध्वज-पताक तोरन, बितान बर, विविध भाँति बाजन बाजे ॥२॥
राम तिलक सुनि दीप दीप के, नृप आए उपहार लिए।
सीय सहित आसीन सिंहासन निरखि जोहारत हरष हिए ॥३॥
मंगलगान, देव धुनि, जय धुनि, मुनि अशीष धुनि भुवन भरे।
बरसि सुमन सुर सिद्ध प्रसंसत, सबके सब संताप हरे ॥४॥
राम राज भइ कामधेनु महि, सुख सम्पदा लोक छाए।
जनम जनम जानकी नाथ के गुनगन तुलसिदास गाए ॥५॥

उत्तर कांड—एह में ३८ पद बा जवना में श्रीराम के राज, रूप, हिंडोला, अवध बरनन, दीवाली, बसन्त विहार, अवध आनन्द, सीता त्याग, लवकुश जन्म, आ रामचरित आदि के चरचा बाटे। प्रथम पद में वनवासी राम भूपति भइल बानी। चौदहों भुवन आनन्दित बा आ गोस्वामीजी कहले बानी कि हमरा त ओह बातन से आजो आनन्द बा।

भिनसहरे भगवान का जागते गाना, धाम तपला (सूर्य स्नान) का बाद घाट पर खड़ा भइला के शोभा बरनन, राजसिंहासन पर के शोभा आ श्रीराम का अनूप रूप के बरनन २ से १७ पद तक बाटे।

पद १३ में भगवान राम-भुजा से यमुना जी का साथ विचित्र रूपक बा। गोस्वामीजी कहले बानी जे 'ऊ भुजा अइसनि जनाति बाड़ी स जइसे श्याम रंग राम का शरीर रूप पर्वत से, यमुना के दुइ धारा फुफकारति होखे अउर जे बल रूप अथाह आ निर्मल जल से भरल बाड़ी आ सिंगार रूप सूर्य से उत्पन्न भइल धार बा। धनुष किनार बा, गहना जलजीव आ अंगुरी के पोर भवँर बाटे। विजय विरुदावली ओह में तरंग रूप से शोभति बा आ तवना में कररूप कमलन के सुघराई बाटे। पद अइसे बा :—

सुंदर स्याम सरीर सैल तें धसि जनु द्वै जमुना अवगाहैं।
अमित अमल जलबल परिपूरन जनु जनमी सिंगार सबिता हैं ॥२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धारैं बान, कूल धनु, भूषन जलचर, भँवर सुभग सब खाहैं।
बिलसति बीचि बिजय-बिरदावलि, कर सरोज सोहत सुषमा हैं ॥३॥

पद १८ से २२ तक झूलन, अवध बड़ाई, दीवाली सुन्दरता आ फगुआ के रुचिगर चरचा बाटे। सिंगार के बरनन त अइसन सदेह उतरल बा कि कहले कहाए जोग नइखे। ओह शोभा आ सिंगार में कहीं इचिको भर भद्दापन नइखे आइल, एह तरे होली में बैसाख वाहन के सवारी आ बिबाह मतिन नर नारी का गारी के बरनन आइल बाटे। होली में एक ओर भाइन सँग भगवान राम सोभा दे रहल बानी त दोसरी ओर जानकी जी का साथ बहुरंगी वस्त्र आ आभूषन पहिनले युवती-झुंड झूम रहल बाटे। हाथ में वा बेंत के छड़ी आ जिन्ह बबुआ पकड़ा जात बानी आँख में अंजन लगा के युवती लोग नाच नचा के छोड़त बाड़ी आ छुट्टी भी होति बाटे त बड़ा निहोरा पाती कइला पर। पद,—

राग बसन्त—

खेलत बसंत राजाधिराज, देखत नभ कवतुक सुर समाज ॥१॥
सोहैं सखा-अनुज रघुनाथ साथ, झोलिन्ह अबीर पिचकारी हाथ ॥२॥
बाजहिं मृदंग डफ ताल बेनु, छिरकैं सुगन्ध भरे मलय रेनु ॥३॥
उत जुवती-जुथ जानकी संग, पहिरे पट भूषन सरस रंग ॥४॥
लिए छरी बेंत सोघें विभाग, चांचरि झुमक कहैं सुभग राग ॥५॥
नूपूर किंकिन धुनि अति सोहाइ, ललना-गन जब जेहिं धरइं धाइ ॥६॥
लोचन अंजहिं फगुआ मनाइ, छाड़हिं नचाइ, हाहा कराइ ॥७॥

पद २३ में अवध विकास आ २४ से ३२ तक भगवान राम के न्याय, कुत्ता, धोबी आ ब्राह्मन का मृतक पुत्र के कथा का अलावे सीताजी के मुनि आश्रम में पठवला तक के बरनन बा। ३३ से ३७ में बाल्मीकि मुनि का आश्रम में सीता बास आ लवकुश जन्म बा।

श्री केशवदास जी अपना 'राम चन्द्रिका' में लवकुश युद्ध लिखले बानी आ अउर देस विदेस का राम काव्यन में भी ई प्रसंग आइल बाटे। रामायन के मूल बाल्मीकि में एह के बरनन नइखे ना कालिदास भा भवभूतिए जी ई प्रसंग रखले बानी। गीतावली में भी गोस्वामी जी लवकुश युद्ध बरनन नइखीं देले। पद ३८ में संक्षेप में समस्त रामायन बरनन आ गइल बा। अन्त में गोस्वामी जी लिखले बानी कि—

वेद-पुरान बिचारि लगन सुभ महाराज अभिषेक कियो।
तुलसिदास जिय जानि सुअवसर भगति-दान जब माँगि लियो ॥

गीतावली के कई परीक्षनि का पाठ्यपुस्तकन में स्थान मिल चुकल बा। पहिलहीं से एह के 'डिग्री आफ आनर' परीक्षा का पाठ्य पुस्तकन में राखल रहे जवना का पारितोषिक स्वरूप एक हजार रुपया रखल रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोहावली

गोस्वामी तुलसीदास जी भक्ति, ग्यान, वैराग, सदाचार, व्यवहार, नीति अउर प्रेम आदि पर रोचक दोहा रचले रहीं। ओही रचनन के संग्रह 'दोहावली' बनलि। संग्रह के आ कव कइल एकर निजगुत प्रमान त नइखे बाकी, अनुमान करे वाला लोग अपना अपना ढंग से अँटकर लगवले बाड़न। कुछ लोगन के विचार बा कि एह पुस्तक के श्री टोडर मल्ल जी संकलन कइले रहन आ उनहीं का अनुरोध पर अपना पुस्तकन से दोहा लिखा देला का अलावे कुछ अउर दोहा लिख दिहलीं गोस्वामी जी। श्री छक्कनलाल जी का कथनानुसार 'रामाग्या' के रचना काल सं० १६५५ भइल आ राजा टोडर मल्ल जी मर चुकल रहीं सं० सोलह से छियालिसे में। एह से ई साबित होत बा कि राजा टोडरमल्ल ना बलुक काशी का टोडरमल्ल का अनुरोध पर दोहावली बनलि।

जार्ज ग्रियर्सन साहेबका एह में भारी संदेह रहे जे के एह पुस्तक के संकलन कइल। सं० १६६९ के आसपास काशी का टोडरमल्ल जी का पुत्रन में आपसी बँटवारा के झउरा उठल रहे जवना के बीच-बचाव का अलावे बँटवा देवे वाला भी गोस्वामिए जी रहीं। एक बात ग्रियर्सन सा० खुदे मनले बाड़न जे पुरनकी हस्तलिपि वाली दोहावली में रामाग्या के एकहू दोहा ना रहे। जवन दोहा—'खरिया खरी कपूर लों, उचित न पिय तिय त्याग। कै खरिया मोहि मेलि कै, विमल विबेक विराग॥' रत्नावली जी के कहल बा, चाहे खानखाना साहेब के—'मनि मानिक महंगो किये, सहतो तृन जल नाज। तुलसी या तें जानिए, राम गरीब नेवाज॥' दोहा के भी स्थान गोस्वामीजी का सुनला का आधार पर स्थान मिलल बाटे। दोहावली में सोरठा का संकलन पर कतने आलोचक साफ कह देले बाड़न जे ई पाछे से जोड़ दिआइल।

डा० ग्रियर्सन साहब स्व० बाबू रामदीन सिंह जी से गोस्वामी कृत पुस्तकन का दोहन के सूची तेयार करवले रहीं, तवना के अनुसार रामायन में ८५ वैराग संदिपनी में २, रामग्या में ३५, आ सत्सई में १३१ दोहा बतावल रहे। सूची में जे २२ सोरठो के नाम आइल बा तवनो जोड़ देला पर २७५ होत बा। दोहावली में सभन के संख्या बाटे ५७३। कुछ दोहन में गोस्वामी तुलसीदास जी के नाम नइखे बाकी, अट्ठारह, बाईस, एकसठ, तिरसठ, पैंसठ, सत्तर, दो सौ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छानवे, तीन सौ नवासी आ पाँच सौ चौसठ संख्या का दोहन के गोस्वामीजी का दोसरा कवनो पुस्तकन में चरचा नइखे आ एह समन में 'तुलसी' नाम आइल बा, जइसे १८ वाँ दोहा :—

'मोर मोर सब कहँ कहसि तू को कहु निज नाम।
कै चुप साधहि सुनि समुझि कै तुलसी जपु राम' ॥१८॥

कलजुग में 'राम नाम' मन चाहा फल देवे वाला कल्पवृक्ष का समान बा, राम भक्ति मुँह माँगलि वस्तु देवे वाली कामधेनु बाटे आ सद्गुरु का चरन कमल के धूर सब प्रकार का मंगल के जड़ बा।

दोहा—राम नाम कलि काम तरु, राम भगति सुर धेनु।
सकल सुमंगल मूल जग, गुरु पद पंकज रेनु ॥२७॥

तुलसी अभिलाषा—जइसे मछली जल से गोट आ जल बिना दूबर हो जाले तसहीं—तुलसी, प्रभु प्रेम बिना दूबर आ प्रेम से पुष्ट होखस।

दोहा—राम प्रेम बिनु दुबरो, राम प्रेम ही पीन।
रघुबर कबहुंक करहुगे, तुलसिहि ज्यों जल मीन ॥५७॥

तुलसीदास जी का एक ही भरोसा बा, एक ही बल बा, एक ही आशा आ एगुड़े विश्वास बाटे। एक राम स्वरूप श्याम घन (मेघ) बदे तुलसीदास चातक बनल बानी।

दोहा—एक भरोसो एक बल एक आस विस्वास।
एक राम घनस्याम हित चातक तुलसीदास ॥२७७॥

दुष्ट निंदा—गोस्वामी जी कहत बानी जे एह बात के समस्त संसार जानत बा जे दुष्टन के साथ उपकार कइला के फल बुरा होला। सत्योपाख्यान में—बेंग, बंदर, बनियाँ आ बकुला के कथा एकर उदाहरन बाटे।

दोहा—खल उपकार विकार फल, तुलसी जान जहान।
मेढ़ुक मर्कट, बनिक बक कथा सत्य उपखान ॥३९८॥

कलि में दू आधार—कलि में पाखंड के प्रचार बाटे। संसार में पाप बड़ा प्रबल हो गइल बा, सगरे खल आ पतित देखात बाड़न। एह हालत में एगो 'राम नाम' आ दोसर पवित्र गंगाजल आधार बाटे।

सोरठा—कलि पाखंड प्रचार प्रबल पाप पांवर पतित।
तुलसी उभय अधार, राम नाम सुरसरि सलिल ॥५६६॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामाज्ञा :

रामाग्या के प्रसंग त पहिलही दिहल जा चुकल बाटे। ई पुस्तक सात भागन में पूरा भइलि बा। लगातार बरनन के एह में प्रभाव बा। बाल कांड के कथा पहिला आ ४था अध्याय में, दूसरा में अवध आ कुछ बन कांड के भी प्रसंग आइल बा। तिसरो में कुछ बन कांड का अलावे किष्किन्धा के प्रसंग बाटे। ५वां में सुन्दर कांड आ लंका, ६ में राज तिलक, मृतक बालक, बक उलूक, यति-श्वान, सीता त्याग के प्रसंग आ कुछ कविता बाड़ी सन।

पं० सुधाकर दूबे जी रामाज्ञा के रचना काल सं० १६५५ नइखीं मनले। उहां का कहनाम से पता बा कि ओह समय में ऊ प्रति लिखाइलि रहे जवना के नकल श्री छक्कन लालजी उतरले रहीं। कुछ समालोचक लोगन के कथन बा कि गोस्वामी जी रामाग्या, कत्था (खैर) से लिख देले रहीं बाकी, ई जंचत नइखे रामाग्या के रचना राजकुमार का सगुन निकाले बदे कहल बा तबनो पर मिस्टर ग्रियर्सन साहेब अपना 'इंडियन ऐन्टिक्वेरी' का नोट्स आन तुलसीदास पन्ना २७-२८ पर लिखले बाड़न कि पं० सुधाकर दूबे के कथन बा कि समय बतावल बाटे से ठीक नइखे लागत, काहें जे रामाग्या से ठीक समय निरनय नइखे होत। एह से त कवनो नया काम के समहुत के शुभाशुभ सगुन बिचार होत बाटे।

रामाग्या के सगुन बिचारे के बरनन सातवां अध्याय का दोहा ४३ आ ४४ में अइसे आइल बा ;

सुदिन सांझ पोथी नेवति, पूजि प्रभात सप्रेम।
सगुन बिचारब-चारुमति, सादर सनेम ॥४३॥
मुनि गनि, दिनगनि धातु गनि, दोहा देखि बिचारि।
देस करता बचन, सगुन समय अनुहारि ॥४४॥

सगुन बिचारे के अउर विधि बाड़ी सन जवना में एगो में बतावल बा कि एगो सात खोंढ़ा के आ दोसरका ४९ खोंढ़ा के दुइ चक्र बना लीं। सत खोढ़वा में अंगुरी रखला पर जवन अंक मिले ओही अध्याय के आ दोसरका चक्र के जवना अंक पर अंगुरी पड़ी ओही दोहा से फल फलाफल निकाल लीं।

'राम शलाका' के भी कुछ लोग एगो पुस्तक मान लेले बाड़न बाकी, पं० रामेश्वर भट्ट, पं० ज्वालाप्रसाद, शिव सिंह सरोज आ श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार आदि का राम चरित मानसे में राम शलाका दे दीहल बा जवनन में शिवसिंह सरोज का राम शलाका के छंद अपना ढंग के आ भिन्न बाड़न स।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामलला नहछू :

संस्कृत का 'नख-क्षौर' से नहछू शब्द बनल बा। कई राज्यन में नहछू, बिबाह का समय दुलहा का मुंडन आ नोंह काटे के एगो महान प्रथा बाटे। कुछ स्थानन में जब तक नोंह काटि के महावर ना लागे, नाउनि का नहरनी से नोहें ना काटल जाय। राम लला नहछू के खड्ग विलास प्रेस पटना से प्रकाशित पं० बंदन पाठक जी मुंडन के नहछू बतवले बानी जवन जनेऊ का समय होला।

रामलला नहछू ग्रामीन छंदन, आ २० तुकन में समाप्त भइल बाटे। एह में हर चरन २२ कला के बा अउर बारह आ दस पर यति बा। काशी नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित रामायन में लिखल बा कि 'एने के खास ग्राम छंद सोहर हव जवन बिबाहोत्सव पर स्त्री लोग गावे ली।' अऊर ठहर के चलन होखे बाकी सोहर वास्तव में पुत्रजन्मोत्सवे पर गावल जाला :

रामायन आ जानकी मंगल में आनन्दोत्सव पर स्त्री लोगन का गालो सुनवला के बरनन आइल बाटे। एगो अइसनो मोका आइ जाला जे करिखा काजर बन जाला आ कभी काजरो होइ जाला कारिख, रामलला नहछू के पद;

काहे राम जिउ सांवर लछुमन गोर हो।
की दुहुं रानि कौसिलहीं परि गइ भोर हो॥
राम अहहिं दशरथ के लछुमन आनक हो।
भरत शत्रुहन भाइ तौ श्री रघुनाथक हो॥
गोद लिए कौसिल्या बैठी रामहि बर हो।
सोभित दूलह राम सीर पर आंचर हो॥

एह पदन से साफ जनात बा जे रामलला नहछू लिखल गइल बाटे भगवान राम के दुलहा रूप में माता कौशिल्या का गोद में बइठला पर। आनन्द मगन होइ के नारी समाज खाली टिभोलिए भर नइखे टुभुकले, बलुक होली का ठठोली अस 'सबका मन हर्षित करे, ज्यों बिबाह में गार' वाला अबीर आ गुलाल भी अंधाधुंध उड़ा देले बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जानकी मंगल :

जानकी मंगल में संत तुलसी दासजी भगवान राम आ जानकीजी के बिबाहोत्सव के बड़हीं मधुर शब्दन में बरनन कइले बानी। पुस्तक के श्रीगणेश भइल बाटे स्वयंबर का तैयारी से। बिश्वामित्र जी यग्य-रक्षा बदे भगवान राम आ लखन लाल जी के अयोध्या नरेश राजा दशरथ जी से मांग ले आइल बानी। जनकपुर में धनुष यग्य आ भगवान राम के धनुष भंग कइला के बड़ा रोचक प्रसंग आइल बाटे। लग्न-पत्री आ तिलक सामग्री का साथ राजा जनक जी के पुरोहित श्री शतानन्द जी अवध गइल बानी। महाराज दशरथ बारात लेइ के जनकपुरी गइल बानी आ बिबाह मड़ी मजगर रीति से सम्पन्न भइल बा। बारात बिदाई भइला पर परशुराम जी से रास्ता में भेंट बा भगवान राम से, अध्यात्म कथा अइसन। अयोध्या पहुँचला पर के शोभा आ आनन्द कहले कहाए लाएक नइखे।

भगवान राम का चारो भाइन के बिबाह प्रसंग दीहल बाटे। एह पुस्तक में १२२ अरुण छंद दीहल बा जवन २० कला के होखेला, तवना का अलावे २४गो हरि गीतिका छंद दीहल बा। गोस्वामी जी एह पुस्तक में फुलवारी के प्रसंग नइखीं देले, शक्ति आ शक्तिमान के मिलन बा यग्यशाला में। गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित जनकी मंगल में छंदादि के संख्या खंड विधान से १९२गो दीहल बा तेकरा अलावे २४ छंद अउर दीहल बा।

भगवान राम का मिथिला में गइला पर राजा जनक जी राम प्रेम में अइसन लपटा गइलीं जे वैराग का विरक्त हो जाए के पड़ल। उहां का सानंद हृदय से भवसागर के सराहे लगलीं जे इहां अइसन-अइसन लाल उत्पन्न होलन आ ब्रह्माजी का भी चतुराई के बखनलीं। ऊ ४१ आ ४२ छंद अइसे बाड़न सः—

देखि मनोहर मूरति मन अनुरागेउ।
बंधेहु सनेह बिदेह बिराग बिरागेउ॥
प्रमुदित हृदय सराहत भल भवसागर।
जहँ उपजहिं अस मानिक बिधि बड़नागर॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्त में गोस्वामी जी कहले बानी कि जइसे चन्द्रमा के देखि के कुमुदिनी खिल उठेले तसहीं नारी समाज आनंदित बा। ओह घड़ी अयोध्या सुखी आ शोभामयी हो रहलि बाटे। एह तरह से कवि लोग विवाह के सुन्दर नयी कीर्ति के गावेलन। जे लोग जनेऊ आ विवाह के प्रसंग गावेलन, सब प्रकार के कल्यान पावेलन जइसे ;

बिकसहिं कुमुद जिमि देखि बिधु भई अवध सुख शोभामयी।
एहि जुगुति राम बिबाह गावहिं सकल कवि कीरति नयी॥
उपबीत ब्याह उछाह जे सिय राम मंगल गावहीं।
तुलसी सकल कल्यान ते नर नारि अनुदिन पावहीं॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पार्वती मंगल :

पार्वती मंगल भी जानकीए मंगल मतिन पुस्तक बाटे। जानकी मंगल में सीता राम विवाह बरनन आ पार्वती मंगल में शंकर पार्वती विवाह के उत्तम रचना बाड़ी सन। राम चरित मानस का दूनो विवाह से एह पुस्तकन के बरनन कुछ भिन्न बा। ई दूनो पुस्तक एकही समय, कुछ आगा पाछा लिखाइल बाड़ी सन। जार्ज ग्रियर्सन साहेब सन् १८९३ ई० का 'नोट्स आन तुलसीदास' नामक 'इन्डियन एन्टिक्वेरी' का पन्ना ७-८ पर जे पुस्तक रचना काल पं० सुधाकर दूबे जी का अनुसार देले बाड़न तवन गुरुवार २ फरवरी सन् १५८६ ई० बाटे। वेंकटेश्वर प्रेस से प्रकाशित 'षोडस रामायण' में जानकी मंगल, पार्वती मंगल आ कृष्ण गीतावली आ छप्पैरामायन आदि के मजगर बरनन दीहल बाटे।

पार्वती मंगल में एक सौ अड़तालिस अरुण छंद आ सोलह हरिगीतिका छंद दीहल बा। एह पुस्तक पर महाकवि कालिदास जी का कुमार संभव के छाप बाटे। कुमार संभव का कथनानुसार जवना समय पार्वतीजी भगवान शंकर के पूजा करे गइल बानी, ओही समय में कामदेव भस्म भइल बानी। रती का सती हो जाए बदे उतारू भइला पर आकाश बानी भइलि बा कि 'तन, मत जलाईं, रावां पति से फिर संग होखो।

कुछ लोग रामलला नहछू के सोहर गीत बतवले बा त कुछ लोग एह पुस्तक का छन्दन के सोहर कह देले बाटे। राम लला नहछू के छंद त बाइस कला के बाटे बाकी, एह पुस्तक के छंद २० कला के बा। वेंकटेश्वर प्रेस से प्रकाशित 'षोडस रामायन' में एह छन्द के 'बरवै' लिखल बा।

पार्वती मंगल में खुद अपने भगवान शंकर पार्वती जी किहाँ ब्रह्मचारी भेष में जाइ के कहले बानी ;

कहहु काह सुनि रीझहु बर अकूलनहिं।
अगुन अमान अजाति मातु पितु हीनहिं॥
भीख मागि भव खाहिं चिता नित सेवहिं।
नाचहिं नगन पिसाच पिसाचिन जोवहिं॥
भाँग धतूर अहार छार लपटावहिं।
जोगी जटिल सरोष भोग नहिं पावहिं॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकहु हरहिं न बर-गुन कोटिक दूषन।
नर कपाल गजखाल व्याल विष भूषन॥
कहँ राउर गुन सील सरूप सुहावन।
कहाँ अमंगल भेष बिसेष भयावन॥

भगवान शंकर महिमा खुद हिमवाने जी अपना घरनी मैनाजी से सुनाइ के भ्रम निवारन कइले बानी। पहिले त शंकर भेष अड़भंगी दुलहा के बाटे, जवना पंर आपन आपन समाज बिलगाइ के चले के हरिमुख से आदेश बाटे बाकी, पाछे तवन रुचिगर रुप बनवले बानी जे थेई थेई हो गइल बा, गोस्वामी जी लिखले बानी :—

लखि लौकिक गति संभु जानि बड़ सोहर।
भए सुन्दर सतकोटि मनोज मनोहर॥
नील निचोल छाल भइ फनि मनि भूषन।
रोम रोम पर उदित रूपमय पूषन॥
गन भए मंगल भेष मदन मनमोहन।
सुनत चले हिय हरषि नारि नर जोहन॥
संभु सरद राकेस नषत गन सुरगन।
जनु चकोर चहुँ ओर बिराजहिं पुरजन॥

कुमार संभव का सप्तम सर्ग के श्लोक ३२-३४ में ठीक एही ढंग के बरनन बा। कालिदास जी त इहाँ तक कह देले बानी जे शंकर-पार्वती का एह जोड़ी के ब्रह्मा जी ना मिलइतीं त उहाँ के एह जोड़ी के रूप बनावे वाला परिश्रमे अन्हेर हो जाइत। जानकी मङ्गल मतिन पार्वती मंगल में भी अन्त में लिखल बा ;

कल्यान काज उछाह व्याह सनेह सहित जो गाइहें।
तुलसी उमा संकर प्रसाद प्रमोद मन प्रिय पाइहें॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बरवै रामायण :

बरवै रामायण आ बरवा रामायण के दू पुस्तक छपल बाड़ी सन आ ओह दुनों में बहुत अन्तर बाटे। दूनो के रचइता गोस्वामिये जी के बतावल बा। नागरी प्रचारिणी का 'तुलसी ग्रन्थावली' के विद्वान लोगन का अलावे जन साधारन में भी बड़ा आदर के स्थान बा। उहाँ से जवन बरवै रामायण स्वीकृत बा तवना में गोस्वामीजी के ६९ छंदन के संग्रह बा। छंद १९ कला के बा आ सातो कांड थोरही में पुरा दीहल बाटे, जवना में रामकथा नामे मात्र के कहल जा सकेला। स्व० पं० बन्दन पाठक जो एह रामायण के 'स्नेह प्रकाशिका' टीका लिखले बानी। जवना के प्रकाशन १८९३ ई० में स्व० बा० रामदीन सिंह जी करवले रहीं। नवल किशोर प्रेस लखनऊ से स्व० बैजनाथ दास मैनपुरी जी के भी टीका प्रकाशित भइलि बा। कुछ लोग का कथनानुसार श्री खानखाना साहेब का अनुरोध पर गोस्वामी जी का एह फुटकर रचना संग्रह के प्रकाशन भइल रहे।

बाल कांड में १९ छन्द बा। एक से सात तक श्री राम आ नौ से १३ तक में श्री जानकी का छवि के बरनन बा, विवाह आ सखी लोगन के विनोद बरनन बड़ा विचित्र बाटे। विनोद में सखी लोग हँसि के मधुर बानी बोलत, जाए के बहाना से कहत बाड़ी कि अब सिया आ रघुवीर के नैन नींद से भर गइल बाड़े सन। पद अइसे बा ;

उठीं सखी हँसि मिसकरि कहि मृदु बैन।
सिय रघुवर के, भए उनीदे नैन ॥१९॥

अयोध्या कांड का आठ छन्दन में केकयी कोप, वन गमन, गंगा महातम, पग पखार आ ग्रामीन लोगन के बतकही बा। अउरमंत में बाल्मीकि बचन अइसे बा :

द्वैं भुज करि हरि रघुबर सुंदर बेष।
एक जीभ कर लछिमन दूसर शेष ॥

वन कांड का ६ छन्दन में सूपनेखा, कंचन मृग आ जानकी बिरह अउर भगवान राम के संताप दीहल बा। किष्किन्धा का दू छन्दन में सुग्रीव मिताई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ बतकही बा। सुन्दर कांड का ६ छन्दन में 'सीता-हनुमान' बतकही आ हनुमान जी के भगवान राम से उहाँ के हाल बरनन बा। लंका कांड में खाली एकही छंद में बहुत कुछ बरनन अइसे दीहल बा :

बिबिध बाहिनि बिलसति सहित अनंत।
जलधि सरिस को कहै राम भगवंत॥

उत्तर कांड में २७ छन्द बा। २ में चित्रकूट महिमा आ बाकी में भगवान राम में नेह। भगवान-भक्ति आ नाम महातम के बरनन दीहल बा। अंत में गोस्वामी जी के कामना अइसे बा :

जनम जनम जहँ जहँ तनु तुलसी देहु।
तहँ तहँ राम निबाहिब नाथ सनेहु॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वैराग्य संदीपिनी

एह पुस्तक में गोस्वामी जी के कथन बा :—

तुलसी वेद पुरान मत, पूरन शास्त्र बिचार।
यह वैराग्य संदीपिनी, अषिल ज्ञान की सार॥

पुस्तक में ४६ दोहा, २ सोरठा आ १४ गो चौपाई दीहल बाटे। पहिला दोहा में सीता राम के ध्यान राखल बा। पुस्तक तीन भाग में बँटलि बाटे जवना में पहिला में २२ दोहा आ चार चौपाई, दूसरा में ६ दोहा, १ सोरठा आ २ चौपाई, अउर तीसरा में १२ दोहा आ आठ चौपाई के राखल बा। इण्डियन एन्टीक्वेरी का पन्ना २०-२३ में मिस्टर ग्रियर्सन साहेब एह पुस्तक के मजगर अंग्रेजी अनुवाद कइले बाड़न। पं० बंदन पाठक जी, बा० महादेव प्र० जी आ बाबू बैजनाथप्रसाद जी के भी एह पुस्तक पर टीका पढ़े लायक बा।

संत महिमा पर गोस्वामी जी लिखले बानी :—

सोरठा—को बरनैं मुख एक, तुलसी महिमा संत की।
जिनके बिमल बिवेक, सेस महेस न कहि सकत॥

दोहा—महि पत्री करि सिन्धु मसि, तरु लेखनी बनाइ।
तुलसी गनपति सो तदपि, महिमा लिखी न जाइ॥

तुलसी भगत स्वपच भलो, भजै रैन दिन राम।
ऊँचो कुल केहि काम को, जहाँ न हरि के नाम॥

बड़ा गूढ़ बरनन आइल बाटे शान्ति प्रकरन में। उहाँ गोस्वामी जी के कथन बा कि, भक्त जो ग्यानी आ बिरागी होइके प्रभु ध्यान में मगन होइ के शान्ति धारन करिहन त ऊ महानन्द के अनुभव करिहन। शान्ति के अइसन प्रताप बा कि भक्त हृदय में राम दुहाई ओरमि जाई आ अनासे काम क्रोधादि दोष भाग जइहन। ऊ कामना हीन भक्त अहंकार से रहित, तेज के भरपूर ग्यानी, ध्यानी, गुनी आ सर्वप्रधान हो जइहन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विनय-पत्रिका

जन साधारन में विशेष रूप से ई मानल बा कि विनय पत्रिका लिखाइलि वाराणसी में। ओह तीर्थ स्थान काशी का अलावे, विश्वनाथ, बिन्दुमाधव, भैरव त्रिलोचन, पंचगंगा, पंचकोश, अन्नपूर्णा आ मणिकर्णिका आदि नाम भी ग्रन्थ में आइल बा। काशी का गोपाल मन्दिर का दक्खिन-पच्छिम वाली कोठरी का दिवाल पर अंग्रेजी में लिखल बा कि—'हियर गोस्वामी तुलसी दास कम्पोज्ड हिज विनै पत्रिका' माने—गोस्वामी तुलसीदास इहाँ अपना विनय पत्रिका के रचना कइलीं। कुछ लोग विनय पत्रिका का ३२, ३३ आ ३४ पदन के दिल्ली में रचल बतवले बाड़न। एह पुस्तक में राग आसावरी, कल्याण, कान्हरा, केदारा, गौरी, जैतश्री, टोड़ी, दण्डक, धनाश्री, नट, बसंत, बिलावल, बिहाग, भैरव, भैरवी, मलार, मारू, रामकली, ललित, विभास, सारंग, सूहो आ राग सोरठ के २७७ पद का अलावे दुइ गो अउर पद दीहल बा। एह ग्रन्थ के जइसन नाम बा तवना अनुसार स्तुतिए स्तुति भरल बा। गोस्वामी जी अपना आपके नछावार कर देले बानी देव आ देवी लोगन का चरनारवृंद पर। बाबा हरिहर प्रसादजी के बहुत मजगरि टीका बा एह ग्रन्थ पर। पं० लल्लूलालजी एह ग्रन्थ के फोर्ट विलियम कॉलेज, कलकत्ता का छात्र लोगन वदे पहिले पहिल १८२६ ई० में मुद्रित कइले रहीं।

ग्रन्थ का श्रीगणेश में गोस्वामीजी श्री गणेशे के वंदना अइसे कइले बानी—

गाइए गनपति जग बन्दन, संकर-सुअन भवानी-नन्दन।
सिद्धि सदन, गज-बदन, बिनायक, कृपा-सिन्धु, सुन्दर, सब-लायक॥
मोदक-प्रिय, मुद मंगल-दाता, विद्या-बारिधि, बुद्धि-बिधाता।
माँगत तुलसीदास कर जोरे, बसहिं राम-सिय मानस मोरे॥

गोस्वामीजी अपना 'राम' के बहुत विधि के साथ मन से आरती उतरले बानीं आ जोरदार शब्दन में प्रन कइ लेले बानी जे—अब ले त नसइलीं बाकी, अब ना नसाइब! रामकृपा से संसार रुपी रात बीत गइलि, अब जाग गइलीं आ अब बिछावन ना बिछाइब (अब माया जाल में ना अझुराइबि)। हमें रामनाम रुपी मणि मिल गइलि बा। ओह के हृदय रूपि हाथ से ना गिरे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देब। भगवान राम के पवित्र सुन्दर सरूप के कसवटी बना के, अपना चित्त सरूप सोना के कसब। अब तक इन्द्रियन का बस में रहीं, बड़ी हँसी उड़ावल लोग अब त अपना मन रूपी भँवरा के प्रन कइके, प्रभु का चरन कमल में लगा देब (प्रभु चरन कमल छोड़ के अपना मन के कतहीं दोसरा ठहर जाहीं ना देबि) पद अइसे बा :—

अब लौं नसानी, अब ना नसैहौं।
राम कृपा भव निसा सिरानी, जागे फिरि न डसैहौं॥
पायेउं नाम चारु-चिन्ता मनि, उर कर तें न खसैहौं।
स्याम रूप सुचि रुचिर कसौटी, चित कंचन ही कसैहौं॥
परबस जानि हंस्यौ इन इन्द्रिन, निज बस ह्वै न हंसैहौं।
मन मधुकर पन कै तुलसी, रघुपति-पद-कमल बसैहौं॥

गोस्वामी जी प्रभु कृपा पर लिखले बानी कि अपने के माया अस कठिन बाजे कतनों यतन कइके मरीं बाकी, जबले रावाँ दया ना करब, एह से पार पावल असम्भव बा। सुनीला, समझी ला आ दोसरा के समझइबो करीला बाकी, अपनेका एह माया के असली रहस्य समझ में ना आवे अउर जब तक सही रहस्य के अनुभव ना होखी, तब तक मोह जनित संसार के विपतिन्ह के प्रकोप होते रही। ब्रह्मामृत बड़ा मधुर आ शान्तिदायक होला, जो मन के कहीं ई अमृत रस मिल जाय तब फिर ई विषय रूप झूठ मृगजाल बदे दिन रात काहें के भटकी। जेकरा घर में निर्मल चिंतामनि विराजमान बाटे, काँच काहें के बटोरी? सपना में पराधीन भइल प्रानी जागि जाई तब पराधीनता से छुटकारा के प्रार्थना काहें करी? ग्यान, भक्ति आदि अनेक साधन बाड़न आ साच बाड़न। एहन में एको झूठ नइखे। बाकी तुलसीदास का मन में एह बात के भरोसा बाटे जे अग्यान के नाश खाली हरि कृपा से होला। पद अइसे बाटे :—

'माधव! असि तुम्हारि यह माया।
करि उपाय पचि मरिय, तरिय नहिं, जब लगि करहु न दाया॥
सुनिय, गुनिय, समुझिय, समुझाइय, दसा हृदय नहिं आवै।
जेहि अनुभव बिनु मोह जनित भव दारुन बिपति सतावै॥
ब्रह्मपियूष मधुर सीतल जो पै मन सो रस पावै।
तौ कत मृग जल रूप विषय कारन निसि-बासर धावै॥
जेहि के भवन बिमल चिन्तामनि, सो कत काँच बटोरै।
सपने परबस परै जागि देखत कोइ जाइ निहारै॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग्यान भगति साधन अनेक, सब सत्य झूठ कछु नाहीं।
तुलसिदास हरि-कृपा मिटै भ्रम, यह भरोस मनमाहीं॥

गोस्वामी जी श्रीकृष्ण, भगवान शंकर आ श्रीराम में कवनो अन्तर नइखीं मनले। राग सूहो बिलावल पद १३५ में उहाँ का एह भरम के सज से खोल देले बानी। पद १८८ में त उहाँ का भगवान राम आ लीलाधारी कृष्ण के भेद वाला भ्रम अइसे दूर कर देले बानी :—

'सुन खल ! छल-बल कोटि किए बस होंहि न भगत उदार।
सहित सहाय तहाँ बसि अब, जेहि हृदय न नन्द कुमार ॥४॥

विनय पत्रिका सरस कवितन के सुन्दर सरूप बा। प्रभु से नेह आ नाता भी बड़हीं मजगर बाटे। गोस्वामी जी दीनदयालु से कहले बानी जे—हे नाथ ! रावाँ दीन पर दया करेवाला बानी त हम दीन बानी। रावाँ दानी हवीं त हम भिखारि हवीं। अपने पाप राशि के विनाशक हवीं त हम हवीं, महान पापी रउवा अनाथन के नाथ हवीं त हमरा मतिन अनाथ बटले के बा ? रावां अस ना त केहू दुख हरता बा आ ना हमरा समान केहू दुखिया। रावां ब्रह्म हवीं आ हम, जीव। रावां स्वामी–हम सेवक। हम अधिका का कहीं ? रावां हमार, माता, पिता, गुरु, मित्र आ सब प्रकार से हितैषी बानी। हमरा रावां अनेकन्ह नाता बा, जवन नाता रावाँ नीक लागे उहे मान लीं। बाकी, बात ई बाटे कि हे कृपालु ! कसहूँ तुलसीदास अपने का चरण के शरण पा लेसु। गोस्वामीजी के पद अइसे बा :—

'तू दयालु, दीन हौं, तू दानि हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप पुंजहारी॥
नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोसो।
मो समान आरत नहिं आरत हरि तो सो॥
ब्रह्म तू, हौं जीव, तू है ठाकुर, हौं चेरो।
तात-मातु गुरु-सखा तू सब बिधि हितु मेरो॥
तोहिं मोहिं नाते अनेक, मानिए जो भावै।
ज्यों त्यों तुलसी कृपालु। चरन सरन पावै॥

पद संख्या २७९ का अन्त में लिखल बा कि :—

बिहंसि राम कह्यो 'सत्य है, सुधि मैं हूं लंही है'।
मुदित माथ नावत, बनीं तुलसी अनाथ परी रघुनाथ सही है॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीकृष्ण गीतावली

श्रीकृष्ण गीतावली व्रजभाषा के पुस्तक बाटे। एही का चलते कुछ विद्वान लोग अँटकर लगा लेले बाड़न जे ई पुस्तक गोस्वामीजी के लिखलि ना हो सके। जार्ज ग्रियर्सन साहेब १८९३ के 'इंडियन एन्टिक्वेरी' का पन्ना ४५ पर साफ लिखले बाड़न जे—एह पुस्तक के भाषा गोस्वामी जी का पुस्तकन से भिन्न बाटे, एही से विद्वान लोग एह पुस्तक के गोस्वामी कृत नइखन मनले। गोस्वामीजी का समय मे व्रज भाषा के पुरहर प्रचार रहे आ उहाँ का 'व्रज' गइलो रहीं। एह से ई कहल अन्हेर वा कि पुस्तक गोस्वामी जी के ना लिखलि हटे। उहाँ के कवितावली भी व्रज भाषा से सराबोर कहल जा सकेले।

श्रीकृष्ण गीतावली में ६१ पद वा। ओह पदन में बाल लीला के २०, रूप आ सुन्दरता के ३, बिरह के ९, ऊधो आ गोपी संवाद के २७ आ द्रोपदी लाज रक्षा के २ गो मधुर आ मनोहर पद बाड़े सन। राग—आसावरी, कान्हरा, केदारा, गौरी, धनाश्री, नट, बिलावल, मलार, ललित आ राग सोरठ दस रागन में पदन के रचल गइल वा।

पुस्तक का प्रथमे पद में माता यशोदा जी बाल गोविन्द के गोदी में लिहले, उहाँ के मुँह निरेख रहल बानी। आनन्दघन घनश्याम के छने छन निहार के उहाँ का हर्षित हो रहल बानी आ उहाँ के शरीर पुलकित हो रहल बाटे।

(माता) लैं उछंग गोविन्द मुख बार-बार निरखै।
पुलकित तनु आनन्द-घन छन-छन मन हरषै॥१॥

राग मलार का १८ वां पद में देवराज के क्रोधित भइल आ गोबर्धन धारन के बड़ा मजगर प्रसंग आइल वा। व्रज पर गड़गड़ाइ के बदरी छा गइलि। आपन अपमान समझ के देवराज खोनसाइ के ऊ बदरी भेजले रहीं। दसो दिशन्ह में बिजुरी चमके लागलि। आकाश में अन्हार उपट पड़ल। बदरी भयावन गर्जन करे लगली आ प्रबल पवन का कान्हे चढ़ के हड़होर मचा दिहलिन। बिजुरी भहराए लागलि। बदरी से बड़े-बड़े बूनी आ पत्थल भहराए लगल। गाय, बाछा, ग्वाल बाल, गोप आ गोपी ठंढ से डेराइ के त्राहि-त्राहि पुकारे लगलन। हे बलराम! हे कृष्ण! रक्षा करीं। एह घड़ी हमहन पर असह आफत आ गइलि बाटे। नन्द बाबा, इन्द्रदेव के विरोध रवें बल पर कइले रहीं। करुन पुकार सुन के नन्द

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबा के शेर हंसत, उठके खड़ा हो गइलन आ उठा लिहलन पहाड़ के हाथे पर। तुलसीदास जी कहत बानी कि देवराज आपन गर्व गँवाइ के लवटि गइलीं। पद अइसे बा :--

ब्रज पर घन घमंड करि आए।
अति अपमान बिचारि आपनो कोपि सुरेस पठाए॥
दमकति दुसह दसहुँ दिसि दामिनि, भयो तम गगन गंभीर।
गरजत घोर बारिधर धावत प्रेरित प्रबल समीर॥
बार बार पविपात, उपलघन बरषत बूंद बिसाल।
सीत सभीत पुकारत आरत गोसुत गोपी ग्वाल॥
राखहु राम-कन्ह एह अवसर दुसह दशा भइ आई।
नन्द बिरोध कियो सुरपति सों सो तुम्हरो बल पाई॥
सुनि हंसि उठ्यो नन्द को नाहर, लियो कर कुधर उठाइ।
तुलसिदास मघवा अपने सों करि गयो गर्व गँवाइ॥

५५ वाँ पद में गोपी लोगन के ऊधोजी से कथन बाटे कि--निरमोहिन से प्रेम कइके, के नाहीं दुख से बेकल भइल ? हमहन सुनला, समझला आ कहला से बड़ा मूढ़ हो गइल बानी। हमहन के मूढ़ मन त अब साँप, हरिन, पतंग, कमल, चकोर, चातक आ मछली का पाँतिन में बइठ के सुख पावे के चाहत बाटे। गोस्वामीजी का शब्दन में गोपी लोग कहत बा कि निठुरता आ प्रेम के गति बड़ा दुर्गम बा, ओह के बरनन त होइए नइखे सकत। हमहन का त अपना प्रेम के मलीन जानि के चिन्ता रहति बाटे। पद अइसे बा :--

ऊधो ! प्रीति करि निरमोहिन सों को न भयो दुखदीन ?
सुनत समुझत कहत हम सब भईं अति अप्रबीन॥
अहि कुरंग पतंग कंज चकोर चातक मीन।
बैठि इनकी पाँति अब सुख चहत मन मति हीन॥
निठुरता अरु नेह की गति कठिन परति कही न।
दास तुलसी सोच नित निज प्रेम जानि मलीन॥

पद ६१ का अन्त में तुलसीदासजी कहले बानी जे, कृपालु श्रीकृष्ण के कीर्ति सुन के, अइसन के बाइ जे उनका भक्ति पथ पर प्रसन्नता पूर्वक ना चली ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाना पुराण निगमागम (रामचरित मानस)

गोस्वामी तुलसीदास जी का रामचरित मानस में वक्ता, स्रोता का अलावे संवाद स्थान के विधिवत बरनन आइल बाटे। भगवान शंकर पार्वतीजी से कैलाश पर्वत पर रामकथा कहले बानी—

परम रम्य गिरिवर कैलासू।
सदा जहां सिव उमा निवासू।

दूसरका वक्ता काग भुशुंडिजी, श्री गरुड़जी से नीलगिरि पर कथा कहले बानी—जइसे,

उत्तर दिसि सुन्दर गिरि नीला।
तहँ रह काग भुसुंडि सुसीला।
गयउ गरुड़ जहँ बसइ भुसुंडी…।

तिसरका वक्ता श्री जाग बलिक जी, भारद्वाज मुनि से तीर्थराज प्रयाग में राम कथा सुनवले बानी—

भारद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा।
जिन्हहिं राम पद अति अनुरागा।
माघ मकरगत रबि जब होई।
तीरथ पतिहिं आव सब कोई।
जाग बलिक मुनि परम बिबेकी।
भरद्वाज राखे पद टेकी।

चउथा वक्ता खुद गोस्वामी तुलसीदास जी,

होहु प्रसन्न देहु बरदानू।
साधु समाज भनिति सनमानू॥

अयोध्यापुरी में रामकथा कहले बानी—

सब विधि पुरी मनोहर जानी।
उहाँ, बिमल कथा कर कीन्ह अरंभा…।
कहौं कथा सोइ सुखद सुहाई।
सादर सुनहु सकल मन लाई॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संत तुलसीदास जी के भाषा वंदना में भी पहिले गणेशजी के स्थान बाटे,

जो सुमिरत सिधि होइ, गन नायक करिवर बदन।
करउ अनुग्रह सोइ, बुद्धि रासि सुभ गुन सदन॥

विनायक वंदना का बाद भगवान राम, शंकर भगवान, गुरु आ ब्राह्मन के वंदना बाटे। भाषा वंदना से पहिले उहाँ का एगो श्लोक में कहले बानी जे—'अनेक पुरान, वेद आ शास्त्र से सम्मत रामायन में वरनित अउर कुछ अलगो से भी उपलब्ध, रघुनाथ कथा के तुलसीदास अपना अंतःकरन का सुख बदे, अतीव मनोहर भाषा रचना में विस्तृत करत बाड़न। बड़ा विचित्र गोस्वामीजी के मानस माला बाटे। उहां का कहां-कहां से माला बदे मनि बिनले बानी तवना के कुछ नमूना नीचे दीहल जात बा—बाल कांड में,

'मूकं करोति वाचालं पंगु लंघयते गिरिम्।'
मूक होइ बाचल पंगु चढ़इ गिरिवर गहन॥

'नमस्तस्मै कृतायेन पुण्या रामायणी कथा।
सदषणाऽपि निर्दोषा सखरापि सकोमला॥'

'बंदउं गुरुपद कंज, रामायन जेहि निरमयेउ।
सखर सकोमल मंजु, दोष रहित दूषन सहित॥'

'धूमः ज्योतिः सलिल मरुतां सन्निपातः क्व मेघः। (मेघदूत)
सोइ जल अनल अनिल संघाता।
'नहि बन्ध्या विजानाति गुर्वी प्रसव-वेदनाम्'
बांझ की जान प्रसव की पीरा।
'अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यतचक्षुः सश्रृणोत्यकर्णः।'(उपनिषद)
बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना॥

'निर्वर्णं रामनामेदं केवलं च स्वराधिकम्।
सर्वेषां मुकुटं छत्रं मकारो रेफ व्यजनम्॥'

एक छत्र एक मुकुट मनि, सब बरननि पर जोउ।
तुलसी रघुवर नाम के, वरन विराजत दोउ॥

'यस्यांशेन समुद्भूता ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः।' (महारामायण)
संभु बिरंचि विष्णु भगवाना।
उपजहिं जासु अंस ते नाना॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युथानामधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम ॥' (गीता)
जब जब होइ धरम कै हानी।
बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी॥
'जठरे तव दृश्यन्ते ब्रह्माण्डाः परमाणवः।
त्वं ममोदरसंभूत इति लोकान् विडम्बसे ॥'
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उरवासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै।(अ०रा०)
'मुखं लालयती राजन् जृम्भतोददृशेइदम।
खरोदसी ज्योतिरनीकमाशाः सूर्येन्दु वहनिश्वसनाम्बुधींश्व ॥'
दीपान्नगांस्तद्दुहितृर्वनानि भूतानियानि स्थिर जङ्गमानि ॥
'..... ..... प्रभु हंसि दीन्ह मधुर मुसुकानी।'
'..... देखरावा मातहिं निज कोटि कोटि ब्रह्मांड ॥

अगमित रवि ससि सिव चतुरानन।
बहु गिरि सरित सिंधु महि कानन ॥ (भागवत)

हनुमन्नाटक से—'पृथ्वी स्थिरा भव भुजंगम धारयैनां त्वं कूर्मराजतदिदं द्वितयं दधीथाः। दिक्कुंजराः कुरुत तत्त्रितये दिर्घीषां रामः करोति हरकार्मुकमा-ततज्यम्। (१।२१)

दिस कुंजरहु कमठ अहि कोला, ...होहु सजग मुनि आयुस मोरा।

'भो ब्रह्मन्भवता समं न घटते संग्रामवार्तापि नो।
सर्वेही नवला वयं बलवतां यूयं स्थिता मूर्द्धनि।
यस्मातेक गुणं शरासनमिदं सुव्यक्तमुर्वीभुजा।
मस्माकं भवतो यतो नवगुणं यज्ञोपवितो बलम्।
मानस में...'हमहिं तुमहिं सरबस कस नाथा।

देव एक गुन धनुष हमारा।
नव गुन परम पुनीत तुम्हारा ॥

बालकांड में बंदना के बड़ा व्यापक बरनन बा जवना में कतहीं से केहू, छुटहीं लाएक नइखे। एह में गूढ़ तत्व बाटे। गोस्वामी जी भगवान राम के पूरन ब्रम्ह का रूप में देखला देले बानी—आ लिख देले बानी कि—

सिया राम मय सब जग जानी। करौं प्रनाम जोरि जुग पानी ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बंदना क्रम में बड़ा स्नेह से गोस्वामी जी श्रद्धा सरूप भवानी आ विश्वास रूप शंकर भगवान के वंदना कइले बानी। मारकंडेय पुराण में भी भगवती के श्रद्धा रूप में नमस्कार बाटे।

'या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता, माने-जवन देवी सब प्रानिन में श्रद्धा रूप से स्थित बानी।'

कारज बिना कारन ना उपजे, तसहीं श्रद्धा बिना विश्वास होइबे ना करे। भगवान कृष्ण गीता में कहले बानी कि श्रद्धावान के ग्यान प्राप्त होला आ श्रद्धाहीनन के बिनाश। श्रद्धा के पाप बिनासिनी आ अपश्रद्धा के भयावन पाप कहल बा। महाभारत का तुलाधार जाजलि संवाद में कहल बा जे बानी दोष भा मन का चंचलता से बिटेव परलो पर जो श्रद्धा सवतुक रही त कल्याने कल्यान रही। श्रद्धे का चलते प्रभु चरित के काव्य दोष से मुक्त कहल बा। पद्मपुराण का भूमिखंड में श्रद्धा के धर्म कन्या कहल बाटे आ तेकरा साथ ही परम पवित्र आ संसार सागर से निमुकावे वाली बतावल बा। श्लोक अइसे बा :—

श्रद्धा धर्मसुता देवी पावनी विश्वभाविनी।
सावित्री प्रसवित्री च संसारार्णवतारिणी॥

भगवान शंकर महान विश्वासी बानी। एही के उहां के सरूप मानल बा। समुद्र मंथन से देव आ दानवन का चौदह रतन भेंटाइल रहे। ओह पदार्थन में अमृत अस अनमोल वस्तु रहे आ हलाहल मतिन महा विनाशकारी माहुर भी। समुद्र के पावल पदार्थन में कुछ के बांटा संवस हो गइल आ कुछ बदे तहतुक चलत रहे। एक ओर अमृत बदे दूनो दल में छीना झपटी चलल आ दूसरी ओर महा बिनाशकारी कालकूट कटकटाइ के गरज उठल दुनियाँ दहन कइ घाले के। सब अपना सवारथ में परम परमारथ का आनंद के अनुभव करत रहे। जेकरा ओह प्रलयंकारी हलाहल के चिन्ता भी रहे त अतना वेंवत आ विश्वास कहाँ जे इचिका भर ओकरा नियरो तक जा सकसु।

भगवान शंकर का अपना आ अपना 'राम' पर पुरहर विश्वास रहे। अवढर दानी से दुनियाँ दहन ना देखि गइल। जगत कल्यान बदे झटपट ओह महामाहुर के मधुर पाहुर मतिन उहाँ का पी गइलीं। माहुर में गुन रहे महा प्रलय मचा देवे के बाकी, विश्वास का बल पर ऊ दूषन से कंठ में नीला दाग देइ के भूषन बन गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विश्वास रूप भगवान शंकर का गूढ़ मरम के पहिले अटल अनुरागो देखल जात बाटे त श्रद्धा स्वरूप भवनिए जी में। एगो अदना भूल पर उहाँ का अपना आप के, हून दिहलीं हवन कुंड में आ फिर दोसरि देह धइ के शंकर पति याने 'विश्वास' प्राप्त कइलीं। एह कलिकाल में अनघा कुकरमी अँधेर कर रहल बाड़न जेकरा खातिर आपन दोष छिपावले प्रधान कलावाजी बाटे आ श्रद्धा सरूपा भवानी चटपट शरीरे के त्याग कर दिहलीं ई कहे बदे जे—

'तब कर अस बिमोह अब नाहीं,
राम कथा पर रुचि मन माहीं॥'

विश्वास रूप भगवान शंकर का प्रतीति हो गइलि जे श्रद्धा में अब सन्देह के लेस नइखे, जवन छन भर बदे भगवान राम का बनवास काल में भइल रहे। भगवान शंकर जी कहले बानी :—

'तुम रघुबीर चरन अनुरागी।
कीन्हिहु प्रश्न जगत हित लागी॥'

उमा के प्राणाहुति परीक्षा आ शंकर पति प्राप्ति परीक्षा अस इहो परीक्षा पूरा भइलि जवना के फलस्वरूप जंजाली कलिकाल का महाजाल से निमुकावे बदे, वरदान सरूप उमा-महेश्वर संवाद रूप में मानव समाज के 'मानस' महामंत्र मिलल। बाकी तबो ऊ सर्वजन भा सुजन के दुरलभे रहे काहें जे देव के भेव सब ना जाने। जो कंचित जनवो करी त बूझी ना। भाषा के आँतरि बाटे। व्यक्ति आ अभिव्यक्ति का आँतरि से रामकथा के मर्म अबूझ रहे जवना 'मानस प्रसंग' के सरल भाषा में प्रगट कइलीं वाल्मीकि मुनि के अवतार संत तुलसीदास जी। श्री नाभाजी लिखले बानी :—

संसार अपार के पार को सुगम रूप नौका लियो।
कलिकुटिल जीव निस्तार हित-बाल्मीकि तुलसी भयो॥

गोस्वामी जी ईश्वरी-बरदान सरूप अपना अनुपम महाकाव्य के नाम 'राम-चरित मानस' एह से दीहलीं जे मानस के माने, मन आ हृदय आदि का अलावे 'मान सरोवर' भी होला। वंदना आदि का आगे उहाँ का मान सरोवर रूपक से त ई प्रसंग अउर साफ झलक उठत बाटे। मानस मानसरोवर का रूपकात्मक झाँकी में पहिले उहाँ का अइसे लिखले बानी :—

'सुठि सुन्दर संवाद बर, बिरचे बुद्धि बिचारि।
तेइ सर पावन सुभग सर, घाट मनोहर चारि॥'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मानस मान सरोवर में काग भुशुंडि आ गरुड़ संवाद उत्तर वाला उपासना घाट, जाग वलिक आ भारद्वाज संवाद दक्खिन वाला कर्मकांड घाट, गोस्वामीजी आ अउर संतन के बचन पूरब वाला दीनता घाट आ उमा-महेश्वर संवाद पच्छिम वाला ग्यान नाम के चार घाट बा। घाटन का साथ मनि जड़ल सीढ़िन के मरम भी बड़ा गूढ़ बाटे :—

सप्त प्रबन्ध सुभग सोपाना। ग्यान नयन निरखत मनमाना॥

मानससर में सांख्य, वैशेषिक, मीमांसा, योग, न्याय, वेदान्त आ साम्राज्य, ई सात सीढ़ी बाड़ी सन। सरोवर बाटे अथाह जल से भरल जवना के गोस्वामी जी कहले बानी :—

रघुपति महिमा अगुन अबाधा। बरनब सोइ बर बारि अगाधा॥

सरोवर के जल भगवान राम आ शक्ति-सीता का सुयश रूप में अमृत समान बा। ओह में जे उपमा दीहल बा, तरंगन के मनोहर विलास बाटे। सुन्दर चौपाई सरोवर के सघन कमलिनी आ कविता के उक्तिन बाड़िन मोती उपजावे वाली सीपियन के समूह। गोस्वामी जी कहले बानी :—

राम सीय जल सलिल सुधा सम। उपमा बीचि बिलास मनोरम॥
पुरइनि सघन चारु चौपाई। जुगुति मंजु मनि सीप बनाई॥

पुरइन का पत्तन का उपर सुन्दर छन्द, दोहा अउर सोरठा सरूप बहुरंगी कमल फूलन के शोभा बा। अनुपम अर्थ, ऊँच भाव आ सुन्दर भाषा, फूलन के पराग, मकरन्द आ सुगन्ध बा जइसे :—

छन्द सोरठा सुन्दर दोहा। सोइ बहुरंग कमल फुल सोहा॥
अरथ अनूप सुभाव सुभाषा। सोइ मकरंद पराग सुबासा॥

ओह परागन पर सत्कर्मन के पुंज, भँवरन के सुन्दर पाँति बाड़ी सन। मानसर में ग्यान, बिराग आ बिचार रूप हंस बिचरन करत बाड़न आ कविता-धुन काव्यालंकार का अलावे गुन आ जाति सरूप बहुरंगी मछलिन के मनोहर रूप बाटे।

सकृत पुंज मंजुल अलि माला। ग्यान बिराग बिचार मराला॥
धुनि अवरेब कबित गुन जाती। मीन मनोहर ते बहु भाँती॥

पुन्यात्मा संत आ रामनाम गुन गान सरूप पंछी का पहिले अर्थ, धर्म, काम आ मोक्ष के ग्यान, विग्यान, आ विचार से कहे लाएक काव्य के नव रस, जप, तप, योग आ बिराग रूप जलचर बाड़न।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाव भेद रस भेद अपारा

गोसाईंजी लिखले बानी :—

अरथ धरम कमादिक चारी। कहब ग्यान विग्यान बिचारी॥
नव रस जप तप जोग विरागा। ते सब जलचर चार तड़ागा॥

भाव आ रस का विषय में गोस्वामीजी पहिलहीं लिख चुकल बानी जे 'भाव भेद रस भेद अपारा'। हास्य, शृङ्गार, करुन, रौद्र, वीर, भयानक, विभत्स अद्भुत आ शान्त, काव्य के ई नव रस बतावल बाटे। हास्य के स्थायी भाव-हास, सहारा-आकृति आ भेख आदि के विचित्रता, जगावे के भाव-ताली बजावल आ नाचल-कुदल, महिमा-विचित्र ढंग से हँसल, संचारी भाव-खुशी आ चपलता आदि। उदाहरन मानस में :—

कोउ मुखहीन बिपुल मुख काहू, बिनु पद कर कोउ बहु पद बाहू।
बिपुल नयन कोउ नयन बिहीना, रिष्ट-पुष्ट कोउ अति तन खीना॥
तन खीन कोउ अति पीन पावन कोउ अपावन गति धरे।
भूषण कराल कपाल कर सब सद्य सोनित तन भरे॥

शृङ्गार रस के स्थायी भाव-रति, सहारा-नायक नायिका जगावे के भाव-सखा, सखी, वन, वाटिका आ विहार आदि महिमा—मुसकुराइल आ हावभाव आदि, संचारी भाव-उन्मादिक आ उदाहरण मानसमें कुछ अइसे बाटे :

जिन्ह निज रूप मोहिनी डारी।
कीन्हे स्वबस नगर नर नारी॥
सोभा रजु मन्दर शृंगारू।
मथै पानि पंकज निज मारू॥
कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनि।
कहत लषन सन राम हृदय गुनि॥
मानहु मदन दुंदुभी दीन्हीं।
मनसा बिश्व बिजय कहँ किन्ही॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस कहि फेरि चितए तेहि ओरा।
सिय मुख ससि भये नयन चकोरा॥
भये बिलोचन चारु अचंचल।
मनहु सकुचि निमि तजै दृगअंचल॥
देखि सीय सोभा सुख पावा।
हृदय सराहत बचन न आवा॥
रंग भूमि जब सिय पगु धारी।
देखि रूप मोहे नर नारी॥

शक्ति आ शक्तिमान के निरमल शृंगार बाटे। जार्ज ग्रियर्सन साहेब लिखले बाड़न कि गोस्वामी जी शृंगार रस के बड़ा उत्तम बरनन कइले बानी बाकी, उहां का शृंगार बरनन में फूहर भाव कहीं नइखे आइल।

करुन रस के स्थायी भाव—शोक, आधार–प्रिय वियोग, जगावे के भाव–प्यारा के सुनल गुनल अउर उनकर वस्तु आदि देखल, महिमा–रोअल, बिलखाइल आ छटपटाइल आदि संचारी भाव, मोह, चिन्ता आ बेहोसी आदि, उदाहरन में गोस्वामी जी लिखले बानी—

लागति अवध भयावनि भारी। मानहु काल राति अधियारी॥
घोर जन्तु सम पुर नर नारी। डरपहिं एकहिं एक निहारी॥
घर मसान परिजन जनु भूता। सुत हित मीत मनहु जमदूता॥
बागन बिटप बेलि कुम्हिलाहीं। सरित सरोवर देखि न जाहीं॥
राम राम सिय लषन पुकारी। परेउ धरनितल ब्याकुल भारी॥
देखि दक्खिन दिसि हय हिहिनाहीं, जनु बिनु पंख बिहग अकुलाहीं।
नहिं तृन चरहिं न पियहिं जल, मोचहिं लोचन बारि।

कहे के माने जे मानुस के कवन चलावे जब पशु तक अइसन अथाह करुन सागर में अचेत हो गइल रहन।

रौद्र रस के स्थायी भाव—क्रोध, सहारा–प्रतिद्वन्दी, जगावे के भाव–विरोधी के बचन आदि—महिमा–आंख तरेरल, भँहू चढ़ावल, ओठ चबाइल आ चाभुर कूटल आदि। संचारी भाव चंचलता आ गर्व आदि। उदाहरन—

माखे लखन कुटिल भइ भौहें। रदपुट फरकत नैन सिरौहें॥
तेहि अवसर सुनि शिव धनु भंगा। आए भृगुकुल कमल पतंगा॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखि महीप सकल सकुचाने। बाज झपट जिमि लवा लुकाने ॥
गौर शरीर भूत भल भ्राजा। भाल बिसाल त्रिपुंड बिराजा ॥
सीस जटा ससि बदन सुहावा, रिसि बल कछुक अरुन होइ आवा ॥
भृकुटि कुटिल नयन रिस राते। सहजहुं चितवत मनहुं रिसाते ॥
कटि मुनि बसन तून दुइ कांधे। धनु सर कर कुठार कल कांधे ॥

बीर रस के स्थायी भाव—उत्साह भरल उमंग, आधार–विपक्षी विभो, जगावे के भाव–रन भेरी आ डंका के गड़गड़ाहट अउर ललकार आदि, महिमा–हथियार गहल, ताल ठोकल आ चढ़ि चलल आदि। संचारी भाव–गर्व आ डाह अउर इर्षा आदि। उदाहरन मानस में—

सुनि सेवक दुख दीनदयाला। फरकि उठीं दोउ भुजा बिसाला ॥

दोहा—नानायुध सर चाप धर, जातु धान बल बीर।
कोट कगूरन्ह चढ़ि गए, कोटि कोटि रनधीर ॥

छन्द—धरि कुधर खंड प्रचंड मर्कट भालु गढ़ पर डारहीं।
झपटहिं चरन गहि पटकि महि भजि चलत बहुरि पचारहीं ॥
अति तरल तरुन प्रताप तर्पहिं चमकि गढ़ चढ़ि चढि गए।
कपि भालु चढ़ि मंदिरन जहं तहं राम जसु गावत भए ॥
एकु एक निसिचर गहि, पुनि कपि चले पराइ।
ऊपर आपु हेठ भट, गिरहिं धरनि पर आइ ॥

भयानक रस के स्थायी भाव—भय, आधार–विकराल कर्म, महिमा–कांपल आ थरथराइल आदि। संचारी भाव–श्रीहत आ किकुर गइल। उदाहरन मानस में—

भरे भुवन घोर कठोर रव रवि बाजि तजि मारग चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरम कलमले ॥
सुर असुर मुनि कर कान्ह दीन्हे सकल बिकल बिचारहीं।
कोदंड खंडेउ राम, तुलसी जयति बचन उचारहीं ॥

एह का अलावे 'हाहाकार करत सुर भागे' आ 'कादर भयंकर रुधिर सरिता बाढ़ि परम अपावनी' आदि।

विभत्स रस के स्थायी भाव—गलानि, घृना आ निंदा आदि। सहारा–रकत, मांस आ घृनित वस्तु, उत्तेजक भाव—घृनित वस्तु देखल भा बरनन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुनल, महिमा–नाक मुदल, नाक आ मुँह सिकुरावल अउर थुकल ओकाइल, संचारी भाव–मोह आ बेहोसी आदि। मानस में विभत्स रस के उदाहरन—

छन्द —कटकटहिं जम्बुक भूत प्रेत पिसाच खप्पर संचहीं।
बेताल बीर कपाल ताल बजाइ जोगिन नंचही॥
अंतावरि गहि उड़त गीध पिसाच कर गहि धावहीं।
संग्राम पुरबासिन मनहु बहु बाल गुड्डा उड़ावहीं॥
मारहिं चपेटन्हि डाटि दांतन्ह काटि लातन्ह मीजहीं।
चिक्करहि मरकट भालु छल बल करहिं जेहि खल छीजहीं
धरि गाल फारहिं उर बिदारहिं गल अंतावरि मेलहीं।

चौ०—मज्जहि भूत पिसाच बेताला। प्रमथ महा झोटिंग कराला॥
काक कंक ले भुजा उड़ाहीं। इक ते छीन एक लेइ जाहीं॥
खींचहिं गीध अंत तट भये। जनु बंसी खेलहिं चित दये॥
बहु भट बहहिं चढ़े खग जाहीं। जनु नावरि खेलहिं सरि माहीं॥

अद्भुत रस के स्थायी भाव–अभीभो (अचरज), सहारा–अचरज के पदारथ भा बात, जगावे के भाव–अपूर्व सुनल भा देखल, महिमा–रोआँ गनगना गइल आ गदगद भइल, संचारी भाव–मोह आ तर्क पर तर्क दीहल। मानस से उदाहरन :—

दो०—देखरावा मातहि निज, अद्भुत रूप अखंड।
रोम रोम प्रति लागे, कोटि कोटि ब्रह्मण्ड॥

चौ०—गै जननी सिसु पहं भयभीता। देखा बाल तहाँ पुनि सूता॥
बहुरि आइ देखा सुत सोई। हृदय कंप मति धीर न होई॥
यहाँ उहाँ दुइ बालक देखा। मति भ्रम मोर कि आम बिसेषा॥
देखि राम जननी अकुलानी। प्रभु हंसि दीन्ह मधुर मुसकानी॥

आ— सती दोख कौतुक मग जाता। आगे राम सहित सिय भ्राता॥
फिर चितवा पाछे प्रभु देखा। सहित बन्धु लिए सुंदर वेषा॥
जहँ चितवहिं तहँ प्रभु आसीना। सेवहिं सन्त मुनीस प्रवीना॥
देखे सिव बिधि बिष्णु अनेका। अमित प्रभाउ एक तें एका॥
वंदत चरन करत प्रभु सेवा। बिबिध वेष देखे सब देवा॥

शान्त रस के स्थायी भाव–सम, सहारा–सत्संग आ गुरु सेवा आदि, जगावे के भाव–स्नान ध्यान, पवित्र आश्रम आ तीर्थादि, महिमा–रोमांच आ विह्वल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भइल, संचारी भाव—धारन, मगन आ मति आदि शान्त रस के मानस में उदाहरन :—

चौ०—निसि प्रवेस मुनि आयसु दीन्हा। सबहीं संध्या बंदनु कीन्हा ॥
कहत कथा इतिहास पुरानी। रुचिर रजनि जुग जाम सिरानी ॥
मुनिबर सयन कीन्ह तब जाई। लगे चरन चापन दोउ भाई ॥
जिन्हके चरन सरोरुह लागी। करत बिबिध जप जोग बिरागी ॥
तेइ दोउ बंधु प्रेम जनु जीते। गुरु पद कमल पलोटत प्रीते ॥
बार बार मुनि अग्या दीन्ही। रघुबर जाइ सयन तब कीन्ही ॥
चापत चरन लखन उर लाए। समय सप्रेम परम सचु पाए ॥

आ—को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ। कलुष पुंज कुंजर मृगराऊ ॥
अस तीरथ पति देखि सुहावा। सुख सागर रघुबर सुख पावा ॥
मुदित नहाइ कीन्हि सिव सेवा। पूजि यथा विधि तीरथ देवा ॥

दो०—द्वादस अच्छर मंत्र वर, जपहिं सहित अनुराग।
बासुदेव पद पंकरुह, दम्पति मन अति लाग ॥

मानस मानसरोवर में जल पंछी आ जल जीवन के मनोहर रूप त बड़ले बा साथ ही उहाँ अमर अमराई में ऋतुराज बसन्त के भी भेंट करवले बानी गोस्वामी जी।

सुकृत साधु राम गुन गाना! ते विचित्र जल बिहंग समाना ॥
सन्त सभा चहुँ दिसि अमराई। श्रद्धा चरित बसंत सम गाई ॥

विभिन्न प्रकार से भक्ति निरूपन आ इन्द्रिय निग्रह रूपी लता मंडप में मनोनिग्रह आ यम नियमादि के फूल उगल बा—ओह में ग्यान के फल आ तवना में प्रभु चरन का प्रेम सरूप सरस रस भरल बा, अइसन वेद के वचन बाटे। पद अइसे बा :—

भगति निरूपन विविध विधाना। छमा दया दम लता बिताना ॥
सम जम नियम फूल फल ग्याना। हरि पद रति रस बेद बखाना ॥

मानस में अउर जे अनघा कथा बाटे से तोंता आ कोइलर अस रंग बिरंगी पंछी बा :—

औरउ कथा अनेक प्रसंगा। तेइ सुकपिक बहु बरन बिहंगा ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राम कथा से रोमांच, बाग, बाटिका अउर बन बाटे आ सुख बा पंछिन के बिहार। बाग के माली बाड़न निरमल मन जे प्रेम रूपी जल आ सुन्दर नयन से बाग के सींच रहल बाड़न। पद :—

पुलक बाटिका बाग बन, सुख सुबिहंग बिहारु।
माली सुमन सनेह जल, सींचत लोचन चारु॥

मानस मान सरोवर बाटे त सार्वजनिके बाकी, गोस्वामी जी चउकस पहरादार बइठवले बानी, ओही के जे सावधानी से रामचरित के गान करे। कुछ मानस टीकाकार लोग गवनिहारन में भगवान शंकर, भुशुंडी जी, जागबलिक जी आ संत तुलसीदास जी के नाम देले बाड़न बाकी, अधिक टीकाकार लोगन के मत बा कि जेही बिचारि के गाई उहे चतुर रखवार बाटे। रखवार के अलावे मानस का देव के भेव भी गोस्वामी जी खोल देले बानी :—

जे गावहिं यह चरित सँभारे। तेइ एह ताल चतुर रखवारे॥
सदा सुनहिं सादर नर नारी। तेइ सुरवर मानस अधिकारी॥

मान सरोवर सबका बदे बाटे त एके समान माने सबकर एह पर अधिकार बा बाकी, जे दुष्ट आ कामी बाड़न ऊ अभागा कौआ आ बकुला अस इहाँ ना अइहन, काहें जे एहिजा बेंग, दोहना आ सेवार सरूप विषय रस के कथा हइए नइखे। गोस्वामी जी साफ लिख देले बानी :—

अति खल जे बिषयी बक कागा, एहि सर निकट न जाहिं अभागा।
संबुक भेक सेवार समाना। इहां न विषय कथा रस नाना॥

इहे कारन बा कि विषयी काग ओग अस लोग हृदय में हार मान जालन, कारन कि सरोवर तक आवे में बड़ी कठिनाइयो बाटे। भगवान राम का कृपा बिना आइयो ना जाइ। पद :—

तेहि कारन आवत हिय हारे। कामी काक बलाक बिचारे॥
आवत एहि सर अति कठिनाई। रामकृपा बिनु आइ न जाई॥

कुसंगति भयावनि डहरि बा आ कुसंगी लोगन के बचन बाटे बाघ, सिंह आ सांप अउर घर के जंजाल दुर्गम पहाड़ बा एह राह के :—

कठिन कुसंग कुपंथ कराला। तिन्ह के बचन बाघ हरि ब्याला।
गृह कारज नाना जंजाला। ते अति दुर्गम सैल बिसाला॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीहड़ बन बाटे राह में मोह, मद आ मान आ आदि के आ कुतर्क के नदी :—

बन बहु विषम मोह मद माना। नदी कुतर्क भयानक नाना॥

जेकरा पास श्रद्धा सरूप बटसारी, संतन के साथ नइखे आ जेकरा रघुनाथ जी प्रिय नइखीं ओकरा बदे मानस अति अगम बाटे :—

जे श्रद्धा संबल रहित, नहिं संतन कर साथ।
तिन्ह कहु मानस अगम अति, जिन्हहिं न प्रिय रघुनाथ।

एह से परे जो केहू कसहूँ मानसरोवर तक पहुँचियो जाई त नींद रूपी जड़ैया हलहला दिही। हृदय दलके लागी जाड़ से आ ऊ अभागा गोता लगाइ ना सकिहन। पद :—

जौ करि कष्ट जाइ पुनि कोई। जातहिं नींद जुड़ाई होई।
जड़ता जाड़ विषम उर लागा। गएहुँ न मज्जन पाव अभागा॥

ओह अभागा का सरोवर में स्नान भा जलपान ना होखे आ ऊ मंगुराइल लवट जालन अउर पूछा पेख भइला पर आपन अभाग ना बतला के सरोवर के निनासे लागेलन। पद :—

करि न जाइ सर मज्जन पाना। फिरि आवइ समेत अभिमाना॥
जौ बहोरि कोउ पूछन आवा। सर निंदा करि ताहि बुझावा॥

ई सब बिघिन ओकरा ना होखे जेकरा पर भगवान राम के कृपा होला आ उहे एह मानस मान सरोवर में सादर स्नान करेला जेकरा के त्रिताप ना जराइ सके :—

सकल बिघ्न ब्यापहि नहिं तेही। राम सुकृपा बिलोकहिं जेहीं॥
सोइ सादर सर मज्जन करई। महा घोर त्रय ताप न जरई॥

जेकरा मन में भगवान राम के चरनन में सुन्दर प्रेम बा, ऊ सरोवर के कबो ना छोड़ी। ए भाई! जे एह सर में स्नान करे चाहे, मन लगा केसत्संग करे :—

ते नर यह सर तजहिं न काऊ। जिनके राम चरन भल भाऊ॥
सो नहाइ चह एहि सर भाई। सो सत संग करउ मन लाई॥

अइसन मानस मान सरोवर के हृदय नयन से निरेखला आ ओह में गोता लगवला से कवि कुल भूषन गोस्वामी जी के बुद्धि बिमल हो गइलि। उहां के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हृदय में आनन्द आ उत्साह भर गइल अउर प्रेम आ आनन्द प्रवाह उमड़ उठल। ओहो से ई कविता रुपी नदी बह चललि जवना में भगवान राम के निरमल यशरुपी जल भरल बा। एह कविता रुपी नदी के नाम सरयू बा, जे सब मंगलन के मूल बाटे। एह नदी के लोक मत आ बेद मत नाम के दुइ गो किनारा बाटे। ई सरयू नदी मानसरोवर के पवित्र पुत्रो बा जे पाप रुपी तिनका आ फेड़ के भहराइ आ फेंक देवे में समर्थ बा। तीन तरह के स्रोता लोगन के समाज, नदी तट पर बसल टोला, गाँव आ नगर बा आ संत लोगन के सभा सब सुन्दर मंगलन के मूलरूप अयोध्या बाटे। सुन्दर श्रीरति रुपी सरयूजी राम भक्ति रुपी गंगा में मिललि आ लखन-लाल सहित भगवान राम का युद्ध के पवित्र यश रुपी सुहावन सोन नदी भी ओह में जाइ मिलल। ओह दुनो का बीच में भक्ति रुपी गंगा जी के धार ग्यान आ विराग सहित शोभा दे रहल बा; तीन तापन के डेरावे वाली ई सुहावनी नदी राम सरूप समुद्र का ओर जा रहल बाड़ी। एह कीरति रुपी सरयू के मूल मानस बा आ ई भक्ति रुपी गंगा में गिरलि बा, एह से ई सुननिहार सज्जनन का मन के पवित्र कर दीहन। एकरा बीच बीच में जे भिन्न प्रकार के कथा बाटे, नदी तट का आस पास के बन आ बाग बाटे। भगवान शंकर आ पार्वती विवाह के बराती एह नदी के अनेकन्ह प्रकार के अनघा जलचर बाड़न। भगवान राम के जन्मोत्सव नदी के भंवर आ तरंगन के आनंद बा। चारो भाइन के बाल चरित रंग बिरंगी कमल बाटे आ महाराज दशरथ आ उहां के रानी आ सम्बन्धी लोगन के सत्कर्म भंवरा आ जल पंछी रूप बाड़न।

सीता स्वयंवर के प्रसंग नदी के मनोहर छवि आ अनेकन्ह विचार पूर्न सवाल एह नदी में नाव, अउर उत्तर चतुर केवट रूप बा। कथा सुनला का बाद ओह के चरचा कइल नदी का सहारा चले वाला बटोहिन के समाज बा। परशु रामजी के गड़गड़ाइल नदी के बीहड़ धार आ भगवान राम के बचन नदी के सुन्दर घाट सरूप बाटे। चारो भाइन का विवाह के उत्सव, नदी के कल्यान कारिनी बाढ़ बा आ एह के कहे सुने में जे हरखित होला, पुन्यात्मा पुरुष हुटे।

भगवान राम का तिलक के मंगल साज सजावल गइल, उहे एह नदी पर पख का अवसर के स्नानार्थी लोगन के जमाव बा आ रानी केकयी के बुद्धि रुप काई भी बाटे, नदी में जेकरा चलते बोहड़ बिपत्ति उमड़ि उठलि रहे। अनघा उत्पातन के समन करेवाला भरतजी के चरित्र नदी तट पर कइल जाए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाला जपयग्य वाटे। कलि का पापन अउर दुष्टन का अवगुनन के वरनन वा से ही नदी में पांक आ बकुला अउर कौआ बाड़न। ई कीरति रूपी नदी छवो ऋतुअन में आ सब समय सुहावन बाड़ी। भगवान शंकर आ पार्वती विवाह हेमन्त ऋतु वा आ भगवान राम जन्मोत्सव शिशिर ऋतु। भगवान राम विवाह—समाज वरनन मंगलमय ऋतुराज बसंत वाटे आ वन गमन ग्रीष्म वा जवना में लुकार मतिन लूक चलल बा। राकस लोगन का साथ के संग्राम बरखा ऋतु आ भगवान राम के राज तिलक, राजकाल आ बड़ाई अउर विनम्रता निरमल सुख देवेवाली सुहावनी शरद ऋतु वा।

सती सीता जी के गुन वरनन एह नदी के जल वाला निरमल गुन बा आ भरत जी के सुभाव एह नदी के सुन्दर सीतलता वा, जे बराबर एक रस रहेला जेकर वरनन ना हो सके। चारो भाइन के परस्पर हँसल खेलल आदि भाई चारा के स्नेह जल के मधुरता आ मनोहर सुगंध वाटे। गोस्वामी जी अपना आर्तभाव, विनय आ दीनता के जल के हलकापन बतवले बानी। गोस्वामी जी के कथन वा कि एह सरयू नदी का जल में बड़ा विचित्र गुन वाटे जे सुनते मातर ई गुन देखावे ला आ आशा रूपी प्यास के अउर मन का मैल के झटपट मिटा देला। ई जल भगवान राम का सुन्दर प्रेम के पुष्ट करेला आ कलि का समस्त पापन के हर लेला अउर संसार का श्रम के सोख लेवे ला। एह जल में संतोष के भी संतुष्ट करे के शक्ति वा आ पाप, ताप अउर दरिद्रतादि दोषन के भस्म करे के बल भी। ई जल काम, क्रोध, मद आ मोह विनाशक अउर निरमल ग्यान आ बैराग के बढ़ावे वाला वाटे। एह में स्नान कइला से हृदय के समस्त पाप भस्म हो जाला।

जे लोग एह राम यश रूपी जल से अपना हृदय के ना धोवलन, कादर बाड़न आ कलि से ठगा गइलन। जइसे पियासल मृग खरउरिया देख के बालू का रेत पर धावेलन आ जल ना पाइ के दुखी होलन तसहीं ई जीव पाछे अधीर होइहन। अपना बुद्धि का अनुसार एह सुन्दर जल का गुनन के विचार के, ओह में अपना मन के स्नान करवला का अलावे भगवान शंकर आ भवानी के स्मरन कइ के संत सिरोमनि कवि तुलसीदास जी रामकथा कहले बानी। जवना के रामचरित मानस कहल वाटे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मानस आ सरयू रूपक :—

मानस मान सरोवर

१—मानसर महात्म, जइसे—

'सोइ सादर सर मज्जन करई।
महाघोर त्रयताप न जरई॥'

२–'बर्षहिं रामसुजस बर बारी।
आ–मेधा महिगत सो जल पावन—

३–'तेइ सर पावन सुभग सर,
घाट मनोहर चारि॥'

४–'लीला सगुन जो कहहिं बखानी।
सोइ स्वच्छता..... ॥'

५–'प्रेम भगति..... ।
आ-सोइ मधुरता सुसीतल ताई॥'

६–'सोइ जल सुकृत सालि हित होई।
राम भगत जन जीवन सोई॥'

७–'उपमा बीचि बिलास मनोरम।'

८–'छंद सोरठा सुन्दर दोहा।
सोइ बहु रंग कमल फूल सोहा॥'

९–'सुकृत पुंज मंजुल अलि माला।
सुकृति साधु..... ॥'

१०–'धुनि अवरेब से .....।
ते सब जलचर चारु तड़ागा॥'

११–'पुलक बाटिका बाग बन— ।'

११–'सदा सुनहिं सादर नर नारी।
ते सुरबर मानस अधिकारी॥'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१३–'सोइ सादर सर मज्जन करई।
महा घोर त्रय ताप न जरई॥'

१४–'अति खल जे बिषई बक कागा।
एहि सर निकट न जाहिं अभागा॥'

१५–'राम चरित मानस एहि नामा।'

१६–'सोइ स्वच्छता करै मल हानी।'

१७–'उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रवाहू।'

१८–'राम चरित मानस मुनि भावन॥'

१९–'भइ कबि बुद्धि बिमल अवगाही।'

२०–'संत सभा चहुं दिसि अँवराई।'

२१–'त्रिविध दोष दुख दारिद दावन।'

सरयू नदी :—

नदी महात्म, जइसे—

१–'नदी पुनीत सुमानस नंदिनि।
कलिमल तृन तरु मूल निकंदिनि॥'

२–'चली सुभग कविता सरिता सो।
राम विमल जस जल भरिता सो॥'

३–'घोर धार भृगुनाथ रिसानी।
घाट सुबुद्ध राम बर बानी॥'

४–'सती सिरोमनि सिय गुन गाथा।
सोइ गुन अमल अनूपम पाथा॥'

५–'भरत सुभाउ सुसीतल ताई।
भयप··· ··· ···। जल माधुरी सुबास'

६–'राम सुप्रेमहि पोषत पानी।'

७–'सुनत सुजन मन पावन करहीं।'

८–'सीय स्वयंबर कथा सुहाई।
सरित सुहावनि सो छबि छाई॥'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

९–'बाल चरित चहुं बंधु के।
बनज बिपुल बहुरंग ··· ··· ··· ।'

१०–'नृपरानी परिजन सुकृत।
मधुकर बारि बिहंग··· ··· ··· ।'

११–'उमा महेस बिबाह बराती।
ते जलचर अगनित··· ··· ··· ···'

१२–'बिच बिच कथा बिचित्र बिभागा।
जनु सर तीर तीर बन बागा ॥'

१३–'कहत सुनत हर्षहिं पुलकाहीं।
ते सुकृती मन मुदित नहाहीं ॥'

१४–'सादर मज्जन पान किये ते।
मिटहिं ताप परिताप हिये ते ॥'

१५–'कलि अघ खल अवगुन कथन।
जे जल मल बक काग— ।'

१६–'सरजू नाम सुमंगल मूला।'
१७–'कलिमल तृन तरु मूल निकंदिनि।'

१८–'सो सब उमग सुखद सब काहू।'
१९–'कीरति सरित छहू रितु रूरी।'

२०–'गुनगन गनि मन अन्हवाई।'
२१–'संत सभा अनुपम अवध।'

२२–'समन दुरित दुख दारिद दोषा।'

बालकांड का अन्त में गोस्वामी जी लिखले बानी कि सीताराम यश के कवि कुल का जीवन के पवित्र करेवाला आ मंगलन के खान जान के हम आपनि बानी पवित्र करे बदे इचिका बखान कइ के कहले बानी :—

कबिकुल जीवन पावन जानी। रामसीय जसु मंगल खानी ॥
तेहि ते मैं कछु कहा बखानी। करन पुनीत हेतु निज बानी ॥

आपनि बानी पवित्र करे बदे तुलसीदास जी रामयश कहले बानी (नाहीं त) श्री रघुबीर चरित्र अपार समुद्र बाटे; कवन कवि ओह के पार कइले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाड़न ? जे लोग जनेऊ आ विवाह का मंगलमय उत्सव के बरनन आदर का साथ सुन के गइहन ऊ लोग सीताराम कृपा से सदा सुख पइहन ।

छंद—'निज गिरा पावनि करन कारन राम जसु तुलसी कह्यो ।
रघुबीर चरित अपार बारिधि पारु कबि कौने लह्यो ॥
उपवीत ब्याह उछाह मंगल सुनि जे सादर गावहीं ।
बैदेहि राम प्रसाद ते जन सर्वदा सुख पावहीं ॥'

बालकांड; श्लोक का बाद पहिले सोरठा से शुरू भइल बा आ अन्त भी भइल बाटे सोरठे से । ओह में लिखल बा कि—सीताराम विवाह प्रसंग के जे लोग प्रेम पूर्वक गइहें सुनिहें उनका बदे सदा उत्साहे-उत्साह बाटे, काहें जे भगवान राम के यश मंगल के धाम बा । पद अइसे बा :—

सिय रघुबीर विवाह, जे सप्रेम गावहिं सुनहिं ।
तिन्ह कहुँ सदा उछाहु, मंगलायतन राम जसु ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बरनउँ रघुबर बिमल जस

(अयोध्या)

मानस का अयोध्याकांड में पहिले संस्कृत का तीन श्लोकन में गोस्वामी जी अवढर दानी भगवान शंकर आ भगवान राम के बन्दना कइले बानी। शंकर भगवान के बन्दना करत उहाँ का लिखले बानी कि जेकरा गोद में हिमांचल पुत्री पार्वती जी, सिर पर गंगा, लिलार पर दूज के चन्द्रमा, कंठ में हलाहल विष, आ छाती पर शेषनाग शोभा देत बानी उहाँ का भस्म रमवले बानी, देवतन में श्रेष्ठ, भक्तन के पाप संहार करे वाला, सर्व व्यापक, कल्यान रूप चन्द्रमा मतिन भगवान शंकर जी सदा हमार रक्षा करीं!

दोसरका श्लोक में गोस्वामीजी के कथन बा कि रघुकुल के आनन्द दाता भगवान राम का मुखारबिन्द के शोभा राजतिलक सुन के ना त खिल उठलि आ ना बनवास दुःख से तनिको भर मलीन भइलि ऊ हमरा बदे सदा सुन्दर मंगलन के देवेवाली होय! पहिलका श्लोक का भगवान शंकर मतिन तिसरका श्लोक में भगवान राम के भी स्मरन करत गोस्वामीजी लिखले बानी कि—नीला कमल मतिन स्याम आ जेकर कोमल अंग बाटे, जेकरा बायाँ भाग में सीताजी बिराजमान बानी अउर हाथन में धनुष आ अमोघ बान बाटे, ओह रघुबंश स्वामी भगवान रामचन्द्र के हम नमस्कार करत बानी।

संस्कृत श्लोकन का बाद एगो दोहा में गोस्वामी जी फिर गुरु बन्दना कइले बानी—

'गुरु महाराज का चरन कमल के धूरि से अपना मनरूपी दर्पन के साफ कइके, रघुबर जी का ओह बिमल यश के बरनन करत बानी जे अर्थ, धर्म, काम आ मोक्ष-चारो पदार्थन के दाता बा—

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जस, जो दायक फल चारि॥

बन्दना का बाद महाराज दशरथ भगवान राम के राजतिलक के तेयारी कइले बानी बाकी हरि इच्छा बलवान। अपना दासी मंथरा के डँसला से रानी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केकयी का कुमति सरूप जहर चढ़ गइल बा जवना से ऊ भरतलाल जी बदे राजगद्दी आ भगवान राम बदे चौदह साल के बनवास के मांग कइले बाड़ी। महाराज दशरथ ओह माँग बदे बचन-बद्ध बानी। एह से महा विकट समस्या उपस्थित हो गइल बा उहाँ।

मानस में क्षेपक जोरे वाला लोगन के संख्या बहुत हो गइल बा आ ओह से कई गुना ज्यादा शंका करे वाला लोगन के। मानस के प्रसंगन पर तरह तरह के शंका होत आइल बा,हो रहलि बा आ आगे भी होति रही आ तसहीं ओह सभन के समाधान भी। कुछ लोगन के शंका बाटे जे चौदहे बरिस बदे बनवास काहें आ विवाह का समय केकयी पुत्र के राज देबे के बाचाबन्द काहें भइल रहे ?

गोस्वामी जी का कथनानुसार केकयी के कथन बा कि हे प्रान प्यारे ! सुनीं ! हमरा मन भावे वाला एक बर त भरतलाल जी के राजतिलक; आ हे नाथ, दोसरो बर हम हाथ जोड़के मांगत बानी से हमार मनोरथ पूरा करीं ! तपसिन्ह का भेष में विशेष उदासीन भाव से भगवान राम चौदह साल तक बन में निवास करीं।

बात सही बा मंथरा खाली बर मांगे के उकसवली आ बनवास के समय भा तपसी भेष आदि का बारे में कुछ ना कहली अब सवाल उठत बाटे जे रानी समय भा भेष के रेख कइसे आ काहें लगा दिहली ?

देवगन का गोहरवला पर सरस्वती जी पहिले त बड़ा जोर से फटकरलीं बाकी, अन्त में उहें का पेरना से मंथरामति में कथित सम्मति समा गइलि। जइसे—

गूढ़ कपट प्रिय बचन सुनि, तीय अधर बुधि रानि।
'सुरमाया' बस बैरिनिहि, सुहृद जानि पतिआनि।।

एही कारन से भारद्वाज मुनि, भरतलाल जी से कहले बानी जे केकई जी निर्दोष बानी काहें जे सरस्वती जी का पेरना से अइसन बरदान उहां का मंगलीं। जइसे—

'तात कैकइहि दोष नहिं, गई गिरा मति धूति'।

बनवास का बाद चौदह साल आ तापस भेष में भी बड़ी गूढ़ रहस्य बाटे। रावन के अब चौदहे साल आयु शेष रहि गइलि रहे आ ऊ ऋषि मुनि लोगन से अधिक खटपट करत रहन। एही से ई तय रहे जे भगवान राम साधु भेष में रहब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त प्रकाश पर फतिंगा लपटवे करिहन जवना से उनकर विनाश निश्चय हो जाई। ई खाली केकई के वरदान ना रहे बलुक देवता लोगन के जग कल्यान भावना बदे सुनियोजित प्रबल असुर संहारकारी सफल अभियान रहे।

महाराज दशरथ जी रानी केकयी जी से विवाह का समय उहां का पुत्र के राज देवे बदे वाल्मीकि रामायन में बचन बद्ध बानी बाकी, मानस में ई नइखे आइल। पहिले रानी केकयी का भी भगवान राम का राज तिलक के बड़ी खुशी रहे बाद में मंथरा का मोहनी लगवला पर भी उहां का कहलीं जे-फिर जो कबो अइसन बर फोरई कहबू तब तोहारि जिभिए उखड़वा लेब। मंथरा का मुंह का अलावे हृदय में बहुत बड़हनि शक्तिन के जुटान हो गइल रहे जवना का चलते रानी केकयी का दोसरको मांग के आदर देबे के पड़ल महाराज दशरथ का।

वाल्मीकि के कथ वा कि महाराज दशरथ मंत्रिगन का सलाह से भगवान राम का के युवराज बनावे के तय कइलीं। सभा में त ई बात महाराज कहलहीं बानी बाद में हवेली भीतर भी बुलाइ के कहले बानी जे हम काल्हे तुहें युवराज बना देबे चाहत बानी कि भरत लाल जी का आवे का पहिलहीं ई काम सम्पन्न हो जाय।

अध्यात्म रामायन के कथ वा कि नारद जी ब्रह्मा जी किहां से भगवान राम किहां आइ के रावन वध बदे विनय कर गइल बानी। एकरा बाद युवराज पद के प्रसंग चलल बा। उहां महाराज का केस पाकल याने बुढ़ापी भा नक्षत्र आदि का कुमांज मूरतिन का देखला के कथा नइखे।

वाल्मीकि में सरस्वती जी से मंथरा का बुद्धि बिगड़ला के बरनन नइखे। भिनसहरा उठला पर नगर के सिंगार देखला पर मंथरा पुछले बाड़ी तब उनका पता चलल बाटे युवराज पद तेयारी के आ तबने पर ऊ छल आ छोटिहाई का बल पर केकयी के दू बरदान मांगे के पोढ़ कर देले बाड़ी।

बन गमन का समय भगवान राम सीता जी का स्नेह आ लखन लाल का लालसा बस अपना साथ लेइ लेले बानी। ओहिजे से (शृंगवेर पुर) तक साथ में सुमंत जी भी गइल बानी। ओहिजे से रामलखन के भेष भइल बाटे मुनिन के। अध्यात्म रामायन में त लिखल बाटे जे जनकपुर जात समय केवट भगवान राम के पांव पखरले बाड़न बाकी मानस में मुनि भेष धइके आगा बढ़ला पर केवट से भेंट भइल बाटे। गंगापार तीर्थराज प्रयाग में भगवान राम आदि का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारद्वाज मुनि से भेंट भइल बाटे। मुनि दर्शन आ त्रिवेणी स्नान का बाद गंगा से यमुना किहां सब पहुँचल बाटे।

वाल्मीकि रामायन में केवट का भगवान राम के पांव धोअला, भारद्वाज मुनि का चेला लोगन के राह देखवला, निखाद का संग लागल गइला के बाद वाल्मीकि जी का भगवान राम का रहे के विविध स्थान बतवला के आ एगो तापस वाला वरनन नइखे। भगवान राम मानस में वाल्मीकि मुनि से अपना ठहरे के जगह पुछले बानी तबना पर गोस्वामी जी का शब्दन में उहां अइसे उत्तर बा—

पूछेहु मोहिं कि रहउं कहाँ, मैं पूछत सकुचाउं॥
जहं न होहु तहं देहु कहि, तुम्हहिं देखावउं ठाउं॥

भगवान राम के निवास त बाटे सभत्तर बाकी, गोस्वामी जी वाल्मीकि जी से बहुत बहुत स्थान ठहराव लायक कहवाइ के चित्रकूट में कुटी निरमान के चरचा कइले बानी, जहां तीनों मूर्ति के निवास भइल बाटे।

अध्यात्म रामायन में वाल्मीकि मुनि का भगवान राम से आपन हाल बतवला का अलावे उहां का निवास बदे भिन्न भिन्न स्थान बतवला के बरनन आइल बाटे। गोस्वामी जी अध्यात्म से मानस बदे मोती चुनले बानी। जइसे—

धीरोऽत्यंत दयान्वितोऽपि सगुणाचारान्वितो वाथवा।
नीतिज्ञो विधिवाददैशिकपरो विद्याविवेकोऽथवा॥
दुष्टानामतिपापभवति धियां संगं सदा चेद्भजे—
तद्बुध्या परिभावितो व्रजति चेत्साम्ये क्रमेण स्फुटम्॥

चौपाई—'को न कुसंगति पाइ नसाई, रहइ न नीच मते चतुराई॥'

अउर श्लोक जइसे—बुभुक्षितः किं न करोति पापम्।

चौ०—आरत काह न करइ कुकरमा॥
'सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पण्डितः।'

चौ०—अरध तजहिं बुध सरबस जाता॥

मानस का अयोध्या कांड में कोशिल्या-सीता आ अउर लोगन में जे बतकही आ कथ पद भइल बाटे, बड़हीं सार गर्भित बा। बन गमन में राह वाली तीनो मूर्ति के अनूप रूप त अउर गूढ़ आ रोचक बा। आगा भगवान राम आ पाछा बानी लखनलाल जी। दुनो मूर्ति तपसी भेष में सुसोभित बानी। ओह दुनो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तापस, ब्रह्म आ जीव रूप का बीच में सीता जी महामाया मतिन सुशोभित बानी। गोस्वामी जी का शब्दन में—

'आगे राम लखनु बने पाछें। तापस बेष बिराजत काछें।
उभय बीच सिय सोहति कैसे, ब्रह्म जीव बीच माया जैसें॥'

बन गमन में ओने ऊ तीनो मूर्ति चित्रकूट में बास कइले बानी आ एने अयोध्या में महाराज दशरथ के भगवान राम का बियोग में 'राम' के उच्चारन करत शरीरान्त हो गइल बा।

भरतलाल जी के अवध से बुलाहट गइल बा। उहां का अइला पर इन्द्रपुरी से भी सोहावनी अयोध्यापुरी, यमपुरी अस भकसावनि लउकलि बाटे। केकयी जी के मंथरा का उतयोग से अपना प्रयास का सफलता में अभी तक अन्हपट लागल बाटे जवना पर भरतलाल जी कहले बानी कि—हाय! जो तोहरा अइसन कुरुचि रहे त हमरा जनमते हमें मार काहें ना दिहलू? फेड़ काट के पतई के पानी से पटवले बाड़ू आ मूअल मछली जिआवे बदे पानी उछुरुंगले बाड़ू? गोस्वामी जी के चौपाई—

जौं पै कुरुचि रही असि तोरी। जनमत काहें ना मारे मोहीं।
पेड़ काटि तैं पालउ सींचा। मीन जियन हित बारि उलीचा।

भरतलाल जी माता जी के अइसे धिरकरलीं आ मंथरा के मजगर नेंग नछावर देले बानी रिपुसूदन जी। उहां का तवन लात मरले बानी कि मंथरा के—

'कूबर टूटेउ फूट कपारू। दलित दसन मुख रुधिर प्रचारू॥'

वाल्मीकि जी के कथन बा कि महाराज के दाह संस्कार का बाद एक दिन कई दासिन के साथ सिंगार पटार कइले मंथरा के देख के पहरादार पकड़ ले आइल बाड़न शत्रुहन जी का सोझा। ओहिजा मंथरा के पिटाई होखे लागलि बा जब केकयी जी छोड़ावे आइल बानी तब शत्रुहन जी उहों के कस के धिरकरले बानी। शत्रुहन जी से मंथरा के भरतजी का छोड़वला के प्रसंग वाल्मीकि आ मानस में भी आइल बाटे।

माता कोशिल्या का साथ भरतलाल जी के बतकही बड़ही ऊंच कोटि के बाटे। भगवान राम के बन से लवटावे बदे भरतलाल जी सपरिवार, कुछ पुरजन आ सेना का साथ गइल बानी। सिंगरामउ से उहां के खाली पैदले ना बलुक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उबेनें चल देले बानी जवना से गोड़ का तरवा में कमल पर सीत का बूंद मतिन फोरा झलकत बाड़न स। भरत दल के देख के निखाद लोगन का भ्रम भइल बा जे कहीं ई लोग भगवान के सतावे जात बाड़न। ए से ऊ लोग घटरोक कर देले बाड़न। बाल्मीकि के कथन बा कि भरतलाल जी का सिगरामउ पहुँचला पर पांच सौ नावन पर सौ सौ मलाह आ सौ सौ वीरन के बइठाइ के घाट रोक करा दिहलन निषादराज। खुद अपने निषादराज मधु आ मछली आदि लेइ के भरतलाल जी का नियरा जाइ के पुछले बाड़न जे भगवान राम भिरी जाए के राउर मनसा का बाटे ?

गोस्वामी जी के कथन बा कि कन्द, मूल, फल, हिरन आ मछली लेइके निषादराज भरतलाल से भेंट करे गइलन आ वशिष्ट जी से आपन नाम बतावत प्रनाम कइलन। वसिष्टजी रामप्यारा जानि के उन्हें आशीष दिहलीं आ भरत लालजी सप्रेम निषादराज से मिललीं जवन प्रेम देख के निषादराज बेसुध हो गइलन।

मानस में भोजपुरी के अनघा शब्द भरल बाड़न स आ भोजपुरिये साहित्य मतिन उपमा आ अनुप्रासो के अनघई बाटे। भरतलाल जी का भगवान राम से भेंट वार्ता बड़ा महत्व के बाटे। राजसत्ता के लोभ उहां आन्हरे भर ना बलुक गतिहीन हो गइल बाटे। गोस्वामी जी लिखले बानी कि, वशिष्ट जी उहां कहलीं जे हे सभासद लोगे आ भरतलाल जी ! सूर्यकुल के सूर्य भगवान राम धर्म धुरन्धर आ स्वतन्त्र भगवान हवीं। इहां का सत्य प्रतिग्य बानी आ वेदमरजाद के रक्षक। इहां के अवतारे भइल बाटे जगत कल्यान बदे। गुरु, पिता आ माता के आग्या पालक, दुष्टन के विनाशक आ देवतन के इहां का हितकारी हवीं। नीति, प्रीति, परमार्थ आ स्वार्थ आदि तत्वन के इहाँ का मजगर जानकार बानी। इहाँ के आग्या सब का सिर पर बाटे। आ हमहनो के हित एही में बाटे जे जवना इहां का कहीं हमन स्वीकार करीं। उहां भरत लालजी का भेंटाइल, भगवान राम के खड़ाऊं। जइसे,

'प्रभु करि कृपा पांवरी दीन्ही। सादर भरत सीस धरि लिन्हीं॥
चरन पीठ करुना निधान के। जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के॥
संपुट भरत सनेह रतन के। आखर जुग जनु जीव जतन के॥
कुल कपाट कर कुसल करम के। बिमल नयन सेवा सुधरम के॥
भरत मुदित अवलम्ब लहेते। अस सुख जस सिया राम रहेते॥'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज भारतवर्ष में समाजवाद पर बहुत अधिक ध्यान दिहल जा रहल बाटे जवन युग का साथ जग के भी मांग बा। एह समाजवाद के बड़ा उत्तम प्रसंग आइल बाटे अयोध्या कांड का चित्रकूट बरनन में। वनवासी कोल, किरात आ भील आदि लोग अवध आ मिथिला बासिन का चित्रकूट गइला पर भगवान राम किहाँ दोना में स्वादिष्ट मधु का अलावे कंदमूल आ फल आदि वस्तु ले गइल बाड़न। ऊ लोग जंगली होते हुए सम्पर्क से अइसन सभ्य आ चतुर हो गइल बाड़न जे प्रनाम कइ के अपना दिहल पदार्थन के स्वाद भेद आ गुन बतावत गइल बाड़न। अवध आ मिथिला का लोगन के दाम दिहला पर लेत नइखन आ प्रेम में मगन मधुर बानी से कहत बाड़न जे साधु लोग प्रेम के पहचान के आदर करेलन, अपने का पुन्यात्मा हवीं, हम नीच निषाद। भगवान राम का कृपा से हमहन का अपने लोग के दर्शन मिलल बा। हमहन का आप लोगन के दर्शन ओइसहीं दुर्लभ बाटे जइसे मरुभूमि में गंगाजी के पवित्र धारा। गोस्वामीजी लिखले बानी—

'राम कृपाल निषाद नेवाजा। परिजन प्रजउ चहिय जस राजा॥'

उहां वनवासी लोग कहले बाड़न कि हृदय में अइसन जानि के कृपा कइके हमहन के कृतार्थ करे बदे फल, तृन आ अंकुर ग्रहन कइल जाय। आपन संस्कार आ कुचाल कहत अंत में ओह लोगन के कथन बा कि जब से भगवान राम का चरन-कमल के हमहन दर्शन पवलीं, दुख आ दोष दूर हो गइलन। अइसन वचन ओह बनवासिन के सुन के अवध वासी प्रेम मगन होइ के उन्हन लोग का भाग्य के सराहे लागल बाड़न। ओह लोग के बोले आ मिले का ढंग अउर सीताराम चरन में उन्हन लोग के स्नेह देख के सब लोग उहां सुख पवले बाड़न।

अयोध्या कांड के 'तापस' प्रसंग —

'तेहि अवसर एक तापस आवा।'

के कुछ विद्वान गोस्वामीजी के लिखल स्वीकार नइखन कइले।

एह कांड का अन्तिम छन्द में गोस्वामीजी के कथन बा कि—सीताराम प्रेम रूपी अमृत से भरपूर भरतजी के जो जन्म ना होइत त मुनिन का मन के भी अगम यम, नियम, सम, दम आदि कठिन व्रतन के आचरन के करित ? दुख, दंभ आ दरिद्रता आदि दोषन के अपना सुयश का बहाना से के हरित आ कलि में तुलसीदास अस शठ के हठ पूर्वक के भगवान राम का सन्मुख करित ? अन्त में सोरठा में गोस्वामी जी कहले बानी :—

सो०—'भरत चरित कर नेमु, तुलसी जो सादर सुनहिं।
सीय राम पद पेमु, अवसि होइ भव रस बिरति॥'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बैठे फटिक सिला पर सुन्दर

(अरण्य)

अरण्य कांड का श्री गनेस में पहिलका श्लोक में भगवान शंकर के वंदना करत गोस्वामी जी कहले वानी कि–धर्मरूपी रुख के मूल, विवेक रूपी समुद्र के आनंददाता पूरन चंद, वैरागरूपी कमल के सूर्य, पापरूपी घोर अंधकार के विनाशक, तीनो तापन के हरन करेवाला, मोहरूपी वदरिन के छितरावे वाला प्रवल पवनरूप, ब्रह्माजी के वंसज आ कलंक नाशक, महाराज रामजी के प्रिय भगवान शंकर के हम वंदना करत वानी।

दोसरका श्लोक में भगवान राम के वन्दना वा कि जेकर शरीर जलयुक्त मेघन का समान सुन्दर आ आनन्ददायक वाटे, जे सुन्दर पीयर वस्त्र धारन कइले बा, जेकरा हाथन में बान आ धनुष बा, कमर उत्तम तरकस से सुशोभित बा आ कमल मतिन नेत्र विशाल बा अउर माथ पर जटाजूट वाटे ओह अत्यन्त शोभायमान–सीता जी आ लखन लाल का साथ राह में चलत, आनन्द दाता भगवान राम के हम भजत वानी।

भगवान शंकर के उमाजी से कथन वा कि–हे पार्वती! राम गुन-गूढ़ वाटे। पंडित आ मुनि लोग ओह के समझ के वैराग पावेलन। वाकी जे भगवान से विमुख बा आ जेकरा धर्म में प्रेम नइखे, ऊ महामूढ़ मोह जाल में अझुराइ जालन।

देवराज इन्द्र के पुत्र जयंत कौआ रूप धारन कइ के भगवान राम के वल परिखे वदे सीताजी का चरन पर चोंच से मरले बाड़न। रामबान छुटते बेचारू का पतवखा लाग गइल बा। भुशुंडिजी एह प्रसंग में कहले वानी कि–जे राम विमुख होला ओकरा वदे, माता मरन, पिता यमराज, अमृत विष, मित्र शत्रु, गंगा वैतरनी आ समस्त जगत आग से भी अधिका गर्म हो जाला। हार दाव के जयंत प्रभु किहां आइ के एगो आँख गँवाइ के पराछित से छुटकारा पवले बाड़न। चित्रकूट में भीड़-भड़क्का बढ़ला से भगवान राम, सीता जी आ लखन लाल का साथ अत्रिआश्रम में पहुँचल बानी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उहां–पुलकित गात अत्रि उठि धाए। देखि रामु आतुर चलि आए॥
का बाद प्रभु के आसन दिहला का बाद बड़ी आनन्ददायिनी स्तुति ;

नमामि भक्त वत्सलं। कृपालु सील कोमलं॥
भजामि ते पदांबुजं। अकामिनां स्वधामदं॥

आदि ११ छन्दन में देइ के अन्त में गोस्वामी जी अत्रि मुनि से कहवा देले बानी कि–हे अनुपम सुन्दर! हे पृथ्वी पति! हे जानकी नाथ! हम अपने के प्रनाम करत बानी हमरा पर प्रसन्न होखीं आ हमरा के अपना चरन कमल के भक्ति दीं। बारहवाँ पद के भाव बाटे कि–जे मानव एह स्तुति के आदर से पढ़ेलन ऊ अपने का भक्ति से युक्त होइ के अपने के पद पावेलन, एह में संदेह नइखे।

सीता जी मुनि पत्नी अनसुइया जी के चरन छू के प्रनाम कइले बानी आ उहां से अइसन दिव्य वस्त्र आ गहना पवले बानी जे कभी मलीन होखे वाला ना रहन स। वाल्मीकि रामायन में अयोध्या कांड का अंत में भगवान राम का अत्रिमुनि से भेंट बाटे आ चित्रकूट में जयंत का सीता जी का छाती में चोंच मरला के बरनन बा।

मानस में सीता जी बदे बड़ा उत्तम उपदेश बाटे अनसूया जी के आ अंत में उहां का कहले बानी कि हे सीता! तोहार त नामे लेइ के स्त्री लोग पतिव्रत धर्म के पालन करिहन। तोहरा त श्री राम; प्रान का समान प्रिय बाड़न, कथा त हम संसार का हित बदे कहलीं हाँ।

बिराध वध आ सरभंग मुनि, सुतीक्ष्ण अउर अगस्त जी आदि ऋषि से मिलत भगवान राम दंडकवन का पंचबटी में पहुंचल बानी। ओहिजा लखन लाल के नवधा भक्ति आ ग्यान के उपदेश देले बानी जवन भक्ति बरनन एह ग्रंथ में पहिलहीं आ चुकल बाटे। लखन लाल से कहलि भक्ति बाटे श्री मद्भागवत में कथित भक्तिनुसार। गोस्वामी जी कई ग्रंथन से एह कांड में भी बहुत कुछ ग्रहन कइले बानी। जइसे शिव पुरान से—

'मितं ददाति जनको मितं भ्राता मितं सुतः'
'मातु पिता भ्राता हितकारी।'
'अमितस्य हि दातारं भर्त्तारं पूज्ययेत्सदाः॥'
'अमित दानि भर्त्ता बैदेही॥'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'क्लीवंच दुरवस्थं वा व्याधितं वृद्धमेव च।
सुखितं दुःखितं चापि पतिमेकं न लङ्घयेत् ॥'

मानस—'वृद्ध रोग बस जड़ धनहीना।
अंध बधिर क्रोधी अति दीना॥

श्री मद्भागवत—

'दुःशीलो दुर्भगो वृद्धो जड़ो रोग्यधनोऽपि वा।
पतिः स्त्रीभिर्न हातव्यो लोकेप्सुभिरपातकी॥'

मानस में–'ऐसेहु पतिकर किए अपमाना। नारि पाव जमपुर दुखनाना॥'
शिवपुराण–'चतुर्विस्थाताः कथिता नार्यो देवि पतिव्रताः॥'

मानस— 'जग पतिव्रता चारि बिधि अहहीं।'
अ० रामा०-'अग्रेयास्याम्यहं पश्चात्त्वमन्वेहि धनुर्धरः।
आवयोर्मध्यगा सीता मायैवात्म परात्मनोः॥'

मानस— 'आगे राम अनुज पुनि पाछे।'
आ—'ब्रह्म जीव बिच माया जैसी॥'

एह का अलावे अउर श्लोकन से कुछ चौपाइन के नमूना :—

शास्त्रं सुचिन्तितमपि प्रतिचिन्तनीयं।
स्वाराधितोऽपि नृपतिः परिशंकनीयः॥
अंकेस्थिताऽपि युवतिः परिरक्षणीया।
शास्त्रे नृपे च युवतौ च कुतोर्वाशित्वम्॥

मानस— 'शास्त्र सुचिंतित पुनि पुनि देखिय।
भूप सुसेवित बस नहिं लेखिय॥
राखिय जदपि सदा उर माहीं।
जुबती शास्त्र नृपति बस नाहीं॥'
'भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः'
'फल भरिनम्र बिटप सब रहे भूमि नियराइ।'

एह तरह के बहुत विनल बिछल श्लोकानुवाद भरल बा मानस में। पंचबटी के कवनो खास बरनन मानस में नइखे आइल बाकी रामचन्द्रिका में ओह स्थान के बरनन अइसे बा :—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'सब जात फटी दुख की दुपटी कपटी न रहै जहां एक घटी।
निघटी रुचि मीच घटी हूं घटी जगजीव जतीन की छूटी तटी॥
अघ औघ की बेरी कटी बिकटी निकटी प्रगटी गुरु ज्ञान गटी।
चहुँ ओरन नाचत मुक्ति नटी गुन धूर-जटो बन पंचबटी॥

पंचबटी में सूपनेखा भगवान राम किहां प्रेम प्रस्ताव रखले बाड़ी जवन दुनो तपसिन का बीच ढिमिलाइ के ढरकि गइल बाटे आ अंत में सूपनेखा जी के नाक आ कानो कटा गइल बा। वाल्मीकि रामायन में सूपनखा जी साधारने रूप में जाइ के प्रेम प्रस्ताव पेस कइले बाड़ी। उहां बड़ी कटूसी भइलि बा। भगवान राम के कथ बाटे जे लखन लाल से विवाह करबू त शोभा बढ़ जाई आ लखन लाल जी कहले बानी जे उहां से विवाह कइला पर रंग में रंग ठिके ठीक मिल जाई। अंत में सूपनखा का विरूप भइला पर पहिले खरदूपन १४ राक्षसन के लड़े बदे भेजले बाड़न आ ओह लोगन का जुझला का बाद जुझार युद्ध भइलि बाटे।

मानस में कथा बा कि खरदूपण आदि का विनाश का बाद सूपनेखा रावन किहां जाइके उन्हें खिसियावे बदे भूमिपर भहराइ के रोअत कहले बाड़ी जे हे दशानन! तोहरा जियत हमार ई हाल हो गइल। प्रेम प्रस्ताव प्रसंग पर त परदा डालिए चुकल रही बाकी उनका के बड़ा जोर से रावन झरपेटलन त चतुराई से भगवान राम के पराक्रम बरनन कइके सीताजी का सुघराई सहित रावन के फंसावे के चारा लगा दिहली। जाल पर टाप रूपी बात गिरा दिहली जे तोहार बहिन जानि के ऊ लोग अइसन धुरमड़ेर कइल हा, अतने ना खरदूषन आदि के ऊ लोग बिनाश कर दिहल। एह पर रावन उत्तेजित होइ के मारीच के उकसवलन आ उनका 'रा' अस नाम सुनत दसकंधर आदि का तर्क दिहलो पर सोना मृग हो के प्रान गवइए देवे के पड़ल। सीता जी अग्नि में प्रवेस कइलीं आ माया सीता के रावन हर के लंका ले गइलन।

भगवान राम नर लीला करत पत्नी वियोग में बनबन भटके लगलीं, जटायु से सीता हरन के भेद खुलल आ जटायु के मिलल उत्तम पद। स्वर्ग में शबरी के घर आश्रम मतिन मरजादित भइल आ ऊ पवली परम पद। कुछ लोगन के कथन बा कि गोस्वामी जी नारी समाज के बड़ा नीचे गिरा देले बानी। ई शंका उठल बा शबरी का मुंह से अपना के अधम ते अधम कहला पर आ चौपाई, 'ढोल गँवार शुद्र पसु नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी' आदि पर। शुद्र शब्द के कुछ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामायनन में क्षुद्र लिखल बाटे, बाकी ताड़न शब्द पर लोग बिशेष तड़फड़ाइल बाड़न। ताड़न शब्द के माने तड़ातड़ तड़तड़ावल त होखे ना, ताड़न के माने सुधारल आ संवारल होला, जइसे, ताड़न दे इ के गुरु लोग चेलन के सुधारेलन। ढोल के डोरो का कड़ी के सुनियोजित ढंग से खींच के सुर साधल जाला। एह से ई ना कहल जा सके जे ढोल के डंटा भा लाठी से पीट के मधुर सुर लायक बनावल जाला। डा० गुप्त जो अइसन विद्वानो का गोस्वामी जी के अइसन कहवावल अनकुर जनाइल बाटे। पिचार करना बा जे गोस्वामी जी का मानस के सर्वप्रधान पात्र बानी भगवान राम। उहांका परीक्षा बदे जब सती गइल बानों त प्रनाम कइ के भगवान राम पुछले बानी जे वृषकेतु जी कहां बानी? सप्तर्षि लोग का अलावे भगवान शंकरो सीता के प्रनाम कइले बानीं। मानस में नारी सूपनखा बाड़ी आ सतियो जी। गोस्वामी जो के इष्टदेव पूरनब्रह्म परमात्मा भगवान राम सती का सोझा सिर झुकवले बानीं आ सूपनखा के कटाइल बाटे नाक-कान। विचार करना बाटे जे कवन प्रसंग कहां से कइसे उठल बा, भा कहे वाला के, कहां आ काहें अउर कइसे कहले बाटे। शबरी के प्रसंग लिहल जाय त ऊ स्वागत में आपन हृदय खोल के रख देले बाड़ी भगवान राम का सामने, जवना से उनकरि जूठ बइर बनि गइलि बाटे अमृत आ पवले बाड़ी पद कइसन दुर्लभ? पंचवटी के नासिक से एक कोस पर गोदावरी उद्गम किहां बतावल बाटे आ पम्पासर अब पेनायर के लोग बतावेलन। गोस्वामी जी पम्पासर का विषय में लिखले बानीं कि ओह सर के पता भगवान से शबरी जी बतवलीं जे—

पंपासरहि जाहु रघुराई। तहं होइहि सुग्रीव मिताई॥

वाल्मीकि में कबंध बध का बाद श्री राम के शबरी पम्पासर देखवले बाड़ी। तवना का बाद उनका शरीर छोड़ला के प्रसंग बा। उहां पम्पासर के बरनन त भइल बा, बाकी नारदागमन के चरचा नइखे। संस्कृत के विद्वान लोग बड़ा मनोहर बरनन कइले बाड़न पम्पासर के। बाण भट्ट जी का कादम्बरी नामक ग्रन्थ के पम्पासर बरनन-अवसि देखिए देखन जोगू कहल जाई।।

गोस्वामी तुलसीदास जी भगवान शंकर के उमा जो से कहल लिखले बानी कि 'हरि के भजन सत्य ह आ ई समस्त जगत सपना हटे।, भगवान राम पम्पा सरोवर का तीर पर गइलीं, जेकर जल संतन का हृदय अस निर्मल रहे आ ओह में चार मनोहर घाटो बान्हल रहे। पशु लोग उहां पानी पी रहल बाड़न, जइसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दानो का दुआरे जाचक लोग लागल रहेलन। पुरइनि का पत्तन से जल अइसन ढँपाइल बाटे जइसे माया के परदा परल रहला से निर्गुन ब्रह्म ना देखाई परसु। ओह अथाह सरोवर में मछली सदा एक रस रहेलिन, जइसे धर्मशील पुरुष सब दिन सुख से बितावेलन। सरोवर में रंग बिरंग के कमल फूल खिलला का अलावे भौंरन के मधुर सुर में गान, जल मुर्गा आ राज हंसन के बोल प्रभु का प्रशंसा अस जनात बाटे। चकवा आ बकुला आदि पंछिन के देखत मन भरि जात बा आ सुन्दर पंछिन के चहकल पथ पर जात बटोही के बरबस अपना ओर बुला रहल बा। सर का समीप मुनि लोग आश्रम बना लेले बानीं आ नियरा पास चम्पा, मौलेसरी, कदम, तमाल, पाटल, कटहल, ढाक आदि के पेड़ के कोमल पत्ता फूलन का सुगंध से भरल बाड़न जेकरा पर भंवरा भनक रहल बाड़न। उहां सुभावे से मन हरेवाली शीतल, मंद आ सुगन्ध बयार बह रहलि बा। कोइलर का कुहू कुहू का मिठास से त मुनि लोगन के भी ध्यान टूट जात बा। फल का लथरला से पेड़ अइसन ओरम गइल बाड़न जइसे परोपकारी पुरुष बड़हनि सम्पत्ति पाइ के बिनयावनत हो जालन। ओह सुन्दर सर में भगवान स्नान कइ के परम सुख पवले बानीं। मुनि लोग उहां पहुँच के प्रभु स्तुति कइला का बाद लवट गइल बानीं।

मानस में लिखल बा कि भगवान राम के विरहयुक्त जानि के नारद मुनि का मन में अइसन भासल बाटे जे हमरे स्राप से इहां का ई दुख उठावे के परल बा। मुनिजी रामगुन गान करत उहां पहुँचल बानीं आ भगवान राम उहां के हृदय से लगा लेले बानीं। मुनिजी भगवान राम से एगो बरदान मंगले बानीं। एह पर भगवान राम कहले बानी,—

'कवन बस्तु असि प्रिय मोहि लागी। जो मुनिवर न सकहु तुम्ह मांगी॥'

नारदजी के कथन बा कि भक्ति पूनिमा के रात बाटे, ओह में 'राम' नाम पूनमचांद रूप होइ के भक्तन का हृदयरूपी विमल आकाश में बास करे। भगवान राम 'एवमस्तु' कहले बानी आ मुनिवर के माथ स्नेह से उहां का सोझा झुक गइल बाटे। उहां नारदजी पुछले बानी जे हम रावां माया बस हो के विवाह बदे आतुर रहीं आ अपने का हमें विवाह काहें ना करे दिहलीं?

भगवान राम के कथन बा कि हे मुनि! जे सब आश-भरोस छोड़ के हमें भजेला, तेकर हम सदा ओसहीं रक्षा करींला, जइसे बालक के माता राखेली। छोट बच्चा दउरि के आग आ साँप पकड़े जाला, महँतारी झपट के बच्चा के बँचा लेली। हमार सेवक लोग हमरे बल पर रहेलन, ग्यानो प्राप्त भइला पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ भक्ति के ना छोड़सु। काम क्रोधादि के प्रवल सेना बाटे जवना में माया रूपिनी स्त्री त अवरू दुखदायी बाड़ी। हे मुनि ! वेद पुरान आ संत लोग के कथन बा कि मोहरूपी वन में कामिनी वसंत रूप बाड़ी। जप, तप आ नियमादि जल-स्थलन के कामिनी कटाक्ष ग्रीष्म ऋतु होइ के सोख लेली। काम क्रोधादि कटाक्ष वेंग (मेढ़क) रूप बाड़न, जेकरा के बरखा ऋतु बनि के कामिनी उत्तेजित कर देली। दुरबासना कमलन के समूह हटे, जेकरा के सदा सुख दात्री शरद ऋतु सरूपा कामिनी हई। धर्म समस्त कमलन के झुंड ह, जेकरा बदे कामिनी हिम ऋतु समान बाड़ी आ ममता रूपी हिंगुवा, शिशिर रूप कामिनी पाइ के हरियर हो उठेला। भगवान राम विरक्त लोगन बदे उहां के पुरुष फंसावे वाली वंशी वत-वले बानी।

नारदजी त विरक्त रहवे कइलीं, इचिका मन में मद के मइल लग गइला से ओह अन्हपट में अझुरा गइल रहीं। नारदजी भगवान राम से उहां संत लक्षन पुछले बानीं, जवना पर गोस्वामी जी का शब्दन में उहां के कथन अइसे बा—

षट बिकार जित अनघ अकामा। अचल अकिंचन सुचि सुखधामा॥
अमित बोध अनीह मितभोगी। सत्यसार कबि कोबिद जोगी॥
सावधान मानद मदहीना। धीर धर्म गति परम प्रबीना॥
दोहा—गुनागार संसार दुख, रहित बिगत संदेह।
तजि मम चरन सरोज प्रिय तिन्ह कहुं देह न गेह॥
निज गुन श्रवन सुनत सकुचाहीं, पर गुन सुनत अधिक हरषाहीं॥
सम सीतल नहिं त्यागहिं नीती, सरल सुभाउ सबहि सन प्रीती॥
जप तप व्रत दम संजम नेमा। गुरु गोविन्द बिप्र पद प्रेमा॥
श्रद्धा छमा मयत्री दाया। मुदिता मम पद प्रीति अमाया॥
बिरति बिवेक बिनय बिग्याना। बोध जथारथ बेद पुराना॥
दंभ मान मद करहिं न काऊ। भूलि न देहिं कुमारग पाऊ॥
गावहिं सुनहिं सदा मम लीला। हेतु रहित परहित रत सीला॥
मुनि सुनु साधुन्ह के गुन जेते। कहि न सकहिं सारद श्रुति तेते॥

अपना युवतिन पत्नी का अमर उपदेश के राम उपासक गोस्वामी जी ओह सन्त लक्षन क्रम का अन्त में कहले बानीं कि युवती स्त्रीन के शरीर दीप का लो मतिन बाटे; हे मन ! तूं ओह के फतींगा ना बन के काम आ मद छोड़के भजन अउर सत्संग अपना ल। पद अइसे बा —

"दीप सिखा सम जुबति तन, मन जनि होसि पतंग।
भजहि राम तजि काम मद, करहिं सदा सत्संग॥"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आगे चले बहुरि रघुराया

(किष्किन्धा)

एह कांड का शुरू में गोस्वामी जी का दुइ श्लोकन में वन्दना बाटे। पहिला श्लोक में उहाँ का कहले बानीं किकुन्दफूल आ नीलकमल अस सुन्दर गोर आ श्याम रंग, अत्यन्त बलवान, विग्यान के धाम, शोभा सम्पन्न, श्रेष्ठ धनुषधारी वेदन से बंदित, गउ आ ब्राह्मनन के प्रेमी, माया से मानव रूप धारन कइले, श्रेष्ठ धर्म बदे कवच सरूप आ सबके हितकारी, सीताजी का खोज में लागल बटोही रूप रघुकुल के श्रेष्ठ भगवान राम आ लखनलाल जी दूनो भाई हमरा के भक्ति-प्रद होखीं!

दोसरका श्लोक में गोस्वामीजी के कथन बा कि ऊ पुन्यात्मा पुरुष लोग धन्य बा जे वेदरूपी समुद्र से उपजल आ कलि मल के सदा नाश कर देवेवाला अविनाशी भगवान शंकर के सुन्दर आ श्रेष्ठ मुखरूपी चन्द्रमा में सदा शोभायमान, जन्म मरन रूपी रोग के औषध, सबके सुखदाता, आ जानकी जी का जीवन सरूप रामनाम रूपी अमृत के निरन्तर पान करत रहेला।

किष्किन्धा पहाड़ी का नाम पर किष्किन्धा नाम पड़ल बाटे, जे मैसूर का पास में बा। ऊपर का दुइ श्लोकन में वन्दना का बाद एगो सोरठा में गोस्वामी जी बड़ा रोचक बरनन कर देले बानी विश्वनाथ पुरी के। ऊ अइसे बा —

'मुक्ति जन्म महि जानि ग्यान खान अघ हानि कर।
तहँ बस संभु भवानि सो कासी सेइय कस न॥

भगवान राम आगा बढ़ के ऋष्यमूक पर्वत का नियरा पहुँचल बानीं, जहाँ अपना मन्त्रिन्ह का साथ सुग्रीव के निवास रहे। भगवान राम के देख के सुग्रीव का भारी संदेह भइल बाटे आ ऊ हनुमानजी के जाँचे बदे पठवले बाड़न, जे ई जोड़ी के बाटे? गोस्वामी जी विप्र का रूप में हनुमान के पठवले बानीं, वाल्मीकि में भिक्षुक रूप कहल बाटे आ अध्यात्म में बटु शब्द दिहल बा। भगवान राम से पूछा-पेख भइला का बाद मानस में कहल बा कि 'लिए दुओ जन पीठ चढ़ाई।' सुग्रीव से भेंट करवला का साथ दूनो ओर के कथा दोहरावत, अग्नि के साखी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देइ के हनुमान जी नर वानर का बीच मित्रता करा देले बानीं। कुछ विद्वानन के मत बा कि हनुमान जी भा सुग्रीव आदि बन्दर ना रहन, बलुक ओह लोगन का धाजा के चिन्ह बानर आ भालू के रहे।

मानस में भगवान राम के बल परीक्षा भइल बाटे ताड़ फेड़ एक ही बान से बेधवा के आ बालि का बान लगला पर बालि अतने भर कहले बाड़न जे—

'मैं बैरी सुग्रीव पिआरा। अवगुन कवन नाथ मोहिं मारा।'

एह पर भगवान के कथन बा कि—

'अनुज बधू भगिनी सुत नारी। सुनु सठ कन्या सम ये चारी॥
इन्हहिं कुदृष्टि बिलोकइ जोई। ताहि बध कछु पाप न होई॥'

वाल्मीकि में बालि बहुत व्यंग बोलल बाड़न आ मानस में ऊ कहले बाड़न जे हे नाथ! दया करीं आ जवन बरदान माँगत बानीं तवन दीं। हम कर्मानुसार जवना योनि में जन्म लीं अपने का चरन कमल से प्रेम करीं। हे कल्यान दाता! ई हमार पुत्र अंगद विनय आ बल में हमरे मतिन बाड़े, इनका के आपन दास बनाईं। वाल्मीकि में बालि, अंगद के सुग्रीव के सँउपले बाड़न।

भगवान राम तारा के ज्ञान देइके पंच तत्व—पृथ्वी, जल, आग, आकाश आ वायु के विवेचन कइले बानीं। उहाँ गोस्वामी जी शंकर भगवान के उमा जी से कहल बतवले बानीं कि—

'उमा दारु जोषित की नाईं। सबहिं नचावत राम गोसाईं।

मानस के—'अनुज बधू भगिनी सुत नारी।' आदि चौपाई अयात्म रामायन का श्लोक—

'दुहिता भगिनी भ्रातुर्भार्याचैव तथास्नुषा।

आदि श्लोकन का अनुरूप बाटे। किष्किन्धा के बरखा बरनन में त गोस्वामी जी श्री मद्भागवत का श्लोकन के सदेह रूप देखला देले बानीं। जइसे :—

'लोकवन्धुपुमघेपु विद्यतश्चल सौहृदाः।
स्थैर्यं न चक्रुः कामिन्यः पुरुषेपु गुणिष्विव॥ याने—
दामिनि दमकि रहत घन माहीं। खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं॥
'गिरयो वर्षं धाराभिर्हन्यमाना न विव्यथुः।
अभिभूयमाना व्यसनेर्यथाऽधोक्षजचेतसः॥ याने—
बूंद अघात सहत गिरि कैसे। खल के बचन संत सह जैसे॥
'आसन्नुत्पथवाहिन्यः क्षुद्रनद्योऽनुशुष्यतीः।
पुंसो यथाऽस्वतन्त्रस्य देह द्रविण सम्पदः॥ याने—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छुद्र नदी भरि चली उतिराई। जस थोरेहुँ धन खल इतराई ॥

'श्रुत्वापर्जन्य-निनदं मण्डूका व्यसृजन् गिरः।
तूष्णीं शयानाः प्राग्यद्वद्ब्राह्मणा नियमात्यये ॥ याने—

दादुर धुनि चहुं दिसा सोहाई। बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई।

पीत्वापः पादपाः पद्भिरासन्नानात्ममूर्तयः।
प्राकक्षामास्तापसाश्रान्ता यथा कामानुसेवया ॥ याने—

नव पल्लव भे बिटप असोका। साधक मन जिमि मिले बिबेका ॥

क्षेत्राणि सस्यसम्पद्भिः कर्षकाणां मुदं ददुः।
धनिनामुपतापश्च देवाधीनम जानताम् ॥—याने

सस संपन्न सोह महि कैसी। उपकारी के संपति जैसी।

शरद बरनन में—'शरदा नीरजोत्पत्या नीराणि प्रकृतिं ययुः।
भ्रष्टानामिव चेतांसि पुनर्योगनिषेवया ॥ - याने

सरिता सर निर्मल जल सोहा। संत हृदय जस गत मद मोहा ॥

गोस्वामीजी बरखा ऋतु का अलावे शरद ऋतुओ के बड़ा सारगर्भित आ उपमा का ख्याल से अति उत्तम बरनन कइले बानीं। उहाँ भगवान राम लखन लाल से कहले बानीं कि अब शरद ऋतु आ गइलि। फुलइला कास से धरती छा गइलि याने बरखा ऋतु आपनि बुढ़ापा जनाइ दिहलस। अगस्त तारा उगि के राह के जल सोख लिहलन, जइसे सन्तोष लोभ के लोप कर देला। नदी आ तालाबन के निर्मल जल अइसन शोभत बाटे जइसे मोह रहित संतन के हृदय होखे। नदी आ तालाबन के जल रसे-रसे सूख रहल बाटे जइसे ग्यानी लोग ममता के त्याग कर देलन। शरदागमन जान के खंड़लिच पंछी ओही तरह से आइ गइलन जइसे, समय पाइ के पुन्य प्रगट हो जाला। धरती पर ना पांक बाटे, ना धूरि, धरती अइसन शोभत बाड़ी, जइसे नीति निपुन राजा के करनी होखसु। जल घटि गइला से मछलिन का बेकली बाटे, जइसे विवेकहीन गृहबासी धन बिना बेकल हो जालन। बिना बदरी के निरमल आकाश अइसन शोभत बा, जइसे भगवान भक्त सब आशा छोड़ के शोभायमान हो जालन। जहाँ-तहाँ तनिका मनिका बरखो होत बाटे जइसे, हमारि भक्ति बिरले केहू-केहू पाइ लेला।

शरद ऋतु पाइ के राजा, तपसी, बैपारी आ भिखारी बैपार आ भीख बदे नगर छोड़ के ओसहीं चलल बाड़न जइसे हरि भक्ति पाइके चारू आश्रमनके लोग श्रम के त्याग कर देलन। जे मछली अथाह जल में बाड़ी, ओसहीं सुखी बाड़ी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जइसे प्रभु शरन में चल गइला पर एकहू बाधा ना रह जाय। कमलन का फुलला से सरोवर अइसन शोभत बाटे जइसे, निर्गुन ब्रह्म सगुन रूप हो गइला पर शोभे ला। भौंरन के भेरी अनूप बा, पंछिओ लोग भी नाना प्रकार के शब्द कर रहल बाटे आ रात देख के चकवा ओसहीं बा जइसे, दोसरा के संपत्ति देख के दुष्ट बेहाल हो जाला। पपीहा रट लगवले बाड़न, बेचारू पियासल बाड़े जइसे, भगवान शंकर के द्रोही सुख बदे सुकसुकात रहेलन। शरद ऋतु का ताप के रात के समय चन्द्रमा ओसहीं हरलेत बाड़न जइसे, सन्त दर्शन से पाप पराइ जाला। चाँद पर चकोरन के ओसहीं टकटकी लागलि बा जइसे, भक्त लोग भगवान के दर्शन में लीन हो जालन। मस आ डँस जाड़ा के भय से अइसन बिला गइल जइसे ब्राह्मन से विरोध कइला पर कुल के नाश हो जाला। बरखा ऋतु में धरती पर अनघा कीड़ा-मकोड़ा उपजि गइल रहन, से शरद ऋतु में ओसहीं बिला-संथा गइलन जइसे सद्गुरु मिलला पर संसय आ भ्रम उतिया जालन।

अन्त में भगवान के वचन अपना शब्दन में गोस्वामी जी लिखले बानीं कि 'बरखा गत निर्मल ऋतु आई। सुधि न तात सीता के पाई। भगवान राम के ऊ लोला रूप देख के लखनलाल जी बान सराह लिहलीं। सुग्रीवजी सचेत हो के राम काज बदे अपना जन लोगन के चेता दिहलन जे मन, वचन आ कर्म से सीताजी के टोह लगाना बाटे। ओहिजो गोंस्वामी जी श्रीमद्भागवत का श्लोक–

'पृष्टतः सेवयेदर्कं जठरेण हुतानम्।
स्वामिनं सर्वभावेन परलोकममायया॥

के भावार्थ चौपाई—

भानु पीठि सेइय उर आगी।
स्वामिहिं सर्व भाव छल त्यागी॥

लिखके नानापुराण निगमागम के रूप दर्शवले बानीं।

सम्पाती प्रसंग पर लोग शंका करेलन जे जियत प्रानी का नियरा गीध जइबे ना करे तब पंखहीन सम्पाती से जामवंत, हनुमान जी आ अंगद काहें भयाइ गइलन ? एह समाधान में टीकाकार लोगन के मत बा कि भटकत-भुलात उहां सब लवन समुद्र का तीर पर पहुंचल रहीं जहां के चौपाई अइसे बाड़िन सन :—

कह अंगद लोचन भरि बारी। दुहुं प्रकार भइ मृत्यु हमारी॥
इहां न सुधि सीता कै पाई। ऊहां गए मारहिं कपि राई॥
पिता बधे पर मारत मोही। राखा राम निहोर न ओही॥
अस कहि लवन सिंधु तट जाई। बैठे कपि सब दर्भ डसाई॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओहिजा सम्पाती कहले बाड़न जे आज एह सब जने के खा घालब। एहो पर गीध के बचन सुनला पर डर भइल बाटे। उल्लू आ गीध के बोलल भा नियरा आइल अशुभ समझल जाला, तबना पर अंगद जी हार मान के कहिए चुकल रहन जे दूनो प्रकार से मरन भइल। कपिराई त रहन उहां से दूर बाकी लवन-सिंधु तट परके समस्या साचो के मरने मतिन रहलि। लंका कांड में चौपाई बाटे—

"बैठहिं गीध उड़ाहिं सिरन्ह पर।
चलत होहिं अति असुभ भयंकर॥"

अंगद जी जटायु मरनो के उहां प्रगट कर देले बाड़न जवना से उन्हन लोग का आपन मरन अकारथ लउकत रहे आ आगाहिए पर सम्पातीओ पेट भरे वदे अगराइल रहन बाकी, प्रभु कृपा से ओहिजा अशुभ शुभ हो गइल आ सांच हो गइल—

'गरल सुधा रिपु करहिं मिताई।'

सीता खोज में हनुमान जी लंका जाए वदे समुद्र लांघ जाए के तेयार हो गइलीं, तबना पर जामवंत जी कहले बानी :—

'एतना करहुं तात तुम्ह जाई।
सीतहिं देखि कहहुं सुधि आई॥
तब निज भुज बल राजिव नैना।
कौतुक लागि संग कपि सेना॥'

गोस्वामी जी छंद में लिखले बानीं कि बानरी सेना का साथ राक्षसन के संहार कइ के उहां का सीता जी के लेइ आइब तब देवता आ नारदादि मुनि लोग भगवान का त्रिलोक पवित्र कर देबे वाला यश बखनिहन, जेकरा सुनला, गवला आ कहला समझला के मानव परम पद पावेलनि आ जवना के प्रभु चरन के भंवरा तुलसीदास गावत बाड़न। कांड का अन्त में गोस्वामी जी के उपदेश एह सोरठा में बा :—

'नीलोत्पल तन स्याम काम कोटि सोभा अधिक।
सुनिय तासु गुन ग्राम जासु नाम अघ खग बधिक॥'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राम काजु करि फिरि मैं आवौं

(सुन्दर)

एह कांड का शुरू में तीन श्लोक बाटे। पहिला में गोस्वामी जी लिखले बानीं कि–शान्त, सनातन, प्रमानन से परे, पाप रहित, मोक्ष रूप, परम शान्ति दाता, ब्रह्मा, शिव आ शेष जी से सदा सेवित, वेदान्त से जाने लायक, सर्वव्यापक, देवश्रेष्ठ, माया से मानव रूप में लउकेवाला, सब पापन के बिनाशक, करुना के खान, रघुकुल में श्रेष्ठ आ राजन के सिरोमनि, राम कहावेवाला जगदीश्वर के हम वंदना करत बानीं। दोसरका श्लोक में उहां का कहले बानी कि हम सांच कहत बानीं कि हमरा हृदय में दोसरि कवनो कामना नइखे। हे रघुकुल श्रेष्ठ! हमें आपनि पूर्ण भक्ति दीं आ हमरा मन के कामादि दोषन से रहित करीं।

तीसरा श्लोक में उहां के हनुमत-प्रणाम अइसे बाटे :—

'अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं दनुजबनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिप्रिय भक्तं वातजातं नमामि॥'

अतुलित बलधाम, सुमेरु अइसन शोभायमान शरीर वाला, असुर रूपी बन बदे अग्नि रूप, ग्यानिन में अगुआ आ सब गुन के आधार, बानर के स्वामी, रघुनाथ जी के भक्त पवन सुत हनुमान जी के हम प्रनाम करत बानी।

हनुमान जी जामवंत से बतकही का बाद समुद्र तट का पहाड़ पर अनासे कूद के चढ़ गइलीं आ कुलांचि के जहां से लंका जाए बदे कुदलीं, पहाड़ी पताल में धस गइलि। वाल्मीकि रामायन में लिखल बा कि—महेन्द्र पर्वत से आकाश मार्ग से हनुमान जी लंका के पयान कइलीं।

मानस में सुरसा परीक्षा का बाद छायाग्राही असुर के वध कइके हनुमान जी एगो पहाड़ी चोटी पर से लंका का ओर आंख उठवलीं। चारू ओर समुद्र तवना का बीच में ऊंच लंका का चहार दीवारी से प्रकाश होत रहे। विचित्र मनिन से जड़ल चहारदीवारिन का भीतर अनेकन्ह सुन्दर भवन रहन स। चौक, बाजार, सुन्दर सड़क आ गलियन से नगर बड़हीं शोभात रहे। अनघा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाथी, आ खच्चरन का अलावे पैदल आ रथ आदि गनले गनाए वाला ना रहे। अनेक रूपन में असुरन के दल रहे, आ अत्यन्त बलशाली सेना रहे जेकर बरनन कइल कठिन रहे।

वन, बाग, बागइचा, फुलवारी, सरोवर, कुंआँ आ बावलिन के विचित्र शोभा रहे। मानव, नाग, देव आ गंधर्वन के कन्या लोगन के सुन्दरता मुनियन के मोहे लायक रहे। पर्वताकार पहलवान लोग अखाड़ा में गर्जत आ ललकारत लड़त-भिड़त रहन। भयावन शरीर वाला करोड़न वीर नगर का चारू तरफ अगोरिया करत रहन। कहीं असुर लोग भैंइस, मानव, गदहा, गाय आ बकरा भकोसत रहन। नगर के अनघा अगोरिया देख के हनुमान जी मस अस रूप धइ के लंका में पइठलीं, तवनो पर लपक के लंकिनी लोक लेवे पर उतारू हो गइली। बेचारी का बानर स्वामी के अइसन मुक्का लागल जे चुक्का मतिन मुंह बाइ के लहू उगिले लगली।

वाल्मीकि के कथ बाटे जे लंका के बिभो देख के हनुमान जी का सक भइल हा कि कार्य सिद्धि में सन्देह बा। उहाँ का मनेमन गुने लागल बानीं जे हमरा दल के गनल गुथल-जामवन्त, अंगद, नल, द्विविद आ सुग्रीव आदि बीरन के छोड़ के अउर लोग लंका में ना पइठि पइहन।

गोस्वामी जी लिखले बानीं जे 'मन्दिर मन्दिर प्रति कर सोधा' आ वाल्मीकि में लिखल बा कि हनुमानजी राम, लखन, सीता आ सुग्रीव आदि के प्रनाम करके सीता जी का टोह में लग गइल बानीं। खोजते खोजत उहाँ का रावन का रनिवास में पहुँचल बानी जहाँ ऊ अपना अति सुन्दरी कामिनिन का साथ विराज रहल बाड़न।

मानस का अनुसार सीताजी के सुलाख अइसे लागल बाटे—

'पुनि सब कथा बिभीषन कही। जेहि बिधि जनक सुता तहँ रही॥'

भावार्थ बा जे विभीषन जी से अशोकवाटिका में जानकी जी का रहला के पता हनुमानजी का लागल। अध्यात्म रामायन में लंकापुरी का देवी से पता पाइके हनुमानजी अशोक बाटिका में गइल बानीं। ओह ग्रन्थ में हनुमानजी का उहाँ विभीषन से भेंट ना होइके रावन सभा में देखादेखी भइलि बाटे। गोस्वामी जी लिखले बानीं कि विभीषन का बतवलानुसार हनुमानजी अशोकवाटिका में पहुँच के एगो रुख पर बइठल बानीं आ रावन का सीताजी का सामने चारू राजनीतिक पासा फेंकला का बाद सीताजी का उत्तर में अन्त के चौपाई बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्याम सरोज दाम सम सुन्दर। प्रभु भुज करि कर सम दसकन्धर ॥
सो भुज कंठ कि तव असि घोरा। सुनु सठ अस प्रवान पन मोरा ॥

सीताजी के ई प्रन जे, या त स्याम कमल का माला आ हाथी का सूँड़ मतिन राम भुजा हमरा गला में पड़ी या रावन के तलवार। बलिहारी बा भारतीय संस्कृति के। सीताजी का ठाँव-पटाक उत्तर पर क्रोधित होके रावन हाथ चलावे के तेयार हो गइले, जवना के मय तनया मन्दोदरीजी नीति का सहारे सम्हार लिहली। ऊ वेचारू हार दाव के कुछ राक्षसिन के सिखा-पढ़ाइ के बिदा कइलन जे तुहन लोग इन्हें डर-भय देखाइ के ठीक कर द, अउरो लोग जब कह सुनके उहाँ से विदा भइल त त्रिजटा आपन सपना सीताजी के सुनवली। सीता जी चन्द्रमा से आग के जाचना करत रहीं आ अशोक से शोकातुर देह के अन्त करे बदे अंगार माँगत रहीं, तवले हनुमान जी भगवान राम के दिहलि अंगुठी अंगारे अस टप देना चुआ दिहलीं।

रावन के त्रास सीताजी का मुँह से सुनला का अलावे हनुमानजी परगटे देखिओ ले ले रहीं। उहां का कहलीं जे प्रभु के आदेसे नइखे नाहीं त हम एही लगले रावाँ के लिअवलहीं चलतीं। जानकीजी से अनुमति लिहला का बाद हनुमानजी बाग के फल खाइके कई जने असुर लोगन के चहलि के चोखा बना दिहलीं। नाग-फाँस का धोखा में बान्हके असुर लोग उहाँ के रावन दरबार में ले गइल, जहां बड़ा निठाह डपटा-डपटी आ कथ-पद भइल। अन्त में हनुमानजी का पोंछ में चिरकुट लपेट के आ घीव तेल चभोर के असुर लोग आग धरा दिहलन। हनुमानजी के पोंछ बन गइलि लंका दहन बदे लहकत लुकार आ दइब जोग से तवनि चौआई चकोहलस जे लंका जरि के भुरकुस हो गइल।

लंका से हनुमानजी का लवट के गइला पर भगवान राम जब हाल समाचार पुछलीं त हनुमानजी अइसे कहलीं :—

नाम पाहरू दिवस निसि, ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित, जाहिं प्रान केहि बाट ॥

गोस्वामी जी के बड़हीं उत्तम उकुति बाटे सीताजी का शरीर में प्रान रोकाइल दरसवला के। भगवान नर रूप धारन कइ के लीला करत रहीं ओही क्रम में हनुमानजी से पुछलीं कि रावाँ ओइसन सुरक्षित लंका जराइ कइसे दिहलीं। एह पर हनुमानजी के 'हनुमन्नाटकम्' का श्लोक में प्रभु का प्रभुताई के भूमिका अइसे बा :—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'शाखामृगस्य शाखायाः शाखां गन्तुं पराक्रमः।
यत्पुनर्लंघितोऽमभोधिः प्रभावोऽयं प्रभोतव ॥

भावार्थ चौपाई—'साखामृग कै बड़ि मनुसाई। साखा तें साखा पर जाई॥

कहे के माने जे हम त समुद्र लाँघ के लंको के खउर अइलीं, से सब रवें प्रताप से।

बेचारे विभीषन जी नीति बघारे चलल रहीं रावन सभा में तवले ऊ मत-वाला रावन, लतिआइ के उन्हें दुरदुरा दिहलन दरबार से दूर। समय बाउर भइला पर आपन समीपिए भर ना बलुक बुद्धि भी बाँव हो जाले। रावन का तड़ि-अवला पर तुरन्त विभीषन जी गिलगिलात प्रभु शरन में पहुँचलीं। ओहिजा रावन के दिहल विष बनि गइल विभीषन बदे बिषया। जे राज बड़ा कठिन तप कइ के रावन पवले रहन से आनने-फानने में अनासे विभीषनजी का मलया गिरि चन्दन का तिलक पर ना बलुक समुद्र का पनिए पर प्राप्त हो गइल।

लंका जाए बदे बानरी सेना सनसनाइ उठलि आ समुद्र चुप घुआ मतिन धंखई कछा बलन। लखनलाल जो का लाईफूसी ना सोहात रहे उहाँ। का 'भर बाँह चूड़ी ना त पट देना रांड़' के पक्षपाती रहीं। रावन का भेदिया के उहां बानर बकोटे लगलन त उहें का ओह बेचारू के बचा दिहलीं। लखनलाल जो रावन का भेदिया के भी बड़ा विचित्र पत्र देले रहीं। ओह पत्र के रावन वायां हाँथ से थम्हलन आ सुक के सीता लवटावे वाला उपदेश सुनत लतिया दिहलन। अनाथ सुक प्रभु किहां जाइ के सनाथ हो गइलन।

सेना का सागर पार करे बदे प्रभु का ताड़न पर अन्त में समुद्र सुखा जाए पर तेयार हो गइलन आ तेकरा बाद कहलन जे लरिकाँई में नल आ नील दूनो भाई ऋषि के शुभाशीष पवले वाड़न जे उनकर छुअल पत्थल के ढोका समुद्र में पँवरे लागी। समुद्र प्रभु से विदा लिहलन आ भगवान राम दल का ईहे उत्तम जनाइल जे समुद्र में सेतु बान्हल जाय। सुन्दर काण्ड के अन्त में गोस्वामीजी कहले बानीं कि रघुनाथजी के गुनगान सभ सुन्दर मंगलन के दाता बा। जे एह के सादर सुनो ऊ बिना कवनो साधन के भवसागर पार कर जाई। दोहा अइसे बा :—

'सकल सुमङ्गल दायक रघुनायक गुनगान।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जल जान ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिन्धु पार प्रभु डेरा कीन्हा
(लंका)

एह कांड का प्रथम श्लोक में गोस्वामीजी श्रीराम वन्दना कइले बानीं आ आगे का दू श्लोकन में अवढर दानी भगवान शंकर के। पहिले उहाँ का कहले बानीं कि कामारि भगवान शंकरजी से सेवित, भयभव हारी, काल रूप मातल हाथी बदे सिंह सरूप, योगी लोगन के स्वामी, ग्यान से जाने लायक, गुनन के सागर, अजेय, निर्गुन, विकार रहित, माया से परे, देवतन के स्वामी, दुष्ट बध में तत्पर, ब्राह्मनन के रक्षक, जलवाला मेघ समान सुन्दर श्याम, कमल नयन, पृथ्वीपति याने राजा के रूप में परम देव श्रीराम जी के हम बन्दना करत बानीं।

दोसरका श्लोक में उहाँ का कहले बानीं कि शंख आ चन्द्रमा अस सुन्दर शरीर वाला, बघछल धारी, काल अस भयानक साँपन के भूषन धारी आ चन्द्रमा प्रेमी, काशी पति, कलि का पाप समूह के बिनाशक, कल्यान बदे कल्प वृक्ष, गुनन के खान आ काम के भस्म करे वाला पार्वती पति शंकरजी के हम नमस्कार करत बानीं। तिसरका श्लोक अइसे बा :—

'यो ददाति सतां शम्भुः कैवल्यमपि दुर्लभम्।
खलानां दण्डकृद्योऽसौ शङ्करः शं तनोतु मे॥

जे सत्पुरुषन के अति दुर्लभ कैवल्य मुक्ति दे घालेला आ जे दुष्टन के दण्ड देवेवाला बाटे, से कल्यानकारी भगवान शंकर हमरा कल्यान के बढ़ाईं। आगा एगो दोहा बा जवना के माने बा कि—लव, पल, परमानु, साल, युग आ कल्प जेकर बान अउर काल जेकर धनु हटे, हे मन! तूं ओह श्रीराम के काहें नइखस भजत? भगवान राम, उहाँ रामेश्वरम् के स्थापना कइले बानीं आ सेतु बन्हइला पर राम सेना सुबेल पहाड़ पर उतरलि बाटे।

भगवान दक्खिन दिशा की ओर देख के विभीषन से कहले बानीं कि 'भयावनि बदरी गतहीं गते गुरगुराति बा, बीहड़ बनउरी (ओला) मत भहराइ।' विभीषन कहले बाड़न जे ई बिजुरी, बदरि आ घटा ना, बलुके लंका चोटी के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एगो महल हटे। उहाँ रावन नाच गान के अखाड़ा देख रहल बाड़न। रावन, सिर पर मेघअंबर डाल ले ले बाड़न उहे करिया बदरी अस जनात बा आ मंदोदरी का कान के कुंडल (बाली) लपकति बाटे से ही बिजुरी बुझाति बा। उहाँ अनुपम ताल आ मृदंग बज रहल बा, सेही बादर का गुरगुरइला अस जनात बाटे। रावन के अभिमान समझ के भगवान राम के बान छूटल अउर रावन के छत्र मुकुट आ मन्दोदरी के कुण्डल कट के धरती पर गिर गइल। रंग में भंग करके बान आ गइल फिर के भगवान का पास।

भोर भइल। प्रभु के प्रनाम करके अंगदजी लंका में पइठलीं आ पहिलहीं भइल भेंट रावन का बेटे से। ऊ अंगद जी पर लात उठवलन तवले इहाँ का उन्हें तड़ाक देना पटक के काल कर दिहलीं। भइल हड़कंप।

अंगद जी का रावन दरबार में दाखिल भइला पर बड़ी टिभोली भइलि बाटे। सबका मतिन अंगदो जी रावन के भगवान के शरन गहावे बदे प्रयास कइले बानीं, अंत में तहतुक भइला का बाद अंगदजी हांका मार देले बानीं कि—

'जौ' मम चरन सकहिं सठ टारी।
फिरहिं रामु सीता मैं हारी॥

प्रयास बहुत भइल बाटे, बाकी—

भूमि न छांड़त कपि चरन देखत रिपु मद भाग।
कोटि विघ्न ते संत कर मन जिमि नीति न त्याग॥

गोस्वामी जी हनुमन्नाटक के श्लोकन का आधार पर बहुत ज्यादा चौपाई लंका कांड में लिखले बानी, जइसे :—

रे रे शाखामृग त्वामहं धर्मशीलतया कटुप्रलापिनमपिन हन्मि। उक्तं च, यथोक्तवादी दूतः स्यान्नसवध्यो मही भुजा। भावार्थ चौपाई—

खल तव कठिन बचन सब सहऊं।
नीति धर्म मैं जानत अहऊं॥

'रामस्त्री विरहेण हारितवपुस्तच्चिंतया लक्ष्मणः। सुग्रीवोंगदशल्यभेदकतया-निर्मूल कूलद्रुमः। गण्यः कस्य विभीषणः स च रिपोः कारुण्यदैन्यातिथिर्लंकातकं-विटंक पावकटुर्वध्यो ममैकः कपिः॥ भावार्थ चौपाई—

'तव प्रभु नारि बिरह बलहीना।
अनुज तासु दुख दुखी मलीना॥
तुम्ह सुग्रीव कल्पद्रुम दोऊ।
अनुज हमार भीरु अति सोऊ॥'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'रे रे रावण रावणा: कति बहुनेतान्वयं शुश्रुमः। प्रागेकं किलकार्तवीर्यनृपते-र्दोर्दंडपिंडीकृतम्। एकं नर्त्तनदापितान्नकवलं दैत्येन्द्रदासी गणोह्यं वक्तुमपि त्रपामह इति त्वं तेषु कोऽन्योऽथवा॥ भावार्थ चौपाई—

कहुं रावन रावन जग केते।
मैं निज श्रवन सुने सुनु जेते॥

अंगद जी, रावन का लथरइला प्रसंगन से उनका के लथार देले बानीं बाकी, तवनो पर ऊ थेथरई करत कहले बाड़न कि—

हम जगत-प्रसिद्धि प्रतापी रावन हवीं आ—

तेहि रावन कहं लघु कहसि नर कर करसि बखान।
रे कपि बर्बर खर्ब खल अब जाना तव ग्यान॥

खाली अतने भर रावन नइखन कहले बलुक नल-नील अइसन वीरन के कलाकार भर कहले बाड़न आ अपना कैलास उठवला के चरचा करत अपने हाथे आपन माथ काट के चढ़वला के बड़ा बखान कइले बाड़न। एह पर 'हनुमन्नाटक' में अंगद जी के कहल एगो श्लोक अइसे बाटे जवना के भावार्थ गोस्वामी जी के चौपाई में भी इहां बा :—

रे रे रावण हीन दीन कुमते रामोऽपि किं मानुषः। किं गंगापि नदी गजः सुरगजोऽप्युच्चैश्रवाः किं हयः कामोऽपि धन्वी नु राम बध्योन शक्तः स्याद्रक्षितुं सुर सत्तमैः ब्रह्म रुद्रेन्द्रसंज्ञश्च त्रैलोक्यप्रभुभिस्त्रिभिः।

राम मनुज कस रे सठ बंगा। धन्वी काम नदी पुनि गंगा॥
जौं खल भयेसि राम कर द्रोही। ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही॥

लंका में समर के श्री गणेश भइल अंगद जी से आ बाद में भइलि कचवा-बद्ध खचखचहटि। वानर-भालू का भिड़ला के साथ लखन लाल जी ललकारत कूद पड़ल बानीं धनुष बान तान के समर क्षेत्र में। उहां से भिड़न्त भइला पर बलशाली मेघनार्द का अर्ध लागि गइल बाटे आ बेकल होइ के ऊ शक्तिबान तान के लखन लाल के छाती छेद देले बाड़न। लंका के प्रमुख वैद सुखेन जी के बतावलि जड़ी पर्वत का साथ ही उठा के हनुमत लाल जी हिमालय से लंका चलल बानीं। राह में उन्हें असुर जान के भरत लाल जो बान से बेध देले बानीं आ बाद में जानकारी भइला पर बाने का बल पर पहुँचा देले बानीं नररूप लीलाधारी आतुर भगवान किहां। जड़ी का प्रभाव से लखन लाल जी के दुख दूर हो गइल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीसरा दिन समर में कहर कर देले बाड़न समरक्षेत्र में। बानर, भालू भाग चलल बाड़न अशरन शरनार्थी का समूह मतिन। मदभंजन भगवान राम, धनुष बान संधान के ऊ समरे बरनन बड़ा व्यापक बना देले बानीं। चार दिन मेघनाद, खाली बानरे भालू भर के ना भंभोरलन, बलुक भगवान रामो के ऊ नाग फांस में बाँध लिहलन जवना प्रसंग में गोस्वामी जी अइसे कहले बानी :—

रन सोभा लगि प्रभुहिं बंधायो।
नाग पास देवन्ह भय पायो॥

जे देवगन दइवे दइब बिनवत रहन जे भरतजी भगवान के वन से लवटाइ मत ले जाईं, से डेरा गइलन नाग फांस का प्रताप से। जामवन्तजी मेघनाद के तवन त्रिशूल दिहलीं जे भहराइ परलन भूमि पर भुभुने का भरे। चटपट ओही लगले उनका के उहाँ का फेंक दिहलीं गुरदेल का गोली अस सनाक देना लंका पर। मेघनाद के मूर्छा हटल त पिता के अपना सोझ देखते मातर ऊ लाजे काठ हो गइलन। उनकर ऊ हाल आ एने लखनो लाल का हजहज आ हियोहिये से नीक जनाइल जे—

'जौं तेहि आजु बधे बिनु आवौं।
तौं रघुपति सेवक न कहावौं॥

मेघनादजी आसुरी यग्य के अनुष्ठान कइले रहस जेकर भेद विभीषन जी से जानि के रामदल ओह में विघ्न डाल देले रहन। अन्त में समर में लखनलालजी से उनकर मरन भइल आ ओह समय में उनका मुंह से जे शब्द निकसल से गोस्वामीजी का दोहा में अइसे बा :—

'रामानुज कहँ राम कहँ अस कहि छांड़ेसि प्रान।
धन्य धन्य तव जननी कह अंगद, हनुमान॥'

पाँचवां दिन महाप्रतापी रावन, समर भूमि में उतरलन आ विभीषनजी थरथराइ उठलन—जे हे राम! रावाँ ना रथ बाटे आ ना कवच तब ओह बल-शाली रावन के रावां जीतब कइसे? बिजय रथ के बड़ा रोचक प्रसंग बाटे उहां, भगवान राम के कहल गोस्वामी जी का शब्दन में।

बड़ी घनघोर लड़ाई भइलि बा लखनलाल आ आ रावन से। पहिले उहां के रावन, शक्तिबान से अचेत कइले बाड़न त हनुमानजी उनके उठा ले गइल बानीं आ लखनलाल जी जब सचेत होके रावन का सारथी के अन्त कइला का बाद उनहूं के बेहोश कर देले बानीं त दोसर सारथी धरे ले गइल बाड़न। छठवां दिन छूट के छपछपहट आ छेदा छेदी भइलि बाटे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सातवां दिन राम-रावन समर अमर कहानी छोड़ के रावन का अन्तिम युद्ध अभिलास भरल शब्दन का साथ समाप्त हो गइल। भगवान राम के ललकारत मरतो समय रावन कहले बाड़न –

'कहां राम रन हतौं पचारी।'

अपना पतिदेव रावन मरन पर बड़ा कारुनिक बरनन बाटे मन्दोदरीजी के। विभीषन जी का भाई आदि के श्राद्ध कइला का बाद समुद्र पार वाला लंकापति के तिलक साकार भइल बाटे लंका में आइ के।

शक्ति आ शंकर के उपासना भगवान राम करत रहीं आ भगवान राम त सब तरह से परिपूर्णावतार रहवे कइलीं रावनो विद्वान, बुद्धिमान, बलवान का अलावे ग्यानी आ बिग्यानी रहस बाकी, दूनो पराक्रमी लोगन के पथ भिन्न रहे। ओह सात्विक आ तामसी तनाव में तामस के विनाश भइल आ सत्य के बिजय। अन्त में गोस्वामी जी लिखले बानी कि जवन सुजान लोग भगवान राम के समर विजय सुनेलन उन्हें प्रभु नित्य विजय, बिवेक आ बिभो दिहींला। अरे मन! विचार से देख ले। कलिकाल पाप कोठरी बा एह से उद्धार बदे राम नाम छोड़ के दोसर कवनो आधार नइखे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहेउ एक दिन अवधि अधारा

(उत्तर)

एह काण्ड का पहिला आ दोसरा श्लोकन में श्रीराम के स्तुति अउर चरन में अनुराग आ तीसरा श्लोक में भगवान शंकर के गोस्वामी जी के सादर नमस्कार बाटे। उहाँ का कहले बानी कि मोर कंठ का आभा मतिन—नील बरन, देव श्रेष्ठ, हृदय में भृगु चरन चिन्ह, पियर वस्त्र धारी, कमल नयन, सदा प्रसन्न, हाथन में धनुष बान, बानर समूह युक्त, भाई लखन से सेवित, स्तुति करे लाएक सीतपति, रघुकुल श्रेष्ठ—पुष्पक बिमान पर सवार श्री रघुनाथ जी के हम निरन्तर नमस्कार करत बानी।

दूसरा श्लोक के भाव बा कि—कोसलेस के स्वामी श्रीराम के चरन कमल से दुलारल बाटे अउर चिन्तन करे वाला मन रूपी भँवरा के नित्य संगी बा। तीसरा श्लोक अइसे बा :—

कुन्दइन्दुदरगौर सुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धीदम्।
कारुणीककलकंजलोचनं नौमि शङ्करमनङ्गमोचनम्॥

कुन्द के फूल, चन्द्रमा आ शंख का समान सुन्दर, जगत जननी पार्वती के पतिदेव, वांछित फलदाता आ दुखियन पर दया करे वाला, सुन्दर कमल का समान नयन वाला, कामदेव से छोड़ावे वाला शंकर जी के हम नमस्कार करत बानी।

भगवान राम का अयोध्या आवे में एक दिन बाकी बाटे। भरतलाल जी किहाँ शुभ सगुन त हो रहल बाटे तबो उहाँ का गूढ़ गुनान करत, सोच सागर में अथाहा परल बानी। एही अवसर पर सीताजी का सामने अशोक पर से शोकहारी मुदरी गिरावे वाला हनुमान जी भरत जी के सोच सागर से उबारे वाला जहाज सरूप ब्राह्मन रूप में टपक परल बानी। भरत जी सबका साथ अगवानी में आनन्द में बिभोर हो गइल बानी। सबसे बड़ा मजगर मिलन जुलन भइल बाटे आ राम-भरत के मिलन त देखत बने बरनि नहिं जाई' अस बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रभु के राज तिलक भइल बाटे तवना का बाद राज शासन के त अब एह कलिकाल में कहहीं आ सुने भर में आनन्द उठावल शेष रह गइल बा।

रामराज में सब लोग अपना वर्ण आश्रमानुकूल धर्म में तत्पर रहलन देहिक, दइबी भा भवतिक ताप के केहू का दाब ना रहे। सबसे सबका प्रेम, सब परोपकारी, आ पर उपकार के आदर करे वाला रहे। पति एक पत्नी व्रत रहे आ स्त्री पति के देवता समझत रही। कुराही भा अनटी रहवे ना कइलन त दंड दिहल केकरा के जाय? ईहे कारन रहे जे रामराज में दंड नाम के वस्तु खाली सन्यासी लोगन का हाथ में सन्यास चिन्ह रूप में रह गइल रहे। अकाल मरन आ अल्पायु के त नामो ना रहे।

बन में बराबर फूल आ फल लथरल रहत रहे, हाथी आ सिंह एक साथ सानन्द विचरत रहन। पंछी का मधुर सुर पर लोग आनन्दित रहन आ सब तरह के पशुओ भेद भाव भुलाइ के आनन्द मगन रहन। भाव सबसे सबका रहे आ भेद के स्थान रह गइल रहे खाली सुर-ताल का ताला में। समुद्र मरजाद के कबो उलंघन ना करत रहन, आ उनकरि लहर किनार पर रत्न छितरावति रहे जेकरा के बटोर के लोग निहाल हो जात रहन। तलावन में कमल के फूल अनमोल शोभा लुटावत रहन आ धरती त गवनहरी बहुरिया बन के अइसन लहरात रही जे सरग सिहात रहत रहे।

कुछ लोग अग्यान बस 'भगवान राम' के कविकल्पित मान लेले बाड़न आ एहू घड़ी बहुत लोग ओह तर्क का ताल पर ताली बजावत झूम उठत बाड़न भगवान राम के बारे में वाल्मीकि आदि से एने मानस तक बहुत प्रकाश पड़ चुकल बाटे। कल्यान आदि पत्रिकन का अलावे अपने सोचला से साफ जनात बा जे बाँव दहिन बोले वाला लोग विधिवत शास्त्रावलोकन ना कइ के 'अखबार' अस पढ़ के डाल्डा अस सार निकाल के निहाल कहीं भा बेहाल हो जात बाड़न। ई दुरभाग्य चलल आवत बाटे बहुत पहिलहीं से आ एह के कारनो बहुत बा। कबनो सबतुको बत्तुस के कुछ लोग अग्यान बस बिरोधी बन जालन आ कुछ लोगन के ई बिचार होला कि जो हम अपना मड़ई पर फुटेहरी लगाइबि त अनासहीं अनघा आँख हमरा ओर टकटकी लगा दी।

राम बरनन भारत का अलावे बिदेसन में अनघा स्थानन में भरल बाटे। गोस्वामी जी का नाना पुरान निगमागम का मानस में कई ग्रन्थन का भावार्थ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चौपाई ग्रा दोहा के पहिले चरचा हो चुकल बाटे। एह उत्तर कांड में कुछ ग्रन्थन पर ग्राधारित चौपाइन के बरनन इहां दिहल जात बा :—

महारामायन से — 'मुग्धे शृणुष्व मनुजोऽपि सहस्रमध्ये,
धर्मव्रती भवति सर्वं समानशीलः।

नर सहस्र महं सुनहु पुरारी,
कोउ इक होइ धरम व्रतधारी।'

मार्कण्डेय पुरान—'ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
वलादाकृष्य मेहाय महामायाप्रयच्छति॥

चौपाई—जो ग्यानिन्ह कर चित अपहरई। बरिआई बिमोह मन करई॥

गीता—'दैवी ह्योषा गुणमयी ममममाया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतं तरन्तिते॥'

दोहा—सो दासी रघुबीर के, समुझे मिथ्या सोपि॥'
छूट न राम कृपा बिनु, नाथ कहेउं पद रोपि॥'

गीता—सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेक शरण व्रज।

चौपाई—निज सिद्धान्त सुनाऊं तोही।
सुनि मन धरु सब तजि भजु मोहीं॥

गीता—अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामन्यभाक।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यगव्यवसितो हि सः॥

चौपाई—भगतिवंत अति नीचउ प्रानी। मोहि प्रान प्रिय सुनु मम बानी॥

गीता—वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि ग्रह्णति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही॥

दोहा -जोइ तन धरउं तजउं पुनि, अनायास हरिजान।
जिमि नूतन पट पहिरइ, नर परिहरइ पुरान।

गीता—ममैवांसो जीव लोके जीवभूतः सनातनः।

चौपाई—ईश्वर ग्रस जीव अविनासी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महा रामायण—ये रामभक्तिममलां सुविहाय रम्यां ज्ञानेरताः प्रतिदिनं
परिक्लिष्ट मार्गे। आरान्महेन्द्र सुरभीं परिहृत्य मूर्खा
अर्कं भजन्ति सुभगे सुख दुग्ध हेतुम॥

चौपाई—जे अस भगति जानि परिहरहीं। केवल ग्यान हेतु श्रम करहीं
ते जड़ कामधेनु गृह त्यागी। खोजत आक फिरहिं पय लागी॥

गोस्वामी जी खाली राम चरित मानस में ना बलुक अपना अउर पुस्तकन में भी बहुत-बहुत ग्रन्थन के सारांश संग्रह कइले बानी। उहाँ का गीतावली में 'भट्टी काव्य' के एगो श्लोक का भावार्थ के बानगी :—

'लतानुपातं कुसुमान्यगृहणात स नद्यवस्कन्दमपुपास्पृशश्च।
कुतूहलाच्चारु शिलोपवेशं काकुत्स्थ ईषत् स्मयमान आस्त॥

भावार्थ—खेलत चलत करत मग कौतुक बिलमत सरित सरोबर तीर।
तोरत लता सुमन सरसीरुह पियत सुधा सम नीर॥
बैठत बिमल सिलनि बिटपनि तर पुनि पुनि बरनत छाँह समीर।

विदेसी विद्वान लोग एह प्रसंग पर कम प्रकाश डलले बाड़न जे गीता आ महाभारत आदि से जे रामायन में मेल बइठत बाटे से कइसे ? हँ, रामायन का राम रावन समर के भी कुछ विदेसी बन्धु लोग मिस्टर होमर साहब का इलियड के युद्ध आ योधा लोगन से तुलना कइले बाड़न। युद्ध बाटे दूनो महाकाव्य में बाकी, हरन भइलि नारी-सीता आ हेलेना का चरित्र में जइसन आकाश पताल के अन्तर बाटे तसहीं विजयी आ पराजित पुरुष में भी देखे में आवत बा।

भगवान राम का विषय में त गोस्वामीजी का रामचरित में राम वन्दना विषयक श्लोकने से आँख खुल जाति बाटे आ बिरोधी दल प्रधान महा प्रतापी रावनो के विभो आ पराक्रम साफ झलकते बाटे। खाली अतने ना बलुक उनकरि समर लालसा आ वीरता बनल रह गइलि बाटे अन्तिम साँस तक। प्रानान्त का घरी भी रावन का मुँह से जे निकसल बा ऊ अइसे बा :—

'गर्जेउ मरत घोर रव भारी कहाँ राम रन हतौं पचारी।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्म राम ते नाम बड़

भारत में भगवत नाम महिमा के महान अनादि काल से चलि आवति बाटे। बड़ा नगद बरनन आइल बा नाम प्रताप के वेदो में। ओह राम नाम महिमा का बिषय में गोस्वामी जी लिखले बानी कि—

एहि कलिकाल न साधन दूजा। जोग जग्य जप ब्रत पूजा॥
रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहिं। सन्तन सुनिअ राम गुन ग्रामहिं॥

उहां का पूरन ब्रह्म राम नाम का महिमा के अपरम्पार बतवले बानी। राम के अनेक रूप आ नाम प्राचीने काल से चलल बा। ऋग्वेद के कथन बा कि—'एकं सद्विप्रा बहुधा बदन्ति' यानी—ओह एक प्रभु के विद्वान लोग अनेक नामन से पुकारेलन। ऋग्वेद में लिखल बा कि—'जे ओह ब्रह्म के नइखे जानत, वेद से का करी।' अथर्व वेद में लिखल बा कि—'तस्य ते भक्तिवांसः स्याम'—याने हे प्रभु! हम अपने के भक्त होखीं।'

वेदन में भगवत नाम भिन्न भिन्न रूपन से मानल बाटे। रामचरित मानस में भगवान राम का सिद्धान्त के बरनन अइसे बा :—

अब सुनु परम बिमल मम बानी। सत्य सुगम निगमादि बखानी॥'
निज सिद्धान्त सुनावऊँ तोहीं। सुनु मनु धरु सब तजि भजु मोहीं॥
मम माया सम्भव संसारा। जीव चराचर विविध प्रकारा॥
सब मम प्रिय सब मम उपजाए। सब ते अधिक मनुज मोहि भाए॥
तिन्ह महं द्विज द्विजमहं श्रुतिधारी। तिन्ह महं निगम धरम अनुसारी॥
तिन्ह महं प्रिय बिरक्त पुनि ग्यानी। ग्यानिहुं ते अति प्रिय विग्यानी॥
तिन्ह ते पुनि मोहिं प्रिय निज दासा। जेहि गति मोरि न दूसरी आसा॥
पुनि पुनि सत्य कहेउ तोहि पाहीं। मोहि सेवक सम प्रिय कोउ नाहीं॥
भगति हीन बिरंचि किन होई। सब जीवहु सम प्रिय मोहि सोई॥
भगति वंत अति नीचउ प्रानी। मोहि प्रान प्रिय असि मम बानी॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुचि सुसील सेवक सुमति, प्रिय कहु काहि न लाग।
श्रुति पुरान कह नीति असि, सावधान सुनु काग ॥

एक पिता के बिपुल कुमारा। होहिं पृथक गुन सील अचारा ॥
कोउ पंडित कोउ तापस ग्याता। कोउ धनवंत सूर कोउ दाता ॥
कोउ सर्वग्य धर्मरत कोई। सब पर पितहिं प्रीति सम होई ॥
कोउ पितु भगत बचन मन कर्मा। सपनेहुं जान न दूसर धर्मा ॥
सो सुत पितु प्रिय प्रान समाना। यद्यपि सो सब भाँति अयाना ॥
एहि विधि जीव चराचर जेते। त्रिजग देव नर असुर समेते ॥
अखिल बिस्व यह मोर उपाया। सब परि मोहि बरावरि दाया ॥
तिन्ह महँ जो परिहरि मद माया। भजहिं मोहिं मन बच अरु काया ॥

पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोइ।
सर्व भाव भज कपट तजि मोहि परम प्रिय सोइ ॥

सत्य कहेंउ खग तोहि, सुचि सेवक मम प्रान प्रिय ॥
अस बिचार भजु मोहि, परिहरि आस भरोस सब ॥

भगवान कृष्ण गीता में कहले बानी जे सब छोड़ के हमरा के भजीं ! निर-गुनियां सन्त कबीर दास जी नाम महिमा प्रसंग में कहले बानी कि—

'जबहि नाम हिरदै धरा, भया पाप का नास।
मानो चिनिगी आग की, परी पुरानी घास ॥

बिबसो होइके नाम उच्चारन कइला पर प्रानी का भवसागर पार कइ जाए के बिधान बाटे। एही से कहल बा कि—'ब्रह्म राम ते नाम बड़।' उत्तर कांड का दोहा १२२ (क) का अनुसार–

बारि मथे घृत होइ बरु सिकता ते बरु तेल।
बिनु हरि भजन न भव तरिय यह सिद्धान्त अपेल ॥

भगवान भक्त लोगन के जनमतुआ मतिन निर्मल बतावल बा। ग्यान मार्ग कठिन आ भक्तिपथ सुगम के रुप मानस उत्तर कांड में विधिवत बतावल बाटे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जवना के कुछ बरनन पहिलहीं एह ग्रंथ में हो चुकल बा। गुरु नानक जी लिखले बानीं कि--'नाम बिहूना मुक्ति न होई।' स्मरन महिमा बरनन इस्लाम आ ईसाई धर्म में बड़ा उत्तम ढंग से आइल बाटे। एह महिमा पर कुछ विदेशी विद्वानन के मत अइसे बाटे :--मिस्टर टामस ए० कैम्पिस--'द होली ऑटरेन्स शार्ट टू रीड, इजी टू रिटेन, स्वीट टू थिङ्क अपॉन स्ट्रांग टू प्रोटेक्ट--भावार्थ--पवित्र नामोच्चारन पाठ में लघु, स्मरन में सहज, मनन में सुखद आ रक्षा में सबल बाटे।' मि० पोलवर्ट--'बाइ हिज मोस्ट होली नेम, हिंवच कनसिस्ट आफ फाइव लेटर्स ही डेलो आफर्स पार्डन टू सिन्नर्स, भावार्थ--अपना महापवित्र नाम का प्रभाव से जे पाँच अक्षरन के बाटे, ऊ नित्यप्रति पापिन के उद्धार कइल करेलन।' मि० एस. वोनावेन्चुरा--'नो वन कैन डिभोउटली अँटर दाइ नेम विदाउट प्राफिट' एण्ड एगेन 'ग्लोरियस एण्ड वन्डरफुल इज द नेम। दोज हू कीप इट विल हैव नो फियर ह्वेन ऐट द प्वाइन्ट ऑफ डेथ, भावार्थ--अइसन केहू नइखे जे भक्ति पूर्वक उनकर नाम उच्चारन करे आ ओह से लाभ ना उठावे फिर नाम, प्रतापवान आ विचित्र बा। जे एह के धारन करी ओकरा मरन काल में भी भय ना होखी। मि. डो. एस. लारेन्शियो--द नेम एलोन इज सफिसियेण्ट फार हिलिङ्ग, फार देयर इज नो प्लेग सो अब्स्टीनेट दैट इट इज नट इनइविटेब्ली इल्ड टू द नेम, भावार्थ--रोगनाश बदे नामे सहारा बा, काहें जे कवनो महामारी नइखे जे नाम का प्रभाव से ना नष्ट हो जाय। मि० एस० ब्रिगेड--'इविल स्प्रीट फ्ली, ऐज् इफ फ्राम फायर ह्वेन दे हियर द नेम' एण्ड 'आल डिमोन्स आनर दिस नेम ऐण्ड फियर इट, ह्वेन दे फियर इट, दे ऐटवन्स रिलीज द सोल ह्वीच दे हैव बीन होल्डिङ्ग इन देयर टैलन्स। भावार्थ--नाम उच्चारन सुन के भूत प्रेत अइसन भागेलन जइसे आग के सोझा से भागत होखस। सब भूत प्रेत एह नाम के आदर करेलन आ एह से भय खालन। जवना जीव के ऊ अपना पंजा में पकड़ले रहेलन, नाम उच्चारन सुनते उन्हें त्याग देलन।

गोस्वामी जी लिखले बानीं कि--सब कर फल हरि भगति सुहाई। उहां के ग्यान आ भक्ति विवरन के मोट में अइसे रूप आइल बाटे--

ग्यान

ज्ञान पंथ कृपान कै धारा।
आतम अनुभव सुख सुप्रकासा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'ग्यान घीव, में तूल के बाती' चाहीं।
तब, 'प्रबल अविद्या कर परिवारा' शेष रहो आ-
'मोह आदि तम मिटई अपारा।'
'जातहि जासु समीप जरहिं मदादिक सलभ सब।
कल बल छल कर जाइ समीपा।
अंचल वात बुझावहिं दीपा॥

भक्ति

'राम भगति चिन्तामनि सुन्दर।' आ
'रघुपति भगति सजीवन मूरी।'
'परम प्रकाशक दिन अरु राती।'
भक्ति में--'नहिं कुछ चाह दिया घृत बाती।'
भक्ति में ? 'प्रबल अविद्या तम मिट जाई।'
'मोह दरिद्र निकट नहिं आवा।' आ
'खल कामादि निकट नहिं जाहीं।'
'हारहि मकल सलभ समुदाई।'
'लोभ बात नहिं ताहि बुझावा॥'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परम विचित्र एक ते एका

(मानस के कुछ प्रमुख पात्र)

श्री गंगाधर बालकृष्ण पांडे जी का कथनानुसार सचकी में—मानस पढ़ के, नायक लोगन के खाली पूजन भर कइला से काम ना चली। ओह पात्र लोगन में लोक आ परलोक बदे जवन—सत्य, त्याग, परोपकार, ब्रह्मचर्य, प्रन दृढ़ निश्चय, आत्म निर्भरता, आत्म त्याग, पतिव्रत धर्म, एक स्त्री व्रत, सहन शीलता, धीरता बीरता आ गंभीरता का अलावे पुरुषार्थ का ग्यान अउर भक्ति आदि पथ बाड़न सन तवनन्ह के अपनावल जरूरी बा। मानस का एक एक पात्र पर मोटहनि पोथी लिखा जाई बाकी, इहाँ थोरहीं पात्रन के संक्षेप में चरचा कइल जाई। ओह पात्रन में दूनो दल के स्थान दिहल जात बा :—

भगवान राम—मानस के प्रमुख नायक भगवान राम बानीं। उहां का धीरता, बीरता, गंभीरता, कर्मठता, त्याग, तेज, सत्य, प्रेम, शान्ति, विनय, शील, पराक्रम, पौरुष, रक्षा, सहनशीलता, देव, गुरु आ ब्राह्मन भक्ति, भाई प्रेम प्रजा वत्सलता, भक्त वत्सलता, संयम, नेम आ ब्रह्मचर्य आदि बदे महान आदर्श बानी। उहाँ का अवतार के वरनन पहिलहीं आ चुकल बा। मानस में उहां के बड़ा विचित्र रूप में प्रथम दर्शन मिलल बाटे माता कौशिल्या जी के।

लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बन माला नैन विसाला सोभा सिंधु खरारी॥

रूप देख के उहाँ का स्तुति कइले बानी तबे श्रीराम का बिहँसला पर उहाँ पुत्र प्रेम उमड़ परल बा आ प्रभु के बाल लीला बदे उहाँ का लालसा जागलि बाटे।

भगवान राम का बन गमन का समय कौशिल्याजी कहले बानीं जे पिता से बढ़ के माता के आज्ञा बाटे तब उहां का माता केकयीजी के कथन सामने रख देले बानी जवना पर माता जी का कहे के पड़ल बा कि—

'जौ पितु मातु कहेउ बन जाना। तौ कानन सत अवध समाना॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीराम, माता-पिता भक्ति के रूप देखावत कहले बानी कि—

सुनु जननी सोई सुत बड़ भागी। जो पितु मातु बचन अनुरागी॥

उहां का बन विनोद के वरनन करत कहले बानी कि—

मुनिगन मिलन बिसेषि बन, सबहिं भाँति हित मोर।
तेहि मह पितु आयसु बहुरि, संमति जननी तोर॥

गुरु भक्ति पर गोस्वामी जी लिखले बानी कि—

कौतुक देख चले गुरु पाहीं। जानि बिलम्बु त्रास मन माहीं।
जासु त्रास डर कहु उर होई। भजन प्रभाव देखावत सोई॥
मुनि पद कमल बन्दि दोउ भ्राता। आ गुरु पद कमल पलोटत प्रीते॥

एक पत्नी व्रत के आदर्श, भगवान राम कहले बानी कि हे सीता! तोहरा बिना शीतल, मन्द सुगन्ध वायु सांप का साँस मतिन हो गइल बा। कहला से दुख घटेला बाकी, कहीं केकरा से? हे प्रिया, हमरा आ तोहरा प्रेम के तत्व त खाली हमरा मन का मालूम बाटे, जवन सदा तोहरा पास रहेला :-

'तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा। जानत प्रिया एक मन मोरा।
सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं। जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं।

भाई प्रेम में भगवान राम जानबूझ के भाइन के खेल में जितावत रहीं आ अपना राज तिलक का समय साफ कहलीं जे जन्म, विवाह आदि साथ ही भइल आ खाली जेठे पुत्र के राज तिलक काहें दिहल जाई? चित्रकूट में बहुत बड़हन अधिकार भगवान राम अइसे सँउप देले बानी भरतलाल जी का हाथ में,-

मनु प्रसन्न करि सकुच तजि कहहु करौं का आजु।
सत्य बंध रघुवर बचन सुनि भा सुखी समाज॥

शरनागत प्रेम—लंकापति का लतिअवला पर बिभीषन जी भगवान का शरन में गिरलीं। लोग का शंका भइलि जे 'जानि न जाइ निशाचर माया।' श्रीराम कहलीं कि ई नीति त सही बाटे बाकी, 'मम प्रन सरनागत भय हारी॥ के बाटे आ 'जौं सभीत आवा सरनाई। रखिहउं ताहि प्रान की नाईं॥ खाली अपने बदे ना बलुक लोकमत मतिन साफ कह दिहलीं जे-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरनागत कहु जे तजहिं निज अनहित अनुमानि।
ते नर पाँवर पाप मय, तिन्हहि बिलोकत हानि॥

सखा स्नेह—निषाद का प्रति श्रीराम के अइसन गाढ़ स्नेह भइल जे—जवना समय गुरुवर वशिष्ट जी से आपन नाम बतलाइ के ऊ प्रनाम कइलन त झटपट वशिष्ट जी—

'राम सखा रिषि बरबस भेंटा। जनु महि लुटत सनेह समेटा।

त्रस्त सुग्रीव से उहां कहलीं जे—

सुनु सुग्रीव मारिहउं बालिहि एकहि बान।
ब्रह्म रुद्र शरनागत गए न उबरिहिं प्रान॥

लंका विजय का बाद अयोध्या अइला पर बन्दर भालू आदि सखा लोगन के खाली बाते से ना बलुक वस्त्र भूषण से अलंकृत कइले बानी। भगवान राम के दया सागर कहल बाटे जवना के अनेकन्ह प्रमान उहाँ का देखवले बानी मानस में। जटायु का प्रति उहाँ का जेतना 'पितु ज्यों गीध क्रिया करी' वाली लीला कइले बानी, के केकरा बदे कहाँ ओइसन कइले बा? असुरन का बध के मरम भी बड़ा गूढ़ बाटे ताड़िका के प्रान, बान लगत तड़ाक देना निकल गइल आ ताड़िका?'

दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा॥
विराध के— देखि दुखी निज धाम पठावा॥
मारीच के— मुनि दुर्लभ गति दीन्हि सुजाना॥
रावन के— 'तासु तेज समान प्रभु आनन।

बानर भालू लोगन तक के स्थान महान अइसे बन गइल :—

'प्रभु तरु तर कपि डार पर ते किए आपु समान।
तुलसी कहूं न राम से साहिब सील निधान॥

नागरिक प्रेम—भगवान राम का बन गमन का समय नागरिक प्रेम अइसन उमड़ल जे सब केहुए तेयार हो गइल बन में जाए बदे। जवना समय में भरत लालजी अयोध्या से चित्रकूट जाए लगलीं तबहुओं सभे तेयार हो गइल साथ में जाए बदे। जेकरा के घरे रहे के कहल जात रहे से—

'जेहि राखहिं घर रहु रखवारी। सो जानेइ जनु गरदनि मारी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओहिजा पहुँचला पर बड़ा विचित्र ढंग से भगवान राम सबसे मिललीं, जवना प्रसंग पर भगवान शंकर, उमा जी से अइसे कहले बानी :—

कृपा दृष्टि रघुबीर बिलोकी। किए सकल नर नारी बिसोकी ॥
आ छन महिं सबहि मिले भगवाना। उमा मरम यह काहु न जाना ॥

मुनि ब्राह्मन आ संत सम्मान में गोस्वामी जी लिखले बानी—

मुनि महिदेव साधु सनमाने। विदा किये हरिहर सम जाने।

भक्त वत्सल आ देवाराधक का रूप में भी भगवान राम चरित अनूप बाटे। भक्त आ भक्ति का विषय में एह ग्रन्थ में व्यापक वरनन आ चुकल बाटे। भगवान राम का संध्या बन्दन वरनन का अलावे सेतु बन्ध का समय उहाँ का कहले बानी कि—

'करिहउं इहां संभु थापना। मोरे हृदयं परम कलपना ॥
सुनि कपीस बहुदूत पठाए। मुनिवर सकल बोलि लै आए ॥
लिंग थापि विधिवत करि पूजा। शिव समान प्रिय मोंहि न दूजा ॥
संकर विमुख भगति चह मोरी। सो नारकी मूढ़ मति थोरी ॥

भगवान राम आ अवढ़र दानी शंकर के स्नेह, 'देखत बने वरनि नहिं जाई' समान बाटे। इहाँ सब अनन्त बानी आ इहां सभ के चरित भी अनन्त बाटे।

भगवान शंकर—अवढ़र दानी भगवान शंकर के चरित आ महिमा अमर बाटे। एह सृष्टि में पहिले उहा के नील लोहित रुद्ररूप में स्मरन कइल गइल बा, एगारह रुद्र लोगन के सपत्नी अइसे नाम आइल बा—

'मन्यु के स्त्री धी, मनु के वृति, महिनस के उशना, महान के उमा, शिव के नियुति, ऋतध्वज के सर्पि, उग्ररेता के इला, भव के अम्बिका, काल के इरावती, बामदेव के सुधा आ धृतव्रत के स्त्री दीक्षा के बतावल बाटे। रामचरित मानस में भुशुंडिजी का गुरु अपमान के बड़ा रोमांचकारी प्रसंग आइल बा। ओह प्रसंग का स्राप निवारन बदे। एगो ब्राह्मन का मुख से आठ छन्दन में रुद्राष्टक के अइसे बरनन आइल बा :—

'नमामीशमीशान निर्वान रूपं, बिभुं व्यापकं ब्रह्म वेद स्वरूपं।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं, चिदाकाश माकाश बासं भजेऽहं ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुषाराद्रि संकाश गौरं गंभीरं। मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ॥
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा। लसद्भाल बालेन्दु कंठे भुजंगा ॥
चलत्कुण्डल भ्रू सुनेत्रं विशालं। प्रसन्नाननं नीलकंठ दयालं ॥
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालं। प्रियं शंकर सर्वनाथं भजामि ॥
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं। अखंड अजं भानु कोटि प्रकाशं।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणि। भजेऽह भवानीपति भावगम्य ॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी। सदा सज्जनानंद दाता पुरारी।
चिदानंद संदोह मोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥
न यावद उमानाथ पादारविन्दं। भजंतीह लोके पर वा नराणां।
न तावत्सुखं शान्ति संतापनाशं। प्रसीद प्रभो सर्व भूताधिवासं ॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां। नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्य।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमान। प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो ॥

एह रुद्राष्टक से बड़ा उपकार भइल बा भुशुंडि जी के आ शंकर उपासना में एह के बड़ा महत्ववाला स्थान बा। मानस में श्रीराम महान शैव बानो आ ओही तरह से भगवान शिव महान वैष्णव। एह विचित्र भारतीय उपासना पद्धति के मरम समझे बदे विदेशी विद्वान लोग के प्रयास नाहीं का बराबर बाटे। वैदिक नील लोहित भनवान शंकर के रामचरित मानस में 'भवानी-शंकरौ बंदे' का बाद 'कुन्द इन्दु गोर बरन' में रूप प्रगट भइल बा। अनेकता में एकता आ भिन्नता में अभिन्नता के जे तत्व भारतीय लोग बतवले आ अपनवले बाड़न, दोसरा देशन में दुर्लभ बाटे। भारद्वाज मुनि का राम कथा के कामना रहे आ जागबलिक जी उहाँ के पहिले शिव कथा सुनाइ के जानि लिहलीं जे इहाँ का कवना सतह पर बानी। गोस्वामी जी एह प्रसंग पर लिखले बानी कि —

'प्रथमहिं मैं कहि शिव चरित, बूझा मरम तुम्हार।
सुचि सेवक तुम राम के रहित समस्त बिकार ॥

मानस में साफ लिखल बाटे जे श्रद्धा रूप सती आ विश्वास रूप शंकर के जानिए के राम तत्व के जानल संभव हो सकेला।

भगवान शंकर बानी तीन नेत्र वाला देव। ओह नेत्रन से उहाँ का राम आ काम दूनो मुर्तिन के देखले बानी। ओह रूपन में, भगवान राम का रूप में,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'शंकर रामरूप अनुरागे।' आ काम ? 'चितवत काम भयउ जरि छारा।' अइसन भइल एह से जे 'काम' में श्रद्धा, के स्थान प्राप्त हो गइल रहे संदेह का, तब श्रद्धा बिना विश्वास से कल्यान प्राप्त होई त कइसे ? विश्वास बिना त उहे हाल होखी जवन कामदेवजी के भइल।

भगवान शंकर के आदि ब्रह्म, अविनाशी अजन्मा आ कल्यानकारक आदि अनेकन्ह नाम बाटे। उहाँ का सुन्दर कल्यान करे वाला सत्य सरूप बानी जवना से 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' कहल बा। बैदिक युग में रुद्र का अलावे पौरानिक आ रामायन अउर महाभारत आदि ग्रन्थन में बड़ा व्यापक बरनन आइल बाटे ओह विश्वास रूप शंकर भगवान के। व्यवहारिक नजर से उहाँ का अपना बदे परम-हंस आ अनका बदे कुबेर बानी। परोपकार बदे हलाहल घोंट घाले में इचिको भर आह्रस नइखे। सुर असुर सब बराबर आ आज का तिलाक के दोहाई देवे वाला लोगन खातिर आ सती का संगहीं रह के अइसन कठिन प्रन जे, 'एह तन सती भेंट अब नाहीं'। परिवार नियोजन के प्रबल प्रतीक सरूप परिवार में दू पुत्र आ भारतीय परिवार संचालन व्यवस्था के आदर्श वाहन रूप वृषभ, बाघ, साँप, मूस आ मोर में भी कवनो दुराव ना।

योगेश्वर का सिर पर विराट जटाजूट, ओह में कलिमल हरनी गंगा के धवल धार, तिसरका नेत्र आ दूज चन्द्रमा से चमकत लिलार, बस्त्र बदे मृगछाला आ भूत भावन का शरीर में चिता भस्म के चमचमाहट। दाम्पत्य जीवन के प्रतीक गला में मुंड माला आ ओह से व्यापक रूप में अर्धनारी नटेश्वर। अत्याचारिन के विनाश बदे अविनाशी का हाथ में त्रिशूल, अनका खातिर महल, मोहन भोग आ अपना बदे ? जंगल, पहाड़ आ भोजन के भांग, धतूरा से महा विष तक। अलंकार के साधन बिच्छी, साँप आ विद्वानन बदे हाथ में अनुपम यन्त्र 'डमरू' जवना से निकसलि अक्षर आ शब्द संसार ग्यान के महान साधन बाटे। मानस का उमा परीक्षा में बड़ा रोचक बरनन आइल बाटे महेश्वर के, जवना के पार्वती परिचय में संक्षेप में दिहल बाटे।

भवानी पार्वती—शक्ति आ शक्तिमान से संसार के संचालन होला। जइसे शक्तिमान के अनेक रूप बा तसहीं महाशक्ति के भी अनेकन्ह रूप में बरनन बाटे महाशक्ति संसार का सब प्रानिन में लज्जा, श्रद्धा शान्ति आ शक्ति आदि रूपन में बिराजमान बानी जवना शक्ति के 'दुर्गा सप्तशती' में अइसे बरनन बा 'या

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता।' मारकंडेय पुरान में शक्ति के अनेक नामन के बरनन आइल बाटे आ दुर्गा के नौ नाम अइसे बतावल बाटे, 'शैलपुत्री ब्रह्मचारिनी, चन्द्रघंटा, कुष्मांडा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी आ सिद्धिदात्री।

नौ महाशक्तिन का उपासना में शाक्त साम्प्रदाय में महालक्ष्मी, महा सरस्वती महा काली, तारा, चामुंडा, भैरवी, गौरी, ललिता, कुष्मांडा, धूमावती, छिन्न-मस्ता, मातंगी आ दुर्गा आदि का या १९९ सना के भिन्न भिन्न प्रकार बाटे। अनेकता में एकता का उदाहरन में लिखल बा कि, 'सर्व सरूपा, सर्वेश्वरी आ सब प्रकार का शक्तिन से सम्पन्न दिव्य रूपा दुर्गा देवी सब भय से हमार रक्षा करीं।

परतत्व, जइसे ब्रह्मा, राम आ शिव अउर कृष्ण रूप में भिन्न भइलो पर अभिन्न बा तसहीं पराशक्ति रमा, सीता, दुर्गा आ राधा के रूप भी नित्य बा।

शरीर त्याग के दोसरि देह धइला पर पार्वती जी के बड़ा बिकट प्रन भइल,

जन्म कोटि लगि रगर हमारी। बरौं संभु ते तोरहौं कुआरी॥

भगवान राम, अवढर दानीं शंकर जी किहां जाई के कहलीं कि,

'अब बिनती मम सुनहु सिव, जो मो पर निज नेहु।
जाइ निबाहहूं सैलहि, यह मोहि मांगे देहु॥

एह मांग पर अवढर दानीं के उत्तर अइसे बा,

'सिर धरि आयसु करिय तुम्हारा। परम धरम यह नाथ हमारा॥

श्रद्धा के सबल प्रमान बदे सप्तर्षि लोग पहुंचली पार्वती जी किहां। परीक्षा में बितल आ बर्तमान के अनघा तरछन परछन का साथ सप्तर्षि लोगन का ओर से कहाइल जे रावां अन्हेर नारद जी अस घर उजारन का अझुरा में अझुराइल बानीं। उन्हें का उपदेश से यक्ष पुत्रन का मुंह करिखी लागलि आ चित्रकेतु आदि के त खउरेखापट लाग गइल। नारद जी अपने मतिना बिलाला सब केहूं के बनावत फिरेलन।

रावां के पहिलहीं चेतावल रहे जे सर्व गुन सम्पन्न विष्णु भगवान के रावां बरन कइ लिहीं बाकी हठ बस रावां ओह उपदेश के अनादर कर दिहलीं। अबही मोका बा, रावां चेती! जेकरा मोह न माया, लाज ना हाया, गोतिया ना दाया;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छत्र ना छाया आ डमरू त्रिशूल लेले अघड़ अस काया, गला में चंउड़ि के माला, वस्त्र वदे मृगछाला, अंग अंग सांप लपेटले निसा में मतवाला अउर भेख एगो भरमाह भिखारि के। भला आइसन छछलोल दुलहा से रावाँ कवन सुख भोगव ? सबसे बड़हनि कठिनाई त ई बाइ जे ऊ वउरहऊ कामेदेव के जारि के भस्म कइ दिहलन, तब रहल बाँस ना बाजी बंसी। मानस में श्रद्धा सरूपा पार्वती के अइसे उत्तर बा—

'तुमरे जान काम अब जारा। अब लगि संभु रहे सबिकारा॥
हमरे जान सदा सिव जोगी। अज अनवद्य अकाम अभोगी॥
जो मैं सिव सेये अस जानी। प्रीति समेत कर्म मन बानी॥
तौ हमार पन सुनहु मुनीसा। करिहहिं सत्य कृपा निधि ईसा॥
तुम जो कहा हर जारेउ मारा। यह अति बड़ अविवेक तुम्हारा॥
तात अनल कर सहज सुभाऊ। हिम तेहि निकट जाइ नहिं काऊ॥
गएँ समीप सो अवसि नसाई। असि मन्मथ महेस की नाईं॥

पार्वतीजी का प्रश्नोत्तर से सप्तर्षि लोग एह से सन्तुष्ट हो गइलीं जे पार्वती के 'बरउँ संभु न तु रहउँ कुमारी' के प्रन श्रद्धा आ विश्वास का सवतुक साँचा में एक समान उतरत बा। पार्वती के उत्तर सुनके अन्त में—

'हिय हरखे मुनि बचन सुनि देखि प्रीति बिस्वास।
चले भवानिहिं नाइ सिर, गए हिमाचल पास॥

पतिव्रता सीता—गोस्वामी तुलसीदास जी मानस बालकांड का श्लोक में सीता नमस्कार में कहले बानीं कि—'उतपत्ति, पालन, आ संहार कारिनी, क्लेश हारिनी आ सब कल्यान के करे वाला भगवान राम का प्रियतमा सीता जी के हम नमस्कार करत बानी। सीताजी के वाल्मीकि में धरती से जनमलि, दशावतार चरित में पद्म से, आनन्द रामायन में अग्नि से आ अद्भुत रामायन में लहू से जनमलि बतावल बा। दशरथ जातक में उहां के दशरथ सुता आ काश्मीरी रामायन, भागवत आ गुणभद्र कृत उत्तरपुरान में रावन के पुत्री बतावल बाटे। आदि रामायन, महाभारत, हरिवंश, पउमचरिउ आ मानस में उहाँ के जनक सुता कहल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पतिव्रता सीता के भगवान राम से भेंट भइल बा फुलवारी में। ओह व्यवहार प्रसंग में सीताजी गइल बानी भवानी का मन्दिर में। गिरिराज किशोरी सीताजी का भाव आ विनती पर प्रसन्न होइ के कहले बानी—

'सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजहिं मन कामना तुम्हारी॥

भवानी का वरदान रूप में शक्ति आ शक्तिमान के मूर्त रूप में जगत का सामने आइल बा। अवतार का मूल सिद्धांत के पूरा करे खातिर भगवान राम बनगमन बदे तेयार बानी। शक्ति सीता के सुकुमारी बन का इचिको भर अनुकूल नइखे तबना पर प्रलोभन बाटे कि—

मैके ससुरे सकल सुख जबहिं जहाँ मन मान।
तब तहँ रहहि सुखेन सिय जब लगि बिपति बिहान॥

जे अपने क्लेश हारिनी बा सेकरा क्लेश के भय कहां ? बड़ा रोचक उत्तर बाटे सीता जी के—

'जहं लगि नाथ नेह अरु नाते। पिय बिनु तियहिं तरनिहुं ते ताते॥
तन धन धाम धरनि अरु राजू। पति बिहीन सब सोक समाजू॥

एकरा बाद सीता जी कहले बानी कि, 'नाथ साथ सुर सदन सम, परन साल सुख मूल।' भगवान राम से उहाँ बड़ा मार्मिक शब्दन में सीता जी कहले बानीं जे रावां के उचित तप बाटे आ हमरा के भोग ? सीता जी का ओह भारतीय पतिव्रता प्रसंग पर विदेशी विद्वान् मि० ग्रीब्स साहेब के कथन बा कि हमरा समझ से रामायन में अइसनि सुन्दरता आ रोचकता कतहीं नइखे मिलति। दक्खिन भारत के रामायन विरोधी सज्जन लोग का कम्बन ऋषि, मि० ग्रीब्स, मि० ग्राउस, शेरेब्रांड आ श्री राजगोपालाचारी जी का रामायन विषयक विचार पर ध्यान देवे के चाहीं।

भगवान राम का साथ बन बन घुमला का बाद लंका में भी जवन आदर्श सीता जी उपस्थित कइले बानी, समस्त संसार बदे एगो दइवी देन बाटे। रावन के साम, दाम, दंड विभेद का प्रलावे सब जुगुति आ उक्ति अपने आप रंगा अस गलत गइल बा अशोक बाटिका में—

'कृष तनु सीस जटा एक बेनी। जपति हृदय रघुपति गुन श्रेनी॥

सीता के रावन से अइसे उत्तर बाटे—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा। कबहुंकि नलिनी करइ विकासा॥
अस मन समुझु कहति जानकी। खल सुधि नहिं रघुवीर बान की॥
सठ सूने हरि आनेसि मोही। अधम निलज्ज लाज नहिं तोही॥

आगा जे सीता जी कहले बानी, स्याम सरोज के प्रसंग पहिलहीं एह ग्रन्थ में आ चुकल बाटे। सीता जी के समस्त वैवाहिक जीवन, नारी जगत में पतिव्रत धर्म खातिर सबल सहारा बा। ऋषि पत्नी अनसुइयाजी मानस में कहले बानी कि 'ए सीता! तोहार त नाम लेइके स्त्री लोग पतिव्रत धर्म के पालन करिहन। तोहार त रामजी प्रानो से अधिक प्यारा बानी, कथा त हम संसार का हित बदे कहलीं हा। गोस्वामी जी के एह प्रसंग के सोरठा अइसे बा—

'सुनु सीता तव नाम, सुमिर नारि पतिव्रत करहिं।
तोहि प्रानप्रिय राम कहिउँ कथा संसार हित॥

महाराज दशरथ——गोस्वामी जी लिखले बानी कि—

'कस्यप अदिति तहां पितु माता। दसरथ कौसल्या विख्याता॥

महाराज दशरथ अपना पूर्वज लोग अस दृढ़ प्रतिज्ञ रहां आ कहले बानी कि—

'रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्रान जाइ बरु बचन न जाई॥

प्रतिज्ञा पालक महाराज दशरथ का भगवान राम प्रान मतिन प्यारा रहीं। एह प्रमान में उहां का अइसे कहले बानी—

'जिअइ मीन बरु बारि बिहीना। मनि बिनु फनिक जिअइ दुख दीना॥
कहहु सुभाव न छल मन माहीं। जीवन मोर राम बिनु नाहीं।

बन गमनका समय जब भगवान राम, पिताजीसे बिदा लेवे गइल बानी तब,

'सकइ न बोलि बिकल नरनाहू। सोक जनित उर दारुन दाहू॥

का हालत में महाराज अचेत हो गइल बानी। भगवान राम के बन गमन का बाद सुमन्त जी का बन से लवटला पर पछताइ के महाराज कहले बानीं कि—

'सो सुत बिछुरत गए न प्राना। को पापी बड़ मोहिं समाना॥

आ अन्त में राम बिरह में जे कहके उहां का शरीर छोड़ दिहलीं तबन गोस्वामी जी का शब्दन में अइसे बा—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम।
तनु परिहरि रघुबर बिरहं, राउ गयउ सुरधाम॥

महारानी कौशिल्या—कोसिल्या जी पूर्व जनम में तप कइके भगवान राम के पुत्र रूपमें पवले रहीं आ भगवान राम का शिशु लीलाके अनुपम आनन्द पवले रहीं। श्रीराम बन गमन का समय उहाँ का कहले रहीं कि—

'जो केवल पितु आयसु ताता। तौ जनि जाहु जानि बड़ माता॥

श्रीराम मतिन एकलउत पुत्र के बनवास दे दिहला पर भी उहाँ का केकयी जी के सुमित्रे मतिन श्रीराम के छोटकी माई के स्थान रखले रहीं। उहाँ का कहले बानी कि—

'जौं पितु मातु कहेउ बन जाना। तौ कानन सत अवध समाना॥

शुभाशीर्वाद स्वरूप कोसिल्या जी कहले बानी कि—'बन देव तोहार पिता आ बनदेबी लोग माता होइब। सब देवता पितर तोहार अइसन रक्षा करी जइसे पलकन से नैन जोगावल जाला। अन्त में बेकल होइके कोसिल्या जी कह उठल बानी कि—

'सबकर आज सुकृत फल बीता। भयउ कराल काल बिपरीता॥

चित्रकूट में जब कोशिल्या जी का, जनक जी का पत्नी से भेंट भइल बा तब उहाँ का समधिन से कहले बानीं जे, 'केहू के दोष नइखे दुख-सुख, हानि-लाभ सब अपना कर्म का अधीन बाटे जवना कर्म के गति बड़ा गूढ़ बा। प्रभु आग्या, सबका सिर पर बाटे आ विधि के परपंच अचल आ अनादि बा। अन्त में उहाँ कोसिल्या जी कहले बानी कि—'हे मिथिलेश्वरी! ग्यान भंडार जनकराज का पत्नी के उपदेश देवे वाला के बाटे? धीरज रूपा कोशिल्या जी, भगवान का बनवास काल तक अनुपम उदाहरन देखवले बानी। बनवास अवधि बिताइके जब भगवान राम अयोध्या आइल बानीं तब—

'कौसल्यादि मातु सब धाईं। निरखि बच्छ जनु धेनु गंवाईं॥

वियोग से उपजलि भयावनि विपत्ति दूर हो गइलि बा आ सबका साथ कोशिल्या जी अपार खुशी के अनुभव कइले बानी।

महारानी सुमित्रा—सुमित्रा जी के त्याग आ उपदेश बड़ा महत्वपूर्ण बाटे। उहाँ का राम बन गमन सुन के बहुत जोर से पछताइल बानी। उहाँ के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्याग आ उदारता से भरल वचन के गोस्वामी जी मानस में अइसे लिखले बानी,

'जौं पै सिय राम बन जाहीं। अवध तुम्हार काज कछु नाहीं॥
पूजनीय प्रिय परम जहां तें। सब मानिअहिं राम के नाते॥
अस जिय जानि संग बन जाहू। लेहु तात जग जीवन लाहू॥

सुमित्रा जी अपना पुत्र से कहले बानी कि तोहरे भाग्य से भगवान बन जा रहल बाड़न। राग, रोष, मद, मोहादि के बस में सपनो में ना होइके सीता राम के सेवा करना बा। ओह कठिन समय में सग्यानी सुमित्रा जी कहले बानी कि—

'पुत्रवती जुबती जग सोई। रघुपति भगतु जासु सुत होई॥

अद्भुत रामायन आ 'जैमिनी भारत' का आश्रम पर्व में सहस स्कन्ध आ सहसमुख रावन के वध सीता जी का हाथ से बतावल बाटे।

महारानी कैकेयी—महारानी कैकेयी महाराज दशरथ के छोटकी रानी रहीं। इहां का रामचन्द्र जी बड़ा प्रिय रहीं जवना के प्रमान बा जे जब मंथरा महोछ मतिन मन मरले उहां किहां पहुँचल बाड़ी त महारानी के अइसे कथन बाटे—

सभय रानि कहसि किन कुसलु राम महिपालु।

तवना बाद कहले बानी—

लखन भरत रिपुदमनु—सुनि भा कुबरी उर सालु॥

मंथरा का गाल बजवला आ घरफोरइ कइला पर उहां का डांटि के कहले बानी कि—

'पुनि अस कबहुं कहसि घर फोरी। तब धरि जीभ कढ़ावउं तोरी॥
आ प्रान तें अधिक रामु प्रिय मोरे। ..... ॥

विधाता के विधान बड़ा विचित्र होला। श्रीराम के ओइसनि स्नेहमयी माता केकयी का माहुर घोंटे के पड़ल बा असुरन से धरती का उद्धार बदे। लोक रक्षा बदे विधिवस निन्दा के पात्र बने के पड़ल बा रानी केकयी का।

योगीराज जनक—महर्षि बशिष्ट का स्राप से 'निमि' के शरीर छूट गइल। उहां का शारीरिक बंधन पसंद ना रहे आ देवता लोगन का निमि-कुल के संहार असह्य रहे। देव जन का करत निमि के मृतक देह के मंथन करावल गइल जवना से एगो बालक के उतपत्ति भइलि। एही तरह के प्रसंग 'राजा वेन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ महाराज पृथु' के भी बतावल बा। देह विहीन निमि से उत्पन्न भइला से जनकजी के बिदेह कहल गइल आ 'शरीर मंथन' से मिथिला नाम पड़ल। सेयान भइला पर महाराज जनके जी मिथिला राज के स्थापना कइलीं। जनक जी भगवान राम के ससुर आ भगवान शंकर के परम भक्त रहीं। ग्यानी त उहां का बड़ा ऊँच कोटि के रहीं। गीता में भगवान कृष्ण प्रवृत्ति मार्ग में जनक जी के नाम लेले बानीं।

भगवान शंकर का धनुष के उहां किहां पूजन होत रहे। जवना का प्रसंग में जोगीराज का प्रन करे के पड़ल ओह प्रन के भाट लोग अइसे सुनवले रहन—

'एह कठोर धनुष के.....। राज समाज आजु जोइ तोरा॥
त्रिभुवन जय समेत बैदेही। बिनहिं बिचारि बरइ हठ तेही॥

जानकी जी का बिवाह में जोगेश्वर जनक आ महाराज दशरथ के मिलन वेद आ लोक दूनो रीति से भइल बा। ओह उपमा में गोस्वामी जी के कथन बा कि—

मिलत महा दोउ राज बिराजे। उपमा खोजि खोजि कबि लाजे॥

चित्रकूट में देवमाया से साधु, मंत्री, मुनिगन, भरतलाल आ जनक जी बंच गइल रहीं जवन प्रसंग अइसे आइल बा—

भरत जनक मुनि जन सचिव, साधु सचेत बिहाइ।
लागि देवमाया सबहिं, जथा जोग जनु पाइ॥

रामायन का अलावे अन्य ग्रन्थन में भी व्यापक बरनन आइल बाटे जोगेश्वर जनक जी के।

हनुमान जी—हनुमान जी के हनुमान चलीसा में 'अंजनि पुत्र पवन सुत नामा' कहल बा। शैव आ शाक्त पुरानन में हनुमान जी के शंकर जी के अवतार बतावल बा बाल्मीकि का गौड़ीय का अलावे पच्छिमोत्तरी पाठ में केसरी नन्दन कहल बा। आनन्द रामायन आदि ग्रन्थन में हनुमान जी विष्णु के अंशावतार बानीं। हिन्देशिया का राम बरनन में सीता राम का पुत्र रूप में हनुमान जी के एह से बरनन आइल बा कि हिन्देसिया में भगवान राम आ शंकर भगवान के चरित मिश्रित हो गइल रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हनुमानजी के महावीर आ बलपति आदि कई नाम बतावल बाटे। इहाँ का ना केवल वीरता बलुक बुद्धि के भी भंडार बानीं। मानस में इहां का सुग्रीव जी का मंत्री रूप में भगवान राम से मिलल बानीं। ओह उत्तम मिलन का चलते सुग्रीवजी के सांस लेवे के सनगंव भेंटाइल बाटे आ भगवान राम के भी मजगर काम भइल बा। 'हांके हनु चौगुना' का अनुसार महाबलवान भइलो पर हनुमान जी के बल स्राप बस भोर हो जाइल करत रहे। हनुमानजी लंका जात समय अइसन अइसन अजगुत करतब देखवले बानीं जे ओइसन परतोख मिलल कठिन बा। साधारन वीरन के त उहां का आनन फानन में लोढ़ारत गइल बानीं, मेघनाद, कुम्भकरन आ रावन अइसन महाबलिन के भी उहां का मुक्के पर मूर्छा लागल बा।

बड़ा नगद परिचय देले बानीं हनुमान जी, अपना स्वामी भगवान राम के असुरराज रावन से। गोस्वामी जी ओह प्रसंग पर लिखले बानीं—

जाके बल लवलेस तें जितेहु चराचर झारि।
तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि॥

भगवान राम के हनुमान जी का प्रति कथन बा कि—

सुनु कपि तोहि समान उपकारी। नहिं कोउ सुर नर मुनि तनु धारी॥
प्रति उपकार करौं का तोरा। सन्मुख होइ न सकत मन मोरा॥

अयोध्या से जब सुग्रीव आदि के विदाई भइलि बा तबना समय में सुग्रीव जी के मानस में कथन बा कि—

पुन्य पुंज तुम्ह पवन कुमारा। सेवहु जाइ कृपा आगारा॥

मानस रचइता गोस्वामी तुलसीदास जी के प्रबल प्रेरक 'अस्ट सिद्धि नव निधि के दाता' हनुमाने जी रहीं।

भरतलाल जी—मानस में लिखल बा कि—

बिस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई।

भगवान राम के बनबास खाली असुरन के बिनाश कइके नर, मुनि आ देव लोगन का कल्याने खातिर ना भइल रहे, ओह में बड़ा गूढ़ आ गुप्त महापवित्र त्रिवेणी सरूप भरतलाल जी के ग्यान, कर्म आ भक्ति के सबल भावना सराबोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे। सब भक्तिन के साथ ग्यान आ कर्म के साक्षात सरूप रहीं भरतलाल जी। ओह गूढ़ भेद के प्रकट करावे खातिर महारानी केकयी का माहुर घोंटे के पड़ल रहे। एकर सबल प्रमान बा कि भगवान राम केकयीजी के दोषी नइखीं ठहरवले।

साहित्यिक सुन्दरता आ भावनात्मक नजर से अयोध्या कांड के, मानस के प्रमुख अंग मानल बा। एह कांड में एक से एक भावतरंग बाटे जवना में भरतलाल जी के विचार, विवेक आ त्याग का अलावे भक्ति के अपूर्व फूल खिल उठल बा समस्त संसार का कल्यान बदे उपदेश का रूप में। गोस्वामी जी लिखले बानीं कि 'जासु नेम ब्रत जाय न बरना' आ—

प्रेम अमिय मन्दर बिरह, भरत पयोधि गंभीर।
मथि प्रगटे सुर साधु हित कृपा सिन्धु रघुबीर॥

एह अमृत मंथन के महिमा अगम अपार बाटे। तवना सोना सरूप प्रसंग में सुगन्ध रूप वरनन बा कि—

जौ न होत जग जनम भरत को। सकल धरम धुर धरनि धरत को॥

भरतलाल जी राम बनगमन से बेकल हो गइल बानीं। लाख बुझवला समझवला पर भी उहां का हरिदर्शन बिना अधीर रहीं। राजपाट हवेखल त दूर रहे प्रभुदर्शन बदे अयोध्या से प्रस्थान करे के समय साफे साफ भेद अइसे खुल गइल जे 'संपति सब रघुवर के आहीं।' ओकरा के त्यागे के त तब सवाल उठित जब इचिको भर भरतलाल ओह संपति पर आपन अधिकार समझले रहितीं। चले का समय भरतलालजी चल दिहलीं पैदले तब—

देखि सनेह लोग अनुरागे। उतरि चले हय गय रथ त्यागे॥

भरतलाल जी के भाव देखावटी ना रहे आ एहो से गंगा पार कइलो पर उहां का अइसन गुप्त रूप से गोड़े गोड़ चललीं जे दिन भर केहू ना जानि सकल, बाद में लोग जानल जे—

भरत पयादेहि आये आजू। भयउ दुखित सुनि सकल समाजू॥

आज देश विदेश में अनघा रूपन में सेवक लोग उपरे ऊपर संसार समुद्र में उतराइल फिरत बाड़न। ओह सेवक धर्म के मरजाद भरतलाल जी का देह से अइसे बा—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिर बर जाउं उचित अस मोरा। सब ते सेवक धर्म कठोरा॥

भरतलाल जी के दर्शन प्रयाग में फलवत भइल बाटे, जइसे—

तेहिकर फल पुनि दरस तुम्हारा। सहित प्रयाग सुभाग हमारा॥

बड़ा सुन्दर प्रमान पत्र भी भरतलाल जी के तीर्थराज में अइसे मिलल बाटे—

तात भरत तुम सब बिधि साधू। राम चरन अनुराग अगाधू॥

चित्रकूट पहुंचला पर भरत जी—

पाहि नाथ कहि पाहि गोसाईं। भूतल परे लकुट की नाईं॥

मिलन प्रीति किमि जाइ बखानी। कबिकुल अगम करम मन बानीं॥

बतावल बा। आगा जाइके भरतलाल जी का प्रेम के भी अगम बखानल बाटे। देवगन में अदंक समा गइल बाटे ई देख के जे हमहन का मनोरथ रथ का पेनी में छेद मत हो जाय, तब उहां देवगुरु बृहस्पति का धीरज बन्हावे के पड़ल बाटे उहां सभन के। भरतलाल के प्रीति बखानत शारदाजी का संकोच बा त बशिष्ट जी कहले बानीं कि भरत महामहिमा जल राशी आ जोगीराज जनक जी कह उठल बानीं कि—

सो मति मोर भरत महिमाहीं। कहै काह छल छुअति न छाहीं॥

चित्रकूट में राजसत्ता के पोतन के हाल हो गइल बा। जे आज परमानन्द रूप पवले बाटे। अन्त में बाल्मीकि का कथनानुसार भगवान राम कहले बानी कि 'हे प्रिय भाई भरत जी! तोहरा स्वभावतः आ शिक्षा का फलसरूप ई विनय-युक्त बुद्धि मिललि बा आ तोहरा में समरथ आ शक्ति बाटे समस्त पृथ्वी के रक्षा वदे। तवना का आगा लिखल बा कि—

अधिरोहार्य पदाभ्यां पादुके हेमभूषिते।
एते हि सर्वलोकस्य योगक्षेमं विधास्यतः॥

भावार्थ—तात! ई दूगो सोनहुला खड़ाऊँ बा। अपने इन्हन पर चरन राखीं। एही से समस्त संसार के योग क्षेम के निमाह होखो। उहां बाल्मीकि में भरतलाल जी कहले बानी जे 'भाई जी एह राज के हमें धरोहर का रूप में देले बानीं। उहां के ई स्वर्न भूषित खड़ाऊँ सब योग क्षेम निमुकावे वाला बाटे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पादुका से आज्ञा पाइके भरत लाल जी 'नंदी ग्राम' में कुटी बना के रहे लगलीं तवना के गोस्वामी जी अइसे बतवले बानीं;---

जटा जूट सिर मुनि पट धारी। महि खनि कुस साँथरी सँवारी ॥
असन बसन बासन ब्रत नेमा। करत कठिन रिसि धरम सप्रेमा ॥
भूषन बसन भोग सुख मूरी। मन तन बचन तजे तिन तूरी ॥
अवध राज सुरराज सिहाहीं। दशरथ धन लखि धनद लजाहीं ॥
तेहि पुर बसत भरत बिनु रागा। चंचरीक जिमि चम्पक बागा ॥

बाल्मीकि में लिखल बा कि विभीषन जी के राज देइके सीता आ लखनलाल जी का साथ राम जी अयोध्या आवे के तेयार भइलीं त विभीषन जी उहां से कहले बानीं जे स्नान कइके वस्त्रालंकार धारन कर लिहल जाय ! एह पर भगवान राम, भरत भक्ति के इयाद करत कहले बानीं कि सत्य आ धर्मपरायन सुकुमार भरत सब प्रकार के सुख भोगे लायक भइलो पर हमरा बदे दुख भोग रहल बाड़न। ओने के ऊ बिकलता आ एने भरतलाल जी बेहाल जे 'कारन कवन नाथ नहिं आये'। लंका से नंदी ग्राम पहुँचला पर भरत जी के बड़ा कारुनिक रूप देखले बानी हनुमान जी।

भगवान राम का अयोध्या अइला पर भरतलाल जी 'परे भूमि नहिं उठत उठाए' तवना के बाद—

प्रभु मिलत अनुजहि सोह मो पह जात नहिं उपमा कही।
जनु प्रेम अरु सिंगार तनु धरि मिले बरु सुषमा लहीं ॥
बूझत कृपानिधि कुसल भरतहिं, बचन बेगि न आवई।
सुनु सिवा सो सुख बचन मन ते भिन्न जान जो पावई ॥

भगवान राम, भरतलाल जी से कुशल पुछले बानीं त आनन्द मग्न भरतलाल जी पहिले मूक बानीं आ बाद में कहले बानी कि—

अब कुसल कौसलनाथ आरत जानि जन दरसन दियो।
बूड़त बिरह बारीस कृपानिधान मोहिं कर गहि लियो ॥

भगवान राम आ भरतलाल अस चरित्रवान महापुरुषन के चरित्र बरनन के कहीं पर कतहीं प्रभाव के साधारन रूपक आ रामायन पर देश-विदेश के प्रभाव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखे वाला लोगन के जे कहल जा सकेला गोस्वामी जी पहिलहीं काक बलाक बतला देले बानीं।

लखनलाल जी—लखनलाल का विषय में गोस्वामीजी के कथन बा कि—

लच्छन धाम राम प्रिय, सकल जगत आधार।
गुरु बसिष्ट तेहि राखा, लछिमन नाम उदार॥

बाल्मीकि रामायन में इहां के अंशावतार कहल बाटे आ दोसरा दोसरा ठहर शेषावतार के भी बरनन आइल बा। लखनलाल जी धीर, वीर, गंभीर, त्यागी, तपसी, छल रहित, सत्यव्रती नीति निपुन, तेजस्वी, ब्रह्मचारी आदि महान गुनन से भरपूर आ भगवान राम के परम भक्त बानीं। ठाँव पटाक बोले में इहां का कतहीं तनिको भर आहस नइखे लागल। लरिकाई से भगवान का साथ रहला का अलावे इहाँ का मुनि का यग्य रक्षा खातिर बक्सर ताटक बन में भी पहुंचल बानीं। जनकपुर में धनुष भंग भइला का बाद परशुरामजी से बड़ा कड़का कड़की भइलि बा इहाँ से। परशुराम जी का ढेर खिसिअइला पर इहां का साफे कह देले बानीं कि—एहिजा केहू कोंहड़ा के बतिया नइखे जे तर्जनी अंगुरी देखा देला से मर जाई। भगवान राम का बन गमन का समय त इहां का मन में संदेह उपरज गइल बाटे कि कहीं अइसन ना हो जाय जे भगवान राम का साथे बन जाए से हमें माता जी रोक लिहीं।

अपना पवरुष पर भरोसा के अनुकरणीय गुन रहे लखनलाल में। समुद्र से रास्ता मांगे का समय इहां का सिहुर सिहुर कइल ना सोहाइल त खोंख खखार के ओसिया दिहलीं कि—

नाथ दैव कर कवन भरोषा। सोखिय सिन्धु करिय मन रोषा।
कादर मन कह एक अधारा। दैव दैव आलसी पुकारा॥

सूपनखा के नाक काट के महाप्रतापी रावन के लखनलाल जी चुनौती देले रहीं। सुग्रीव जी राजमद में सुधि बिसरलीं तबना पर गोस्वामी जी लखनलाल का बारे में लिखले बानीं कि—

'धनुष चढ़ाइ कहा तब जारि करौं पुर छार।
आ-'तब कपीस चरनन सिर नावा। गहिभुज लछिमन कंठ लगावा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लंका में लखनलाल का मेघनाद आ रावन मतिन बलशाली बीरन का साथ जम के भिड़न्त भइल बाटे। जंग में जोर से जम के जूझे खातिर ओह जानदार जवानन के युद्ध पढ़हीं लायक बाटे। महाप्रतापी लखनलाल जी का प्रहार से महाबल शाली मूर्छित होके गिर पड़ल बाड़न। रावन प्रहार पर लखनलाल भी अचेत हो गइल बाड़न आ रावन प्रयास कइ के हार गइल बाड़न जे इन्हें उठा ले जाई। पर्वत उठा लेवे वाला रावन का जनकपुर धनुष अस लखनलाल जी के उठा ले जाए में लजा जाए के पड़ल बाटे।

मि० ग्राउस साहेब गोस्वामी जी का रामचरित मानस के अंग्रेजी अनुवाद में लिखले बानी कि—'भरत के निःस्वार्थता, लखनलाल के वीरता सीता के पतिव्रत सद्गुन आ स्नेह अउर राम मतिन स्वच्छ, स्वार्थ त्यागी विनयी, आदर्श पुत्र, भाई, पति आ राजा के सराहना सब करी। इहाँ सबके केहू अवतार भा ईश्वरांश माने चाहे मत माने बाकी, इहाँ सब अपना अपूर्व सदगुनन से ईश्वरत्व आ देवत्व पवले बानीं आ सबका पूजा करे लायक बानीं।'

शत्रुघ्न जी—इहां का बारे में मानस में लिखल बा कि—

जाके सुमिरन तें रिपु नासा। नाम शत्रुहन बेद प्रकासा॥

इहाँ का राम भरत के मूक सेवक आ जइसे लखन लाल भगवान राम का साथ रहत रहीं तसहीं शत्रुघ्न जी रहीं भरतलाल का साथ। राम भरत के सेवक त उहां का मौनेरूप में रहीं बाकी अउर ठांव पटाक बोल भा बेवहार लखने लाल जी अस रहे। राम बनगमन का बाद भरतलाल जी का साथ अवध अइला पर इहां का मंथरा के झोंटा धइके ठिठिराइ देले बानीं। बाल्मीकि में लिखल बा कि—

ईमामपि हतां कुब्जा यदि जानाति राघवः।
त्वां च मां चैव धर्मात्मा नाभिभाषिष्यते ध्रुवद॥

भावार्थ—भाई! जो कहीं कुबरी तोहरा हाथ से मारल गइली त एह घटना के जानत मातर धर्मात्मा राम तोहसे आ हमसे निश्चय बोलल छोड़ देब। भरत का साथे शत्रुघ्न जी भी चित्रकूट में भगवान राम का पांव पर रोइ के गिर गइल बानीं। बड़ा रोचक चरित्र बाटे कन्दर्प आ जटायु के भी निस्वार्थ सेवे का चलते बड़ा मनत्वपूर्न आदर आ स्थान जटायु जी के मिलल बाटे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगवान राम का चारो भाइन के दू दू पुत्रन के बरनन आज का परिवार नियोजन युग बदे विशेष आदर्श के अनुकरन बाटे। बाल्मीकि में लिखल बा कि अन्त समय में शत्रुघ्नजी भगवान राम किहां जाइके कहले बानी कि हम अपना दूनो पुत्रन के राज सउंपि के अपने का साथ महापयान बदे आइल बानी एह बदे हमे दोसर कुछ मत कहल जाय। शत्रुघ्नजी के मतलब बाइ जे हम राउर आग्या कबो नइखीं उठवले। भगवान राम उहां के विनती स्वीकर कइके साथ हीं परमधाम गइलीं सभन।

गुरु वशिष्ट—इहां का योग वाशिष्ट रूप में भगवान रामेके गुरु बानीं। इहां के पत्नी रहीं अरुंधती जी। रघुवंशी लोगन किहां पुरोहिताइ करे से वशिष्ट जी नकार देले रहीं बाद में ब्रह्माजी से ई जनला पर जे एह कुल में भगवान अवतार लेब, पुरोहिताइ स्वीकार कर लिहलीं। विश्वामित्र जी का यग्य रक्षा खातिर मानस में बड़ा उत्तम उपदेश देले बानीं आ जनकपुर, अयोध्या चित्रकूट का कई प्रसंगन में इहां के विचार आ उपदेश बरनन आइल बा। विश्वामित्र जी का बिरोध मनला पर भी इहां का उहां से कबनो दुराव ना रहल। त्याग, तप आ भगवान राम मे स्नेह का अलावे इहां के नाम सप्तर्षि मंडल में भी आइल बाटे।

विश्वामित्र जी—विश्वामित्र जी के गाधि सुअन कहल बा इहां के बारे में अनेकन्ह कथा कहल बाटे। इहां का वशिष्ट जी के कामधेनु लेवे चाहत रहीं आ उहां का कहीं जे ई ब्राह्मनन के संपति ह। ओही खातिर लड़ाई हो गइलि। ब्रह्म बल का सोझा क्षत्री बल निर्बल हो गइल। विश्वामित्र जी ब्रह्म बल प्राप्त करे खातिर तप के श्री गनेस कइलीं। बहुत दिन घसन ठेंठवला पर ब्रह्मा का सृष्टि अस एगो दोसरे दुनियां बना लेबे पर उहाँ का उतारू हो गइलीं। आज का दल बदलुन अस हड़ताल आ हुरदंगई मतिन घृनित ढंग से ऊपर उठ के नर के रचना का पहिले अनघा अनाज बना घललीं जे के विश्वामित्री अन्न आजुओ कहल जाला। प्रयास से प्रसन्न हो के ब्रह्मा जी ब्रह्मनत्व दे दिहलीं। राम चरित मानस में अयोध्या से राम लखन के ले आइके बक्सर में इहां का आसुरी सत्ता पर देव सत्ता के नींव दिअवले बानीं। बक्सर के प्राचीन नाम सिद्धाश्रम रहे। विश्वामित्र जी आपन यग्य पुरा कइके भगवान राम आ लखनलाल के जनकपुर लिया गइल रहीं। शंकर धनुष टुटला पर बड़ा भयावन क्रोध कइले रहीं परशु-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राम जी। पहिले सरतर परतर के प्रयास का बाद उहां विश्वामित्र जी कहले बानीं कि—

गाधि सुअन कह हृदय हंसि मुनिहिं हरिअरइ सूझ।
अयमय खाँड़ न ऊखमय अजहुं न बूझ अबूझ॥

दक्ष प्रजापति—इहां के जन्म सृष्टि का आरम्भ में ब्रह्माजी का अंगूठा से बतावल बा ब्रह्मा जी का कहनाम पर इहां का पहिले मानसी आ बाद में मैथुनी सृष्टि: कइलीं। इहां का लड़िकन के नारद जी उपदेश देइ के सन्यासी बना दिहलीं, जवना से दक्ष जी के स्राप भइल जे नारदजी अढ़ाई घड़ी से अधिका कहीं ना ठहरिहन। इहां का २४ पुत्री रहीं ओह लोगन में चार पुत्रिन के धर्मराज, शंकर जी, कश्यप आ चन्द्रमा आदि के विबाह बतावल बाटे। भगवान शंकर खड़ा हो के इहां के प्रनाम ना कइलीं एह से अपना यग्य में इहां का शंकर जी के स्थाने ना दिहलीं। एही यग्य का हवन कुण्ड में सती अपना के हून दिहलीं आ यग्य विध्वंस हो गइल ऊ स्थान आ कुंड कनखल (हरिद्वार) में बा।

परशुराम जी—इहां का पिता के नाम जमदग्नि ऋषि आ माता जी के नाम रेनुका जी रहे। उत्तरप्रदेश के 'जमानियाँ' में गंगा तट पर जमदग्नि आश्रम रहे। ऋषि का—परशुराम, रुमन्वान, सुषेन, बसु आ विश्वासु पाँच पुत्र रहीं। रेनुकाजी गंगा से जल ले आवे में देर कर दिहलीं जवना पर पिता के आग्या भइलि उहां के सिर उतार देवे के। चारो पुत्र लोग माता के हत्या करे से नकर गइलन आ परशुराम जी सिर उतार दिहलीं। पिता प्रसन्न हो के वर मांगे के कहलीं त परशुराम जी माता के वर मांग के जिया दिहलीं। परशुराम जी क्षत्री कुल के नाश करे के उतारू हो गइल रहीं। क्षत्री से खत्री बन जाए वाला राजपूते रहस। जनकपुर में धनुष भंग का बाद अपना गुरू देव का धनुष टुटला पर भयानक क्रोध उमड़ल रहे परशुराम जी का। भगवान राम का धनुष चढ़ा दिहला पर शान्त हो के परशुराम जी असम पहाड़ी में तप करे चल गइलीं, जहां अभी भी परसुराम कुंड बाटे।

अनसूया जी—अनसुया जी के नाम दक्ष का २४ पुत्रिन में आइल बा आ महर्षि कर्दम के पुत्री भी अनसूया रहीं जेकरा से मानस का अनसूया से सम्बन्ध बाटे। इहां का पतिव्रत धर्म के बड़ा महत्व पूर्ण उपदेश सीता जी के देले रहीं आ साथ में कुछ उपहार भी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अत्रि मुनि—इहां के उत्पत्ति ब्रह्मा जी का नेत्र से बतावल बाटे। अत्रि, मुनि अनसूया जी अस धर्म पत्नी पवले रहीं। एक बार राहू का आक्रमन से सूर्य देव के पतन के ठेकान लग गइल रहे जवना के अपना तप बल से अत्रि मुनि रोक दिहलीं। मानस से गोस्वामी जी लिखले बानी कि दक्खिन भारत में अत्रि-मुनि का स्थान पर भगवान राम गइलीं, तब—

पुलकित गात अत्रि उठि धाए। देखि रामु आतुर उर लाए॥

बड़ी सुन्दर स्तुति कइले बानी अत्रि मुनि जी, भगवान राम के। ओहिजा से—

मुनि पद कमल नाइ करि सीसा। चले बनहि सुर नर मुनि ईसा॥

जवना दक्खिन भारत में ओइसन ओइसन लोग रहस तवना पर उत्तर भारत का प्रभाव जमवला का रूप में जे लोग रामायन के काल्पनिक रूपक मात्र कहले बा तवन ना जाने कवना कुबुद्धि से।

सुग्रीव जी—बानर राज सुग्रीव जी बालि के भाई आ अंगद जी के चाचा रहीं। इहां के मंत्री रहीं हनुमान जी आ उहें का भगवान राम से सुग्रीव जी के मित्रता करवले रहीं। राम रावन समर में भगवान राम के प्रधान समर मंत्री रहीं आ बड़ी बहादुरी से समर क्षेत्र में लड़वो कइलीं। लंका विजय का बाद सुग्रीव जी भी भगवान राम का साथ अयोध्या गइल रहीं आ बिदाई में वस्त्रा-भूषण के भगवान राम 'सुग्रीवहि प्रथमहिं पहिराए।'

अंगद जी—अंगद जी का शील स्वभाव से भगवान बड़ा प्रसन्न रहीं। बड़ा रोचक कथ पद भइल बाटे अंगद जी का महाप्रतापी रावन से। अन्त में अंगद जी आपन पांव रावन दरबार में रोप के कहले बानी कि जो रावां सब एह के उठा लीं त हम सीता जी के हार जाइब आ राम सेना बहुरे लवट जाई। लंका के महाबल शाली लोगन के थोबर लटक गइल बाटे अंगद पन टकसावे में। बड़ मजगर मजाको अंगद जी कइ देले बानीं उहां कि हमरा गोड़धरिया में का बाटे, चल के भगवान राम के चरन गहीं। रावन राज्य पतन का बाद भगवान राम का साथ अंगद जी अवध गइल रहीं आ बिदाई का समय—

अंगद बचन विनीत सुनि, रघुपति करुना सींव।
प्रभु उठय उर लायहू, सजल नयन राजीव॥
निज उरमाल बसन मनि, बालि तनय पहिराइ।
विदा किन्ह भगवान तब, बहु प्रकार समुझाइ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जामवन्त जी—भालूराज जामवंत जी भगवान राम के ओह बीहड़ समय बनवास काल में मंत्रिआँव कइले रहीं। इहां का बलवान त रहवे कइलीं उत्साह बढ़ावे के भी गुन इहों में भरपूर रहे। जामवंत जी लखनलाल जी का शक्ति लगला पर सुषेन बैद के बुलावे वाली बड़ी उपकारी उक्ति बतवले रहीं। जवानी के जोश आ बल विचित्र रहे जामवंत के। बुढइलो पर इहां का महा बलवान मेघनाद के त्रिशूल से मार के बेहोशे भर ना कइलीं बलुक टँगरी धइके झटहा मतिन फेंक देले रहीं लंका पर।

नल-नील—इहां सब विश्वकर्मा जी के पुत्र आ बड़ा गुनानी अभियन्ता रहीं। लरिकाई में इहां सब बड़ा अल्हड़ रहीं। साथ रहे ऋषि मुनि लोगन के बाकी उहां सबके समाधि लागे त इहां सब ठाकुर जी आदि के मूर्ति नदों में डालि आईं। मुनि लोग स्नेह बस चूप रह जासु बाकी, बाक दे दिहलन जे एह लोगन के जल में डालल, पदार्थ डूब ना सके ओह बरदान के साकार रूप देखल गइल सेतु बंध में जइसे—

सैल बिसाल आनि कपि देहीं। कन्दुक इव नल नील ते लेहीं॥

विश्रवा जी—पुलस्त जी के पुत्र विश्रवा जी के, भारद्वाज जी का पुत्री वरवर्निनी जी आ माल्यवान जी का पुत्री कैकसी दू नारिन से विवाह भइल रहे। वरवर्निनी जी का गर्भ से धन पति कुबेर जी के जन्म भइल रहे आ कैकसी जी का गर्भ से रावन, कुंभ करन आ बिभीषन के। अपना जेठानी का पुत्र भइला पर देवरानी कैकसी का पुत्रोत्पन्न के लालसा उत्पन्न भइल रहे आ संध्या समय पुत्र कामना से गइल रही। मुनि विश्रवा जी कहलीं जे संतान त महा पराक्रमी होइहन बाकी, समय का प्रभाव से रूचि राक्षसी होखो। कैकयी जी का बिनय कइला पर एक पुत्र के सात्विक बुद्धि के बचन मिलल, जे विभीषन के मिलल रहे। महाभारत का रामोपख्यान में–पुलस्ते जी विश्रवा का रूप में कहके उनुका पुष्पोत्कटा रानी से रावन आ कुंभकरन, मालिनी से विभोषन आ राका रानी से खर अउर सूपनखा के जन्म बतावल बाटे।

बिभीषन जी—भगवान भक्तन में विभोषन जी के बड़ा आदर के स्थान बाटे। असुर राजधानी लंका में भी उनका से राम भक्ति के मूर्त साकार बाटे। हृदय का अंदर आ बाहर, राम नाम से बड़ो श्रद्धा रहे, मानस में कथन बा कि—

'राम नाम अंकित गृह सोहा'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उहां के हाल त रहे बत्तीस दांतन का बीचवाली जीभ के। दशानन से सब-तुके बात उहां का कहत रहीं सीता जी का बारे में, जवना से भरल सभा में लतवस के दुरदुरा दिग्इलीं। भगवान राम के शरनागति पवला का अलावे राम रावन समर में उहां के सहयोग आ लंकापति भइला के अनघा लोग घुसले बाड़न जवन भक्त आ भक्ति का नजर से देखला पर दोसर रूप लेत बाटे। भक्तिए भावना का चलते गोस्वामी तुलसीदास जी लिखले बानीं कि,—

'जेहि अघ बधेउ ब्याध जिमि बाली। फिर सुकंठ सोइ किन्ह कुचालीं॥
सोइ करतूति बिभीषन केरी। सपनेहु सो न राम हिय हेरी॥

कुंभकरन जी—कुंभकरन जी महाबलवान रहन। साल में ६ मास जागे आ ६ मास सुतल रहे के इन्हें बरदान रहे। बड़ा उपाय कइला पर राम रावन समर का समय इनकरि नींद टूटलि। भगवान राम से सीता बदे विरोध के ऊ विरोधी रहन, बाद में समर सुर में सुरिआइ के अकेले चल पड़लन राम सेना से लोहा लेबे। ऊ, खाली थेथरइए ना कइलन बलुक कठिन प्रताप के प्रदर्शन कइलन। रावन का गिलगिलइला का बाद सीता हरन पर कुंभकरन कहले बाड़न कि—

जगदम्बा हरि आनि के सठ चाहत कल्यान ?

भक्ति भावना में कुंभकरन जी—

रामरूप गुन सुमिरत मगन भयउ छन एक।

समर में ऊ—

अंगदादि कपि मुरुछित-करि समेत सुग्रीव।
कांख दाबि कपिराज कहं चला अतुल बल सींव॥

आदि के बरनन बा।

मेघनाद जी—मेघनाद जी महाप्रतापी रावन के सब सेदुलरुआ पुत्र रहस। इनका बल आ पराक्रम के जतना बखान कइल जाय, थोरहीं कहल जाई। अपना बल का प्रताप से ई देवराज इन्द्र के पराजित कइले रहस। अपना पवरुख आ पिता भक्ति के बड़ा नगद नमूना देखवले बाड़न मेघनाद जी। इनहीं का शक्ति बान से लखनलाल जी अचेत रहस आ प्रान बंचावे वाली मात्र आयुर्वेदीय जड़ी संजीवनी बूटी बतवले रहीं सुखेन जी। मेघनाद जी के समर कला एह विग्यान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युग वाला समय का समर कला से बहुत ही ऊँच कोटि के रहे। चाहे जइसे भी ऊ समर क्षेत्र में उतरलन बाकी, समर क्षेत्र में सराहनीय बीर के धर्म निमहलन आ अंत में—

'रामानुज कह राम कहं, अस कहि छाड़ेसि प्रान।
धन्य धन्य तव जननी, कह अंगद हनुमान॥

ताड़िका जी—यक्ष सुकेतु जी वंस बदे तप कइके ताड़िका पुत्री के पवले रहीं। ऊ बचपन में बड़ी सुन्दरी रहली सेयान भइला पर उनका हजार हाथी के बल रहे। उनकर बिवाह करुष के राजा सुन्द जी से भइल रहे। सुन्द के मरन अगस्त ऋषि का स्राप से हो गइल एह पर ताड़िका उन्हे चबाइ जाए पर उतारू हो गइली। ताड़िका आ उनका पुत्र मारीचि के ऋषि के स्राप हो गइल राक्षस हो जाए के। स्राप से राक्षसी बुद्धि का साथ रूप भी ताड़िका के बड़ा भकसावन हो गइल। ऊ, मलद आ करूष जनपद के जीव विहीन बनावे लगली तवले बक्सर ताटकबन में विश्वामित्र जी यग्य के श्री गनेश कइलों आ असुरन का यग्य में खलल दिहला से मुनिवर अवध जाइ के रामलखन के मांग ले अइलीं—आ श्री राम,

एकहि बान प्रान हरि लीन्हा। दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा॥

भगवान राम मारीच के—

'बिनु फर बान राम तेहि मारा।

बिना फर का बान मारे के कारन रहे जे अभी उनका से अउर लीला कराइ के तब मारे के रहे। ताड़िका जी के वृत्ति आ भेष राक्षसी रहे बाकी अन्त में राम प्रताप से उन्हें बड़ा नगद पद प्राप्त भइल।

सूपनखा जी—ई महाप्रतापी रावन के बहिन रहली आ अपना मनहीं भगवान राम का सामने जाइके प्रेम प्रस्ताव कइली। दुनो भाइन का उनकर प्रेम प्रस्ताव स्वीकार ना भइल लखन लाल के स्त्री घरहीं रहली आ उनका सामने ब्रह्मचर्य व्रत के महान संकल्प रहे। भगवान राम, सीता जी का साथ रहला पर बन में बानप्रस्थ जीवन बितावत रहीं। ओइसन तपल तपावल महापुरूषन का सामने उनकर प्रेम प्रस्ताव ओही लायक रहे जवन उनका साथ भइल। बिफल प्रयास का बाद घृनित प्रयास के फल पाइ के ऊ खर-दूषन के खउरा खापट लगा के लंका पहुँचली। आपन चरित्र छिपाइ के ऊ बड़ी सुन्दर राजनीति रावन का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोझा बखान के बाद में जे समर जाल के सूजन कइली बड़ा बिचारनीय बा। एक ओर त टिटिकारी रूप में कहली जे—

'तोहि जियत दसकंधर मोरि कि असि गति होइ।

आ दूसरी ओर रावन का प्रलोभन में बता दिहली कि,—

'तिन्ह के संग नारि एक स्यामा।'

बड़ी चतुराई भरलि रहे सूपनखा में। सूपनखा का सम्बूक नाम का पुत्र के वध के बड़ा बिचित्र बरनन कई ग्रंथन में भिन्न भिन्न रूप में आइल बा।

महाप्रतापी असुर राज रावन—रावन के युग युग प्रबल प्रताप रहे। मानस में जवन महाराज रावन का बारे में चरचा बाटे ओह से कई बातन में उनकर आचरन लोक विरुद्ध त बा बाकी, सब मिला के देखल जाय त अर्थ, धर्म, काम आ मोक्ष के रावन प्राप्त कइले बाड़न। आसुरी वृत्ति से त सत पथ से ऊ दूर रहन बाकी, ओहू में तप आ पूजन आदि में भी ऊ आपन सराहनीय स्थान रखले रहन। भगवान शंकर के परम भक्त रावन अपने हाथ से आपन सिर काट के हवन कुंड में हूनत रहस ई बड़ी भारी महिमा कहल जाई। परिवार पोषन में भी रावन के बड़ा नगद स्थान बाटे आ नीति आ विद्या बदे भी ऊ चोटी के पुरुष रहन। अपना पबल प्रताप से ऊ पुष्पक बिमान छीन लिहलन आ इन्द्र अउर बरुन भी त्राहि माम बोल उठल रहस उनका प्रताप से पातर होइ के।

एक बेर रावन कैलाश की ओर पुष्पक बिमान से जात रहन उन्हें भगवान शंकर की ओर जात नंदी जी मना कइलन। नंदी जी का रूप पर रावन हँस दिहलन आ नंदी जी के स्राप भइल जे हमरा रूप पर हंसला के फल होखी, 'बानर से तोहार बिनाश'। रावन हाथ लगा के कैलास उठा लिहलन आ शिव गन लोग गनगनाइ उठल। भगवान शंकर बाँयां अंगूठा से कैलाश पर्वत दबवलीं आ रावन के बाँह चरचरा उठलिन स। ऊ त्राहि कइ के शंकर जी बिनय कइलन त अवढ़र दानी जी छोड़ के उन्हें 'चन्द्रहास' नाम के खंग दे दिहलीं। भगवान शंकर से उन्हें बहुत कुछ मिलल रहे। रावन में स्वावलम्बन के बड़ी महान भावना रहे—मानस में लिखल बा कि—

'निज भुज बल मैं, बैर बढ़ावा। देहुं उतर जो रिपु चढ़ि आवा॥

ऊ अपना आप में बड़ा भारी गुनानी रहस आ गुमानी भी। अपना लिलार का ब्रह्मरेख देख के अपना मरन पर कहले रहन जे बुढ़ापी में भ्रम से ब्रह्मा जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बानरी सेना के फल लिख देले बानीं। बात अइसन ना रहे जे अंतिम फलाफल के मरम रावन का ना मालूम रहे। खरदूषन वध का बाद ऊ कहले रहस कि—

सुररञ्जन भंजन महि भारा। जो जग नाथ लिन्ह अवतारा॥
तो मैं जाय बयर हठ करऊँ। उनके सर भवसागर तरऊँ॥
भजन न होवहिं तामस देहा। मन बच कर्म मंत्र दृढ़ एहा॥

रावन के सामरिक चतुराई आ बल के बड़ा सराहनीय प्रदर्शन भइल बा राम रावन समर में। उनकरि समर लालसा मरन काल तक जस के तस सक्तुक सेनानो अस बनल रह गइलि बाटे आ प्रानान्त का समय भी कहले बाड़न

जे 'कहां राम रन हतौं पचारी।

ओह महा प्रतापी महाराज रावन के भगवान राम दुर्लभ गति दिहलीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: IKS-MoE-Grant-2

Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon